वास्तुशास्त्र और फेगंशुई के 'बेस्ट सेलिंग आथर' के द्वारा

भाग्यशाली भवन

सरल वास्तुशास्त्र

घर में सुख, शान्ति, सम्पति, समृद्धि और लक्ष्मी पाने का अद्भूत प्राचीन ज्ञान

डा॰ अश्विनी कुमार बंसल

2.2

भाग्यशाली भवन

(घर में सुख, शान्ति, समृद्धि और लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो)

सरल वास्तुशास्त्र

अश्विनी कुमार बंसल

भाग्यशाली भवन

सरल वास्तुशास्त्र

लेखक

डा॰ अश्विनी कुमार बंसल

प्रकाशक

ऐथनिक इंडिया पब्लिकेशनस

फैंगशुई पॉइंट

- B-47, लाजपत नगर–1 नई दिल्ली–110024

फोन - 29818653, 98102-70795

E-MAIL : bansalji@vsnl.com

Web site : WWW.vastushastri.com

- 187, एडवोकेटस सोसाइटी, सेक्टर 49ए, चंडीगढ़

फोन – 0172-3099006, 3260028

ISBN 81-901039-1-1

चतुर्थ संस्करण : 2004

मूल्य : 195 रूपये

समर्पित

मेरे

पूज्य पिताजी

श्री गिरधारी लाल बंसल

के

श्री चरणों में

निवेदन

इस पुस्तक को लिखते समय यद्यपि हर प्रकार की सावधानी बरती गई है लेकिन फिर भी सम्भवत: कोई त्रुटि रह गई हो, जिसके लिए लेखक एवं प्रकाशक को जिम्मेदार न ठहराया जाये। इस पुस्तक में दी गई जानकारियों को व्यवहार में लाने पर यदि किसी पाठक को किसी प्रकार की हानि होती है तो इसके लिए लेखक या प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा। इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों की सरल विवेचना प्रस्तुत की गई है, जो हमारे जीवन में बहुत काम आ सकती है।

श्री अश्विनी कुमार बंसल, एल०एल०बी०, ए०सी०एस० विगत दस वर्षों से वास्तुशास्त्र व फेंगशूई से गहराई तक जुड़े हैं। उन्होंने इस विषय पर 33 पुस्तकें समाज को दी हैं जोकि एक अमूल्य देन है। वे वास्तुशास्त्र व फेंगशूई के शोध कार्य में संलग्न हैं। फेंगशूई व अन्य समानान्तर विषयों में उनकी गहरी पैठ जीवन को प्रकृति से बेहतर ढंग से न केवल जोड़ती है अपितु हमारी पुरानी परंपराओं पर आधारित तौर-तरीकों को प्रोत्साहित भी करती है। उन्होंने भारत व विदेशों में यात्रायें करके वास्तुशास्त्र का विस्तृत रूप से अध्ययन, विश्लेषण किया है। वास्तुशास्त्र के द्वारा उन्होंने कई निजी व सार्वजनिक भवन संबंधी समस्याओं का समाधान किया है और यह सब मात्र साधारण तरीकों द्वारा केवल कुछ भवन परिवर्तन के माध्यम से संभव हुआ है। पिछले कुछ वर्षों में ही वे मीडिया में एक पहचान बन गए हैं। उनकी यह नवीनतम पुस्तक इस क्षेत्र में एक नया आयाम है।

विषय–सूचि

खण्ड – III - आपके घर की सज्जा

खण्ड – IV - जल स्त्रोत

खण्ड – V - भवन

खण्ड – VI - आपके घर की दिशा

डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी
L.L.M., S.J.D., L.L.D., D.Litt.
विद्या वाचस्पति, न्याय वाचस्पति
सांसद एवं ब्रिटेन में भारत के उच्चायुक्त (भूतपूर्व)

प्राक्कथन

"बुलबुल के गाने में जो सुख है, वह या तो स्वर्ग में मिलता है या फिर घर में" – ये उद्‌गार विश्व प्रसिद्ध साहित्यकार विलियम वर्डसवर्थ (William Wordsworth) के हैं, जो जानते थे कि घर तथा स्वर्ग के बीच एक गहरा सम्बन्ध है। वास्तव में घर में ही स्वर्ग का सुख विद्यमान होता है और एक सुखी एवं सम्पन्न घर धरती पर ही स्वर्ग के प्रतिरूप के समान है।

एक सुखी, स्वस्थकारी और सम्पन्न घर को बनाने के लिए या फिर एक गांव अथवा शहर को बसाने के लिए मानवीय प्रयत्नों तथा भौतिक सामग्री का समायोजन करना पड़ता है। 'धरती पर स्वर्ग' की अवधारणा कुछ और नहीं बल्कि एक आदर्श घर की परिकल्पना ही है। एक आदर्श घर वह होता है, जिसमें रहने वालों के परस्पर सम्बन्ध अच्छे हों, आसपास का सामाजिक वातावरण अच्छा हो। घर के निवासी स्वस्थ, सुखी एवं प्रसन्नचित हों। हमें हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए कि हमारा घर धरती पर स्वर्ग की इस अवधारणा को मूर्त रूप दे सके।

घर एवं नगर के शिल्प एवं उसकी आकृति का उसके निवासियों पर बड़ा सूक्ष्म लेकिन गहरा प्रभाव पड़ता है। हमारे पूजा–स्थल, शिक्षा–संस्थान, सामाजिक कार्यों में काम आने वाले सामुदायिक केन्द्र, पंचायत घर तथा ऐसे स्थल, जहां बैठकर हम सामाजिक एवं सार्वजनिक हित के फैसले करते हैं, उनके निर्माण में मूल तत्त्वों (पंचमहाभूत) की अनुकूलता पर ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है। इनकी अवहेलना के परिणाम अच्छे नहीं होते क्योंकि ये पंच तत्त्व मानव जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करते हैं।

वास्तु व शिल्प का ज्ञान हमारे पूर्वजों को सुखी एवं सम्पन्न जीवन यापन में मदद करता रहा है। हमारे पूर्वजों ने जिन आवासों का निर्माण किया, उनमें पाँच मूल तत्त्वों — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश के समायोजन का पूरा ध्यान रखा गया था। परिणामस्वरूप उन्होंने जो गांव या नगर बसाए वे पूरी तरह से अपने पर्यावरण के अनुकूल थे एवं प्रकृति के साथ उनका पूरा तालमेल था।

भारतीय वास्तु एवं शिल्प का आधारभूत सिद्धान्त भी यही है कि हमारा जीवन प्रकृति एवं पंचतत्त्वों के साथ पूर्णतः समायोजित होना चाहिए। हमारे जीवन पर पड़ने वाले इनके विभिन्न प्रभावों को भी हमें ध्यान में रखना चाहिए, जो समय, स्थान तथा जलवायु की स्थितियों के अनुरूप बदलते रहते हैं।

शिल्प तथा वास्तु की उपयोगिता के विषय में किसी प्रकार का संशय नहीं है। प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है और ये ज्ञान की महत्त्वपूर्ण शाखाओं के रूप में जाने जाते रहे हैं। कालक्रम में पश्चिमी जगत के द्वारा इनकी उपेक्षा की गई और भारतीय शिल्प तथा वास्तु के सिद्धान्तों को तर्कहीन मानकर, अंधविश्वास मात्र घोषित कर दिया गया।

नई पीढ़ी में हमारी प्राचीन मान्यताओं के प्रति उपेक्षा का भाव बहुत तेजी से बढ़ा है। शिल्प एवं वास्तु भी इस प्रवृति का शिकार हुआ है लेकिन शिल्प एवं वास्तु की केवल इस आधार पर उपेक्षा करना कि — ये प्राचीन भारतीय वाङ्मय (ग्रन्थों) का ही एक अंग है, उचित नहीं। क्योंकि वास्तु का वर्णन हमारे शास्त्रों मे है, इस आधार पर वास्तु को अंधविश्वास मान लेना कदाचित एक स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं है। आज समाज का एक तथाकथित प्रबुद्ध वर्ग वास्तु के महत्त्व को अस्वीकार करता है, लेकिन इस अस्वीकृति के पीछे उसका दंभ है, जो स्वयं को प्रगतिशील एवं आधुनिक साबित करने के भ्रम के सिवा ओर कुछ भी नहीं है। दूसरी ओर शास्त्रों के पक्षधरों को यह नहीं भूलना

चाहिए कि इनमें समाहित ज्ञान के प्रति मात्र श्रद्धा और विश्वास से भी कुछ हासिल होने वाला नहीं। निरन्तर तर्क–सम्मत विवेचना करने से ही हम इनके सार एवं सत्य को प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञान कभी भी अप्रसांगिक (Out dated) नहीं होता। ज्ञान अंधविश्वास पर आधारित नहीं होता। निरन्तर विकास करते रहने एवं रहस्यों को जानने की प्रक्रिया का नाम ही ज्ञान है।

श्री अश्विनी कुमार बंसल के. बंसल ने, जो पेशे से एक वकील हैं वास्तु के सम्बन्ध में प्रचलित मान्यताओं की विवेक–सम्मत समीक्षा की है तथा सत्य की खोज का सराहनीय कार्य किया है, जिसके परिणामस्वरूप यह पुस्तक आपके हाथों में पहुँच सकी है। इस पुस्तक में उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों से जो सन्दर्भ अवतरित किए हैं, वे इस विषय में उनके ज्ञान की प्रामाणिकता को सिद्ध करते हैं। वास्तु यद्यपि एक गहन विषय है लेकिन श्री बंसल ने इसकी सरल विवेचना प्रस्तुत की है, जिसके कारण प्रत्येक व्यक्ति, जो वास्तु के प्रति जरा भी रुचि रखता है, इसके सिद्धान्तों से परिचय प्राप्त कर लाभान्वित हो सकता है। यह पुस्तक हमारे दैनिक जीवन में बहुत उपयोगी साबित होगी – ऐसा मेरा विश्वास है। वे लोग जो वास्तु से सवर्था अपरिचित हैं, वे भी इस पुस्तक से लाभान्वित हो सकते हैं। पुस्तक की भाषा सरल एवं प्रस्तुति ऐसी सुबोध है कि प्रत्येक व्यक्ति इसका लाभ उठा सकता है।

पुस्तक को सरल एवं बोधगम्य बनाए रखने का लेखक का प्रयास सराहनीय है। सम्पूर्ण पाठ्य सामग्री को व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया गया है। विषय–वस्तु को विभिन्न खण्डों और खण्डों को अध्यायों में बांट दिया गया है, जिसमें वास्तु के प्रत्येक पक्ष पर पूर्ण चर्चा हो सकी है। लेखक ने विषय के हर पक्ष पर विस्तृत चर्चा की है। उदाहरण के तौर पर घर तथा घर के विभिन्न अवयवों का वर्णन तो किया ही गया है, विभिन्न दिशाओं, जल–स्त्रोत, भवन की आकृति प्लॉट की स्थिति आदि पर भी पूर्ण चर्चा की गई है। इस विषय में यद्यपि प्रत्येक सम्भावित प्रश्न का उत्तर पुस्तक में दिया गया है, फिर भी यदि पाठक के मन में कोई जिज्ञासा रह जाती है तो इसके लिए

लेखक से परामर्श लिया जा सकता है, कि किस प्रकार आप अपने घर में वास्तु की अनुपालना से लाभ उठा सकते हैं। कौन—कौन से वास्तु दोष हैं, जिनसे बचना चाहिए। घर में किस स्थान पर रसोईघर, कहाँ शयनकक्ष, कहाँ अन्य कमरे, कहाँ सीढ़ियाँ तथा कहा पूजाघर हो — ये ऐसे छोटे—छोटे प्रश्न हैं, जिन पर किसी वास्तु—विशेषज्ञ की सलाह से आपके घर का कायाकल्प हो सकता है। इतना ही नहीं घर की भीतरी एवं बाहरी दीवारों पर कौन सा रंग हो, घर के भीतर बाहर किस प्रकार के पौधे लगाए जाएं ये सभी चीजें भी वास्तु के अन्तर्गत आती हैं। इन पर लेखक का परामर्श एवं मार्गदर्शन अति लाभकारी सिद्ध हो सकता है। इस सम्बंध में श्री बंसल ने जो तर्कपूर्ण व्याख्याएं दी हैं, वे वास्तव में ही मन—मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। इतना ही नहीं लेखक ने छत, चारदीवारी, दरवाजे, खिड़कियां, तलघर (बेसमेंट) तथा ऊपर की मंजिलों, तरणताल, फव्वारे तथा प्लॉट की आकृति के विषय में भी उपयोगी जानकारी सरल ढंग से सुबोध भाषा में उपलब्ध क़रवाई हैं।

पुस्तक में श्री बंसल ने फेंग शूई पर भी एक अध्याय लिखा है, जो ज्ञानवर्धक तो है ही, रोचक भी है। फेंग शूई का चीन तथा जापान आदि पूर्व—एशियाई देशों में बड़े व्यापक स्तर पर प्रयोग होता है। कुछ पश्चिमी देशों में भी इसे उपयोग में लाया जा रहा है। यद्यपि यह एक अलग से विवेचना का विषय है कि क्या भारतीय वास्तुशास्त्र के ज्ञान को ही पश्चिम में फेंग शूई के रूप में मान्यता मिली अथवा यह स्वतन्त्र रूप से इन देशों में ही फला—फूला। फिर भी वास्तु तथा फेंग शूई में अद्भुत समानताएं दृष्टिगोचर होती हैं। चीनी परम्परा में फेंग तथा शूई शब्द क्रमशः वायु तथा जल के अर्थ में प्रयोग होते हैं तथा शिल्प एवं निर्माण के विज्ञान को वहां 'फेंग शूई' के नाम से जाना जाता है। जिसका सीधा—सा अर्थ है — जल तथा वायु जैसी प्राकृतिक शक्तियों के साथ अनुकूलता स्थापित करते हुए आवास के निर्माण की विधि। फेंग शूई का लक्ष्य भी वास्तु की भांति प्राकृतिक शक्तियों की अनुकूलता प्राप्त करना ही है।

यह भी एक तथ्य है कि हम वास्तु के प्रत्येक सिद्धांत का अक्षरतः पालन नहीं कर सकते। अतः वास्तु का प्रयोग हमें किसी ध र्मादेश की भांति नहीं करना चाहिए। इस विषय में अपनी तर्कशक्ति एवं व्यवहारिक बुद्धि का प्रयोग करना भी आवश्यक है। इस विषय में निरन्तर प्रयोग करते रहना बड़ा लाभकारी हो सकता है। अतः वास्तु के सिद्धान्तों पर प्रयोग होते रहने चाहिएं। वास्तु के सिद्धान्तकारों, इसके व्याख्याकारों एवं विशेषज्ञों एवं प्रयोगकर्ताओं को रूढ़ियों या अंध ाविश्वासों का शिकार न होकर खुले दिलो–दिमाग से चिन्तन करना चाहिए।

मैं श्री अश्विनी कुमार बसंल को बधाई देता हूँ कि इस पुस्तक में लेखन के रूप में उन्होंने वास्तु के क्षेत्र में एक सराहनीय कार्य किया हैं उनमें इस प्रयास का मैं स्वागत करता हूँ और मुझे विश्वास है कि इसे पाठकों का स्नेह प्राप्त होगा व लोक हित के इस कार्य का स्वागत किया जाएगा।

नई दिल्ली

डॉ. एल. एम. सिंघवी

भूमिका

वास्तुशास्त्र में विश्वास मुझे विरासत में ही मिला है। मैं यह ठीक से याद नहीं कर पा रहा हूँ कि मैंने पहली बार वास्तुशास्त्र के विषय में कब सुना था। मुझे इतना ही याद पड़ता है कि जब मैं बच्चा ही था तो मुझे मेरे पिताजी ने दक्षिण की ओर सिर करके सोने के लिए कहा था। मेरा यह मत है कि वास्तुशास्त्र का प्रभाव हमारे खून में ही है जो कि हमारे पूर्वजों की वर्षों की साधना एवं अभ्यास का प्रतिफल है। जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो मेरे पिता जी ने मेरे स्टडी–टेबल की दिशा को इस प्रकार बदला था कि पढ़ते समय मेरा मूँह पूर्व की ओर रहे और जब मैंने अपनी प्रैक्टिस शुरू की तो उन्होंने मुझे अपने टेबल को उत्तर की ओर करने की नेक सलाह दी।

मैं एक व्यक्तिगत अनुभव आपसे बाँटना चाहता हूँ – यद्यपि मेरे पास सुविधा–सम्पन्न जीवन–यापन के लिए पर्याप्त संसाधन हमेशा उपलब्ध रहे हैं, फिर भी मैं कुछ तनावग्रस्त–सा रहता था; जबकि इसका कोई प्रत्यक्ष कारण मुझे नजर नहीं आता था। उन्हीं दिनों मैने एक समाचार–पत्र में वास्तुशास्त्र के विषय में कुछ लेख पढ़े, जो मुझे अच्छे लगे। विषय के प्रति रुचि जागृत हो जाने पर मैंने कुछ किताबें खरीदी। इन्हीं पुस्तकों की सहायता से मैंने अपने घर की स्थिति का विश्लेषण किया। मैंने एक स्टोर रूम, जिसने मेरे घर के ईशान (उत्तर–पूर्व कोण) को बाधित किया हुआ था, गिरा दिया। इस छोटे से परिवर्तन का बहुत ही चमत्कारी प्रभाव देखने को मिला। मेरा तनाव जैसे छँट–सा गया, जीवन में खुशी के अवसर जैसे बढ़ गए, जबकि मेरी आय में किसी प्रकार की कोई वृद्धि नहीं हुई थी। वास्तु के इस प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर लेने के बाद मैंने इस विषय पर और अधिक पुस्तकें खरीदी, लेकिन इससे विभ्रम जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई, क्योंकि उन पुस्तकों की भाषा कुछ कलिष्ट और कहीं–कहीं द्विअर्थी भी थी; जिसके कारण एक पुस्तक में दिए गए

सिद्धान्त दूसरी पुस्तक के सिद्धान्तों के विपरीत जान पड़ते थे। परिणामतः मैंने पाया कि मैंने अपने घर में कुछ ऐसे परिवर्तन कर डाले थे जो वस्तुतः गलत थे। इसके बाद मैंने अपनी डायरी में कुछ नोट्स लिखने शरू किए, जो विभिन्न पुस्तकों से लिए गए सिद्धान्तों पर आधारित थे। मैंने इन सिद्धान्तों की सत्यता को जाँचने का बीड़ा उठाया। इसके लिए मुझे अपने मित्रों, सम्बन्धियों तथा शुभचिंतकों से लम्बी चर्चाएँ करनी पड़ी। मैंने कुछ विशेषज्ञों से साक्षात्कार एवं भेंट वार्ताएँ भी की। इन चर्चाओं के दौरान मेरे मित्रों ने मेरे कहने पर अपने ऑफिस/दुकान/घर में जिस प्रकार के परिवर्तन किए थे, मैंने उन्हें भी नोट किया तथा बाद में उनसे मिलने पर जब उत्साहजनक परिणाम सामने आए तो मैंने वास्तु के गहन अध्ययन का निश्चय कर लिया।

अपने निश्चय के अनुसार मैंने संस्कृत में लिखे कुछ मूल ग्रन्थों तथा उनके हिन्दी व अंग्रेजी अनुवादों को पढ़ा जैसे – वृहत संहिता, समरांगण, सूत्रधार, ऋग्वेद आदि। अपनी जीवन संगिनी रश्मि के आग्रह पर मैंने अपनी डायरी में लिखे इन नोट्स को एक पुस्तक का रूप देने का निश्चय किया। जिसके पीछे उद्देश्य यही था कि संस्कृत जैसी अप्रचलित भाषा में लिखे वास्तु–सिद्धान्तों को सरल एवं सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया जाए ताकि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके। पेशे से कन्सलटैंट होने के कारण मैंने तर्क को ही अपनी प्रस्तुति का आधार बनाया है और आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं जीवन शैली के अनुरूप इस शास्त्र की सरल विवेचना करने का प्रयास किया है। मेरा प्रयास रहा है कि घर के प्रत्येक अंग पर विधिवत ढंग से चर्चा हो सके। इसलिए पुस्तक को अलग–अलग खंडों में और इन खंडों को छोटे–छोटे अध्यायों में बाँट दिया गया है ताकि इन्हें समझना आसान हो और पाठकों को अगर अपने आवास के किसी अंग विशेष के बारे में कुछ जानना हो तो उससे सम्बन्धित अध्याय पढ़कर वह अपनी जिज्ञासा को शांत कर

सके एवं समस्या का समाधान भी कर सके। मैं समझता हूँ कि यह वास्तुशास्त्र का व्यवहारिक पक्ष है।

पाठकों की सेवा में मेरा विनम्र निवेदन है कि वे इस तथ्य को भली–भांति जान लें – वही घर आवास के लिए शुभ होता है, जिसमें वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन किया गया हो। वास्तुशास्त्र के कुछ मूलभूत सिद्धान्तों की अनुपालना से ही शुभ प्रभावों को प्राप्त किया जा सकता है। वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करके उन्हें व्यवहार में लाना हमारे लिए काफी लाभदायक सिद्ध होता है। अतः इनकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए।

आधुनिक युग में, जबकि रहने योग्य भूमि वैसे ही कम होती चली जा रही है, वास्तु के सभी सिद्धान्तों की पूर्ण अनुपालना असम्भव ही है। ऐसे में हमें कम से कम मूल सिद्धान्तों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यह बिल्कुल ऐसे है जैसे कि किसी परीक्षा में परिक्षार्थियों से यह अपेक्षा नहीं कि जाती कि वे सभी प्रश्नों के पूर्णतः सही हल करें और शत प्रतिशत अंक प्राप्त करें। जिस प्रकार चालीस प्रतिशत प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाता है, उसी प्रकार वास्तु के मूल सिद्धान्तों की अनुपालना से जीवन में सुख और समृद्धि का आह्वान किया जा सकता है। इसलिए वास्तु के जिन सिद्धान्तों को बिना विशेष परेशानी के अपनाया जा सकता है, उन्हें अवश्य ही अपनाना चाहिए और जहाँ आप मजबूर हों, उन पक्षों के विषय में अधिक चिंता भी नहीं करनी चाहिए। लेकिन जो भवन 40% की कसौटी पर भी खरा न उतरे, उसमें रहना किसी प्रकार की बुद्धिमता नहीं है।

मैं सांसद श्री एच. आर. भारद्वाज तथा जाने–माने आर्किटैक्ट्स श्री जे. आर. भल्ला, श्री सुरेन्द्र शर्मा एवं श्री जतिन्द्र सहगल के साथ–साथ श्री एस. सी. गुप्ता – एडवाइजर इण्डियन बिल्डिंग कांग्रेस, श्री आर. सी. मंगल, पूर्व निदेशक, सी. बी. आर. आई.,

रूड़की, श्री बी. के. पालीवाल – सैक्रेटरी इंटरनैशनल काऊंसिल ऑफ कन्सलटैन्ट्स, श्री संजय गुप्ता, अधिकारी पॉवर ग्रिड कार्पो. ऑफ इण्डिया, श्रीमती के. प्रेम – फेंग शूई एडवाइजर तथा श्री अजय मितल – व्यवसायी, का विशेष रूप से आभारी हूँ कि इन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इस पुस्तक के विभिन्न पक्षों पर गहन चर्चा की और अपने अमूल्य सुझाव एवं टिप्पणियों से मुझे लाभान्वित होने का सुअवसर प्रदान किया। इस पुस्तक की सज्जा में सहयोग करने के लिए मैं श्री जगदीश सिंह एवं कुमारी चेताली के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ। मैं श्री मदन बजाज का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के हिन्दी संस्करण की सज्जा एवं लेजर टाईप सैटिंग का कार्य निष्पादन किया। मैं आभारी हूँ अपनी पत्नी रश्मि का जिसने इस कार्य के निष्पादन में हर कदम पर मुझे सहयोग दिया।

यह पुस्तक मूलतः अंग्रेजी में LUCKY HOMES : VAASTU SHASTRA SIMPLIFIED शीर्षक से लिखी गई थी। अपने परम मित्र श्री राजेन्द्र मानव का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ कि उन्होंने इस पुस्तक की सरल भाषा तथा बोधगम्यता की प्रशंसा करते हुए इसे हिन्दी में अनुदित करने का आग्रह किया। मेरे लिए अनुवाद का कार्य स्वयं करना कदाचित कठिन था। समय का आभाव भी एक बहुत बड़ी समस्या थी। श्री मानव ने यह कार्य अपने हाथ में लिया और सीमित समय में ही इस कार्य को भली–भांति पूर्ण किया। उन्होंने न केवल मूल पुस्तक को अनुदित किया है, अपितु कुछ नये अध्याय जोड़ने में सहायता भी की है, जिससे यह पुस्तक ओर भी उपयोगी बन गई है।

नई दिल्ली
1 अक्तूबर, 2001

अश्विनी कुमार बसंल

गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं :

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परंगतिम्।।

भावार्थ

जो व्यक्ति शास्त्र एवं धर्मग्रन्थों की मान्यताओं की उपेक्षा करता है और स्वच्छन्द आचरण करता हुआ सभी कामों में अपनी ही इच्छा को सर्वोपरि समझता है वह न तो किसी कार्य में सिद्धि प्राप्त कर पाता है और न हकी उसे परम गति (मोक्ष) प्राप्त होती है।

खण्ड – I

विषय–प्रवेश

1 वास्तुशास्त्र क्या है ?
WHAT IS VAASTU SHASTRA ?

'आवास' मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। इससे जुडा है — भवन निर्माण का कौशल। 'भवन निर्माण' मात्र एक शिल्प या कौशल ही नही, अपितु एक विद्या है, जिसका शास्त्र—सम्मत ज्ञान इससे जुड़े व्यवसायियों के लिए तो लाभप्रद है ही, आम आदमी के लिए भी इनकी जानकारी बहुत ही लाभप्रद है। भारतीय ऋषि—मुनियों एवं चिन्तकों ने भवनों के निर्माण, शिल्प, तकनीक, साज—सज्जा, आदर्श स्थिति एवं भूमि की दिशा व अन्य उपयोगी लक्षणों पर तर्कपूर्ण विचार तत्कालीन समाज के सामने रखे थे। विभिन्न ग्रन्थों में वर्णित इन विचारों के समग्र अध्ययन को ही 'वास्तु शास्त्र' का नाम दिया गया है।

वास्तुशास्त्र वास्तव में प्राचीन विद्या है, जिसका उपयोग भवन निर्माण के समय विभिन्न अभौतिक—शक्तियों, जल, वायु, प्रकाश आदि; की समरसता और संतुलन के लिये किया जाता है। वास्तुशास्त्र वस्तुतः एक भारतीय दर्शन है, जिसका उल्लेख वेदों सहित अनेकानेक प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। वैदिक ऋचाएं एवं मंत्र भी 'वास्तु' के ज्ञान—स्रोत हैं।

'वास्तु' संस्कृत का शब्द है। उत्पति के अनुसार वास्तु का अर्थ है – आवास अथवा 'निवास करना'। शास्त्र से अभिप्राय है – किसी विषय की गूढ़ और व्यवस्थित व्याख्या करने वाला शास्त्र। इस प्रकार वास्तुशास्त्र से अभिप्राय उस ग्रन्थ से है, जो मनुष्य के आवास के सम्बन्ध में गहन और विवेक–सम्मत विवेचना प्रस्तुत करे। वास्तुशास्त्र भवन–निर्माण के सम्बंध में करणीय और अकरणीय की तर्क–सम्मत व्याख्या करता है। अर्थात्भवन–निर्माण में हमें 'क्या करना चाहिए' और 'क्या नहीं करना चाहिए' – इसका ज्ञान हमें वास्तुशास्त्र से होता है। वास्तुशास्त्र इस विषय में विषद विवेचना प्रस्तुत करता है कि भवन निर्माण के सम्बंध में जो करणीय है, उसे करने से क्या लाभ है और जो अकरणीय है, उसे करने से क्या हानियाँ हैं। साधारण शब्दों में कहा जाए तो वास्तुशास्त्र भवन निर्माण का विज्ञान है।

'वास्तु' कोई नया विज्ञान या विद्या नहीं है। प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में भी 'वास्तोष्पते' शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसका अर्थ है – जीवन काल एवं मृत्यु के बाद भी प्राणी (मनुष्य) को सुरक्षा, सुख और समृद्धि प्रदान करना। इसमें 'वास्तु–पुरुष' की उपासना करते हुए कहा गया है –

ऊँ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान,
स्वादेशो अनमीवो भवानः ।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो,
अस्तु द्विपदेशं चतुष्पदे ।।

'ऋग्वेद 7-54/1'

भवनों एवं सभी प्रकार के निर्माण के स्वामी, हम आपके अराधक हैं। हमारी प्रार्थना स्वीकार करें। रोगों से मुक्त करके हमें धन, सुख और सम्पति प्रदान करें। मुझ पर इतनी कृपा करें कि मैं इस घर में रहने वाले सभी मनुष्यों एवं प्राणियों की भलाई का साधन बन सकूं।

वास्तुशास्त्र के विभिन्न संदर्भ हमें रामायण, महाभारत के साथ–साथ बौद्ध–धर्मग्रन्थों में भी देखने को मिलते हैं। हमारे पुराणों जैसे स्कन्दपुराण, अग्निपुराण, मत्स्यपुराण, गरुड़पुराण, नारदपुराण, वायुपुराण, ब्रह्मानंदपुराण, लिंगपुराण तथा शैव और वैष्णव आगमों, जैसे – कमिकागम, कर्णागम, सुप्रेभेदागम वैष्णवागम तथा अभुष्भेदागम में भी वास्तुशास्त्र के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। चाणक्य के अर्थशास्त्र तथा शुक्रनीति, वृहत्त जातक, समरांगण–सूत्रधार जैसे ग्रन्थों में भी वास्तुशास्त्र के महत्त्व एवं उपयोगिता पर चर्चा की गई है। इन ग्रन्थों में मयमत, मानसरा प्रच्चछाया, वास्तुविद्या, भुवन–प्रदीप, भारतीय शतपथ, वास्तुसंदेश, प्रसाद–मण्डन, राजवल्लभ वास्तुसार का नाम प्रमुख है।

प्राचीनकाल में हमारे देश में वास्तुशास्त्र के अनेक विशेषज्ञ हुए हैं। मतस्यपुराण में अट्ठारह वास्तु–विशेषज्ञों के नामों का उल्लेख मिलता है।

भृगुरत्रि वसिष्ठाश्च विश्वकर्मा मयस्तथा।
नारदो नग्नाजिचैव विसालाक्षः पुरन्दरः ।।
ब्रह्मकुमारो नन्दीशा शौनको गार्ग एव चा
वासुदेवो अनिरुद्धाश्च तथा शुको वृहस्पतिः ।।
अष्टादशैते विज्ञाते वास्तुशास्त्रोंपदेशकः ।।

अर्थात भृगु, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नज्ञनिष्ठा, विशालक्षा, पुरन्धर, ब्रह्मकुमार, नदीश, शौनक, गार्ग, वासुदेव अनिरुद्ध, शुक्र तथा बृहस्पति अट्ठारह ऐसे वास्तु शास्त्रोपदेशक अथवा वास्तुविज्ञान के शिक्षक हैं, जिनका नाम सम्मान से लिया जाता है।

'वास्तु' में केवल भूमि ही नहीं, बल्कि वाहन तथा फर्नीचर आदि की व्यवस्था पर भी विचार किया जाता है। भवन निर्माण का कार्य जिस स्थान

पर किया जाना है, भले ही वह मुख्य स्थल हो, उपस्थल या फिर मुख्य स्थल से हटकर उपप्रधान स्थल या अप्रधान स्थल (बैकयार्ड स्टोर, गोदाम या सर्वेन्ट क्वाटर) समुद्र, तालाब या झीलों आदि को पाट कर तैयार की गई भूमि भी 'वास्तुशास्त्र' के अध्ययन से बाहर नहीं है।

पृथ्वी प्राणियों का प्रथम, प्राकृतिक अथवा दैवी आवास है। अन्य आवासों का विकास बाद में हुआ है। प्राणी जगत में पृथ्वी की सत्ता ही सबसे पहले अस्तित्व में आई, वहीं सभी प्राणियों के अस्तित्व का आधार भी है। 'वास्तु' से अभिप्राय हमारे प्राकृतिक परिवेश एवं पर्यावरण से भी है। प्रायः 'वस्तु' और वास्तु को एक ही मान लिया जाता है। वास्तव में वास्तु का अर्थ 'आवास' अर्थात भवन के निर्माण से है, जबकि 'वस्तु' का अभिप्राय परिवेश है, लेकिन ये एक–दूसरे के पर्याय के रुप में प्रयुक्त होते ही रहते हैं।

सभ्यता के विकास की शुरुआत ही भवन–निर्माण से हुई थी। भवन निर्माण का यह सिलसिला आगे चला। मनुष्य ने महलों, विशालकाय भवनों तथा नगरों का निर्माण किया। हडप्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई से कई ऐसे प्रमाण मिले हैं, जिनसे यह पता चलता है कि उस समय के भवन–निर्माण पर 'वास्तुशास्त्र' का पूरा प्रभाव था। बराहमिहिर के काल 5 शताब्दी; में भी वास्तुशास्त्र की मान्यताएं सर्वस्वीकृत थी। उस काल में भवनों को वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप ही बनाया जाता था।

भारत में 'वास्तु' का विकास तीन चरणों में तथा तीन विभिन्न क्षेत्रों में दृष्टिगोचर होता है। विध्यांचल पर्वत तथा कृष्णा और तुंगभद्रा

नदी के बीच के क्षेत्र में 'मय' की वास्तुकला के दर्शन होते हैं। हिमालय और विध्यांचल के बीच के क्षेत्र में 'कश्यप' की 'वास्तु' के दर्शन होते हैं और तीसरे वास्तुकार हैं — भृगु जिनका कार्यक्षेत्र दक्षिण भारत रहा है।

वास्तुशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है, जिनका आधार मनुष्य के चिरकालीन अनुभव हैं। यदि इसके सिद्धान्तों का ठीक—ठीक पालन किया जाए तो निश्चित और तत्काल परिणाम मिलते हैं। वास्तुशास्त्र हमें भवनों का निर्माण करते हुए, विभिन्न कमरों के विस्तार, अनुपात, उनकी दिशा तथा पानी के भण्डारण, रसोईघर, शयनकक्ष, सीढ़ियां कमरों की ऊँचाई, प्रवेशद्वार, अन्य दरवाजों, खिड़कियों तथा दीवारों के विस्तार, अनुपात एवं उनकी आदर्श स्थिति का ज्ञान करवाता है।
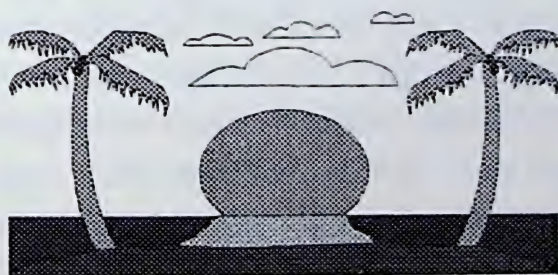
वास्तुशास्त्र का मूल सिद्धान्त है कि हमें अपने प्राकृतिक वातावरण से पूर्ण सामंजस्य रखते हुए प्राकृतिक नियमों के अनुरूप ही जीवन यापन करना चाहिए। अपने आसपास के प्राकृतिक वातावरण की प्रयत्नपूर्वक सार—सम्भाल करनी चाहिए और प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। प्राकृतिक नियमों के अनुरुप चलने से ही सुख और समृद्धि की प्राप्ति हो सकती है।

घर, गांव, कस्बों तथा नगरों के निर्माण में वास्तुशास्त्र का ज्ञान निर्विवाद रूप से अति लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

वास्तुशास्त्र – भ्रम या विज्ञान

विगत कुछ वर्षों से हमारी जीवन–शैली में तेजी से परिवर्तन हुआ है। भौतिक सुख–सुविधाओं के साधन बढ़े हैं, लेकिन हमारा व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन अनेक समस्याओं से घिर गया है। बहुत सी समस्याओं को हम प्रायः मानसिक–समस्या कहकर टाल जाते हैं, लेकिन उनके मूल में कहीं न कहीं हमारी जीवन–शैली अर्थात रहन–सहन का दोष होता है। दोषपूर्ण जीवन–शैली से उपजी ऐसी ही समस्याओं के निदान एवं समाधान से सम्बन्धित ज्ञान की शाखा का नाम है वास्तुशास्त्र।

वास्तु शब्द 'वस्तु' का द्योतक है। वस्तु अर्थात्पदार्थ, जो हमारे चारों ओर कई रूपों में विद्यमान है। आधुनिक रसायन शास्त्र ने हमें 108 तत्त्वों के बारे में बताया है तो प्राचीन विज्ञान पंच–महाभूत (जल, वायु, पृथ्वी, सूर्य एवं अंतरिक्ष) का ही वर्णन करता है। हम पाते हैं कि रसायन के 108 तत्त्व भी इन्हीं पंच महाभूतों में समाहित हैं। अतः पदार्थ का जो रूप हमारे सामने आता है वही वस्तु है, जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। क्योंकि किसी एक शास्त्र के द्वारा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का अध्ययन सम्भव नहीं, इसलिए मनुष्य के आवास एवं परिवेश से सम्बन्धित विज्ञान की शाखा को 'वास्तु' का नाम दिया गया है।

सम्पूर्ण जगत वास्तुमय है और प्रत्येक वस्तु ऊर्जा का पूंजीभूत रूप है, जिसे विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टिन ने $e = mc^2$ के सूत्र रूप में समझा है। इस प्रकार समग्र रूप में देखें तो यह चराचर जगत सर्वशक्तिमान ईश्वर की अनन्त शक्ति का भौतिक रूप है, जो पदार्थ के रूप में हमारे चारों ओर विद्यमान है। हमारी सनातन मान्यता – 'भगवान सृष्टि के कण–कण में विद्यमान हैं' शायद इसी दर्शन की उपज है।

इस ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु वास्तव में शक्ति का सारपुंज है। एक शक्ति दूसरी शक्ति के साथ क्रिया–अनुक्रिया करती है जिसके परिणामस्वरूप

वायुमण्डल में अनेक प्रकार की अति सूक्ष्म ऊर्जा तरंगें बनती हैं। यह ऊर्जा हमें अनेक प्रकार से प्रभावित करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप हम सुख, दुख, उत्साह, थकान, परेशानी, उल्लास, क्रोध, शांति तथा आनन्द जैसी स्थितियों का अनुभव करते हैं। ऐसा ऊर्जा–तरंगों के ऋणात्मक (Negative) अथवा धनात्मक (Positive) प्रभावों के कारण होता है। अपने चारों ओर विद्यमान वस्तु–जगत से हम किस प्रकार अधिक से अधिक धनात्मक ऊर्जा प्राप्त करके अपने जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाएं, यह जानना ही वास्तुशास्त्र के अध्ययन का उद्देश्य है। मनुष्य का सबसे ज्यादा समय अपने घर तथा कार्य स्थान पर ही बीतता है, इसलिए वास्तु के अन्तर्गत इन्हीं का अध्ययन किया जाता है।

जीवन का आधार पाँच महातत्त्वों का सम्पूर्ण संतुलन है। हमें सूर्य का प्रकाश भी चाहिए, शुद्ध हवा और शुद्ध जल भी चाहिए। यदि हमारे निवास स्थान पर इनमें से किसी एक की भी कमी है तो हमारा शरीर तथा मन–मस्तिष्क इससे प्रभावित होगा ही और हम स्वस्थ एवं शान्त अनुभव नहीं करेंगे।

सबसे पहले हम सूर्य को लें। उगते हुए सूर्य की किरणों में ऐसे ऊर्जा तत्त्व होते हैं जो अनेक बिमारियों को समाप्त कर सकते हैं। प्रातःकाल स्नान करके गीले बदन पर यदि उगते हुए सूर्य की किरणें पड़ें तो शरीर की प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। इसके लिए यह जरूरी है कि हमारे घर के पूर्व में खुला स्थान हो, इसीलिए वास्तु स्नानघर को पूर्व में बनाने की सलाह देता है।

पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव थोड़ा झुका है और सूर्य के उदय होने की दिशा पूर्व है, इसलिए उत्तर–पूर्व दिशा से विशेष प्रकार की ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (Cosmic energy) का संचरण होता है जो मानसिक शक्ति को बढ़ाती है। इसीलिए घर के ईशान कोण (उत्तर–पूर्व) को खुला रखा जाता है तथा

इसकी सफाई के सम्बन्ध में विशेष निर्देश दिये जाते हैं। इस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का प्रभाव विभिन्न दिशाओं में भिन्न—भिन्न होता है। उसी के अनुरूप वास्तुशास्त्र में शयनकक्ष, रसोईघर, भण्डार गृह तथा शौचालय आदि की स्थिति पर विचार किया जाता है। वास्तु के सिद्धान्तों की अनुपालना से हमारे घर में एक सुखी एवं सुव्यवस्थित जीवन जीने की सभी स्थितियाँ निर्मित हो सकती हैं।

वास्तुशास्त्र में मनुष्य को दक्षिण की ओर पैर न करके सोने की सलाह दी जाती है। हिन्दू धर्म में दाह—संस्कार करते समय शव के पैर दक्षिण की ओर किए जाते है। कुछ धर्मभीरू लोग इसी आधार पर कहते है कि दक्षिण की ओर पैर करके सोने से आयु घटती है। वास्तवकिता यह है कि हमारा सिर पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव तथा पैर दक्षिणी ध्रुव के समान हैं, जिनके बीच का चुम्बकीय—क्षेत्र हमारे रक्त की गति को बनाए रखता है क्योंकि रक्त का मुख्य अवयव लौह—तत्त्व है। यदि सोते समय हमारा सिर उत्तर की ओर होगा तो यह स्वभाविक है कि पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव का प्रभाव हमारे शरीर के चुम्बकीय क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। क्योंकि चुम्बक के परस्पर समान ध्रुव एक—दूसरे को परे धकेलते है। जिसके कारण हमारे हृदय को शरीर में रक्त की गति बनाए रखने के लिए अधिक जोर लगाना पड़ता है। यदि हृदय को आराम नहीं मिलेगा तो इसका परिणाम आयु कम होने के रूप में भी हमारे सामने आ सकता है।

वास्तुशास्त्र प्रकृति के साथ पूरी तरह सामंजस्य बिठाकर जीने का एक साधन है। यह बड़ा सूक्ष्म विज्ञान है जिसका प्रभाव हमारे तन, मन के साथ—साथ हमारे घर की सुख—समृद्धि, कार्य—व्यापार में लाभ—हानि तथा सामाजिक सम्बन्धों पर भी पड़ता है। अंधविश्वास समझकर इसकी अवहेलना नहीं करनी चाहिए, लेकिन इधर—उधर से उपलब्ध धारणाओं को आधार बनाकर या सिर्फ पुस्तकें पढ़कर अपने आवास—स्थान में तोड़—फोड़ भी नहीं करनी चाहिए। हमें यह बात समझ लेनी चाहिए और ऐसे प्रयास अवश्य

करने चाहिएं जिनसे हमारे घर में अधिक से अधिक धनात्मक ऊर्जा प्रवाहित हो सके। वास्तु के सामान्य नियमों का पालन तो हमें करना ही चाहिए और जरूरत पड़ने पर निस्संकोच किसी वास्तु--विशेषज्ञ की सलाह भी लेनी चाहिए। यह बिल्कुल ऐसे है जैसे सामान्यतः हम स्वास्थ्य के नियमों का पालन शरीर की रक्षा के लिए करते ही हैं लेकिन बीमारी की अवस्था में डॉक्टर की सलाह लेते हैं।

वास्तु कोई भ्रम नहीं है यह एक विज्ञान है, इस पुस्तक को पढ़कर आप इस सत्य को भलीभांति जान सकते हैं।

✠✠✠✠

वास्तुपुरुष कौन है ?

WHO IS VAASTU PURUSHA ?
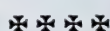
वृहत्त संहिता की कथा –

वास्तुपुरुष को सभी भवनों एवं निर्माण का स्वामी माना गया है। वृहत्त संहिता के 53 वें अध्याय के दूसरे व तीसरे श्लोक में वास्तु–पुरुष के जन्म की कथा का संक्षिप्त वर्णन है।

किमपि किल भूतम्भवद्रुन्धानं रोदसी शरीरेण।
तद्मारगणेन सहसा विनिगृह्यधोमुखं न्यस्तम्।।
यत्र च येन गृहीतं विबुधेनाधिष्ठितः स तत्रैव
तदममयं विधाता वास्तुनरं कल्पयामास ।।

जिसका भावार्थ है –

एक बार एक ऐसा विशालकाय पुरुष अस्तित्व में आया, जिसने अपनी काया के विस्तार से धरती और आकाश दोनों को बाधित कर दिया। धरती की गति रुक गई, आकाश का विस्तार उसकी काया में समाने लगा। सभी देवताओं ने मिलकर उस विशालकाय को काबू में कर लिया और उसे औंधे मुँह पटक दिया। सभी देवता उसके शरीर के विभिन्न अंगों पर आसीन हो गए। वे सभी देवता इन अंगों के अधिष्ठाता कहलाए। इस पुरुष की रचना आदि सृष्टाता ब्रह्मा जी ने की थी। इसे ब्रह्मा ने गृह–देवता अर्थात 'वास्तु–पुरुष' की संज्ञा दी।

मत्स्य पुराण की कथा

वास्तु–पुरुष के उत्पत्ति के विषय में मत्स्य पुराण में बड़ा रोचक वर्णन मिलता है। इसमें वास्तु–पुरुष के जन्म का वर्णन है। अंधकासुर के साथ युद्ध करते हुए जब भगवान शिव थककर चूर हो गए तो उनके शरीर से (पसीने) की नदियां–सी बहने लगी। उनके

पसीने के कणों से एक पुरुष उत्पन्न हुआ। यह पुरुष क्रूर दिखाई देता था। वह बहुत ही भूखा था। उसने भगवान शिव को प्रसन्न करके उनसे वरदान पाने के लिए तपस्या करनी शुरू की। भगवान शिव उसकी तपस्या से प्रसन्न हो गए, उन्होंने उसे दर्शन दिए। उस उपासक ने भगवान शिव से विनयपूर्वक निवेदन किया — "भगवान मैं बहुत भूखा हूँ, कृपया मुझे तीनों लोकों का भक्षक कर लेने का वरदान दीजिए।" भगवान शिव ने उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। भगवान शिव से वरदान पाकर उसने तीनों लोकों पर अपना आधिपत्य जमा लिया। जैसे ही वह भूलोक को खाने के लिए तैयार हुआ। उसे ऐसा करते देखकर स्वर्ग के सभी देवता, ब्रह्मा जी, भगवान शिव तथा पाताललोक वासी दैत्य भी चिन्तित हो उठे। चिन्तित होकर वे सभी उसके चारों ओर एकत्रित हो गए। उन्होंने उस उपासक को चारों ओर से पकड़ लिया और उसे ऐसा करने से रोकने लगे। पैंतालिस देवताओं ने उसे उसके विभिन्न अंगों से पकड़ा और इस प्रकार पकड़ कर वे उसे दबाने लगे। जब देवताओं ने उसे मुंह के बल लिटा दिया तब ब्रह्मा जी ने उस उपासक को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वह समस्त भूमण्डल का स्वामी होगा। वह गृह—स्वामी कहलाएगा भवनों का निर्माण करके उसकी पूजा की जाएगी। इस प्रकार भवन निर्माण करने वाला व्यक्ति वास्तुपुरुष की पूजा करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करेगा, बदले में वास्तुपुरुष उस घर में रहने वाले प्राणियों की रक्षा करेगा।

वास्तु—पुरुष के तीन रूप —

वास्तु—पुरुष सभी निर्माणों तथा भवन के अधिष्ठाता देव हैं। प्रत्येक भूखण्ड में उनकी उपस्थिति है। वास्तु—पुरुष की भंगिमाओं एवं स्थिति के अनुसार तीन रूप या अवस्थाएं मानी गई हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है —

(i) **नित्य—वास्तु** (प्रतिदिन की अवस्था) — वास्तु—पुरुष की स्थिति हर तीन घंन्टे बाद बदल जाती है। रात्रि में वास्तुपुरुष सोए रहते हैं। दिन के पहले तीन घन्टे में उनका मुख पूर्व की ओर रहता है,

अगले तीन घन्टे तक उनका मुख दक्षिण की ओर होता है, अगले तीन घन्टों में पश्चिम की ओर तथा दिन के अन्तिम तीन घन्टों में उनका मुख उत्तर की ओर होता है। वास्तुशास्त्र में वास्तुपुरुष की पूर्वाभिमुखी स्थिति (पूर्व की ओर मुख किए हुए) को बड़ा महत्त्वपूर्ण माना गया हैं।

(ii) **स्थित–वास्तु** (अचल अवस्था) – इस अवस्था में वास्तु–पुरुष सदा ईषानाभिमुखी होते हैं अर्थात उनका मुख ईशान (उत्तर–पूर्व दिशा) में रहता है तथा उनके चरण दक्षिण–पश्चिम दिशा में होते है। उनका दायाँ हाथ दक्षिण–पूर्व दिशा में तथा बायाँ हाथ उत्तर–पूर्व में होता है। उनका मुख नीचे की ओर होता है तथा उनका बायाँ हाथ सिर के नीचे सिरहाने की तरह रहता है। जब वास्तुपुरुष जागते हैं तो वे पीठ के बल लेटते हैं। इस अवस्था में उनका बायाँ हाथ दक्षिण–पूर्व दिशा) में तथा दायाँ हाथ ईशान (उत्तर–पूर्व दिशा) में रहता है। वास्तुपुरुष प्रायः निंद्रावस्था में ही रहते हैं।

(iii) **चर–वास्तु** (गतिमान–अवस्था) – हर तीन माह बाद वास्तु–पुरुष की गति की दिशा में भी परिवर्तन आता है। अर्थात वे करवट लेते हैं। वे बांई ओर करवट बदलते हैं।

निर्माण कार्य –

भवन–निर्माण के लिए खुदाई का काम शुरु करते समय, नींव रखते समय, मुख्य प्रवेश द्वार की चौखट या गेट लगाते समय इस बात पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए कि कार्य को उस दिशा से शुरु करना चाहिएं जिस दिशा में उस समय वास्तुपुरुष की दृष्टि हो। गृह–प्रवेश का समय भी ऐसा ही चुना जाना चाहिए जब वास्तुपुरुष की दृष्टि भवन के मुख्य द्वार से विपरीत दिशा में हो।

ऐसी मान्यता है कि वास्तुपुरुष प्रायः निद्रामग्न रहते हैं और वर्ष के अन्तराल मे केवल निश्चित मुहूर्त पर ही जागते हैं। जिस समय वास्तुपुरुष निद्रामग्न हो, उस समय निर्माण शुरू नही करवाना चाहिएं,

न ही भवन का मुख्य द्वार बनवाना चाहिए या मुख्य प्रवेश पर दरवाजे लगवाने का कार्य करना चाहिए। ऐसा माना जाता है कि ज्येष्ठ (मई—जून), अश्विन (सितम्बर—अक्तूबर), मार्गशीर्ष (नवम्बर—दिसम्बर) तथा पौष (दिसम्बर—जनवरी) माह के दौरान वास्तुपुरुष निद्रामग्न रहते हैं।

'वास्तुपुरुष का चित्र'

3 विभिन्न शक्तियाँ और उनके प्रभाव

EFFECTS OF VARIOUS FORCES
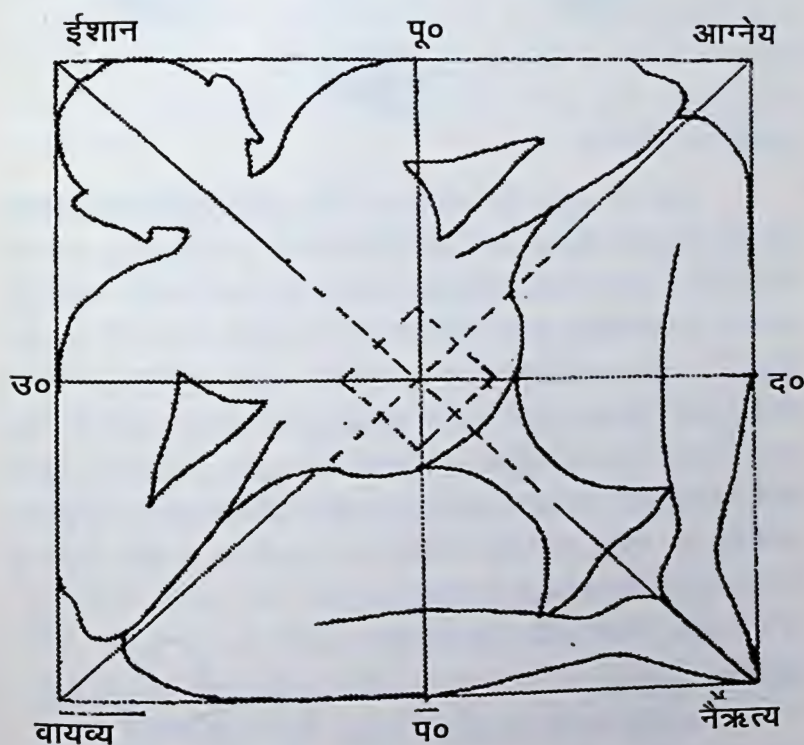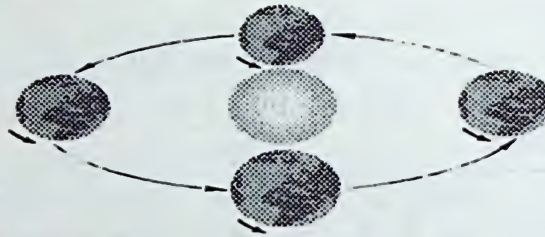
प्रकृति व पर्यावरण –

पृथ्वी पर मनुष्य का अस्तित्व विभिन्न दैवी (प्राकृतिक) शक्तियों के सामंजस्य एवं संतुलन के बीच ही विद्यमान है। ये प्राकृतिक शक्तियाँ हमारे जीवन के हर पक्ष को कई प्रकार से प्रभावित करती हैं। इन प्राकृतिक शक्तियों को संचालित करने वाले नियमों से हमारा जीवन भी प्रभावित होता है। जब हम किसी भवन का निर्माण करते हैं, तो हम अपने आस–पास विद्यमान खाली स्थान (Space) को बाधित करते हैं। इस प्रकार जब हम एक प्राकृतिक तत्त्व 'शक्ति' के स्वरूप में किसी न किसी प्रकार के परिवर्तन का कारण बनते हैं, तो यह सम्भव ही नहीं कि प्राकृतिक शक्तियों का प्रभाव हम पर न पड़े। यह निश्चित है कि भवन के प्रयोगकर्त्ताओं (निवासियों) के जीवन पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा।

गतिशील ब्रह्माण्ड –

वास्तुशास्त्र की मान्यता है कि कुछ भी निर्जीव नहीं अर्थात, हर तत्त्व मे कहीं न कहीं जीवन और संवेदना विद्यमान है। यह मान्यता आज के वैज्ञानिक अनुसंधानों द्वारा भली–भांति स्थापित की जा चुकी
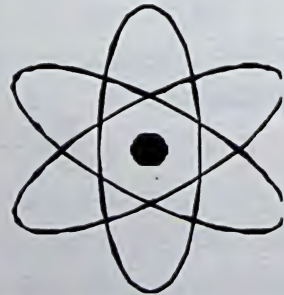
है कि प्रत्येक पदार्थ परमाणुओं से बना है परमाणु का निर्माण इलेक्ट्रान, प्रोट्रॉन व न्यूट्रॉन से होता है। इनमें से दो तत्त्व गतिशील हैं। यह गति जीवन और संवेदन की द्योतक है।

पाँच मूल तत्त्वों का सामंजस्य –

महाभारत में कहा गया है कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चीज का निर्माण पाँच मूल तत्वों से हुआ है। ये पाँच तत्त्व हैं – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं अंतरिक्ष वास्तुशास्त्र के सिद्धांत भी मूलतः इन पाँच अनिवार्य तत्त्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं अंतरिक्ष; के परस्पर अनुपात तथा संतुलन पर ही आधारित है। यदि इन तत्त्वों के बीच उचित सामंजस्य स्थापित करके भवन का निर्माण किया जाए तो यह निश्चित है कि इसके परिणाम अच्छे होंगे।

वास्तु एक विज्ञान –

वास्तुशास्त्र एक विज्ञान है, जिसकी खोज हमारे पूर्वजों ने मानव–जीवन को सुखी, समृद्ध एवं सुविधा–सम्पन्न बनाने के उद्देश्य से की थी। हमारे पूर्वजों ने मानव शरीर तथा आवास पर पर्यावरण के विभिन्न प्रभावों का अध्ययन करके कुछ निष्कर्ष निकाले थे। इन सिद्धांतों को श्लोकों, सूत्रों एवं मन्त्रों के रूप में विभिन्न ग्रन्थों में लिपिबद्ध किया गया। इन्हीं सूत्रों एवं श्लोकों के सार–सग्राहित रूप को वास्तुशास्त्र का नाम दिया जा सकता है। विभिन्न प्राकृतिक नियमों एवं उनके मानव–शरीर तथा जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को जानकर, उनके अनुरूप भवनों का निर्माण किया जाना चाहिए। वास्तुशास्त्र इन प्रभावों व सिद्धांतों को हमारे सामने सूत्र (Codified) रूप में रखता है। हमारे पूर्वजों ने विभिन्न शोधों एवं प्रयोगों के आधार पर यह जान लिया था कि मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच एक ऐसा अन्तर्सम्बंध है, जो उसके व्यवहार तथा विभिन्न गतिविधियों को प्रभावित करता है।

अदृश्य शक्तियां –

हमारे चारों ओर पर्यावरण अथवा वायुमण्डल के रूप में स्थित बहुत सी प्राकृतिक शक्तियों हर दिशा, हर कोण से हमें प्रतिक्षण प्रभावित

करती रहती हैं। इनमें से कुछ शक्तियॉ प्रत्यक्ष हैं, तो बहुत सी अप्रत्यक्ष; कुछ को हम देख सकते है, पर बहुत सारी शक्तियों को देखा नहीं जा सकता। विज्ञान की भाषा में इन शक्तियों को ऊर्जा (Energy) कहा जा सकता है। मानव जीवन को प्रभावित करने वाली मुख्य वायुमण्डलीय शक्तियां हैं –

- सूर्य ऊर्जा
- चन्द्र ऊर्जा
- चुम्बकीय ऊर्जा
- गुरुत्वाकर्षण ऊर्जा
- परमाणु ऊर्जा
- अग्नि ऊर्जा
- वायु ऊर्जा
- विद्युत–चुम्बकीय ऊर्जा
- विद्युत ऊर्जा
- प्रकाश ऊर्जा
- ध्वनि ऊर्जा

सूर्य का प्रभाव –

वास्तुशास्त्र के सर्वप्रमुख सिद्धान्त का आधार सूर्य है।सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक सूर्य के प्रकाश की दिशा एवं तीव्रता में परिवर्तन आता रहता है। वास्तु–शास्त्र का विश्वास है कि उदय होते हुए सूर्य की किरणों का स्पर्श घर के जलभण्डार को मिलना चाहिए। इन किरणों और जल–भण्डार के बीच किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। सूर्य तथा अन्य ग्रहों से आने वाली किरणें मानव शरीर पर जैव–रासायनिक (Bio-Chemical) प्रभाव उत्पन्न करती हैं।
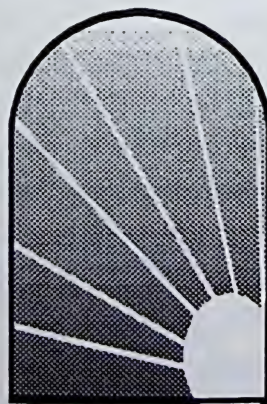
सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं, यद्यपि यह एक आधुनिक वैज्ञानिक सत्य माना गया है, लेकिन हमारे पूर्वजों ने इसका पता हजारों वर्ष पूर्व ही लगा लिया था। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने सूर्य–क़िरणों के विभिन्न प्रभावों का अध्ययन किया था। इन प्रभावों का उल्लेख उन्होंने अपने ग्रन्थों में किया है। आधुनिक विज्ञान ने सूर्य के प्रकाश में सम्मिलित विभिन्न रंगों की व्याख्या जिस प्रकार सूत्र रूप में (VIBGYOR= Violet, Indigo, Blue, Green, Yellow, Orange, Red) उसी प्रकार प्राचीन ग्रन्थों में इन रंगों के नाम प्रज्ञ, कश्यप, महेन्द्र, सूर्य, सत्य, वृहस तथा नभ हैं। ये नाम रंगों के विशेष गुणों के परिचायक हैं। सूर्य के रूप में जिन सात घोड़ों का रूपक वर्णन इन ग्रन्थों में है, वे रंग प्रकाश के सात रंगों का परिचायक है। सूर्य के प्रकाश में विद्यमान ये सात रंग पृथ्वी पर अपना भिन्न–भिन्न प्रभाव छोड़ते हैं।

- सूर्य के प्रकाश में मुख्य रूप से दो प्रकार की प्रकाश किरणें मिलती हैं — पराबैंगनी (Ultra-Violet) तथा अवरक्त (Infra-red)। बैंगनी रंग में, (जो वर्णक्रम में सबसे ऊपर का रंग है) पराबैंगनी किरणों की अधिकता पाई जाती है। सूर्य किरणें वायु–मण्डल को गर्म करने के अतिरिक्त और भी कई कार्य करती हैं। सूर्य का प्रकाश व्यक्ति की मनःस्थिति पर तो प्रभाव डालता ही है, उसकी काम–ग्रन्थियों को भी प्रभावित करता है। सूर्य का प्रकाश हमारे शरीर में विटामिन–डी का निर्माण करता है, जो कि एक आवश्यक पोषक तत्त्व है। सूर्य के प्रकाश से वायुमण्डल में विद्यमान बहुत से रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।

- मनुष्य के शरीर तथा उसके आवास पर सूर्य का प्रभाव कुछ अधिक ही पड़ता है। दिन के समय यह प्रभाव अधिक तीव्र होता है। सूर्यास्त के पश्चात अन्य अंतरिक्ष–पिण्डों, ग्रह, नक्षत्र आदि की खगोलीय शक्ति (गुरुत्वाकर्षण बल) बढ़ जाती है। सूर्य के उदय होने की दिशा बदलती रहती है। 21 जून से 21 दिसम्बर तक प्राची–स्थल (सूर्य के उदय होने का अंतरिक्ष बिन्दु) दक्षिण

की ओर तथा 21 दिसम्बर से 20 जून तक उत्तर की ओर बढ़ता है। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप रात और दिन की अवधि में अन्तर आता है। 22 दिसम्बर से 21 जून तक (उत्तरी गोलार्द्ध में) दिन लम्बे होने लगते हैं, 21 जून को सबसे लम्बा दिन होता है। इसी प्रकार 22 जून से 21 दिसम्बर तक दिन की लम्बाई कम होने लगती है। 22 दिसम्बर सबसे छोटा दिन होता है। 23 मार्च व 23 सितम्बर को दिन—रात बराबर होते हैं। इस परिवर्तन काल में सूर्य का प्रकाश भी कम—अधिक होता रहता है।

अंतरिक्ष में घूमते ग्रहों का प्रभाव –

सूर्य के नौ ग्रह अपनी—अपनी धूरी पर घूमते हुए सूर्य के चारों ओर एक निश्चित अण्डाकार मार्ग में चक्कर लगाते हैं। इस मार्ग को ग्रहों की कक्षा कहा जाता है। ग्रहों का अपना प्रकाश नहीं होता, वे सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करते हैं, जिसके कारण वे चमकते हुए नज़र आते हैं। इन ग्रहों की परिक्रमा के मार्ग इस प्रकार व्यवस्थित है कि वे सूर्य के साथ संकेद्रित (Concentric) हैं। अर्थात सूर्य के केन्द्र तथा ग्रहों के केन्द्र के बीच एक निश्चित दूरी बनी रहती है। अंतरिक्ष में घूमते इन ग्रहों पर दो प्रकार के बल कार्य करते हैं। एक तो सूर्य का गुरूत्वाकर्षण बल, जो ग्रह—पिण्डों को अपनी ओर खींचता है, दूसरा ग्रहों की अपनी धूरी पर तेज गति से घूमने के कारण उत्पन्न होने वाला विक्रेन्द्रीकरण बल (Centrefugal force) है जो उसे उस स्थान से परे धकेलता है। इस प्रकार ये दो परस्पर विरोधी बल एक दूसरे का अवरोध करते हैं जिसके परिणामस्वरुप ग्रह अपनी कक्षा में ही स्थापित रहते हैं।

नौ प्रमुख ग्रहों के अतिरिक्त सौर—परिवार में लगभग 5 लाख क्षुद्र ('छोटे—छोटे') पिण्ड भी सम्मिलित है। इन क्षुद्र पिण्डों की कक्षाएं भी एक दूसरे के साथ इस प्रकार सम्बद्ध हैं कि उनके तथा सूर्य के बीच एक निश्चित दूरी सदैव बनी रहती है। अपने विस्थापन बल तथा सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल के बीच एक अन्तर्सन्तुलन के परिणामस्वरूप वे अपने मार्ग से भटकते नहीं और सूर्य का चक्कर लगाते रहते हैं।

पृथ्वी पर जीवन विकास –

पृथ्वी आकार में वृहस्पति या शनि जितनी बड़ी तो नही है, फिर भी इस पर जीवन के विकास की सभी स्थितियां विद्यमान हैं। अन्य किसी ग्रह पर जीवन के अस्तित्व में सहायक स्थितियां उपलब्ध नहीं हैं। जबकि पृथ्वी पर जीवन अपने विकास की सम्पूर्ण सम्भावनाओं के साथ विद्यमान है। इसका कारण यह है कि हमारे सूर्य मण्डल में पृथ्वी ही ऐसी स्थिति में है, जहां जीवन के विकास की सभी स्थितियां अपनी प्रचुरता के साथ उपलब्ध हैं। जीवन के विकास में सहायक ये स्थितियॉ हैं जल, अग्नि, सूर्य का प्रकाश, वायु आदि।

ध्रुवों का प्रभाव –

पृथ्वी के दो ध्रुव हैं। उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव इन ध्रुवों में चुम्बकीय गुण पाएं जाते हैं। चुम्बकीय शक्ति का प्रवाह उत्तर से दक्षिण की ओर होता है। इसलिए परस्पर विपरीत ध्रुव एक दूसरे को खींचते हैं, जबकि परस्पर समान ध्रुव एक दूसरे से दूर हटते हैं। मनुष्य के सिर को उत्तरी ध्रुव तथा पैरों को दक्षिणी ध्रुव माना जा सकता है। इसलिए हमारा रक्त, जिसका मुख्य अंश लौह तत्त्व (हीमोग्लोबिन) से निर्मित होता है, सिर से पांव की ओर गति करता है। यह पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति का प्रत्यक्ष प्रभाव है, जो स्थान और दिशा के अनुसार बदलता रहता है।

रात और दिन का बनना –

पृथ्वी अपनी धूरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। यही कारण है कि सभी खगोलीय पिण्ड हमें पूर्व से पश्चिम की ओर घूमते दिखाई पड़ते हैं। प्रत्यक्षतः सूर्य हमें पूर्व से उदय होता तथा पश्चिम में अस्त होता दिखाई पड़ता है। पृथ्वी के घूमने के कारण ही भूतल के विभिन्न भागों में बारी–बारी दिन–रात बनते है। इसे पृथ्वी का परिभ्रमण कहा जाता है।

समुद्र पर प्रभाव –

सूर्य तथा चांद के आकर्षण बल के कारण समुद्र के तल पर जल–स्तर घटता–बढ़ता रहता है। समुद्र के जल की भांति मनुष्य के शरीर पर विद्यमान जल में भी विभिन्न लवण विद्यमान हैं। यह तो रोचक तथ्य है ही कि पृथ्वी पर जो अनुपात भूतल तथा जल सतह में है, वही अनुपात मनुष्य के शरीर में जल व ठोस तत्व में है; सागर के जल में जिस अनुपात में विभिन्न लवण विद्यमान हैं, वही अनुपात मनुष्य के शरीर में विभिन्न लवणों का भी है।

समुद्र में नियमित रूप से प्रतिदिन दो बार ज्वार भाटे की उत्पत्ति का कारण पृथ्वी की गति ही है। ज्वार की गति पश्चिमाभिमुखी होने का कारण पृथ्वी की गति व दिशा के परिप्रेक्ष्य में ठीक–ठीक समझा जा सकता है।

ईशान (उत्तर–पूर्व) का महत्त्व –

पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने के कारण दिन और रात बनते हैं, लेकिन क्योंकि पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी हुई है, इस कारण दिन और रात छोटे–बड़े होते है तथा ऋतुओं में परिवर्तन होता है। पृथ्वी अपनी कक्षा के तल पर 66½ अंश का कोण बनाती है। पृथ्वी के इस झुकाव को लम्बवत् नापा जाए तो यह अपने लम्ब शीर्ष से 23½ अंश का कोण बनाती है। सूर्य के चारों और परिक्रमा करते हुए पृथ्वी का अपनी कक्षा तल पर यह कोण एक समान ही रहता है। अर्थात पृथ्वी की धूरी की दिशा हमेशा एक ही रहती है। इस मूलभूत सिद्धांत को 'पृथ्वी की धूरी के समानान्तरण का सिद्धांत' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में इसे 'पृथ्वी के झुकाव का सिद्धांत' भी कहा जाता है। क्योंकि पृथ्वी का यह झुकाव उत्तर दिशा में है, इसलिए वास्तुशास्त्र की दृष्टि से ईशान (उत्तर–पूर्व दिशा) का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है, क्योंकि इस दिशा में झुकाव के कारण पृथ्वी के उत्तर–पूर्व भाग को प्रचुर मात्रा में खगोलीय ऊर्जा (Cosmic Energy) की प्राप्ति होती है।

जीवन पर प्रभाव — विभिन्न ग्रह मनुष्य के शरीर तथा जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव डालते हैं, इसका वर्णन इस श्लोक में मिलता है —

आरोग्यम् प्रददातु नो दिनकरः चन्द्रो यशो निमर्लम्
भूतिं भूमिसुतः सुधांशुतनयः प्रज्ञां गुरुगौरवम् ।
कान्यः कोमलवाग्विलासतुलम् मन्दो मुदं सर्वदा,
राहुबार्हुबलम् विरोध शमनम केतुः कुलस्योत्रातिम् ।।

अर्थात सूर्य देव आरोग्य (स्वास्थ्य) प्रदान करते हैं, चन्द्र की कृपा से निर्मल कीर्ति की प्राप्ति होती है। मंगल विभूति अर्थात प्रभाव को बढ़ाता है, बुध ज्ञान और शुद्ध आचरण का दाता है। गुरु (वृहस्पति) गौरव तथा सम्मान का दाता है। शुक्र वृक्तता (भाषण कला) का दाता है, शनि प्रसन्नता, राहु निर्विवाद अधिकार तथा केतू सम्पूर्ण कुल को समृद्धि देने वाला है।

मनुष्य अनादि काल से शांति संमृद्धि, सुख की इच्छा तथा अग्नि, वायु, वर्षा आदि प्राकृतिक प्रकोपों से रक्षा के प्रयत्न करता रहा है। वास्तुशास्त्र की खोज भी एक प्रकार से उसकी इस इच्छा का परिणाम ही था।

सूर्य की ऊर्जा पृथ्वी को विकिरण के द्वारा प्राप्त होती है। सौर ऊर्जा प्राप्त करके पृथ्वी का तल गर्म हो जाता है और पृथ्वी इस उष्मा को पुनः वायुमण्डल को लौटा देती है। सूर्य से जो उष्मा पृथ्वी को मिलती है, उसका प्रवाह तो सूर्यास्त के साथ ही समाप्त हो जाता है, लेकिन पृथ्वी से जो उष्मा वायुमण्डल की ओर जाती है, उसका प्रवाह दिन—रात जारी रहता है। रातें प्रायः दिन से ठण्डी होती हैं, इसका कारण यही है कि दिन में जो सौर ऊर्जा भूतल को मिलती है, उसका प्रवाह रात को रुक जाता है, लेकिन पृथ्वी के तल से उष्मा वायुमण्डल में रात को भी प्रभावित होती रहती है। वायुमण्डल मुख्यतः नीचे तल से गर्म होना शुरू होता है। क्योंकि वायु की निचली

तहें पृथ्वी के सम्पर्क में रहती हैं। वायुमण्डल में कार्बन–डाईआक्साइड (CO_2) की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है, जिसके कारण उष्मा का सन्तुलन प्रभावित हो रहा है। जिसका सीधा प्रभाव मौसम और जलवायु पर पड़ता है। किसी स्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक हैं – सूर्य की किरणों का कोण, बादलों का घनत्व, वायु की दिशा, वायुमण्डलीय दाब, ताप, आर्द्रता मौसम के प्रत्यक्ष प्रभावकारी तत्त्व हैं – कोहरा, धुंध तथा ओस।

बढ़ते प्रदूषण में वास्तु का महत्त्व –

पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। इस बढ़ते प्रदूषण के लिए मानव स्वयं जिम्मेवार है। बढ़ते प्रदूषण के कारण जलवायु में अनिष्टकारी परिवर्तन हो रहे हैं। भूतल का औसत तापमान बढ़ रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका के National Oceanic and Atmospheric Administration (NOAA) से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 1998 का पूर्वार्द्ध ज्ञात इतिहास में सबसे अधिक गर्मी का वर्ष रहा है। इसका कारण यही है कि बढ़ती CO_2 के कारण भूतल का तापक्रम बढ़ रहा है। ऐसे माहौल में वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन ज्यादा प्रभावकारी प्रतीत होता है। इन नियमों की अनुपालना से ही पृथ्वी पर प्राणियों की रक्षा कर पाना सम्भव प्रतीत होता है। हमें प्रतिदिन बढ़ती जा रही CO_2 को रोकना होगा तथा अन्य वायुमण्डलीय गैसों के प्रभाव को समाप्त करके अपने उस प्राकृतिक जीवन–कवच की रक्षा करनी होगी; जिसे ओज़ोन–परत कहते हैं। प्राकृतिक नियमों का पालन करने से ही जीवन की रक्षा सम्भव है।

वास्तु प्रभाव का वैज्ञानिक मापन –

पाठकों के लिए यह जानना रुचिकर होगा कि हम वास्तु के अन्तर्गत जिस लाभकारी (Positive) ऊर्जा की चर्चा हम करते आ रहे हैं, वह कोई कल्पना मात्र नहीं बल्कि ठोस सत्य है। यदि चाहें तो हम किसी भी स्थान के वास्तु–प्रभाव का मापन कर सकते हैं।

वास्तु–प्रभाव अथवा ऊर्जा के मापन का आधार विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइनस्टीन (Einstein) का सूत्र ही है।

आइन्सटीन ने बताया है — $e = mc^2$

जिसके अनुसार किसी पदार्थ का आणविक विखण्डन करने पर उसमें से असीम (पदार्थ की मात्रा x प्रकाश की गति के बराबर) ऊर्जा प्राप्त होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि ऊर्जा एवं पदार्थ एक ही वस्तु के दो रूप (तत्त्व) हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि यह संसार ऊर्जा का एक महाभण्डार है, जिसके हम एक छोटे से अंश हैं। हमारे चारों ओर अनन्त ऊर्जा अनेक रूपों में विद्यमान है। इस ऊर्जा का उपयोग अपने हित साधन के रूप में करने की विधि को जानना ही वास्तुशास्त्र का उद्देश्य है। यदि आप चाहे तो अपने आस–पास उपलब्ध वस्तुओं/साधनों की वास्तु ऊर्जा का मापन कर सकते हैं —

यह तो आप जानते ही हैं कि ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती, यह ब्रह्माण्ड (अथवा वायुमण्डल) में ही घूमती रहती है। दो प्रकार की ऊर्जाएं मनुष्य के चारों ओर एक 'शक्ति क्षेत्र' का निर्माण करती हैं। ये ऊर्जाएँ हैं — चुम्बकीय ऊर्जा (Megnatic Energy) तथा विद्युत ऊर्जा (Electric field)। वास्तु के वैज्ञानिक अनुसंधान में यह तथ्य प्रकट हुआ है कि ये दोनों ऊर्जाएँ मिलकर एक तीसरा क्षेत्र बनाती हैं जिसे Electro-Megnatic field कहा जाता है। हमारे शरीर के चारों ओर एक प्रभामण्डल (aura) विद्यमान रहता है (जिसे हम देवी–देवताओं के सिर के पीछे प्रकाश–पुंज के रूप में देखते हैं) यह प्रभामण्डल प्रत्येक मनुष्य के चारों ओर होता है। लेकिन इसे हम देख नहीं पाते, केवल अनुभव कर सकते हैं। शायद आपने भी कभी अनुभव किया हो कि किसी विशेष क्षेत्र में साधना करने वाले व्यक्ति के चेहरे पर एक प्रकार का तेज़–सा रहता है। कुछ लोग इस प्रभामण्डल को प्रत्यक्षतः देख भी लेते हैं। यह उसके अत्यधिक प्रभावशाली शक्ति चक्र (strong aura) के कारण होता है। इसे वैज्ञानिक विधियों से मापा भी जा सकता है तथा इसकी फोटो भी ली जा सकती है।

पदार्थ ऊर्जा का संगठित रूप है। हर व्यक्ति, हर स्थान तथा हर वस्तु, जैसे बैडरूम, किचन, पूजाघर, विभिन्न संवेगों (Vibration frequency) को प्रवाहित करते हैं, जो हमें मानसिक एवं शारीरिक रूप से प्रभावित करते हैं। इसी कारण से हम मन्दिर, या विशेष स्थान पर मानसिक शान्ति का अनुभव करते हैं क्योंकि इन वस्तुओं के शुभ प्रभाव से हमारी निजी ऊर्जा (जीवन शक्ति) बढ़ जाती है।

अब हम आपके सामने वास्तु–प्रभाव का सीधा सम्बंध रख रहे हैं। हर भवन की अपनी एक ऊर्जा होती है। हमारा शरीर भी ऊर्जा का एक पुंज ही है। यदि किसी भवन की ऊर्जा हमारे शरीर की ऊर्जा से अधिक है तो वह हमें अपनी ऊर्जा प्रदान करेगी और हम शांत एवं स्वस्थ अनुभव करेंगे। यदि भवन की ऊर्जा कम है (वास्तुदोष के कारण) तो वह हमसे ऊर्जा खींचेगी जिसके कारण हम अशान्त एवं अस्वस्थ अनुभव करेगें। अतः हमारे लिए जरूरी हो जाता है, कि हम अपने घरों की ब्रह्माण्डीय ऊर्जा (Cosmic energy) या वास्तु ऊर्जा को बढ़ाएं।

लेखक ने अपने परीक्षणों के दौरान कई भवनों की वास्तु ऊर्जा को मापा है। ऐसे घर जिनकी वास्तु ऊर्जा (विशेषतः बैडरूम व कीचन की) कम थी, वे लोग बीमार मिले, जबकि बीमारी का कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं मिल पा रहा था। व जिन घरों में वास्तु ऊर्जा पर्याप्त या अधिक थी, वे लोग प्रसन्नचित्त व स्वस्थ मिले। यहां उल्लेखनीय है कि वास्तु ऊर्जा उन्हीं घरों में अधिक मिली जो वास्तु के सिद्धान्तों के अनुरूप बने हुए थे व उनकी सज्जा और आन्तरिक व्यवस्था भी वास्तु के अनुरूप ही थी।

जो तत्त्व हमारे घरों की आन्तरिक वास्तु–ऊर्जा को प्रभावित करते हैं, वे हैं –

1. घर में फर्नीचर व दीवारों पर तस्वीरों आदि की स्थिति।
2. दीवारों, पर्दों व चदरों आदि के रंग।
3. पानी के भण्डार की व्यवस्था।

4. घर के भीतर व बाहर फूलों वाले या सजावटी पौधे अथवा बगीचा इत्यादि।

5. घर के आसपास का वातावरण।

6. भवन की दिशा एवं निर्माण का शिल्प।

ध्यान दें कि घर के आसपास का वातावरण घर में रहने वाले प्राणियों की मानसिक तथा शारीरिक अवस्था को बहुत प्रभावित करता है। पर्यावरण विज्ञान के अर्न्तगत हम जिस पारिस्थितिकी (Ecology) का अध्ययन करते हैं वह भी एक प्रकार से वास्तु का ही अध्ययन है। जो अंतरिक्ष (Space) पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है वह चाय के प्याले में भी है। इसी प्रकार वैसे तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ही वास्तु के अध्ययन का विषय माना जा सकता है, लेकिन व्यवहारिक रूप से वास्तु के अर्न्तगत घर, दुकान, फैक्टरी या दफ्तर इत्यादि के विषय में भी अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का उद्‌देश्य मानव जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाना है। ब्रह्माण्ड में अनेक शक्तियाँ विचरण करती हैं जो हमारे लिए शुभ भी हैं और अशुभ भी। वास्तुशास्त्र का उद्‌देश्य इन्हीं शुभ शक्तियों के साथ अनुकुलता स्थापित करके सुखी, समृद्ध एवं स्वस्थ जीवन की नींव रखना ही है।

4 वास्तुशास्त्र का व्यवहारिक प्रयोग

APPLICATION OF VAASTU SHASTRA

व्यवहारिक जीवन में वास्तुशास्त्र का बहुत महत्त्व है। किसी मकान या प्लाट को खरीदते समय वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को ध्यान में रखना बहुत लाभकारी रहता है। भवन का आकार मनुष्य के जीवन पर किस प्रकार प्रभाव डाल सकता है, इसका जीता–जागता प्रमाण है — मिश्र के पिरामिड।[1] वास्तु का प्रभाव सार्वभौमिक है। संसार में कहीं भी वास्तु के नियम सत्य सिद्ध होते हैं। इनका प्रभाव इतना व्यापक है कि ये बहुत सारे रोगों के इलाज में सहायक होते हैं।

वास्तु सम्बन्ध –

आज के युग में पर्यावरण की ओर अधिक से अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, क्योंकि वायु, जल तथा भूमि–प्रदूषण के कारण जीवन स्थितियां बदतर होती जा रही हैं। आज यद्यपि मनुष्य के पास भौतिक सुख–साधन बढ़ गए हैं, बहुत कम मेहनत करके वह अपने कार्य को पूरा कर लेता है। दैनिक जीवन के आवश्यक कार्यो में भी नाम मात्र का ही श्रम करना पड़ता है, तो भी उसका जीवन तनाव और असंतोष से पूर्ण है। इसका कारण क्या है? निश्चय ही हम शास्त्रोक्त ढंग से जीवन–यापन नहीं कर रहे हैं। ऐसे में वास्तुशास्त्र की उपयोगिता बढ़ जाती है क्योंकि वास्तुशास्त्र हमें पाँचों मौलिक तत्त्वों (पंच महाभूत) से सामंजस्य बनाते हुए जीना सीखाता है। वास्तुशास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों को बड़ी आसानी से आधुनिक जीवन के अनुरूप ढालकर उपयोग में लाया जा सकता है। यद्यपि 'वास्तु' एक अति प्राचीन विद्या है, तो भी आधुनिक युग में इसकी अनुरूपता एवं उपयोग सम्भव

[1] *पिरामिड पर एक पूर्ण अध्याय भी आगे दिया गया है।*

है, क्योंकि मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं हर युग में एक–सी ही रही हैं, वास्तु का सम्बन्ध मनुष्य की हर आवश्यकता–आवास से है। आज के युग में जब हमें शांति और आत्मिक शक्ति की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है, वास्तु का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

संतुलन स्थापना –

किसी मकान में रहने वाले लोगों की भलाई इसी में है कि उस भवन का निर्माण प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य (तालमेल बिठाते हुए) किया गया हो। मकान बनाते समय वास्तुशास्त्र के साधारण मूलभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखना आवश्यक है ताकि उस मकान के उपयोगकर्त्ताओं (निवासियों) को स्वास्थ्य, समृद्धि एवं प्रसन्नता की प्राप्ति हो। वास्तु विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों के बीच संतुलन स्थापित करता है जैसे कि सूर्य के चुम्बकीय विकिरण (Magnetic rediation) के दुष्प्रभावों को वास्तुशास्त्र की सहायता से दूर किया जा सकता है।

वास्तु दोष –

वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों की अवहेलना करने पर इसके गम्भीर परिणाम होते हैं। भवन के उपयोगकर्ताओं (निवासियों) के स्वास्थ्य पर तो इसका बुरा प्रभाव पड़ता ही है, उनके जीवन में विविध प्रकार के क्लेश, असफलताएं, मन–मुटाव तथा परस्पर झगड़ों आदि का प्रकोप भी होने लगता है। वास्तुशास्त्र के नियमों के प्रतिकूल बनाए गए भवनों में रहने वालों का जीवन तनाव, चिन्ता तथा समस्याओं से घिरा रहता है। यदि किसी को अपने प्रयत्नों के अनुरूप सफलता न मिल रही हो, जीवन में अकारण समस्याएं तथा तनाव हो तो हो सकता है कि कही 'वास्तु–दोष' है। वास्तु के माध्यम से जीवन के हर क्षेत्र में सफलता

और समृद्धि प्राप्त की जा सकती है। चाहे वह घरेलू जीवन हो, नौकरी या व्यवसाय वास्तुशास्त्र हमें किसी घर में उपलब्ध स्थान का प्रयोग प्राकृतिक शाक्तियों के पूर्ण सामंजस्य के अनुरूप करके आध्यात्मिक संतुष्टि प्रदान करने का मार्ग दिखाता है।

यदि किसी व्यक्ति के सितारे (भाग्य—नक्षत्र) उसके हक मे हों, तो वास्तु—दोष का प्रभाव इतना तीव्र और तुरन्त नही होता। किसी मकान में रहने वालों पर इसका प्रभाव भिन्न—भिन्न लोगों पर भिन्न—भिन्न मात्रा में पड़ता है। इन प्रभावों के पीछे कई कारण होते हैं। सीधे—सीधे किसी एक कारण को उत्तरदायी ठहराना अनुचित ही होगा।

दैनिक जीवन के अनुभवों से यह प्रमाणित होता है कि वास्तु का प्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य, सुख—साधनों, धन—सम्पति और मानसिक शान्ति पर पड़ता है, क्योंकि वास्तु का सीधा प्रभाव व्यक्ति के मन—मस्तिष्क पर पड़ता है। व्यक्ति का मन मस्तिष्क यदि उचित तालमेल में हो तो व्यक्ति सही समय पर सही निर्णय लेने में सक्षम होता है। सही समय पर सही निर्णय लेने से सफलता मिलती है। अपने कामों में सफलता प्राप्त करने वाला व्यक्ति सुख और समृद्धि की प्राप्ति करता है।

वास्तु अनुभव –

जब हम किसी भवन में प्रवेश करते हैं तो हमारी श्वास—गति में परिवर्तन आ जाता है। यदि हमारी श्वास गति समान्य और तनाव मुक्त रहती है तो उस भवन के शुभ होने का संकेत है, यदि श्वास गति बढ़ जाए तो इसका अभिप्राय है कि उस भवन के निर्माण में कहीं कोई 'वास्तु दोष' है।

विश्वकर्मा विरचित वास्तुशास्त्र से सम्बन्धित एक श्लोक में वास्तुशास्त्र के प्रभाव एवं महत्त्व को दर्शाते हुए कहा गया है –

शास्त्रेणनेन सर्वस्य लोकस्य परमं सुखम् ।
चतुर्वग फलाप्राप्ति श्लोकश्च भवेध्युवम् ।।
शिल्प शास्त्र परिज्ञान मृत्योऽपि सुजेतांम्व्रजेत् ।
परमानन्द जनकं देवानामिदमीरितम् ।
शिल्पं बिना नहिं जगतिषु लोकेषु विद्यते ।।
जगद्‌बिना न शिल्पाश्च वर्तते वासवप्रभो ।।

अर्थात वास्तुशास्त्र के शुभ प्रभाव से ही यह संसार स्वास्थ्य प्रसन्नता तथा बहुमुँखी सुख—समृद्धि प्राप्त करता है। इस शास्त्र के अनुसार आचरण करने से मनुष्य देव पद की प्राप्ति कर सकता है। शिल्प शास्त्र का ज्ञान तथा इस संसार का अस्तित्व परस्पर सम्बन्ध है। वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों को मानने वाले न केवल इस लोक के सुखों को भोगते हैं, बल्कि स्वर्ग के सुखों का आन्नद भी पाते हैं।

वास्तुशास्त्र का सम्बन्ध जगह के चुनाव, कमरों की स्थिति दिशा, आकार—प्रकार, भवन की आकृति, निर्माण सामग्री जैसी चीजों से है।

वास्तुशास्त्र के नियम सार्वभौम हैं, अतः संसार के किसी भी भाग में इन्हें व्यवहार में लाया जा सकता है।

वास्तु सम्बंधी अध्ययन

(क) जापान के दो नगरों पर बम्ब–वर्षा

जापान पूर्व का एक छोटा सा देश है। इसमें होन्शू, होकाइडो, शिकोकु तथा क्यूशु नामक चार प्रमुख द्वीप तथा लगभग तीन हजार छोटे–बड़े द्वीप शामिल हैं। आज यह देश उद्योग, व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में एक महाशक्ति के रूप में जाना जाता है। इस देश की समृद्धि में इसकी कुछ वास्तु अनुकूल स्थितियों का बहुत बड़ा योगदान है। जबकि कुछ वास्तु–प्रतिकूल स्थितियाँ समस्याओं का कारण भी बनती रही हैं।

उत्तरी गोलार्द्ध में जापानी ही सबसे पहले सूर्य के प्रकाश को ग्रहण करते हैं। जापान के उत्तर–पूर्व में समुद्र है। जापान का पूर्वी तट बहुत दूर–दूर तक फैला हुआ है। टोक्यो नगर पूर्वी तट पर स्थित है टोक्यो के पश्चिम में ऊँची–ऊँची पहाड़ियाँ हैं। भूमि का झुकाव उत्तर–पूर्व दिशा में है। वास्तुशास्त्र के नियम के अनुसार ये ऐसे लक्षण हैं, जो समृद्धि के दायक हैं।

वास्तुशास्त्र के अनुसार भूमि का दक्षिणी तथा पश्चिमी ढलान तथा दक्षिण में जल की उपस्थिति अशुभ लक्षण है। जापान के दक्षिणी व पश्चिमी छोर पानी से ढके हैं सम्भवतः यही कारण है कि वहां प्रायः भूचाल आते रहते हैं। नागासाकी नामक अभागा शहर क्यूशु द्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित है। नागासाकी के दक्षिण में पीत–सागर (पूर्वी चीन सागर) है। दक्षिण में जल की उपस्थिति होना नागासाकी के लिए अशुभ स्थिति है। हिरोशिमा नामक दूसरा शहर भी होनशू नामक द्वीप के दक्षिणी छोर पर स्थित है। हिरोशिमा के दक्षिण में भी जल विद्यमान है। दूसरे महायुद्ध के दौरान ये दोनों नगर (हिरोशिमा और नागासाकी) ही सबसे अधिक प्रभावित हुए। संयुक्त राज्य अमेरिका ने इन दो नगरों पर परमाणु बम्ब गिराए, जिसके परिणामस्वरूप कुछ ही क्षणों में ये नगर जल कर खाक हो गए तथा लगभग 2 लाख लोग मृत्यु का ग्रास बन गए। इसके बाद जापान ने आत्म–समर्पण कर दिया।

(ख) ताज महल का वास्तु

ताज महल संसार के सात आश्चर्यो में से एक है। इसका निर्माण वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप किया गया है। अकबर की पत्नी और जहाँगीर की माता जोधाबाई हिन्दू परिवार से थी। राजपूताना में मारवाड़ के राजा उदय सिंह की पुत्री का विवाह जहांगीर से हुआ, जिसका पुत्र शाहजहां था, यही कारण है कि ताजमहल के निर्माण में हिन्दू वास्तु मान्यताएं परिलक्षित होती हैं। वास्तुशास्त्र के अनुसार ताज की स्थिति एक आदर्श स्थिति है। जिस भूमि पर ताज महल का निर्माण हुआ है, उसकी ढलान पूर्व की है, यानि पूर्व भाग पश्चिम से नीचा है। उत्तर की ओर जल अर्थात यमुना नदी है, जो पूर्व की ओर बहती है, जो एक शुभ लक्षण है। ताजमहल की ऊंचाई इसके चबूतरे की चौड़ाई के बराबर है और चौड़ाई लम्बाई के बराबर है। इस प्रकार ताजमहल एक वर्गाकार चबूतरे पर स्थित है। मुख्य ईमारत की आकृति अष्टभुजाकार है। इसमें समाहित तीन आकृतिक विशेषताएं — वर्गाकार, चबूतरा, गोल गुम्बज तथा अष्टभुजाकार भवन, त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के प्रतीक है, जो प्राचीन वास्तुशास्त्र में सबसे शुभ लक्षण माना गया है। वर्ग जल अर्थात ब्रह्मा का, अष्टकोण पालन एवं सुरक्षा अर्थात अष्टभुज भगवान श्री विष्णु का तथा वृत्त मृत्यु अर्थात महादेव भगवान शिव का प्रतीक है। ताजमहल की इमारत में भी एक दिशानुकूलता लक्षित होती है। चारों दिशाओं के निर्माण में एक समरूपता है। उत्तर दिशा में स्थित द्वार दक्षिण दिशा के द्वार से नीचा है। पूर्वी और पश्चिमी द्वारा पूर्णतः समरूप हैं।
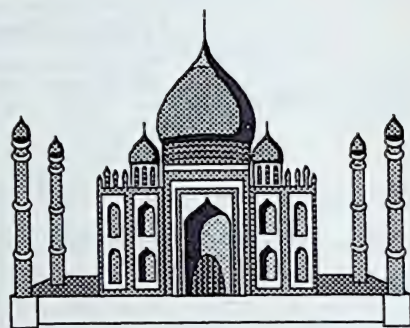
इन्हीं लक्षणों के आधार पर कुछ इतिहासकार का मत है ताजमहल एक प्राचीन है जिसे बाद में मकबरे का रूप दिया गया।

(ग) देहली का वास्तु

यमुना नदी दिल्ली के पूर्व में बहती है, जिसके कारण देहली नगर की ढलान पूर्व की ओर है। यमुना के पश्चिमी तट पर स्थित देहली का भाग अधिक विकसित और समृद्ध है। यहां पर बेहतर नागरिक सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, जबकि यमुना के पूर्व का क्षेत्र जो कि यमुना पार (Trans Yamuna) कहलाता है, उतना विकसित और समृद्ध नही है, जितना कि पश्चिम का क्षेत्र। देहली का दक्षिणी क्षेत्र सबसे महंगा और समृद्ध है। यहां देहली का सम्पन्न धनाढ्य वर्ग निवास करता है। इस क्षेत्र में जमीन–जायदाद की कीमतें उत्तरी क्षेत्र से कहीं अधिक हैं, इसी प्रकार पश्चिमी देहली में जमीन–जायदाद पूर्व देहली की अपेक्षा अधिक है। दक्षिणी देहली में निवास करने वाले लोगों का कार्य स्थान अधिकतर मध्य दिल्ली, कनाट प्लेस, चांदनी चौक या करोल बाग के क्षेत्र हैं, जो कि उत्तर में हैं। वास्तु के अनुसार कार्यस्थान का उत्तर दिशा में होना शुभ लक्षण है। उत्तर दिशा धन के स्वामी कुबेर की दिशा है।
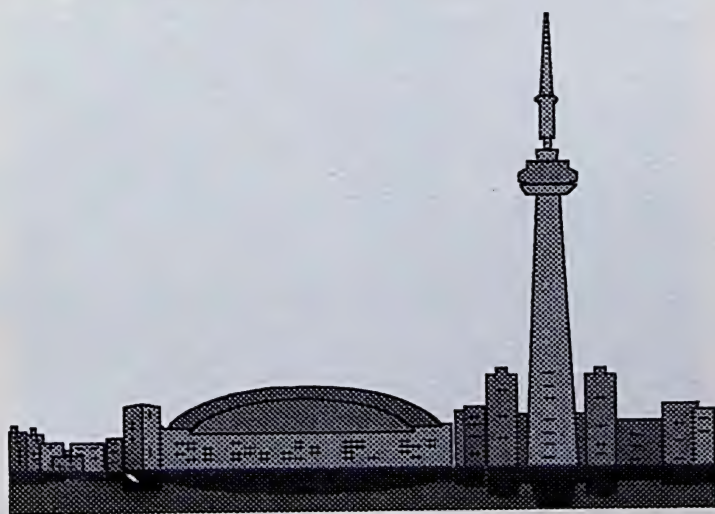
(घ) **सरकारी नियमों में वास्तु का पालन –**

जिन लोगों ने आवास सम्बंधी नियम–कानून बनाए है, उन्हें वास्तु का ज्ञान था, क्योंकि इन नियमों पर वास्तु की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती है। हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण तथा चण्डीगढ प्रशासन के आवास–निर्माण विभागों में यह एक सामान्य नियम है कि बनाए जाने वाले मकानों का प्रवेश पूर्व या उत्तर की ओर हो, जो वास्तुशास्त्र का एक सर्व–सामान्य नियम है।

पूर्व तथा उत्तर की ओर प्रवेश द्वार वाले प्लाट ज्यादा पसन्द किए जाते हैं क्योंकि इन प्लाटों पर बिना किसी विशेष कठिनाई के निर्माण कार्य वास्तुशास्त्र के अनुरूप किया जा सकता है, क्योंकि –

1. मकान के आगे की ओर (पूर्व या उत्तर में) खुला स्थान छोड़ा जा सकता है और वास्तुशास्त्र के अनुसार पूर्व अथवा उत्तर में खुला स्थान होना चाहिए।
2. सामने के कोने में अर्थात उत्तर–पूर्व में भी पार्किंग आदि के लिए खुला स्थान आसानी से उपलब्ध हो जाता है।
3. सामने की चारदिवारी अर्थात पूर्व या पश्चिम की दिवार पीछे की दिवार से अर्थात पश्चिम या दक्षिण की दीवार से नीची हो जाती है, जो एक शुभ लक्षण है।
4. जल की आपूर्ति के लिए पाइपें पूर्व या उत्तर दिशा से घर में प्रवेश करती है, तथा पूर्व से जल–प्रवाह होता है यह भी वास्तुशास्त्र के अनुरूप है।
5. पूर्व या उत्तर दिशा में प्रायः ढलान होती है, जो वास्तु के अनुरूप है।

(ङ) प्रापर्टी बिजनेस और वास्तु

सम्पदा व्यवसाय में भी वास्तु के महत्त्व को सर्वाधिक स्वीकारा जा रहा है। बहुत से सम्पदा व्यवसायी (Real Estate Dealers) कॉलोनियां आदि बनाने के लिए भूमि के चुनाव में तथा आवास योजना के निर्माण में वास्तु–विशेषज्ञों की सलाह लेते हैं ताकि वे अपने ग्राहकों को अधिकाधिक संतुष्ट कर सकें। ग्राहकों की संतुष्टि का अभिप्राय है — अच्छे भाव, ऊँची लाभ दर। मीडिया में भी वास्तुशास्त्र को स्थान मिल रहा है। मंगलवार के परिशिष्ट के Delhi Times तथा सोमवार को 'नवभारत टाइम्स' में साप्ताहिक कालमों में वास्तुशास्त्र पर चर्चा की जाती है। बहुत से अन्य समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं आदि में भी वास्तुशास्त्र पर चर्चा होती रहती है। दूरदर्शन सहित अन्य टी॰वी॰ चैनलों पर भी वास्तुशास्त्र के विषय में चर्चा होती रहती है।
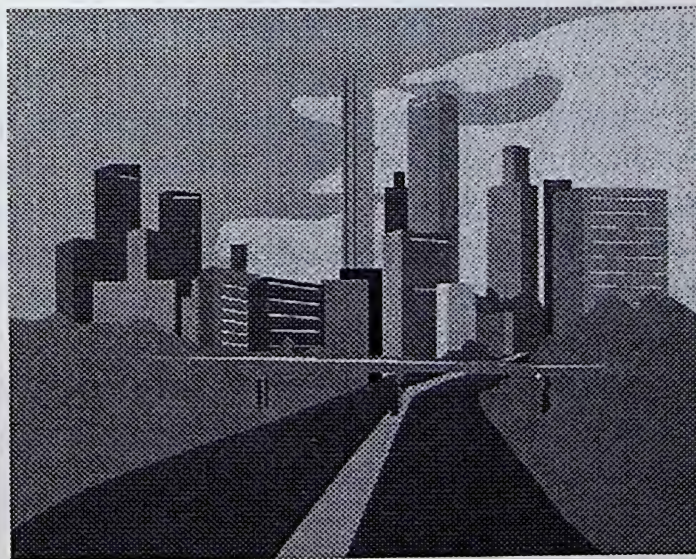
महर्षि महेश योगी की प्रेरणा से महर्षि वैदिक कन्सट्रक्शन कम्पनी की स्थापना की गई है। इस कम्पनी का उद्देश्य ऐसी आवासीय कालोनियां, उपनगरों तथा व्यवसायिक परसिरों का निर्माण करना है, जो पूरी तरह से वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुरूप हों, ताकि शुभ लक्षणों पर आधारित प्राकृतिक नियमों से समायोजित इन भवनों में रहने वालो को स्वास्थ्य, सुख तथा समृद्धि की प्राप्ति हो जो आज के युग में हर व्यक्ति की कामना है। इस कम्पनी का मत है कि आध्यात्म–आधारित भवन निर्माण करके नागरिक जीवन में शांति की प्रतिष्ठा की जा सकती है। इसी प्रकार कई अन्य सम्पदा–व्यवसायी भी अपनी योजनाओं में वास्तुशास्त्र को शामिल कर रहे हैं। वे अपने फ्लैट का निर्माण वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के आधार पर करते हैं और ग्राहकों को आकर्षित करने के उद्धेश्य से अपने विज्ञापनों में इस तथ्य का जोर शोर से प्रचार भी करते है। JMD Realtors Pvt. Ltd ने गुड़गांव के निकट JMD Regent square का निर्माण किया है। उच्च आय वर्ग की भारतीय तथा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अधिकारियों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार की गई इस आवास–योजना के डिजाइन में वास्तुशास्त्र की मान्यताओं पर पूरा–पूरा ध्यान दिया गया है। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (GDA) तथा शिप्रा एस्टेट प्रा॰ लि॰ ने लगभग 1500 परिवारों के लिए गाजियाबाद में शिप्रा रिवईरा नामक से एक आवासीय योजना तैयार की है, इसके विज्ञापनों में इस तथ्य को उजागर किया गया है कि यह पूरी तरह से वास्तुशास्त्र पर आधारित परियोजना है। प्रोपटी डीलर भी आजकल वास्तुशास्त्र के अध्ययन में रूचि ले रहे हैं। अभी कुछ दिन पूर्व समाचार पत्रों में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ था– *We sell prosperity not just property-properties as per Vaastu Shashtra.*
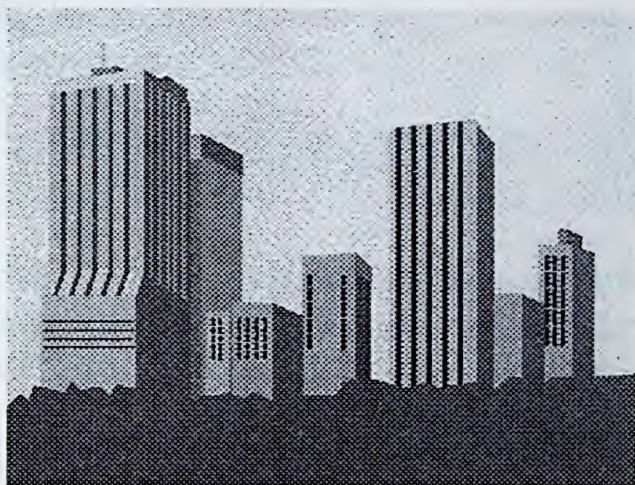
(च) हांग कांग में वास्तु के लिए मुकद्दमेबाजी –

हांग कांग में जो नए नए विकास कार्य हुए उसके कारण फेंग–शू'ई की सारी मान्यताएं ध्वस्त हो गई। इस कारण से हांग कांग की सरकार का कई भारी–भरकम मुकद्दमों का सामना करना पड़ा। अतः वहां की सरकार में किसी फेंग–शूई विशेषज्ञ की सेवाएं लेने का निश्चय़ किया, जो उसे यह सलाह दे सके कि उसे कहां पर नई कॉलोनियां या कस्बे बसाने चाहिएं, जो फेंग शूई (एक प्रकार का वास्तुशास्त्र) की मान्यताओं के पूर्णतयः अनुकूल हो।

✠✠✠✠

फेंग शूई : चीन व जापान का वास्तुशास्त्र

FENG SHUI : VAASTU SHASTRA OF CHINA AND JAPAN

फेंग शूई चीन देश में प्रचलित विज्ञान है, जिसका सम्बंध भवन निर्माण से है। प्राकृतिक तत्त्वों के साथ समरसता स्थापित करते हुए जीवन को सुखी और समृद्ध बनाना इस विज्ञान का लक्ष्य है। फेंग शूई की शुरूआत चीन के राजपरिवार ने की थी।

जापान का भी एक अपना वास्तुशास्त्र है, जो फेंग शूई के समान तो है, लेकिन पूर्णतः इसका प्रतिरूप नहीं है। जापानी वास्तुशास्त्र फेंग शूई से थोड़ा भिन्न है। प्राचीन काल में व्यापारी यात्रियों तथा बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा ही भारतीय वास्तुशास्त्र का ज्ञान चीन पहुंचा और जल्दी ही उन लोगों ने इसका महत्त्व पहचान लिया और अपने देश की भौगोलिक परिस्थितियों व आवश्यकताओं के अनुसार इसके सिद्धान्तों को थोड़े बहुत अन्तर के साथ अपनाया। भारतीय वास्तुशास्त्र तथा फेंग शूई के भी बहुत सारे सिद्धांत एक जैसे ही है। एक प्रकार से वास्तुशास्त्र फेंग शूई का पूर्वज है।

फेंग शूई का अर्थ –

चीनी भाषा में फेंग का अर्थ है – 'हवा' और शूई का अर्थ है – पानी। इस प्रकार फेंग शूई का एक अर्थ है – जलवायु। जल और वायु दोनों जीवन के प्रमुख आधार तत्त्व है। तीन हजार वर्ष पुरानी इस विद्या का लक्ष्य है – मनुष्य द्वारा अपने परिवेश के साथ संतुलन स्थापित करते हुए अपनी रंचनात्मक ऊर्जा को बढ़ाना और जीवन में सुख और समृद्धि को बढ़ाना। मोटे तौर पर फेंग शूई में घरेलू साजो–सामान, फर्नीचर, कला–कृत्तियां, दर्पण, पौधे तथा अन्य सामग्री की समुचित व्यवस्था पर विचार किया जाता है।

फेंग शूई का उपयोग –

चीन, हांग–कांग, ताईवान, सिंगापुर, मलेशिया तथा अन्य कई देशों में अनेक लोग फेंग शूई के जानकार लोगों की सेवाओं से लाभ उठाते है। इन लोगों में प्रमुखता व्यापारी वर्ग के लोगों की होती है, जो अपने व्यवसाय विशेषतः जमीन जायदाद सम्बन्धी कामों में सफलता तथा समृद्धि की इच्छा रखते हैं। ऊर्जा के प्राकृतिक बहाव की दिशा के अनुरूप कार्य करने से रचनात्मक ऊर्जा का विकास होता है। वास्तुशास्त्र जीवन में जिन चीजों को सर्वाधिक प्रभावित करता है, वे हैं–

1. नौकरी अथवा व्यवसाय (Career)
2. शिक्षा–दीक्षा (Knowledge & Creativity)
3. परिवार एवं स्वास्थ्य (Family & Health)
4. धन–सम्पति (Wealth)
5. प्रसिद्धी (Fame)
6. शादी अथवा व्यापार में सांझा (Marriagee & Patnership)
7. संतान (Children)
8. यात्रा एवं मित्र–सम्बंधी (Travel & Helpful people)

घर के दीवारें, दीवारों के विभिन्न कोने, कोनों की दिशा आदि बातों पर ये चीजें निर्भर करती हैं। इनका प्रभाव मनुष्य के स्वास्थ्य, सम्पदा, सौभाग्य पर पड़ता है, जो मनुष्य को घर तथा बाहर कार्यक्षेत्र में सुख–शांति का अनुभव करवाती है।

जीवन ऊर्जा –

वायु और जल जिस जीवन ऊर्जा को प्रदान करते है उसे 'चीं' कहा जाता है। मनुष्य के शरीर के लिए तो 'चीं' का महत्त्व है ही, इसका प्रभाव कृषि और मौसम पर भी पड़ता है। एक्यूपंक्चर चिकित्सा पद्धति, एक्यूप्रेशर तथा मार्शल आर्टस (जूडो, कराटे, ताई–क्वाडो आदि) व योगासन इसके सशक्त प्रमाण हैं कि मनुष्य के शरीर में 'चीं' विद्यमान है, जो शारीरिक शक्ति को अद्भुत ढंग से प्रभावित करती है। घर में जल का घुमावदार व लहरमान प्रवाह स्वास्थ्य (चीं) को प्रभावित करता है।

भाग्य तत्त्व –

मनुष्य का अवचेतन तत्त्व चेतन से ज्यादा शक्तिशाली एवं संवेदनशील होता है, जिस पर छोटी–छोटी चीजों और बातों का भी बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है। फेंग–शूई मनुष्य के अवचेतन तत्त्व का बड़ा गहराई से अध्ययन करता है। फेंग शूई की मान्यता है कि मनुष्य इस विद्या के द्वारा अपने भाग्य तत्त्व को भी प्रभावित कर सकता है इसके लिए केवल अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह कोई जादू–टोना या चमत्कार नहीं बल्कि एक स्वभाविक सत्य है। प्रकृति की शक्तियों के प्रभावों को समझकर उनके अनुकूल आचरण करने से मनुष्य को सुख और समृद्धि प्राप्त हो सकती है, जो एक प्रकार से भाग्य चमकने के समान ही है।

फेंग शूई की लोकप्रियता –

जो लोग सुदूर पूर्व के देशों में बड़े–बड़े व्यापार–दिग्गजों को जानते हैं, वे सम्भवतः यह भी जानते होंगे कि जमीन–जायदाद के मामलों में वे लोग प्रायः फेंग–शूई के विशेषज्ञ से सलाह लेते रहते है। सिंगापुर 'हयात होटल' के मालिक ने अपना व्यवसाय चमकाने के लिए फेंग शूई का सहारा लिया। इंग्लैण्ड के बड़े–बड़े सम्पदा व्यवसायी भी इस विद्या का प्रयोग यह जानने के लिए करते है कि उनकी नई विकास योजना ग्राहकों को आकर्षित कर पाएगी अथवा नहीं। हांग–कांग तथा ताईवान में अधिकतर व्यवसायिक भवनों के निर्माण में फेंग शूई के सिद्धांत का पालन किया गया है। सम्भवतः यही कारण है कि ये दो राज्य संसार की सर्वाधिक प्रति व्यक्ति आय वाले देशों में से हैं।

वास्तुशास्त्र और फेंग शूई दोनों विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। यदि कोई व्यक्ति इन दोनों को अच्छे ढंग से प्रयोग में लाये तो इसका सीधा और सबसे अच्छा लाभ यही होगा कि उसका जीवन, सुखी एवं संयमित होगा।

❖❖❖❖

6 वास्तु गृह

VAASTU HOME
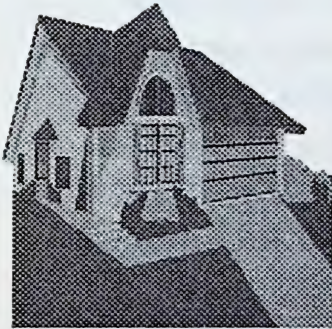
पूर्व ऐतिहासिक युग में मनुष्य को घर बनाने की कला का ज्ञान नहीं था। वे खुले स्थानों पर, पेड़ों अथवा गुफाओं में ही रहा करते थे । धीरे–धीरे सभ्यता के विकास के साथ साथ लोगों को घर बनाने की कला का ज्ञान हुआ। घर में आश्रय भी था और सुरक्षा भी । वास्तु की कहानी भी उतनी ही प्राचीन ही है, जितनी कि सभ्यता की कहानी। एक आदर्श घर वही है जो सुन्दर, आरामदायक, शांत हो तथा उसमें वे सभी सुख–साधन एवं सुविधाएं उपलब्ध हों, जिनसे मनुष्य के जीवन–स्तर में सुधार हो और जो उसके स्वास्थ्य एवं दीघार्यु की दृष्टि से वे आवश्यक हों।

मूल आवश्यक्ताएं –

सुविधा और आकार की दृष्टि से घर कई प्रकार के हो सकते हैं। यह उसमें रहने वालों की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। घर चाहे एक कच्चा ईंट–गारे की झोंपड़ी हो, अथवा बहुत सारे कमरों वाला विशालकाय भवन, जिसके भीतर सुख–सुविधा का हर सामान मौजूद हो, घर ही होता है और एक आदर्श घर वही है, जो इसमें रहने वालों को खुशी, अपनेपन तथा सुरक्षा का अहसास करवाएं। मात्र 'सिर पर छत' को पूरी तरह से घर नही कहा जा सकता। स्थानीय जलवायु, सामाजिक रीति–रिवाज, फैशन तथा मनुष्य की आर्थिक स्थिति, ये सभी चीजें घर के आकार तथा डिज़ाइन पर प्रभाव डालती हैं, लेकिन आकार–प्रकार में भिन्न होते

हुए भी प्रत्येक घर की मूल जरूरतें एक–सी ही होती हैं। यह सबसे जरूरी बात है कि घर का रख–रखाव करना आसान हो और यह आरामदायक भी हो।

'समरागण सूत्रधार' के एक श्लोक में वास्तुशास्त्र के अनुरूप बने घर के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है –

सुखं धनानि बृद्धिंश्च सन्तति सर्वदा नृणाम ।
प्रियान्येषां च संसिद्धि सर्व स्यात्शुभलक्षणम्।।
यात्रा निन्दित लक्ष्मत्र तहितेषां विधातकृत्।
अथसर्वमुपादेयं यद्भवेत् शुभलक्षणम्।
देशः पुरनिवासश्च सभावीस्म सनानि च।
यद्यदीदृसमन्याश्च तथा श्रेयस्करं मतम्।।
वास्तुशास्त्रादृतेतस्य न स्याल्लक्षणनिर्णयः ।
तस्मात् लोकस्य कृपया सात्तमेतद्धरीयते ।।

अर्थात सुख संतोष तथा समृद्धि हेतु – वास्तुशास्त्र के सिद्धांतों के अनुकूल बना घर मनुष्य को सुख, स्वास्थ्य, धन, बुद्धि, ज्ञान, संतान का सुख, शांति तथा प्रसन्नता देता है तथा कर्ज और अहसान से मुक्ति दिलाता है। यदि वास्तुशास्त्र के नियमों की अवहेलना की जाये तो इसका परिणाम होता है – अनावश्यक, यात्राएं, बदनामी, प्रतिष्ठा पर आंच, दुख, क्लेश और निराशाएं। जिस घर का निर्माण वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुकूल न हो, कभी भी उसके पक्ष में (अर्थात उसे खरीदने या किराए पर लेने का) निर्णय नहीं करना चाहिए। मनुष्यमात्र के सुख, संतोष तथा समृद्धि के उद्धेश्य से ही वास्तुशास्त्र को प्रकाश में लाया गया है। (अर्थात वास्तुशास्त्र की रचना की गई है)

घर की निर्माण–योजना ऐसी होनी चाहिए, जिससे कि इसमें रहने वालों को सुख धन–सम्पदा तथा मन की शांति मिले। इसलिए यह जरूरी है कि जहां तक सम्भव हो सके नए निर्माण के समय वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन किया जाए।

वास्तु के लाभ –

ऐसा देखने में आया है कि वास्तुशास्त्र की अनुपालन करने से बहुत से लोगों को अपने व्यवसाय या नौकरी में तरक्की मिली है; मुकद्दमों या झगड़ों का निपटारा हुआ है तथा उन्हें मन की शांति तथा संतोष का अनुभव हुआ है। वास्तुशास्त्र के नियमों का पालन करने से देखा गया है कि व्यक्ति कम तनाव झेलकर भी अधिक उत्पादन करने में सक्षम हुए हैं। इससे वातावरण में ऐसा परिवर्तन आता है कि व्यक्ति की अपने कार्य में रुचि बढ़ जाती है, साथ ही वातावरण में एक प्रकार की भव्यता भी आ जाती है। जिसका परिणाम यह होता है कि व्यक्ति की कार्य–क्षमता बढ़ती है, उसका कार्य संयोजन ठीक रहता है। अधिक कार्य तथा बढ़िया कार्य संयोजन का परिणाम होता है – अधिक लाभ, प्रसन्नता, मन की शांति। यह सब निर्भर करता है – भवन के लिए भूमि के सही चुनाव पर, ठीक दिशा में उसके निर्माण पर, उसकी भीतरी तथा बाहरी सज्जा तथा घरेलू सामान तथा पौधों आदि के लिए उचित स्थान के चुनाव पर। वास्तुशास्त्र हमें इन्हीं के सम्बंध में जानकारी देता है।

घर में खुले स्थान (आंगन आदि) का एक विशेष महत्त्व होता है। इससे एक ओर घर की सुन्दरता और प्रभाव में वृद्धि होती है, दूसरी ओर घर के निवासियों के स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह उत्तम है। धार्मिक एवं सामाजिक अनुष्ठानों के लिए घर के सामने का खुला स्थान एक आदर्श स्थल माना गया है। अतः वास्तु के इस साधारण एवं मूलभूत सिद्धांत की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। मनुष्य की स्वास्थ्य–सम्बन्धी समस्याओं जैसे– सिरदर्द, गर्दन का दर्द, अल्सर, रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर या ऐसी अन्य समस्याओं के पीछे कई बार निवास स्थल के वास्तुदोष उत्तरदायी होते हैं।

✠✠✠✠

"वास्तु एक वैदिक विज्ञान है, जो हमारे जीवन में स्वास्थ्य, शांति, सुख एवं समृद्धि लाता है। "

सुनील दत्त जेतली

प्रधान सम्पादक–पप्पी, पंचाग

खण्ड – II

वास्तु घर

(सुख, शान्ति, समृद्धि व कला का प्रतीक)

7 वास्तु रति कक्ष

VAASTU MASTER BEDROOM

रति से अभिप्राय –

भारतीय परम्परा में रति या काम का ठीक–ठीक वह भाव नही है, जो पश्चिमी परम्परा में सैक्स का है। प्राचीन भारतीय साहित्य में काम को भी देवता का ही स्थान दिया है। रति कामदेव की पत्नी है, जो सौंदर्य एवं शृंगार की अधिष्ठाती देवी है। मनुष्य के जीवन में काम अथवा रति का एक विशेष स्थान है तथा विवाहितों के लिए रति का निर्वाह एक धर्म माना गया है। पाश्चात्य प्रभाव के कारण हम सैक्स को मात्र आनन्द का साधन मान बैठे है, लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि रति एक विशिष्ट कर्म है, जिसे विशिष्ट स्थान पर ही (कक्ष में) किया जाना चाहिए।

हर कक्ष रति कक्ष नहीं हो सकता, लेकिन हर रति कक्ष शयन कक्ष हो सकता है। अतः शयन कक्ष और रति कक्ष में अन्तर करना जरूरी है क्योंकि रति कक्ष में एकान्त के साथ–साथ कुछ विशेष सुविधाएं भी होनी चाहिएं, जिन पर हम यहां चर्चा कर रहे हैं।

वास्तु रति कक्ष –

विवाहितों के लिए शयन कक्ष घर के स्वामी द्वारा सोने तथा प्रणय क्रिया के लिए प्रयोग किया जाता है। यह घर का एक महत्त्वपूर्ण भाग है, जिसमें घर के स्वामी अथवा विवाहित सदस्य अपनी जिन्दगी का लगभग एक–चौथाई भाग बिताते है। संस्कृत में इसे 'रति–कक्ष' कहा जाता है, जिसका अर्थ है – प्रणय–क्रिया (प्यार) के लिए प्रयोग होने वाला कमरा। इस कमरे का महत्त्व इसलिए भी है कि इसमें व्यक्ति अपने जीवन साथी के साथ अंतरंग क्षणों को बिताता है, जहां उन दोनों के बीच कोई नहीं होता।

बृहत्त संहिता के 73 वे अध्याय के प्रथम श्लोक में कहा गया है –

जये धरित्र्या पुरमेव सारं पुरे गृहं सद्मनि चैकदेशः ।
तत्रापि शय्या शयने वरा स्त्री रत्नोज्ज्वला राज्यसुखस्य सारः ।।

जिसका भाव है –

सम्पूर्ण भूमण्डल को जीत लेने पर भी राजा अपना महल राजधानी में ही बनवाता है। सारी राजधानी में भी उसका महल सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, महल में भी उसका शयनकक्ष ही सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, शयनकक्ष में उसकी शैय्या सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। उसकी रानी उसके लिए सुख की दात्री होती है, इस प्रकार राज्य के सुख का सार राजा के शयन कक्ष अथवा उसकी शैय्या पर उपस्थित होता है।

बृहत्त संहिता के 73 वे अध्याय के ही अट्ठारवें श्लोक में सुन्दर साथी के महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है –

कामिनी प्रथमयौवनान्वितां मन्दवल्गुम दुपीड़ितस्वनाम्।
उत्सतनीं समवलम्ब्य या रतिः सा न धातृभवनेऽस्ति मतिः ।।

जिसका भावार्थ है –

रूपवती, मृदुभाषी सुखद स्पर्श का अनुभव देने वाली यौवन की उमंग से भरी स्त्री का साथ तो ब्रह्मलोक (स्वर्ग) में भी आसानी से उपलब्ध नहीं है।

सुन्दर एवं सुखदायक साथी के संसर्ग का सम्पूर्ण सुख लेने का स्थान शयन कक्ष है, लेकिन अगर शयनकक्ष के निर्माण में वास्तु का उल्लंघन हो तो यह सुख बाधित हो सकता है।

वास्तु रति–कक्ष के लिए उपयुक्त दिशा –

घर का दक्षिण–पश्चिम भाग विवाहितों के शयन कक्ष के लिए उपयुक्त रहता है तथा सुविधा की दृष्टि से यह दक्षिणी भाग में भी हो सकता है। यदि घर दो मंजिला हो तो शयन कक्ष प्रथम तल पर

भी बनाया जा सकता है, लेकिन इसका दक्षिण—पश्चिम दिशा में होना अधिक लाभकारी रहता है।

विवाहितों के लिए शयन कक्ष घर के उत्तर—पूर्वी भाग में नहीं होना चाहिए क्योंकि उत्तर—पूर्व दिशा रति के लिए उपयुक्त नहीं मानी गई है। इस दिशा को रति कर्म के लिए प्रयोग में न लाना ही हितकर है।

वास्तु रति कक्ष की बनावट –

शयन कक्ष का फर्श घर के शेष भाग से थोड़ा ऊँचा होना चाहिए। शयनकक्ष की आकृति आयताकार होनी चाहिए और शैय्या के आसपास कुछ खुली जगह होनी चाहिए ताकि चलने—फिरने में किसी प्रकार की बाधा न हो। यदि शयन कक्ष का बाहरी द्वारा किसी उपवन में खुले तो वे श्रेष्ठ लक्षण है, क्योंकि पुष्प प्राकृतिक सौंदर्य का सर्वश्रेष्ठ उपहार है। पुष्प हमें मानसिक शांति तो देते ही हैं, रति—कामना को भी जागृत करते हैं और रति—सुख को बढ़ाते हैं।

शैय्या (बैड) –

शयन कक्ष में शैय्या दक्षिणी—पश्चिमी भाग में होनी चाहिए। शैय्या का आकार भी संतोषजनक होना चाहिए। आकार में छोटी शैय्या सुखद नींद में बाधा डालती है। आजकल 'डबल बैड' का प्रचलन है, जो विवाहितों के लिए एक आदर्श शैय्या है। यह बैड यदि भली भांति सुसज्जित हो तो और भी अच्छा रहता है। शैय्या की सफाई हर रोज होनी चाहिए। बिस्तर, चादरें व तकिए आदि हर रोज झाड़कर बिछाए जाने चाहिएं तथा समय—समय पर इनको बदलते रहना चाहिए। शैय्या के आसपास भी पूर्ण स्वच्छता होनी चाहिए। स्वच्छ वातावरण मे अच्छी गहरी नींद आती है, जो स्वास्थ्यवर्धक होती है।

रंगों का चुनाव –

शैय्या के सिरहाने यदि सिर रखने का तख्ता (Headboard) लगा हो तो यह आराम तथा सुरक्षा का आभास करवाता है। बिस्तर पर

बिछाए जाने वाली चादरों के रंगों का भी अपना ही महत्त्व है। संतरी (Orange), गुलाबी (Pink) हल्के बादामी (Peaches) तथा भूरे (Brown) रंग के बिछावन का मन–मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। ये रंग आखों को ठण्डक तथा मन को आराम का अनुभव करवाते हैं। बिस्तर को कभी किसी शहतीर (Beam) के नीचे नहीं लगवाना चाहिए, इससे अवचेतन मन में असुरक्षा का बोध घर कर जाने की आशंका रहती है।

वास्तु कक्ष की आदर्श स्थिति –

गोपनीयता शयन कक्ष का एक विशेष गुण है। अतः शयन कक्ष भीतरी और बाहरी व्यवधान से पूरी तरह मुक्त होना चाहिए। रति कक्ष अथवा शयन कक्ष ऐसे स्थान पर हो जहां से गली मे आते–जाते लोगों या पड़ोसियों की पहुंच न हो और न ही यह मुख्य द्वार के निकट हो ताकि घर के सदस्यों के आने जाने के कारण भी किसी प्रकार का व्यवधान न हो। यदि यह घर के अन्य कमरों से भी थोड़ा हट कर हो, तो यह एक आदर्श स्थिति होगी। यह बहुत जरूरी है कि शयन कक्ष के भीतर के क्रिया–कलाप को बाहर से बिल्कुल भी देखा न जा सके और न ही भीतर की बातचीत को बाहर से सुना जा सके। गोपनीयता के लिहाज से ही शयनकक्ष के दरवाजों व खिड़कियों पर पर्दे लगे रहने चाहिएं। शयनकक्ष में बैड की स्थिति ऐसे कोण पर हो कि यह दरवाजों अथवा खिड़कियों के खुले होने की अवस्था में भी बाहर से नजर न आए।

मनुष्य शयन कक्ष का प्रयोग विवाहितों द्वारा ही किया जाना चाहिए। बच्चों को इसमें सोने के लिए हतोत्साहित ही करना चाहिए।

माता–पिता को चाहिए कि 1½–2 साल से बड़े बच्चों को अपने शयनकक्ष में न सुलाएं। बच्चे बड़े ही चिन्तनशील होते हैं, वे जो कुछ देखते या सुनते हैं उसका कुछ न कुछ अर्थ वे अपनी बुद्धि से अवश्य ही लगाते हैं। भले ही यह देखना या सुनना जाग्रत अवस्था में हों या अर्धनिंद्रा की अवस्था में। कभी

ऐसा भी हो सकता है कि शयन कक्ष में माता—पिता के पास सोया हुआ बच्चा नींद से जाग जाता है, किन्तु वह उठता नहीं। माता—पिता को भी इस बात का पता नहीं चलता। ऐसे में यदि माता—पिता रतिकर्म में मग्न हैं, अथवा उनके बीच कुछ उत्तेजक बातचीत हो रही है तो इसका बच्चे के मन—मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है और सारी उम्र उसे परेशान कर सकता है। इसे अति जिज्ञासा (Oedipus Complex) कहा जाता है। बच्चे अपनी जिज्ञासा का समाधान ढूंढते—ढूंढते अनायास ही काम—विकृति का शिकार हो सकते हैं। इसका परिणाम यह भी हो सकता है कि बच्चा अपने माता—पिता से घृणा करने लगे और उसकी अवज्ञा व अनादर करने का अवसर ढूंढने लगे। मनोवैज्ञानिक दबावों के कारण ऐसे बच्चे बाद में अज्ञात भय, आक्रामकता (Aggresiveness), असामाजिक व्यवहार, पढ़ाई में पिछड़ जाने तथा आँखों की कमजोरी, जैसी समस्याओं के शिकार भी हो सकते हैं। अपेक्षाकृत छोटे बच्चों में यह समस्या बिस्तर गीला करने या शर्मीलेपन के रूप में भी देखी गई है।

प्रसाधन—व्यवस्था –

शयनकक्ष में ही प्रसाधन (साज—शृंगार) के लिए स्थान होना चाहिए। ऐसा भी हो सकता है कि शयनकक्ष के साथ लगता हुआ कोई छोटा—सा कमरा इस काम के लिए रखा जाए। शयन कक्ष के साथ ही स्नानघर होना चाहिए। स्नानघर ठीक—ठाक तथा साफ—सुथरा होना चाहिए। शयन कक्ष और बाथरूम के निकट ही कपड़ों की अलमारी (Wardrobe) ड्राअर चैस्ट, कोट हुक, ड्रैसिंग टेबल तथा बेड—साईड—लैम्प आदि भी होना चाहिए। सुविधा की दृष्टि से रोज बदलने के कपड़े जैसे ड्रैसिंग गाऊन, नाईट गाऊन, पायजामा इत्यादि के टांगने का स्थान भी निकट ही होना चाहिए। शयनकक्ष में ड्रैसिंग टेबल का स्थान पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए।

वास्तु रति–कक्ष के सहायक तत्त्व –

शयन कक्ष में इत्र इत्यादि का प्रयोग करना चाहिए। इत्र या परफ्यूम की खुशबु से मन–मस्तिष्क को तो ताजगी मिलती ही है, इससे काम–क्षमता पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है। प्रणय–क्रीड़ा के समय आनन्द की गहराइयों तक उतरने में इत्र की भीनी–भीनी खुशबु तथा हल्के–हल्के सुरमई अंधेरे का प्रभाव तो जैसे जादू–सा ही होता है। हल्की--हल्की रोशनी संकोच को समाप्त करके प्रगाढता को बढ़ाती है। इससे प्रेम के लिए इच्छा भी जागृत होती है। सोने के कमरे में पढ़ने के लिए उचित प्रकाश व्यवस्था होनी चाहिए। रति कक्ष में आवश्यकता के अनुसार प्रकाश को तेज या धीमा करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रेम–सम्बंधों को प्रगाढ़ बनाने में उपहारों की भूमिका बड़ी प्रभावशाली होती है। प्रेमी अथवा प्रेमिका को हीरे के जेवर की भेंट तो जैसे जादू का सा असर करती है। भेंट एक ऐसा माध्यम है, जो एक (प्राप्तकर्ता) को यह अहसास करवाता है कि वह दूसरे (भेटकर्त्ता) के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह अनुभूति उसे एक अनोखे आनन्द से भर देती है। अपने प्रेमपात्र को जब कोई बहुमूल्य भेंट दी जाए तो आपका मुख पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए, इससे भेंट का प्रभाव भी शुभ होता है, साथ ही प्रेम में प्रगाढ़ता भी आती है।

वास्तु रति–कक्ष की व्यवस्था –

शयन कक्ष में केवल बिस्तर की दिशा ही नही बल्कि अलमारी इत्यादि के स्थान व दिशा का भी अपना ही महत्त्व है। शयन कक्ष में रखी कपड़ों की अलमारी अथवा ड्राअर–चेस्ट का मुख उत्तर या पूर्व दिशा में होना चाहिए। जब अलमारी खोली जाए तो उसका मुख पश्चिम या दक्षिण की ओर न होकर पूर्व या उत्तर ही में होना चाहिए। जिस

अलमारी में घर की कीमती चीजें अर्थात जेवर तथा नकदी आदि रखी जाए, उसके पट यदि उत्तर की ओर खुले, तो यह एक शुभ लक्षण है। घर की नकदी, जेवर, शेयर व जमीन–जायदाद सम्बंधी कागजों को ऐसी अलमारी या खाने में न रखा जाए, जो दक्षिण की ओर खुलती हो।

घरेलू फर्नीचर का पूर्वी या उत्तरी दिवारों को न छूना वास्तु की दृष्टि से उत्तम है। इसलिए फर्नीचर की व्यवस्था करते हुए यह ध्यान रखा जाए। कि घर की पूर्वी व उत्तरी दिवारों के निकट रखे जाने वाले फर्नीचर के सिरों को दीवार से थोड़ा दूर रखें ताकि बिस्तर, अलमारी और दिवारों के बीच कुछ फासला रहे।

रति–कक्ष की सज्जा –

सोने के कमरे में घोड़े या सारस युग्ल का चित्र बड़ा शुभ माना जाता है, यह प्रेम, शुभता, शक्ति, वीरता व प्रगति के प्रतीक हैं।

यदि आप पुत्र प्राप्ति की इच्छा रखते हैं तो इस कक्ष के इशान–कोण में पर्याप्त स्थान खाली छोड़ दें।

वास्तु शयन और स्वास्थ्य –

वास्तुशास्त्र में न केवल घर के निर्माण, प्रवेश द्वार, पूजाघर या शयनकक्ष की स्थिति पर विचार किया गया है, अपितु मनुष्य के सोने की दिशा क्या हो, यह भी वास्तुशास्त्र का विषय है। हमारे शरीर में सिर की स्थिति ठीक वही है, जो पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव की है। कुछ लोगों को सोते समय सिर भारी हो जाने की शिकायत रहती है। यह भी देखा गया है कि सोते समय हृदयघात (Heart Attack) की सम्भावनाएं अधिक रहती है। इसका कारण सम्भवतः यही

है कि हमारे रक्त में मौजूद लौह तत्त्व पर पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति का प्रभाव पड़ता है। सिर हमारे शरीर का उत्तरी ध्रुव है। यदि सोते समय हमारा सिर उत्तर दिशा में हो तो इससे रक्त संचार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि दो परस्पर विरोधी ध्रुव तो एक दूसरे की ओर खिंचते हैं, लेकिन परस्पर समान ध्रुव एक दूसरे से अपकर्षित होते हैं अर्थात एक—दूसरे को परे धकेलते हैं। पृथ्वी की इस चुम्बकीय शक्ति का प्रभाव हमारे रक्त में मौजूद लौह तत्त्व को प्रभावित करता है। सोते समय यदि हमारा सिर उत्तर दिशा में हो तो पूरे शरीर में रक्त का सही संचार बनाए रखने के लिए हमारे हृदय पर और भी ज्यादा ज़ोर पड़ता है। रक्त को सिर तक पहुंचने में हृदय को अधिक जोर लगाना पड़ता है, यही कारण है कि जब हम सोकर उठते है तो शरीर थका—थका और सिर भारी होता है।

इसलिए यह ध्यान रखें कि सोते समय हमारा सिर कभी भी उत्तर दिशा में तथा टांगे दक्षिण की ओर न हों। यदि हम उचित दिशा में सोए तो इसका प्रभाव हमारे शरीर पर बड़ा अनुकूल प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी की चुम्बकीय शक्ति की अनुकूलता शरीर के रक्त संचार को नियमित बनाती है, जिससे नींद भी अच्छी आती है, मानसिक थकान व तनाव दूर हो जाते हैं तो सुबह जागने पर शरीर चुस्त और ताजगी भरा महसूस होता है।

अतः यह आवश्यक है कि शयन कक्ष में बिस्तर इस ढंग से लगाया जाए कि सोते समय हमारा सिर दक्षिण दिशा में तथा पैर उत्तर दिशा में होने चाहिए। इससे नींद गहरी आएगी तथा रक्तचाप की समस्या से भी छुटकारा मिलेगा।

हमारे गांवों में बुजुर्ग लोग कहते हैं — सोते समय सिर पहाड़ की ओर न हो। इस 'लोकमत्त' में पहाड़ से अभिप्राय हिमालय से है, हिमालय भारत के उत्तर में है। उत्तर की ओर सिर करके न सोना एक नसीहत है। कई लोग इसे मात्र अंधविश्वास कहकर टाल देते है, जबकि यह एक वैज्ञानिक मत है। उत्तर की ओर सिर करके सोना प्राकृतिक

शक्तियों के साथ हमारी सांमजस्ता (Harmony) के विपरीत एक कदम होगा।

सोते समय हमारा सिर पूर्व तथा टांगे पश्चिम की ओर हो तो यह भी एक आदर्श स्थिति है। इससे मानसिक शांति, शुभविचार तथा अध्यात्मिक प्रभाव प्राप्त होते है।

यहां हमें एक किस्सा याद आ रहा है।

श्री गुरु नानक देव मक्का गए हुए थे। मक्का मुसलमानों का पवित्र शहर है। गुरु जी का सिर पूर्व की ओर तथा पैर पश्चिम की ओर थे। जहां गुरु जी सो रहे थे, वहीं सामने एक मस्जिद थी, मस्जिद का द्वार पूर्व की ओर था। सुबह—सुबह मुल्ला जी मस्जिद की सफाई करने के लिए आए तो देखा कि गुरु नानक मस्जिद की ओर पैर करके सोए पड़े है। खुदा के घर की ओर पैर करके सोए पड़े व्यक्ति को देखकर मुल्ला जी को बड़ा गुस्सा आया। उसने गुरु जी को अपने पैर दूसरी और करने को कहा। गुरु जी बोले – तो भाई जिधर खुदा न हो हमारे पैर उधर कर दो। मुल्ला ने गुरु जी की टांगे पकड़कर दूसरी और कर दी, लेकिन वह यह देखकर हैरान रह गया कि दूसरी ओर भी सामने मस्जिद का दरवाजा था। मस्जिद को घूमते देखकर वे लोग बड़े अचम्भित हुए। वे समझ गए कि अवश्य ही वह (गुरुनानक देव) कोई सिद्ध महापुरुष है।

पाठक समझ गए होंगे कि गुरुनानक का उद्देश्य जहां परमात्मा को सर्वव्यापक सिद्ध करने का था वहीं वे शयन की सही दिशा भी समझाना चाहते होंगे कि सोते समय मनुष्य का सिर पश्चिम में नहीं बल्कि पूर्व में होना चाहिए।

वास्तु – उदाहरण

राजघाट – नयी दिल्ली का वास्तु

सोते समय सिर उत्तर तथा पैर दक्षिण में हो तो इससे दुःस्वप्न या अनिद्रा की शिकायत रहती है। इससे छाती में भारीपन तथा सिर चकराने जैसी शिकायतों में भी वृद्धि होती है। हिन्दू धर्म में शवों को जलाते समय उनका सिर उत्तर तथा पैर दक्षिण की ओर रखे जाते है।

महात्मा गांधी की समाधि राजघाट का निर्माण वास्तुशास्त्र के अनुरूप किया गया है। यह समाधि यमुना के किनारे है। काले संगमरमर के वर्गाकार चबूतरे पर महात्मा गांधी के अंतिम शब्द 'हे राम' खुदे हुए हैं। यही पर महात्मा गांधी का अंतिम संस्कार किया गया था। इस समाधि की दिशा उत्तर–दक्षिण है। यानी सिर उत्तर की ओर, और पैर दक्षिण की और हैं। गांधी जी की समाधि पर जाने वाले दर्शनार्थी उनके पैरों के पास दक्षिण में खड़े होकर उन्हे श्रद्धाजंलि देते है। ऐसे करते समय उनका मुंह उत्तर दिशा की ओर होता है जो पवित्र मानी जाती है। समाधि के चारों ओर सुन्दर उपवन है, जहां चारों और लगाए गए पेड़–पौधे प्रकृति की सौभ्यता का दर्शन कराते है ये पेड़ पौधे वातावरण की शांति में भी सहायक है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की समाधि 'शक्ति स्थल' तथा श्री राजीव गांधी की समाधि 'वीर भूमि' का निर्माण भी इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर ही किया गया है। लोग दक्षिण की ओर पैरों के पास खड़े होकर उन्हें श्रद्धाजंलि अर्पित करते हैं और ऐसा करते समय उनका मुख उत्तर दिशा की ओर होता है।

✠✠✠✠

8 वास्तु स्नान घर

VAASTU BATH ROOM

वास्तु स्नानघर –

हमारे जीवन में वास्तु स्नानागार (Bath room) का एक खास महत्त्व हो सकता है। यह ऐसा स्थान है, जहां व्यक्ति केवल अपने ही संग, कुछ समय बीताता है। वास्तु स्नानघर में जाने का अर्थ अपने शरीर को गीला करके और पोंछना मात्र नहीं है। स्नान एक ऐसी क्रिया है जो शौच (सफाई) का एक अंग है। शौच को धर्म के दस अंगों में से एक माना गया है। इस प्रकार स्नान धार्मिक–आचरण का एक अंग, कहें कि एक धार्मिक नियम है।
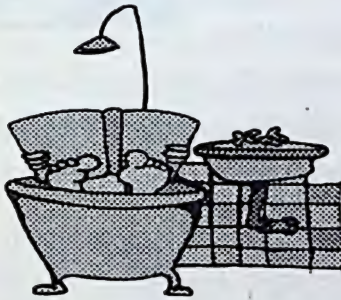
शरीर हमारा घर है, जहां हम (आत्माएं) निवास करते हैं। जिस प्रकार हम अपने घर, ड्राईग रूम, बैडरूम, फर्नीचर आदि की सफाई करते हैं; उसी प्रकार आत्मा के घर शरीर की सफाई का भी अपना ही महत्त्व है। स्नान करते समय हम अपने शरीर को रगड़ते हैं, थपथपाते हैं, मालिश करते हैं, जिससे त्वचा को पोषण मिलता है। शरीर को नयी ताज़गी मिलती है। एक अच्छे स्नान के बाद त्वचा को नया जीवन मिलता है। त्वचा से उठने वाली भीनी–भीनी खुशबु व्यक्ति को नई ऊर्जा एवं आत्म–विश्वास से भर देती है। स्नान का समय *'सिर्फ अपने लिए'* होना अति लाभदायक साबित होता है। स्नान करते समय जो एकान्त वातावरण मिलता है, उससे मानसिक तनाव भी समाप्त होता है। ऐसे में किसी भी प्रकार का बाहरी व्यवधान न हो तो अति उत्तम रहता है। किसी प्रकार के कार्य का तनाव न होना, फोन इत्यादि जैसे बाहरी सम्पर्कों से दूर, अपना निजी समय सिर्फ आत्मा के निवास की सफाई के साथ–साथ एकान्त साधना के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।

वास्तु स्नानघर की दिशा –

घर में स्नानागार कहां हो, इस विषय में 'मानसर' (ग्रन्थ) का मत है कि पूर्व की दिशा स्नान के लिए निर्धारित है। पूर्व दिशा से आती सूर्य की किरणें जब स्नान किए हुए शरीर पर पड़ती हैं तो, त्वचा में विद्यमान जलकणों पर पड़ने से वे शरीर को एक नई ऊर्जा देती है। ऐसे में यही उचित जान पड़ता है कि स्नानागार घर के दक्षिण–पूर्वी कोने से पहले पूर्व में होने चाहिए ताकि वहां पर सूर्य की किरणें बिना किसी रुकावट के पहुंच सकें। यदि स्नानागार को शयन कक्ष के साथ जोड़ा जाए तो यह शयन कक्ष के उत्तर या पूर्व में होना चाहिए। यह शयन कक्ष के उत्तर–पश्चिम (North-West) अथवा मध्य–पश्चिम में भी हो सकता है।

घर के बाहर की चारदिवारी के साथ स्नानघर बनाना हो तो ऐसे में यह ध्यान रखा जाए कि इसकी दिशा पश्चिम, दक्षिण या दक्षिण–पश्चिम में ही हो। चारदिवारी के साथ स्नानागार की दिशा पूर्व, दक्षिण–पूर्व अथवा उत्तर–पूर्व बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए।

'सुविधा' और 'एकान्त' ये दो चीजें एक अच्छे स्नानागार की विशेषताएं है। स्नानघर के साथ प्रसाधन कक्ष (Dressing Room) भी सटा हुआ ही होना चाहिए।

स्नानघर की दिशा इत्यादि तो महत्त्वपूर्ण हैं ही इसका साफ–सुथरा रहना भी बहुत जरूरी है। स्नानघर सूखा और साफ रहना चाहिए। इसके फर्श का ढलान उत्तर या उत्तर पूर्व की ओर हो। स्नानघर में पानी के बहाव की दिशा उत्तर–पूर्व होनी चाहिए। स्नानघर से बहकर जल के घर से बाहर निकालने का मार्ग भी उत्तर–पूर्व की ओर होना चाहिए।

नहाने का स्थान –

स्नानघर में नहाने का टब (Bathing Tub) तथा धावन–पात्र (Wash Basin) की दिशा भी उत्तर–पूर्व अथवा उत्तर या पूर्व हो। इसकी दिशा दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण–पश्चिम न हो। स्नानघर के भीतर भी स्नान करने का स्थान उत्तर या उत्तरपूर्व हो सकता है। ऐसा इसलिए है कि किसी कारण से यदि सुझाई गई दिशाओं में स्नानघर का बनाया जाना सम्भव न हो तो कम से कम स्नानघर के भीतर नल, टब या शावर इस प्रकार लगाए जाएं कि आपके नहाने का स्थान उत्तर पूर्व में हो। स्नानघर के भीतर ही यदि वस्त्र बदलने का स्थान भी रखा जाए तो इसकी दिशा दक्षिण या पश्चिम होनी चाहिए।

वास्तु स्नानघर की भीतरी व्यवस्था –

उतारे जाने वाले कपडे, जिन्हे धोया जाना है, उन्हें उत्तर–पश्चिम में रखा जाना चाहिए। स्नानघर के भीतर गीज़र का स्थान (गर्म जल) दक्षिणी–पूर्व में होना ही उचित रहता हैं।

स्नानघर के फर्श को पत्थर की स्लैबस से बनाया जा सकता है, किन्तु ध्यान दें कि यह ज्यादा चिकना न हो। स्नानघर के प्रवेश का द्वार दक्षिण–पश्चिम में न रखा जाए। स्नानघर में खिड़की या रोशनदान की दिशा उत्तर या पूर्व होनी चाहिए। कपड़े तथा बर्तन आदि धोने का स्थान स्नानघर में न होकर अलग से हो तो उत्तम रहता है।

भीतरी सज्जा –

स्नानघर की भीतरी सज्जा पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके भीतर यदि मनभावन चित्रों व पोस्टर आदि की व्यवस्था की जाए तो यह नहाते समय मन को एकांत–सुख के साथ कल्पना की उड़ान में भी सहायता करते हैं। इसलिए बाथरूम के भीतर लगाए जाने वाले

चित्रों में प्राकृतिक दृश्यों, उद्यानों, पिकनिक स्पॉट या पहाड़ी मार्गों इत्यादि के चित्र लगाए जाने चाहिएं। स्नानघर के भीतर ऐसे चित्र न लगाए जाए जिनमें बिल्ली, उल्लू जैसे पशु–पक्षियों के चित्र हों अथवा विचित्र मानव मुखकृतियां हों।

स्नानघर के अन्दर यदि नल के चलने की, पानी के टपकने की, नली में से पानी के चूने की आवाज या गड़गड़ाहट की आवाजें आती हैं, तो यह वास्तु–दोष कहलाएगें और इन्हें रोका जाना बहुत ही जरूरी है। इनसे एक ओर तो सारी व्यवस्था प्रभावित होती है, दीवारों इत्यादि पर सीलन भी आती है, साथ ही ये मानसिक शांति पर भी कुप्रभाव डालते हैं।

संगीत –

स्नानघर में संगीत की व्यवस्था भी की जा सकती है। यह आप की रुचि पर निर्भर करता है। हम पहले ही कह चुके हैं कि स्नान का समय व्यक्ति का 'सिर्फ अपने लिए' होता है, ऐसे में यदि उस वातावरण में आपकी रुचि के अवयव भी शामिल हो जाएं तो यह एक प्रकार से पूर्ण वास्तु स्नान होगा, जिसमें तन ही नहीं, मन और आत्मा को भी नयी ऊर्जा मिलेगी। संगीत के शौकिन व्यक्ति चाहें तो बाथरूम के किसी सूखे, सुरक्षित कोने में डैक इत्यादि रख सकते हैं। इसके अतिरिक्त ध्यान दें कि बाथरूम में प्रयोग लाए जाने वाले तौलिए भले ही गहरे रंग के हों, लेकिन ये बाथरूम की भीतरी दीवारों के रंगों से मेल खाएं। बाथरूम की दीवारों का रंग आसमानी, हल्का नीला सफेद या फिर मन की पसन्द के अनुरूप हो, लेकिन जो भी रंग आप चुनें, उसकी शेड हल्की हो। गहरी शेड्स वाले रंग घुटन का अहसास करवाते हैं।

प्रकाश –

स्नानघर के भीतर प्रकाश की व्यवस्था पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए भीतर मुख्य प्रकाश की व्यवस्था तो हो ही साथ में दर्पण के पास स्पाट लाईट की भी व्यवस्था होनी चाहिए ताकि शेव करते समय या मेकअप के लिए सुविधा रहे। कुछ लोग बाथरूम में पढ़ने का आनन्द भी लेना चाहते हैं, इसके लिए उन्हे अलग से स्पाट लाईट की व्यवस्था करनी चाहिए।

स्नानघर के भीतर प्रकाश का सबसे अच्छा स्त्रोत है – अप्रत्यक्ष प्रकाश। इसके लिए ऐसा किंया जा सकता है कि मुख्य प्रकाश स्त्रोत को छत की ओर मोड़ दें। बाथरूम की सफेद छत से टकराकर लौटता प्रकाश आनन्द की अनुभूति करवाता है। प्रकाश स्त्रोत (लैम्प) को बैटन के पीछे रखने से उसकी झिरियों में से आता प्रकाश भी आखों को सुख की अनुभूति करवाता है। प्रकाश के परावर्तन के लिए दर्पण का प्रयोग भी किया जा सकता है।

स्नानघर में दर्पण के पास प्रकाश की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि प्रकाश चेहरे पर पंड़े न कि दर्पण पर। यदि दर्पण पर ही सीधा प्रकाश पड़ेगा तो इससे आकृति धुंधली पड़ जाएगी। प्रकाश यदि दर्पण के ऊपर से आए तो इससे चेहरे पर शेड्स आती है, यदि प्रकाश नीचे से आए तो भी इससे चेहरा धुंधला सा ही रहता है। प्रकाश की सबसे अच्छी व्यवस्था यही होगी कि दर्पण के दोनों ओर सीधे प्रकाश की व्यवस्था हो, जो चेहरे पर केन्द्रित (Focus) हो सके।

सुगन्ध व प्रसाधन सामग्री –

मोमबत्ती जलाना भी बड़ा लाभदायक रहता है। जलती हुई मोमबत्ती का हल्का प्रकाश व उठती भीनी–भीनी सुगन्ध पूजा–का सा अहसास

करवाती है। इस प्रयोजन के लिए विशेष अवसरों पर सुगन्धित मोमबत्तियों का प्रयोग किया जा सकता है।

यदि आपका स्नानघर काफी छोटा है, तो इसके लिए यह किया जा सकता है कि इसमें दर्पण लगा दिए जाएं। बाथरूम के भीतर प्रसाधन सामग्री जैसे लोशन, क्रीम, स्पंज, तेल, जैली, पीठ रगड़ने का ब्रुश, नाखून काटने व तराशने के लिए नेलकटर, कुछ गुब्बारे आदि रखे जा सकते हैं ताकि आपको वैभव की अनुभूति मिल सके।

✠✠✠✠

9 वास्तु अध्ययन कक्ष

VAASTU STUDY ROOM

वास्तु अध्ययन कक्ष वह स्थान विशेष है, जहां व्यक्ति अपने अनुभवों और अध्ययन का निचोड़ (सार) ग्रहण करता है। यह वह स्थान है जहां वह अपने पत्र फाइलें, महत्त्वपूर्ण कागजात व अन्य उपयोगी सामग्री को सलीके से लगा कर रखता है ताकि जरूरत के समय उनका प्रयोग हो सके। यह वह स्थान है, जहां वह द्वार बन्द करके एकान्त तथा शान्ति का अनुभव कर सकता है।

रूचि कक्ष –

अध्ययन कक्ष व्यक्ति को अपनी इच्छाओं व आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। वास्तव में अध्ययन कक्ष एक बुद्धिजीवी के लिए घर के भीतर एक और घर का पर्याय होता है। यही वह स्थान है जहां घर के भीतर होकर भी व्यक्ति शेष घर से कटा हुआ केवल स्वयं के समीप होता है। यहां बैठकर वह योजना बनाता है, सोच–विचार करता है, चिन्तत, मनन करता है, मनपसन्द पुस्तकें पढ़ता है, शोध कार्य करता है, अथवा अपनी रूचि एवं आवश्यकता के अनुरूप अध्ययन सामग्री को एकत्रित करता है। वास्तव में अध्ययन कक्ष एक ऐसा निजि कक्ष है, जो उसी प्रकार बनाया जाता है, जिस प्रकार कोई व्यक्ति दर्जी से अपनी इच्छा व जरूरत के अनुरूप अथवा सूट तैयार करवाता है।

वास्तु अध्ययन कक्ष की व्यवस्था –

वास्तु अध्ययन कक्ष के निर्माण एवं व्यवस्था के सम्बंध में कुछ ध्यान रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बातें इस प्रकार हैं –

छात्रों को पढ़ते समय मुख पूर्व, उत्तर अथवा उत्तर–पूर्व (ईशान) दिशा की ओर करके पढ़ना चाहिए। इसका उनके अध्ययन पर बहुत शुभ प्रभाव पड़ेगा। जैसा कि हम पीछे बता आए हैं कि घर के ईशान कोण पर ब्राह्मण्डीय शक्ति की सूक्षम ऊर्जा (Cosmic energy) का विशेष प्रभाव होता है। यह हमारे मस्तिष्क पर अच्छा प्रभाव डालती है।

अध्ययन भी एक प्रकार की आध्यात्मिक क्रिया है, जिसका सम्बंध आत्मा के विकास से है, अतः यदि अध्ययन कक्ष का प्रयोग केवल अध्ययन के लिए किया जाना हो तो अध्ययन कक्ष का आकार सूच्याकार (मन्दिर अथवा पिरामिड जैसा) होना अति शुभ रहता है।

घर में अध्ययन कक्ष के निर्माण के लिए उत्तर–पूर्व दिशा सर्वोत्तम है, क्योंकि उत्तर–पूर्व दिशा में ज्ञान की देवी का आवास है।

कभी दीवार की ओर मुख करके न पढ़े क्योंकि इससे रचनात्मक–शक्ति में बाधा पडती है। पढ़ने के स्थान के सामने की ओर खुला स्थान व्यक्ति की रचनात्मक शक्ति को प्रेरित करता है, कल्पना को विस्तार देता है तथा स्मरण–शक्ति को बढ़ाता है। अतः अध्ययन कक्ष में पढ़ने के लिए मेज–कुर्सी को ऐसे स्थान पर लगाना चाहिए, जहाँ से बाहर के दृश्य को पूरी तरह देखा जा सके। कभी भी मेज ऐसे स्थान पर न लगाएं, जहां सामने कोई दीवार हो। अध्ययन कक्ष में भी पढ़ने के लिए मेज–कुर्सी का सर्वोत्तम स्थान उत्तर या पूर्व ही है।

जब आप पढ़ न रहे हो तो भी पढ़ने की मेज साफ–सुथरी एवं सुव्यवस्थित होनी चाहिए। मेज पर लैम्प व अन्य सुन्दर व आकर्षक वस्तुएँ जैसे पेपर वेट, पैन–स्टैण्ड आदि रखे रहें तो इससे काम में मन लगता है। दीवार पर क्लाक व दीवार पर सुन्दर चित्र लगाने से मन को प्रसन्नता मिलती है।

पुस्तकों की अल्मारी या रैक आदि कमरे के दक्षिण–पश्चिम में रखना चाहिए। कमरे में अपनी पसन्द की पुस्तकें रखने से मन में जो प्रसन्नता का भाव उत्पन्न होता है, उससे कार्य–क्षमता में वृद्धि होती है।

वास्तु प्रकाश–व्यवस्था –

अध्ययन का सम्बंध बुद्धि से है। बुद्धि के स्वामी बुद्ध देव है। बुध ग्रह का हरा रंग बुद्धि को प्रतिभासित करता है। अतः अध्ययन कक्ष में हरे रंग के प्रकाश की व्यवस्था करना बड़ा शुभकारी प्रभाव डालता है। पढ़ने के कमरे में छोटा हरा अथवा नीला बल्ब जलता रखने से बड़े चमत्कारी प्रभाव सामने आते हैं। पढ़ने के कमरे में प्रकाश की व्यवस्था भी ठीक होनी चाहिए। समुचित प्रकाश व्यवस्था होने से आँखों पर बुरा प्रभाव नहीं पड़ता है। ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए कि कमरे में प्रकाश का स्रोत सीधे आँखों के सामने न चमके। प्रकाश की दिशा भी ऐसी हो कि लिखते समय कागज़ पर हाथ की परछाई न पड़े, इससे आँखों को ज़ोर लगाना पड़ता है, जो सिरदर्द या अन्य किसी प्रकार की तकलीफ का कारण बन सकता है। यदि आप दाएं हाथ से लिखते हैं तो प्रकाश का स्रोत आपके दाएं कन्धे की ओर हो यदि आप बाएं हाथ से लिखते हैं तो प्रकाश स्रोत बाईं ओर होना चाहिए। यदि आप दीवार में व्यवस्थित किया जा सकने (Adjustable) लैम्प प्रयोग करें तो ध्यान दें कि इसका प्रकाश सीधा आपकी आँखों पर न पड़े।

✠✠✠✠

10 वास्तु रसोईघर (पाकशाला)

VAASTU KITCHEN

घर में रसोई एक अति महत्त्व का स्थान है। इसका सीधा–सीधा सम्बंध हमारे पोषण तथा स्वास्थ्य से है। घर में रसोई घर (पाकशाला) की स्थिति का प्रभाव भी हमारे दैनिक जीवन, पोषण व स्वास्थ्य पर पड़ता है।

सूर्य का प्रकाश व ताजगी –

अग्निदेव दक्षिण–पूर्व के अधिष्ठाता है। पाकशाला पर अग्नि देव की कृपा रहे, इस दृष्टि कोण से घर में रसोई घर की दिशा दक्षिण–पूर्व सर्वोत्तम दिशा है। यदि घर के दक्षिणी–पूर्वी कोने को रसोई घर के लिए प्रयोग किया जाए तो यह अति शुभकारी प्रभाव डालता है। सूर्य, अग्नि अर्थात् ऊर्जा के आदि स्रोत तथा स्वामी हैं। सूर्य की दिशा पूर्व है। अतः प्रातःकाल उगते हुए सूर्य की किरणें यदि रसोई घर में प्रवेश करें तो यह एक बड़ा शुभ–लक्षण है। प्रातःकाल रसोई घर में सबसे ज्यादा व्यस्तता रहती हे, ऐसे में उगते हुए सूर्य का प्रकाश घर की अन्नपूर्णा (गृह–स्वामिनी) के मन–मस्तिष्क पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। इससे रसोई में काम करते हुए प्रसन्नता व ताज़गी का आभास होता है। यदि दक्षिण–पूर्व में रसोई घर के लिए स्थान उपलब्ध न हो तो उत्तर–पश्चिम या पश्चिम दिशा को चुनना चाहिए।
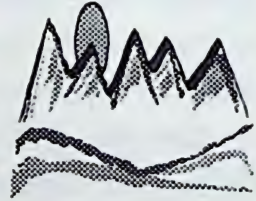
रसोई घर से तनाव –

उत्तर–पूर्व में रसोईघर का निर्माण न किया जाए तो यह ज्यादा अच्छा रहता है देखने में आता है कि उत्तर–पूर्व में रसोई घर बनाने से मानसिक तनाव तथा

नुकसान की घटनाओं में वृद्धि हो जाती है। ऐसे स्थान पर रसोईघर में काम करते हुए स्त्रियां प्रायः मानसिक तनाव की शिकायत करती है। मानसिक तनाव के चलते दुर्घटना या नुकसान का भय बना रहता है।

गलत स्थान पर रसोईघर से घरेलु शान्ति भंग –

दक्षिण–पश्चिम दिशा में भी रसोईघर का निर्माण नहीं किया जाना चाहिए। देखा गया है कि दक्षिण–पश्चिम में रसोईघर का प्रभाव घर के सदस्यों की मानसिक शान्ति भंग कर देता है। ऐसे घरों के लोग प्रायः पारिवारिक कलह की शिकायत करते पाए जाते है। जीवन में सफलता प्राप्त करने में भी वे कठिनाइयों का सामना करते पाए जाते हैं।

उत्तर–दिशा में बने रसोईघर वाले घरों में परिवारों में खर्च में अप्रत्याशित वृद्धि होती देखी गई है। प्रायः गृह–स्वामी घर की जरूरतें पूरी न कर पाने की शिकायत करते देखे गए हैं।

रसोईघर का द्वार पूर्व, उत्तर या वायत्य कोण के पश्चिम दिशा में द्वार रखा जा सकता है। जहां तक हो सके रसोई का प्रवेश द्वार दक्षिण में न रखा जाए।

रसोईघर में चूल्हे के लिए सर्वोत्तम स्थान है – पूर्व में दीवार से थोड़ा हटकर। चूल्हा रसोईघर के प्रवेश द्वार के बिल्कुल सामने न रखा जाए। खाना पकाने वाले का मुख पूर्व दिशा में रहे तो यह एक शुभ लक्षण है। पूर्व दिशा में मुख करके अग्नि के आदि स्रोत सूर्य देव को स्मरण करते हुए भोजन पकाने से घर से बीमारी आदि का प्रभाव घटता है।

रसोईघर से पानी के निकासी की दिशा उत्तर–पूर्व होनी चाहिए। रसोईघर में बर्तनों के धोने का स्थान (सिंक) उत्तर–पूर्व दिशा में होना

चाहिए। बर्तन धोने के बाद पानी के बहाव की दिशा भी यदि उत्तर पूर्व ही हो तो इसका प्रभाव शुभ होता है।

भोजन पकाते समय पके हुए भोजन में से थोड़ा सा अंश परमपिता परमात्मा को श्रद्धापूर्वक स्मरण करके अलग निकाल देना चाहिए। इस भोजन को बाद में जानवरों, पशु–पक्षियों को खिला देना चाहिए। इसके पीछे हमारी धारणा यह है कि मनुष्य सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ रचना है। उत्पादन के सभी साधनों पर उसका आधिपत्य है। वह पृथ्वी के संसाधनों का स्वामी है। पशु–पक्षियों उससे निम्न कोटि के जीव है, यदि मनुष्य उदारतापूर्वक अपने भोजन में से कुछ अंश इन जीवों को अर्पित करता है तो इन मूक प्राणियों को जो संतुष्टि मिलती है, वह मनुष्य के सुखमय जीवन के लिए शुभकर्मों का आधार बनती है, श्री मद्भागवद्गीता के तीसरे अध्याय के 13 वे श्लोक में श्री कृष्ण ने यह स्पष्टतः कहा है कि मनुष्य को भोजन केवल अपने लिए नहीं पकाना चाहिए। वे कहते हैं–

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वधं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।

अर्थात –

यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं और जो लोग केवल अपना शरीर पोषण करने के लिए ही अन्न पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं।

उपरोक्त श्लोक में यज्ञ का भाव पञ्चमहायज्ञ से है। यज्ञ का अर्थ वे शास्त्रीय सत्कर्म हैं, जो क्रियाओं से सम्पादित होते हैं। सृष्टि कार्य के सुचारू रूप से संचालन में सृष्टि के जीवों का भली–भांति भरण–पोषण होने में पांच श्रेणी के प्राणियों का परस्पर सम्बंध है – देवता, ऋषि, पित्तर, मनुष्य और अन्य प्राणी। इन पांचों के सहयोग से ही सबकी पुष्टि होती है। देवता समस्त संसार को इष्ट भोग देते हैं। ऋषि सभी को ज्ञान देते हैं। पित्तर संतान का भरण–पोषण करते हैं

और हित चाहते हैं, मनुष्य कर्मों के द्वारा सबकी सेवा करते हैं और पशु—पक्षी वृक्षों आदि सभी के सुख से साधन रूप में अपने को समर्पित किए रहते हैं। उपरोक्त पांचों प्राणियों में से योग्यता व अधिकार में श्रेष्ठ और सभी प्रकार से साधन—सम्पन्न होने के कारण सबकी पुष्टि का दायित्व मनुष्य पर है। इसी से मनुष्य शास्त्रीय कर्मों के द्वारा सब की सेवा करता है। मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह जो कुछ भी कमाए, उसमें इन सभी का भाग समझे, क्योंकि वह इन सबकी सहायता सहयोग (आशीर्वाद) से ही कमाता—खाता है। इसीलिए जो यज्ञ करने के बाद बचे हुए अन्न को अर्थात इन सभी (देवता, ऋषि, पित्तर व अन्य प्राणी) को उनका प्राप्य देकर बचे हुए अन्न को खाता है, उसी को शास्त्रकार अमृताशी (अमृत खाने वाला) बतलाते हैं। जो ऐसा नहीं करता, दूसरों का स्वत्व मारकर केवल अपने लिए ही खाता—कमाता है, वह पाप खाता है। यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाला वास्तव में वही है, जो सबको अपनी कमाई का हिस्सा यथायोग्य देकर फिर बचे हुए को स्वयं काम में लाता है। ऐसे स्वार्थ त्यागी कर्मयोगी मनुष्य ही सुख व समृद्धि के अधिकारी हैं।

यज्ञ प्रसाद —

भोजन पकाना एक याज्ञिक क्रिया है। भोजन पकाते समय शुद्ध मन से अपने ईष्टदेव का ध्यान करना चाहिए। भोजन पक जाने पर यज्ञ की आहूति के रूप में कुछ मिष्ठान (बिल्कुल थोड़ी सी चीनी, गुड आदि) घी के अंश के साथ अग्नि को समर्पित करके ही भोजन ग्रहण करना चाहिए। ऐसा करने से भोजन का शरीर पर बड़ा सात्विक प्रभाव पड़ता है। क्योंकि हम कहते हैं — 'जैसा खाएगे अन्न, वैसा बनेगा मन।' सात्विक भावों के साथ पकाया, सात्विक भावना के खाया जाने वाला अन्न वास्तव में ही किसी यज्ञ के प्रसाद को ग्रहण करने के समान है।

हो सकता है कि कुछ पाठकों को अन्न की अग्नि को आहूति देना अंध—विश्वास मात्र लगे। ऐसे में हमारा विनम्र निवेदन है कि वे जरा विस्तृत दृष्टिकोण से देखें तो पाएगे कि खाने—पीने के सभी पदार्थ

ऊर्जा के स्रोत हैं। ऊर्जा का मूल रूप अग्नि ही है। हम अपने विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा उपार्जित अन्न को पकाकर ही भोजन के रूप में ग्रहण करते हैं। बिना पकाए अन्न भोजन का रूप नही लेता। अन्न को उसमें ग्राह्य रूप (भोजन) में बदलने का कार्य अग्नि देव की कृपा से सम्पन्न होता है। ऐसे में अन्न की अग्नि को आहूति दिए बिना भोजन ग्रहण करना पाप है, क्योंकि बिना आहुति के दैवयज्ञ और बलिवैश्वदेव सिद्ध नही होते। अतः भोजन पक जाने पर यज्ञ की आहुति रूप में थोड़ा सा अंश श्रद्धा समर्पित किए जाने से मनुष्य देवों को उनका प्राप्य देकर हवन का पुण्य पाता है।

पकाने का स्थान –

घर मे पाकशाला के निर्माण के सम्बंध में कुछ अन्य बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

रसोईघर में भोजन पकाने के स्थान का फर्श घर के फर्श से थोड़ा ऊँचा होना चाहिए। रसोईघर के इस कोने को फर्श से थोड़ा ऊँचा रखना स्वास्थ्य–विज्ञान की दृष्टि में भी उत्तम है, क्योंकि इससे दूषित पानी, गंदे पैर या अन्य बाहरी दूषित प्रभावों से रसोईघर मुक्त रहता है। खाना पकाने की स्लैब की ऊँचाई भी खाना पकाने वाली स्त्री के कद अनुरूप सुविधाजनक ढंग से रखी जानी चाहिए।

रसोईघर में पानी का भण्डारण उत्तर अथवा उत्तर–पूर्व दिशा में किया जाना चाहिए।

रसोईघर में अटारी (Lofts) अल्मारी या रैक्स आदि दक्षिणी दीवार के साथ होना चाहिए। यदि दक्षिण में जगह उपलब्ध न हो तो पश्चिमी दीवार के साथ बनाने चाहिएं। पूर्वी या उत्तरी दिशा इसके लिए उचित नहीं है।

रसोईघर को स्नानघर या शौचालय के साथ सटा हुआ नहीं बनाना चाहिए। न ही रसोईघर का तथा शौचालय या स्नानघर का द्वार आमने सामने होना चाहिए। यदि रसोईघर के भीतर ही या उसके बाहर

खुली जगह पर डायनिंग टेबल लगाई जाए तो उसके लिए उत्तम है – उत्तर–पश्चिम अथवा पश्चिम दिशा।

वास्तु प्रकाश व्यवस्था –

रसोईघर में रोशनी तथा ताज़ी हवा के आने–जाने की सुविधा का ध्यान रखना भी अति आवश्यक है। रसोईघर में कम से कम एक खुली बड़ी खिड़की अथवा बड़ा रोशनदान अवश्य होना चाहिए। यह बड़ी खिड़की या रोशनदान पूर्व दिशा में हो अथवा उत्तरी दिशा में। इसके सामने पश्चिम अथवा दक्षिण में अपेक्षाकृत छोटी खिड़की तथा रोशनदान होने से रसोईघर में प्रकाश तथा ताज़ी हवा की उत्तम व्यवस्था हो सकती है।
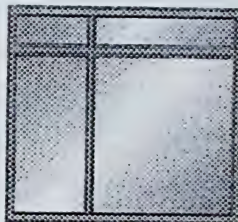
प्रदूषण व दुर्घटना से रक्षा –

'महाभारत' में एक प्रसंग है। वरणावत में पाण्डवों के लिए जो महल (लाक्षागृह) बनाया गया था, उसमें छिपे किसी षडयन्त्र को सूंघते हुए विदुर ने पाण्डवों की सलाह दी थी कि वे अपने महल में आग से बच निकलने का मार्ग भी अवश्य बनवाएं। यह 'सलाह' पाण्डवों के लिए जीवन–रक्षा का साधन बनी। देखा जाए तो हर घर में सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध होना ही चाहिए। रसोईघर विशेषतः वह स्थान है जहां कही भी कभी–भी कोई दुर्घटना घट सकती है। आजकल प्रायः हम गैस स्टोव का प्रयोग करते हैं, ऐसे में सुरक्षा के पक्ष पर भी पूरा ध्यान देना और भी आवश्यक हो जाता है। अतः एक छोटा आग बुझाने का यंत्र (Fire extinguisher) रसोईघर में उपलब्ध रहे तो श्रेष्ठ है। यह थोड़ा–सा खर्च बहुत बड़ी राहत का साधन हो सकता है। आग ही नहीं रसोईघर को दूषित होने से भी बचाया जाना चाहिए। अतः यह जरूरी है कि रसोईघर को बाह्य प्रदूषणों से बचाया जाना चाहिए। बच्चों को जूते लेकर रसोईघर में जाने से मना करना चाहिए। भोजन पकाने से पूर्व हाथ–पैर अच्छी तरह धो लेने चाहिए। यह किसी प्रकार का धार्मिक अंधविश्वास नहीं है बल्कि बाह्य–प्रदूषण से बचाव का स्वभाविक एवं सहज उपाय है।

रसोईघर में माइक्रोवेव ओवन मिक्सर–ग्राईंडर आदि को दक्षिण दिशा में रखना चाहिए। इसके लिए दक्षिण–पूर्व दिशा भी उत्तम है। रसोईघर में अन्न, चावल, दालें, मसालें इत्यादि दक्षिण या पश्चिम में रखना उत्तम प्रभावकारी होता है।

रसोईघर में निकासी पंखे (Exhaust Fan) की व्यवस्था पूर्व, उत्तर या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए। यदि फ्रिज को रसोईघर में रखना हो तो इसे उत्तर–पूर्व दिशा में न रखें।

वास्तु रंग व्यवस्था –

रसोईघर में रंग व्यवस्था पर भी ध्यान देना चाहिए। दीवारों पर सफेद या गहरा नीला या काला, गहरा चाकलेट रंग नहीं करवाना चाहिए। भले ही ये रंग आसानी से मैले नही दिखते पर इनका प्रभाव अच्छा नही होता। ये रसोईघर में काम करने वाले को शीघ्र ही मानसिक थकावट का शिकार बना सकते है। सफेद रंग जल्दी मैला नजर आने के कारण व्यावहारिक नही है। अतः हल्का पीला, हल्का गुलाबी, हल्का चाकलेटी या अन्य कोई हल्का मध्यम रंग जो आपकी रूचि के अनुकूल हो, चुनना चाहिए। इस विषय में अलग से भी एक अध्याय दिया जा रहा है कृपया उसे भी ध्यानपूर्वक पढ़ें। रसोईघर में रंग बिरंगे जार, कटोरियाँ या वाऊल, बास्केट आदि का प्रयोग करना भी समझदारी का परिचायक है। ये रंग–बिरंगी वस्तुएं मन को एक सकून व वैभव का आभास दिलाती हैं। रसोईघर की सफाई के लिए अलग झाडू इस्तेमाल किया जाना अच्छा रहता है यह झाडू रसोईघर ही में रखना हो तो उत्तर–पश्चिम दिशा में रखें।

रसोईघर की पूर्वी दीवार पर एक दर्पण लगाना भी शुभकारी है।

✠✠✠✠

वास्तु भोजन कक्ष

VAASTU DINNING ROOM

वास्तु भोजन कक्ष की आदर्श स्थिति –

भोजन कक्ष – आवश्यक नहीं कि यह कमरा ही हो। रसोईघर से सटी हुई लॉबी, ड्राईंग रूम का कोना या फिर अलग से कोई कमरा, जो रसोईघर के नजदीक हो, भोजन–कक्ष के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

भोजन कक्ष रसोईघर के निकट पूर्व, पश्चिम या उत्तर में होना चाहिए इसके लिए सर्वोत्तम दिशा है – उत्तर–पश्चिम। उत्तर–पश्चिम दिशा को भोज्य पदार्थों की दिशा माना गया है। वास्तुशास्त्रकारों का विश्वास है कि उत्तर–पश्चिम में बैठकर भोजन करने से भोजन जल्दी पच जाता है।

भोजन कक्ष रसोईघर से ज्यादा दूर नहीं होना चाहिए। ऐसा तो बिलकुल भी न हो कि रसोईघर नीचे हो और भोजन कक्ष ऊपर प्रथम तल पर हो।

भोजन कक्ष में अथवा इसके निकट हाथ धोने का स्थान (वॉश बेसिन) होना चाहिए ताकि भोजन के पश्चात् कुल्ला आदि करने में सुविधा हो। यहाँ ध्यान देने की बात है कि वॉश बेसिन के पानी के बहाव की दिशा उत्तर–पूर्व ही हो।

डाईनिंग टेबल की स्थिति –

भोजन कक्ष में खाने की मेज (डाईनिंग टेबल) को रखने की भी एक व्यवस्था है। डाईनिंग टेबल इस प्रकार रखी जानी चाहिए कि

गृह—स्वामी उसकी पत्नी अथवा घर का सबसे बड़ा बेटा दक्षिण या दक्षिण पश्चिम दिशा में रखी कुर्सी पर बैठे। इसका दूसरा विकल्प है कि वह पश्चिमी दिशा के दक्षिण—पश्चिम कोने पर बैठे और भोजन करते समय उसका मुह उत्तर अथवा पूर्व की ओर रहे।

भोजन करने से पूर्व वास्तुग्रास — भोजन का कुछ अंश गाय, कुत्ते या पक्षियों के निमित अलग रख देने से भोजन को ग्रहण करने का भाव सात्विक हो जाता है। इस विषय पर हम पिछले अध्याय में चर्चा कर चुके हैं।

खाने की मेज ऐसे स्थान पर लगाई जानी चाहिए जहां शौचालय या स्नानघर का द्वार बिल्कुल सामने न खुलता हो। भोजन कक्ष के निकट स्नानघर या बर्तन आदि धोने का स्थान होना चाहिए, लेकिन शौचालय को इससे दूर ही होना चाहिए।

वास्तु भोजन कक्ष की आंतरिक सज्जा –

भोजन कक्ष में यदि साज—सज्जा की जाए तो इसमें लकड़ी का प्रयोग अधिक होना चाहिए। भोजन कक्ष की दीवारों का रंग गुलाबी, नारंगी, पीला, क्रीम या आपकी रूचि के अनुरूप हो। भूरा रंग शान्तिदायक है, इसका पाचन क्रिया पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। भूरा रंग तथा सफेद (off white) का संगम तो शरीर में बनने वाले पाचक रसों की उत्पत्ति पर भी अनुकूल प्रभाव डालता है। रंगों में से लाल, नारंगी, पीला रंग व्यक्ति के मनोभाव पर अनुकूल प्रभाव डालते हैं तथा भूख व पाचन को बढ़ाते हैं।

अन्य व्यवस्थाएँ –

भोजन कक्ष में यदि फ्रिज रखा जाए तो इसका स्थान दक्षिण—पूर्वी कोने में होना चाहिए। भोजन कक्ष में पूर्वी या उत्तरी दीवार पर एक दर्पण भी लगाया जा सकता है। भोजन कक्ष की सुविधा—सम्पन्न बनाने की दृष्टि से फ्रिज के अतिरिक्त क्राकरी तथा कटलरी की व्यवस्था भी खाने के मेज के निकट ही किया जाना

चाहिए। खाने की मेज का आकार वर्गाकार या आयताकार होना चाहिए। ध्यान दें कि इसके कोने तीखे न हों। खाने की मेज को दीवार से सटा कर नहीं रखना चाहिए। भोजन की मेज़ छत की बीम के नीचे नहीं रखना चाहिए। हाँ यदि छत पर फाल्स—सीलिंग लगाई गई हो तो इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता।

भोजन कक्ष में भूख को तेज करने वाले चित्र इत्यादि रखने चाहिएं। भोजन कक्ष की छत मेहराबदार नहीं होनी चाहिए।

✠✠✠✠

वास्तु बैठक

VAASTU DRAWING ROOM

घर में बैठक (Drawing) का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण है। इसका प्रचलित नाम ड्राईंग रूम है इस अध्याय में हम इसी शब्द का प्रयोग करेंगे। यह बाहर से आने वाले लोगों के स्वागत एवं आवभगत के लिए प्रयोग में लाया जाता है। वास्तु ड्राइंग रूम यह घर के सदस्यों की सुरुचि एवं कलात्मकता का परिचायक होता है। यह खुला, हवादार ठीक से सजा हुआ हो तथा इसमें प्रकाश की पूरी व्यवस्था होनी चाहिए।

ड्राईंग रूम की स्थिति –

घर में ड्राईंग रूम उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व दिशा में हो तो बेहतर रहता है। घर के दक्षिण–पूर्वी भाग में ड्राईंग रूम नहीं बनाना चाहिए। ड्राईंग रूम के भीतर भी उत्तर–पूर्व दिशा में ज्यादा खुला स्थान छोड़ा जाना चाहिए। ड्राईंग रूम के फर्श की ढलान भी उत्तर–पूर्व में ही होनी चाहिए।

फर्नीचर व आंतरिक व्यवस्था –

ड्राईंग रूम के भीतर फर्नीचर की व्यवस्था इस प्रकार की जानी चाहिए कि भारी फर्नीचर (सोफा सेट, दीवान आदि) पूर्व या उत्तर की दीवारों को न छूएं। सोफा सेट तथा शो केस या पौधों (Indoor Plants) के गमले, अन्य भारी सामान, किताबों की अल्मारी इत्यादि इस प्रकार रखे जाएं कि उनकी दिशा पश्चिम तथा दक्षिण हो।

भारी फर्नीचर का उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व दिशा में रखना वास्तु की दृष्टि से शुभ नहीं है, लेकिन यदि किसी कारणवश भारी फर्नीचर को इन दिशाओं में रखना ही हो, तो उन्हें दीवारों से थोड़ा हटाकर रखना चाहिए। इसका एक तरीका और भी है कि इस फर्नीचर के नीचे कोई

कारपेट या फ्लोरिंग बिछा दी जानी चाहिए ताकि वे फर्श के सीधे सम्पर्क में न आएं। बेहतर है कि ऐसा फर्नीचर बहुत भारी न हो।

फानूस –

भारी दीवाघाट (फानूस Chandelier) को यद्यपि फैशन के तौर पर ड्राईंग रूम के बीचों–बीच लटकाया जाता है, लेकिन वास्तु की दृष्टि से फानूस को बिल्कुल बीचों बीच न लटका कर थोड़ा हटकर स्थान देना चाहिए।

ड्राईंग रूम की भीतरी सज्जा –

भीतरी साज–सज्जा के समय इस बात पर भी ध्यान दें कि सोफा तथा कुर्सियों की व्यवस्था अंग्रेजी के अक्षर 'L' के आकार की न हो क्योंकि इसके एक कोने में कुछ खाली स्थान रह जाता है, जो एक वास्तु–दोष है और आँखों को अच्छा नहीं लगता। सोफा तथा कुर्सियों की व्यवस्था इस प्रकार की जाए कि वे प्रवेश–द्वार की ओर उनकी पीठ न हो।

ड्राईंग रूम में सैन्टर टेबल के लिए वर्गाकार या आयताकार टेबल ही उत्तम रहती है। ऐसी मेज के कोने एकदम तीखे नहीं होने चाहिए। त्रिभुजाकार या अन्य किसी आकार के मेज़ भले ही देखने में असाधारण लगे, लेकिन वास्तु के आधार पर उन्हें अच्छा नहीं कहा जा सकता।

प्राचीन कलाकृतियाँ –

ड्राईंग रूम में रखी हुई प्राचीन कलाकृतियाँ (Antiques) घर के वैभव की द्योतक होती हैं। इनसे ड्राईंग रूम की शोभा भी बढ़ती है। लकिन इन Antiques को खरीदते समय एक सावधानी रखनी चाहिए कि इनके इतिहास की पूरी जानकारी (किस कलाकार ने, कब बनाई, किसके पास रही आदि बातें) प्राप्त कर लेनी चाहिए। हम पाठकों को किसी भ्रम या अंधविश्वास में डालना नहीं चाहते लेकिन यह सत्य है कि किसी प्राचीन कलाकृति के कारण कोई घर किस प्रकार दुर्भाग्य का शिकार बन गया यह रहस्य–रोमांच कथाओं की कल्पना का आधार

मात्र नही है, इसमें कुछ सत्य का अंश भी रहता है। अतः antiques को खरीदते हुए उनके इतिहास की जानकारी ले लेने में कोई बुराई नहीं है। यदि आपको कोई भी तथ्य अप्रिय लगे तो उसे खरीदने का विचार छोड़ देना ही उत्तम है।

चित्रों का चुनाव –

ड्राईंग रूम की दीवारों पर सुरुचिपूर्ण चित्र लगाएं जाने चाहिएं। ड्राईंग रूम की दीवारों पर जंगली जानवरों की लडाई या शिकार के दृश्य अथवा गिद्ध, उल्लू या मांसाहारी पक्षियों—सांप, अजगर आदि के चित्र नहीं लगाने चाहिए। युद्ध के चित्रों तथा ऐसे चित्रों को भी नहीं लगाना चाहिएं जिनमें पुरुष या स्त्रियों को किसी रूप में नग्न दिखाया गया हो। भिन्न—भिन्न चित्रों या कलात्मक वस्तुओं का घर के सदस्यों पर अलग—अलग प्रभाव हो सकता है। ड्राईंग रूम में लगी किसी तस्वीर या किसी कलाकृति का यदि किसी सदस्य (विशेषतः बच्चों) को मनोभावों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा हो उसे वहां से, जरूरी हो तो घर से ही हटा देनी चाहिए। माता—पिता को चाहिए कि वे घर के साज—सजावट में केवल अपनी रुचि को ही महत्त्व न दें घर के बच्चों के मनोभावों को भी महत्त्व दें। ड्राईंग रूम वह स्थान है जहां घर के प्रत्येक सदस्य को आना जाना होता है। ड्राईंग रूम की सज्जा घर के प्रत्येक सदस्य और मेहमानों को भी प्रभावित करती है।

टी॰वी॰ का स्थान –

आजकल टी॰वी॰ का प्रचलन है। प्रायः हम टी॰वी॰ ड्राईंग रूम में ही रखते हैं। ड्राईंग रूम में टी॰वी॰ उत्तर—पूर्व या दक्षिण—पश्चिम में नहीं रखना चाहिए। यह भी ध्यान देने की बात है कि टी॰वी॰ देखतेसमय कमरे की सभी लाइटें न बुझाई जाएं और न ही ऐसा हो कि कमरे में जल रही किसी लाईंट का सीधा प्रकाश टी॰वी॰ के पर्दे पर
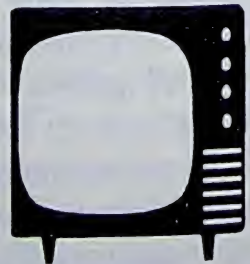
पड़ रहा हो। इसके लिए सबसे उत्तम व्यवस्था यही होगी कि कमरे के किसी कोने में एक लैम्प हो जिसका प्रकाश छत से टकरा कर कमरे में फैल रहा हो, या फिर छत पर से प्रकाश नीचे फर्श पर फैले जो टी॰वी॰ स्क्रीन को प्रभावित न करे।

यदि टेलीफोन भी ड्राईंग रूम में ही रखा हो। तो इसे पूर्व दिशा में रखना उचित है। यदि पूर्व दिशा में स्थान उपलब्ध न हो तो दक्षिण—पूर्व या उत्तर—पश्चिम दिशा ज्यादा उचित रहेगी।

देवी—देवताओं तथा अपने ईष्ट देव, गुरूजनों के चित्र उत्तर—पूर्व के कोने में लगाने चाहिएं। ड्राईंग रूम की दीवार पर यदि कोई झील, या झरने का चित्र लगाना हो तो इसके लिए भी उत्तर—पूर्व दिशा ही ज्यादा ठीक है।

ड्राईंग रूम की दीवारों के रंग भी गहरे चटक न होकर खुशनुमा होने चाहिएं। सफेद, हल्का पीला, क्रीम, हल्का हरा या हल्का नीला रंग आँखों को ठण्डक व मन को शान्ति देते हैं। लाल, काले तथा स्लेटी रंगों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इन्हें मात्र किसी कोने को सजावट देने के लिए उचित संतुलन के साथ प्रयोग करना चाहिए।

ड्राईंग रूम में से यदि भीतर की ओर जीना (सीढियाँ) चढ़ाना हो तो इसके लिए दक्षिण, पश्चिम या दक्षिण—पश्चिम कोना ही चुनना चाहिए।

ड्राईंग रूम में घर के स्वामी को दक्षिण—पश्चिम कोने में खाली कुर्सी पर बैठना चाहिए तथा उसका मुख पूर्व अथवा उत्तर की ओर रहना चाहिए। दिन के अधिकतर समय गृह स्वामी को ड्राईंग रूम में ही रहना चाहिए ताकि आगुतकों से उसकी सीधी मुलाकात सुलभ हो सके।

✠✠✠✠

13 वास्तु अन्तः कक्ष

VAASTU LIVING ROOM

अन्तः कक्ष, जिसे आजकल लिविंग रूम (Living Room) कहा जाता है, घर के सदस्यों के निजी प्रयोग के लिए होता है। यह घर का वह बीचो—बीच का भाग है। जहां घर के सभी सदस्य इकट्ठे बैठकर किसी विषय पर विचार—विमर्श करते हैं अथवा विचार—विमर्श, गपशप अथवा घरेलू बातचीत करते हैं। यह स्थान यद्यपि निजी प्रयोग के लिए होता है, इसलिए इसकी सज्जा में ड्राईंग रूम जैसी औपचारिकता की आवश्यकता नहीं होती, तो भी इसकी सज्जा पर ध्यान दिया जाना ही चाहिए। सबसे बड़ी बात है कि आरामदायक एवं आकर्षक होना चाहिए ताकि घर के सदस्यों को सुख व आराम का अनुभव हो। दूसरे इसकी सज्जा में घर के प्रत्येक सदस्य की पसन्द की झलक मिलनी चाहिए। यह ऐसा स्थान है जहां सभी का अपनत्व झलकता है। यह घर के सदस्यों के परस्पर मेल—जोल को बढ़ाने का केन्द्र—स्थल है। अतः यहां पर एकता का भाव स्पष्ट झलकना चाहिए।

वास्तु शास्त्र के अनुसार लिविंग रूम के लिए सबसे उत्तम स्थल बह्मस्थान अर्थात घर का केन्द्र या उत्तर—पूर्व का कोना है। इसके अतिरिक्त यह घर के उत्तर अथवा पूर्व दिशा में भी बनाया जा सकता है।

अन्तः कक्ष में लगाए जाने वाली कलाकृतियां या पर्दे आदि ऐसे खुशनुमा रंगों के हो जिनमें पूर्णतः तालमेल हो। इनके रंगों व डिजायन में सादगी तथा वैभव की झलक मिलनी चाहिए। इनके रंग

ज्यादा न हों और इनसे हर प्रकार से सुख और आराम का भाव झलकना चाहिए।

अन्तः कक्ष में घर की जीवन–शैली की झलक मिलती है। अतः यही पर घर के सदस्यों द्वारा तैयार की गई कलाकृतियों को सजाना अति उत्तम कार्य है। घर के सदस्य व मेहमान जब कभी इन कलाकृतियों व साजो–सामान की तारीफ करते हैं तो इससे बनाने वाले के मन को एक संतोष व गौरव का अनुभव होता है। वह घर के सभी सदस्यों के साथ गहरा लगाव अनुभव करता है। यह लगाव स्वयं उसे कुछ नया व और अच्छा करने की प्रेरणा देता है तो अन्य सदस्य भी उससे प्रेरणा पाकर अपनी कार्य शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाते हैं इस प्रकार उनमें परस्पर स्नेह व विश्वास का नाता मजबूत होता चला जाता है।

अन्तः कक्ष में प्रकाश की व्यवस्था भी समुचित होनी चाहिए। इसमें फर्नीचर इत्यादि की व्यवस्था करते समय उनहीं बातों का ध्यान रखना चाहिए, जिनकी चर्चा ड्राईंग रूम वाले अध्याय में की गई है।

✠✠✠✠

14 बच्चों का वास्तु कमरा

VAASTU CHILDREN ROOM

हम बच्चा किसे कहते हैं ? यह प्रश्न कई बार सामने आता है। यदि हम 'बचपन' की सीमा से थोड़ा बाहर निकलें तो कह सकेंगे कि जो व्यस्क नहीं वह बच्चा है। इस आधार पर घर के 18 माह से 18 वर्ष तक के सदस्यों को बच्चा माना जाना चाहिए। घर के बच्चों को मात्र बच्चा ही नहीं समझना चाहिए, वे भी घर के महत्त्वपूर्ण सदस्य हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वे घर की विरासत के उत्तराधिकारी, इसके भावी स्वामी हैं। अतः माता–पिता को ध्यान देना चाहिए कि बच्चों को घर में ऐसा वातावरण मिले जो उनकी रुचियों, भावनाओं एवं स्वभावगत प्रवृत्तियों को सही दिशा दे सकें। बच्चों के भावनात्मक संवेगों (पसन्द, नापसन्द, तथा प्रतिक्रियाएं) को देखकर ही यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि वह बड़ा होकर कैसा व्यक्ति बनेगा। बच्चे के उचित भावनात्मक विकास में माता–पिता बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस दृष्टिकोण से किसी भी घर में 'बच्चों का कमरा' बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। बच्चों का कमरा उसके सोने, पढ़ने, साथियों के साथ बातचीत करने, कोई खेल खेलने अथवा अपनी रुचि के कार्यों को करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। बच्चों का कमरा भली–भांति सजा होना चाहिए और इसमें बच्चों की सुविधा व आराम की दृष्टि से जरूरी सभी चीजें उपलब्ध हों।

सज्जा –

बच्चों का कमरा मुख्यतः सोने तथा आराम के लिए प्रयोग में लाया जाता है, ताकि वे शारीरिक एवं मानसिक थकान से मुक्ति पाकर तरोताजा हो सकें। बच्चे अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाएं इसके लिए जरूरी है कि बच्चों के कमरे की सज्जा इस प्रकार की जाएं कि वे रचनात्मक कार्यों में प्रवृत हो सकें। कलाकृतियां ऐसी हो जिनमें ऐसा संदेश समाहित हो जो बच्चे को अपनी पढ़ाई कामों व सुरुचिपूर्ण खेलों के लिए प्रेरित करें।

स्थिति –

बच्चों के कमरे के लिए सर्वोत्तम दिशा है – पश्चिम या उत्तर। यदि पश्चिम या उत्तर में सम्भव न हो तो दक्षिण–पूर्व, पूर्व या उत्तर–पूर्व में भी बच्चों का कमरा बनाया जा सकता है। लेकिन ध्यान दें कि बच्चों के लिए दक्षिण–पश्चिम दिशा उचित नहीं है। यह स्थान रति कक्ष के लिए उपयुक्त है। कमरे के अन्दर बच्चों के सोने का स्थान दक्षिण–पश्चिम कोने में हो तो यह सर्वोत्तम लक्षण है। दक्षिण–पश्चिम दिशा गहरी एवं स्वस्थ नींद के लिए उचित है। बच्चों को समझाना चाहिए कि वे दक्षिण की ओर पैर करके न सोएं। सोते समय उनका सिर दक्षिण में और पैर उत्तर में रहने चाहिएं। हम पहले ही यह स्पष्ट कर चुके हैं कि सोते समय यदि हमारा सिर दक्षिण दिशा में रहे तो इससे गहरी नींद आती है तथा मानसिक शांति भी मिलती है।

पढ़ने का स्थान –

बच्चों के कमरे में ही उनके पढ़ने का स्थान भी बनाया जाना चाहिए। बच्चों के पढ़ने की मेज़ भी उत्तर–पूर्व में लगाई जानी चाहिए। इसी मेज के कुछ ऊपर कोने में छोटा सा मन्दिर (पूजा स्थल) बनाने से इसके बड़े शुभकारी प्रभाव सामने आ सकते हैं।

बच्चों के कमरे के साथ बाथ–रूम भी हो तो इसका बच्चों की कार्यक्षमता पर अनुकूल प्रभाव पड़ता हैं। बच्चों के कमरे में उनकी जरूरत का समान तथा बदलने के कपड़े इत्यादि भी रहने चाहिएं।
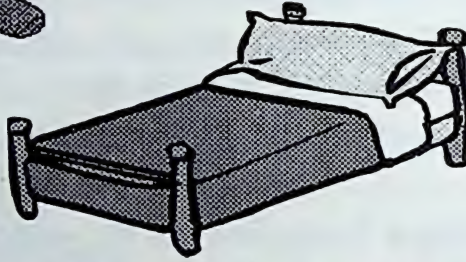
कमरे में बैड इस प्रकार लगाया जाए कि वह बाथ रूम के दरवाजे या ड्रेसिंग एरिया के बीच में बाधा न बनें। बैड के सिरहाने भी कोई आने जाने का स्थान न हो। बंक बैड (दो मंजिले बैड) को जहां तक हो सकें, प्रयोग में नहीं लाना चाहिए।

✠✠✠✠

पूजा कक्ष

POOJA ROOM

पूजा घर की स्थिति –

घर में पूजा–स्थल अथवा पूजा घर या पूजा का कमरा, जिसे ध्यान–कक्ष अथवा प्रार्थना–कक्ष भी कहा जा सकता है, भाव यह है कि वह स्थान जहाँ हम श्रद्धापूर्वक अपने ईष्टदेव का याद करते हैं; यह स्थान घर के केन्द्र अथवा ब्रह्मस्थान के उत्तर–पूर्व वाले कोने या उत्तर या पूर्व दिशा में होना चाहिए। पूजा स्थल दक्षिण दिशा में नहीं होना चाहिए। जब आप पूजा कर रहे होते हैं, तब आपका मुख पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए।

पूजा स्थल की शूचिता, पवित्रता पर पूरा–पूरा ध्यान दिया जाना अति आवश्यक है। घर में पूज कक्ष नहीं बनाना चाहिए क्योंकि पूज स्थल के नियमों का पालन करना आम आदमी के लिए एक कठिन समस्या हो सकता है। पूजा के कमरे के निकट अथवा उसके ऊपर शौचालय न हो। यदि पूजा का कमरा ऊपरी तल पर हो तो उसके नीचे भी शौचालय न हो। यदि घर में पूजा का कमरा अलग से बनाया जाए तो इसकी दहलीज ऊँची होनी चाहिए। दहलीज के पास साफ–सुथरे व अच्छे पायदान रखे हों। घर के सदस्यों को चाहिए कि पूजा अथवा ध्यान के लिए जाते समय पांव अच्छी प्रकार पोंछ कर ही प्रवेश करें।

पूजा घर की शूचिता –

यदि पूजा का कमरा अलग है तो किसी भी स्थिति में इसे सोने के लिए प्रयोग न करें। पूजा के लिए यदि कोई कोना आपने नियत किया है तो

भूल से भी यह बैडरुम (रति कक्ष) में न हो। इसके लिए बेहतर उपाय है कि किसी अल्मारी के सबसे ऊपर वाले ख़ाने में आप अपने ईष्ट देव के चित्र या पुस्तकें, गुटके (मंत्र जाप) आदि रखकर इसे पूजा–घर का रूप दे सकते हैं। यदि आप ऐसा करें तो ध्यान दें कि इसके आगे पैर ना रखें। अल्मारी के इस कोने को केवल पूजा के समय ही खोलें। हर समय खुला रहना भी उचित नहीं है। पूजा घर वाली इस अल्मारी के ऊपर कुछ भी नहीं रखा जाना चाहिए।

हवन, यक्ष व दान –

पूजा के कमरे में यदि आप हवन आदि करते हैं तो इसके लिए अग्नि–कुण्ड दक्षिण–पूर्व दिशा में रखा जाना चाहिए। हवन आदि के अवसर पर तीन आंख वाला नारियल प्रयोग में लाना चाहिए। इसका प्रयोग बड़ा शुभकारी होता है। पूजा के लिए चावलों व आटे से रंगोली भी बनानी चाहिए। पूजा के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले बर्तन तांबे के बने होने चाहिएं। तांबे के अतिरिक्त पीतल अथवा चांदी का प्रयोग भी किया जा सकता है। स्टेनलेस स्टील के बर्तन न तो पूजा में प्रयोग़ किए जाने चाहिएं न ही दान दक्षिणा के रूप में देने चाहिए।

दान करते समय दानकर्त्ता का मुख पूर्व या उत्तर दिशा में होना चाहिए। कभी भी दक्षिण या पश्चिम की तरफ मुख करके दान नहीं करना चाहिए। दान देते समय धरती की तरफ भी नहीं देखना चाहिए।

पूजा वाले कमरे का प्रवेश द्वार उत्तर–पूर्व या पूर्व अथवा उत्तर में होना चाहिए। पूजा वाले कमरे दरवाजे के दो पल्ले रखने चाहिए। पूजा वाले कमरे में यदि कोई अल्मारी, शो केस आदि रखा जाए तो इसके दक्षिण या पश्चिम दिशा वाली दीवार के निकट रखना चाहिए।

पूजा करते समय यदि अग्नि को आहुति दी जाएं तो आपका मुख पूर्व दिशा में होना चाहिए। पूजा का कमरा साफ सुथरा रहना चाहिए। पूजा के लिए रसोईघर में भी कोई कोना बना दिया जा सकता है।इसके लिए सर्वोत्तम स्थान है – उत्तर–पूर्व दिशा का कोना। यदि

उत्तर—पूर्व में स्थान उपलब्ध न हो तो पूर्व या उत्तर में भी पूजा का स्थान बनाया जा सकता है।

यहां हम कृष्ण—भक्त पाठकों को बताना चाहेंगे कि भगवान श्रीकृष्ण की जो मूर्ति या चित्र आप पूजा—घर में लगाएं उसमें श्रीकृष्ण के साथ उनकी संगिनी राधा तथा गाय एवं बछड़े का चित्र भी हो। यदि श्रीकृष्ण कोई ऐसा चित्र जिसमें वे बाँसुरी बजा रहे हैं और राधा जी उनके साथ नहीं है तो इस चित्र या मूर्ति को पूजा घर में न लगा कर ड्राईंग रूम में या अन्य किसी स्थान पर लगाना चाहिए।

घर की जिस अल्मारी व तिजोरी में आप आभूषण आदि रखते हैं इसे पूजा स्थल या पूजा के कमरे के प्रवेश द्वार के सामने न रखें। देवी देवताओं की मूर्तियों प्रवेश द्वार के सामने नहीं होनी चाहिए। कमरे में मूर्तियों को दीवार से थोड़ा हटाकर रखा जाना चाहिए। यदि आपने ईष्ट देव की कोई मूर्ति घर में बनवाई है तो इसके लिए प्रावधान करना चाहिए कि पूर्व दिशा में कोई खिड़की आदि हो जहां से उगते हुए सूर्य की किरणें उस मूर्ति पर पड़ सकें। इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है।

घर में सुविधानुसार देवी—देवताओं के चित्र किसी भी दीवार पर लगाए जा सकते हैं केवल यह ध्यान रखें कि जब आप उन्हें प्रणाम करें या आरती करते समय उन्हें धूप—दीप दर्शन करें तो आपका मुख दक्षिण दिशा में न हो। बिना मूर्ति सामने रखें भी जब कभी आप नियमित/जाप/मंत्रोच्चारण करें तो भी आपका मुख दक्षिण दिशा में न हो।

घर के मृतक पूर्वजों/सदस्यों के चित्र पूजा घर में देवी—देवताओं के चित्रों के साथ नहीं रखें जाने चाहिए। देवी—देवताओं के चित्र या मूर्तियों कभी भी विकृत अवस्था (कटी—फटी या टूटी फूटी) में न हो। इसके दुष्प्रभाव देखने को मिलते हैं।

पूजा के कमरे में एक रोशनदान भी होना चाहिए। ताकि जिस समय पूजा—कक्ष का दरवाजा बंद हो तब भी उससे ताजी हवा आती जाती रहे। पूजा के कमरे को कभी—भी स्टोर की भांति प्रयोग नहीं करना चाहिए। पूजा घर की दीवारों पर हल्का पीला नीला या सफेद रंग प्रयोग किया जाना चाहिए।

घर में यदि आप पूजा का कमरा बनवा रहे हैं तो पूजा के कमरे की छत पिरामिड नुमा (शंकुवाकार) रखनी चाहिएं जैसा कि मन्दिरों के गुम्बद बनाए जाते हैं। मन्दिरों की छतें पिरामिड के आकार की रखी जाती हैं इन छतों से आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रवाह पूजा—स्थल की ओर होता है, जिसका पूजा करने वाले व्यक्ति पर बड़ा शुभ प्रभाव पड़ता है। हमारे मंदिरों की छतें (गुम्बद) वास्तु के अनुसार ही शंकुवाकार (पिरामिड नुमा) बनाए जाते हैं।

✠✠✠✠

16 शौचालय

TOILET

प्राचीन काल में, जब घर से कुछ दूरी पर खुला स्थान आसानी से उपलब्ध था, लोग शौच आदि प्राकृतिक कर्मों से निवृत होने के लिए घर से दूर निकल जाते थे। निवृत्ति (शौच) की इस क्रिया को आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में 'जंगल जाना' कहा जाता है। आज के शहरी जीवन में खुले स्थान की उपलब्धता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समय की जरूरत के अनुसार अब घर में शौच के लिए स्थान बनाया जाता है जिसे शौचालय कहा जाता है।

शौच हमारा प्राकृतिक नित्य–कर्म है। यह शारीरिक का प्रथम कर्म है। इसके लिए घर में जो स्थान रखा जाए उसकी श्रेष्ठ स्थिति तो यही है कि वह घर के मुख्य भवन से थोड़ा हटकर हो। यदि शौचालय को मुख्य भवन से हटकर बनाया जाना हो तो इसके लिए उत्तर–पश्चिम का कोना उपयुक्त है। आजकल बैडरूम के साथ लगते हुए शौचालय तथा स्नानघर बनाए जा रहे हैं। इसके लिए भी सोने के कमरे की उत्तर–पश्चिम दिशा ही चुननी चाहिए।

किसी भी स्थिति में घर के उत्तर–पूर्व दिशा में शौचालय न बनाया जाए। न ही शौचालय ब्रह्मस्थान (घर के केन्द्र) पर अथवा उससे सटा हुआ हो। इसके बड़े अनिष्टकारी प्रभाव देखने में आए हैं। शौचालय का पूजा घर के निकट होना भी उचित नहीं। शौचालय का द्वार रसोईघर, डाईनिंग टेबल के सामने नहीं खुलना चाहिए। स्थान की कमी के कारण यदि रसोईघर के निकट स्नानघर बनाया जाए तो उसमें टायलेट की व्यवस्था करना उचित नहीं है। न ही शौचालय ऐसे स्थान पर हो कि वह घर में आने वाले व्यक्तियों की सीधी निगाह में पड़े। इसे मुख्य द्वार से थोड़ा हटकर ओट में होना चाहिए।

आजकल घरों में हम यूरोपीय स्टाइल के कमोड (शौच के लिए कुर्सी नुमा पात्र) का प्रयोग करते हैं जिसे वेस्टर्न स्टाइल सीट कहा जाता है। यद्यपि हम इसे अपनाते चले जा रहे है तो भी बहुत से लोग इसके उचित प्रयोग व रख–रखाव से परिचित नहीं है। इसके उचित प्रयोग न होने से घर मे दुर्गन्ध व बीमारी का कारण बन सकता है। अतः शौचालय की सफाई और रख रखाव पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रयोग करने के बाद इसमें खूब सारा पानी बहा देना (flush) चाहिए। ताकि गंदगी भली–भांति बह जाए। वेस्टर्न स्टाइल की सीट के साथ Toilet paper का प्रयोग किया जाता है। इसलिए बेहतर है कि घर में एक भारतीय स्टाइल का शौचालय भी हो ताकि जो लोग असुविधा अनुभव करें वे इसका प्रयोग कर सकें।

शौचालय में सीट की दिशा उत्तर–दक्षिण होनी चाहिए। इसकी दिशा पूर्व–पश्चिम नहीं होनी चाहिए। शौच–से निवृत होते समय आपका मुह पूर्व या पश्चिम में न हो।

शौचालय के भीतर दर्पण भी लगाना हो तो यह उत्तर या पूर्व दिशा में लगाना चाहिए। ताकि दर्पण देखते समय व्यक्ति का मुंह उत्तर या पूर्व दिशा में हो।

शौचालय की दीवारों पर सफेद या हल्के रंगों का प्रयोग करना चाहिए। गहरे रंग स्थान की कमी का अहसास करवाते हैं। इसका प्रतिकूल मानसिक प्रभाव हो सकता है। शौचालय के भीतर पानी का भण्डार, नल, वाश–बेसिन आदि उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व कोने में होने चाहिए। यदि शौचालय की छत पर पानी की टंकी रखी जाए तो इसकी दिशा भी उत्तर–पूर्व ही होनी चाहिए। शौचालय के फर्श की ढलान भी पूर्व, उत्तर अथवा उत्तर–पूर्व की ओर होना चाहिए।

जहां तक हो सके स्नानघर तथा शौचालय को साथ–साथ एक ही कमरे में न बनाया जाए। शौचालय व घर के मुख्य भवन के बीच एक खुले हवादार स्थान का होना आवश्यक है। इससे वायु का

दूषित प्रभाव शेष घर पर नहीं पड़ता व दुर्गंध आदि भी नहीं फैल पाते। हो सके तो शौचालय के द्वार पर स्प्रिंग या डोर क्लोजर का प्रयोग किया जाए। यदि निकास–पंखे (Exhaust Fan) का प्रयोग किया जाए तो इसका निकास सीधा घर से बाहर की ओर होना चाहिए।

ध्यान देने की बात है कि शौचालय का सूखा व साफ–सुथरा रहना बहुत जरूरी है। शौचालय के भीतर संगमरमर का फर्श नहीं लगाना चाहिए। यद्यपि इससे सफाई में सुविधा रहती है, लेकिन अधिक से अधिक चिकना होने के कारण यह किसी दुर्घटना का कारण बन सकता है।

भण्डार – गृह

STORE ROOM
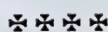
घर में भण्डार यानि स्टोर की उपयोगिता निर्विवाद है। इसमें कोई संदेह नहीं कि स्टोर नाम का एक छोटा सा कमरा घर के शेष कमरों की शोभा को बनाए रखने में योगदान करता है।

घर में स्टोर के लिए दक्षिण–पश्चिम दिशा ज्यादा उपयुक्त है। यदि इसमें आनाज, व खाद्य सामग्री रखनी है तो इसे उत्तर–पश्चिम दिशा में रखना चाहिए।

घर के भारी सामान को दक्षिण–पश्चिम के स्टोर में रखा जा सकता है। स्टोर में यदि कोई जल निकासी का रास्ता बनाया जाए तो इसकी दिशा उत्तर–पूर्व ही हो। स्टोर में अटारी, आदि का चबूतरा भीतर की ओर पश्चिम या दक्षिण दिशा में बनाना चाहिए। यदि स्टोर में दूध, दही या दूध से बने पदार्थ रखने हो तो इन्हे दक्षिण–पूर्व भाग में रखना चाहिए। गैस सिलेण्डर, मिट्टी का तेल या अन्य उपयोगी द्रव्य पदार्थ भी इसी भाग अर्थात्दक्षिण–पूर्व में ही रखने चाहिए।

भण्डार–घर का दरवाजा दक्षिण–पश्चिम को छोड़कर किसी भी दिशा में सुविधानुसार रखा जा सकता है। यदि खिडकियाँ लगाई जाएं तो इसके लिए उत्तर व पश्चिम दिशा का चुनाव करना चाहिए।

भण्डार घर के भीतर अल्मारी व रैक इत्यादि दक्षिण या पश्चिम की ओर रखने चाहिएं। स्टोर के भीतर उत्तर–पूर्व कोने (ईशान) में जल से भरा कोई पात्र, पानी का मटका आदि रखना बड़ा शुभ लक्षण है। ध्यान दें कि इस जलपात्र को प्रायः भरा रहना चाहिए। भले ही इसका प्रयोग कम करें लेकिन इसके पानी को प्रतिदिन बदलते रहें।

घर की बची–खुची अनुपयोगी वस्तुओं को दक्षिणी भाग में इकट्ठा करना चाहिए। यदि घर में पशु पाल रखा है तो उसके लिए चारा, भूसा आदि के लिए घर के दक्षिण–पश्चिम में ही स्थान बनाना चाहिए।

घर में पाले जाने वाली गाय का दुधारु पशु का छप्पर उत्तर दिशा में बनाना चाहिए। घर के भीतर तिजोरी का स्थान दक्षिण–पश्चिम वाले भाग में होना चाहिए।

✠✠✠✠

18 बरामदा

VERANDA

बरामदा या प्रागण (Veranda) घर की शोभा होता है। यह घर को वैभव प्रदान करता है। बरामदे की सर्वोत्तम दिशा है—उत्तर या पूर्व। यदि उत्तर तथा पूर्व दोनों दिशाओं में खुला स्थान हो तथा उसके आगे खुला बरामदा उत्तर व पूर्व की ओर चला गया हो तो इससे घर में सम्पन्नता का वास होता है। उत्तर से पूर्व की ओर आने वाले बरामदे के बीच में कोई व्यवधान नहीं होना चाहिएं।

उत्तर—पूर्व की ओर बने बरामदे का फर्श घर के मुख्य भवन के फर्श से नीचा होना चाहिए। उत्तर पूर्व में बरामदे की छत भी मुख्य भवन की छत से नीचे होनी चाहिए। अटारी (Lintle or Sunshade level) की ऊँचाई तक बनी बरामदे की छत कई दृष्टियों से उपयोगी है। अतः बरामदे की छत को ज्यादा ऊँचा न बनाया जाए। उत्तर—पूर्व दिशा में बनाए बरामदे की छत थोड़ी बाहर की ओर झुकी हुई हो तो इससे कई लाभ होते हैं।

यद्यपि दक्षिण या पश्चिम में बरामदा बनाए जाने को वास्तु की दृष्टि से शुभकारी नहीं माना जाता, तो भी यदि मकान के प्लाट की दिशा आदि की दृष्टि से दक्षिण या पश्चिम में बरामदा बनाना ही हो तो बरामदे की छत को मुख्य भवन की छत के बराबर या अधिक ऊँचाई पर ही बनाया जाना चाहिए। दक्षिण या पश्चिम में बनाए जाने वाले बरामदे की चौड़ाई ज्यादा नहीं होनी चाहिए। हाँ उत्तर या पूर्व दिशा में बनाए जाने वाले बरामदे की चौड़ाई आवश्यकता व इच्छानुसार ज्यादा रखी जा सकती है। दक्षिण—पश्चिम में बनाए जाने वाले बरामदे के फर्श की ऊँचाई घर के फर्श की ऊँचाई से ज्यादा रखी जानी चाहिए।

मुख्य भवन की उत्तर और पूर्व में दखिण और पश्चिम से ज्यादा व खुली खिड़कियाँ बनाकर संतुलन बनाया जाना चाहिए।

बरामदे में मेज–कुर्सी या जरूरत के अनुसार फर्नीचर रखते समय ध्यान दें कि इनका स्थान दक्षिण व पश्चिम में हो। बरामदे के कोने गोल या तिरछे न हो। बरामदे में यदि झूला लगाना चाहे तो इसके झूलने की दिशा पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर हो सकती है। उत्तर या पूर्व के बरामदे को जहां तक हो सके सामने से ढक कर पर्दा नहीं करना चाहिए। बरामदे में ताज़ी हवा का आवागमन निर्बाध रहना चाहिए। ताज़ी हवा के आने जाने में किसी प्रकार की बाधा नहीं होनी चाहिए।

✠✠✠✠

19 सीढ़ियाँ अथवा जीना

STAIRCASE

घर में सीढ़ियाँ के लिए सर्वोत्तम दिशा है — दक्षिण यदि दक्षिण उपलब्ध न हो तो इसके लिए पश्चिम या दक्षिण—पश्चिम में स्थान रखना चाहिए। घर के उत्तर—पूर्व में सीढ़ियाँ न् रखी जाएं इससे तनाव व धन नाश के कारण उत्पन्न होते रहते हैं। घर के ब्रह्मस्थान अर्थात्‌केन्द्र से भी सीढियाँ नहीं उठाई जानी चाहिए। इससे घर के सदस्यों को हानि व मानसिक बीमारियों का सामना करना पड सकता है।

सीढियाँ घर के बाहर प्रवेश द्वार को काटती हुई नहीं होनी चाहिए क्योंकि इनका घर के बालकों के संवेगों पर कुप्रभाव पड़ता है। ऐसी सीढ़ियाँ जाने—अनजाने बच्चों के मन में भय का कारण बन सकती हैं, जिससे उनके भावनात्मक विकास पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। घर के भीतर से उठाई जाने वाली सीढ़ियाँ भी प्रवेश द्वार के बिल्कुल सामने भी नहीं होनी चाहिएं। वास्तु की दृष्टि से सीढ़ियों के नीचे शौचालय बनाना ठीक नहीं है। यद्यपि स्थानाभाव के कारण हम ऐसा कर लेते हैं लेकिन वास्तुशास्त्र हमें इसकी अनुमति नहीं देता। अतः जहां तक हो सके सीढ़ियों के नीचे का स्थान शौचालय के लिए प्रयोग में न लाया जाए। हाँ यहाँ पर स्टोर बनाया जा सकता है।

सीढ़ियों का ज्यादा सर्पिलाकार या घुमावदार होना भी उचित नही है। सीढ़ियाँ ऐसे स्थान पर हों कि चढ़ने वाला इस पर उत्तर से दक्षिण की ओर चढ़े। सीढ़ियों के नीचे सोना नहीं चाहिए।

सीढ़ियों की संख्या विषम होनी चाहिए, जो प्रगति एवं आवृत्ति की प्रतीक है। सम संख्याएं पूर्णता की प्रतीक है। जो ठहराव का

परिचायक है। अतः सीढ़ियों की संख्या (5, 7, 9, 11, 13) आदि ही होनी चाहिएं। घर में प्रवेश द्वार के सामने की सीढ़ियां हमेशा विषम ही रखनी चाहिए। सीढ़ियों से चढ़कर घर में प्रवेश करते हुए पहले हमेशा दायां पैर ही घर के भीतर रखना चाहिए। हमारा दायां अंग अधिक बलशाली व पवित्र माना गया है। सीढ़िया पूर्व या उत्तर से आरम्भ होकर पश्चिम या दक्षिण में समाप्त होनी चाहिएं। यदि सीढ़ियों के बीच कोई घुमाव हो तो यह घुमाव घड़ी की सुइयों की दिशा में ही होना चाहिए।

सीढ़ियाँ साफ–सुथरी व मजबूत होनी चाहिएं। समय–समय पर इनकी मुरम्मत करवाते रहना चाहिए।

✠✠✠✠
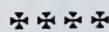
मोटरखाना या गैरज़

GARAGE

घर में वाहन सम्पन्नता का द्योतक हैं। 'वास्तु' में सवारी पर काफी कुछ लिखा गया है। यहां हम कार को ही सवारी मानकर घर में वाहन के स्थान 'गैरज' पर चर्चा करेंगे।

गैरज में कार थोड़े समय के लिए ही रहती है और अधिकतर यह गैरज से बाहर भ्रमण में रहती है। महत्त्वपूर्ण यह है कि घर में गैरज कहां हो तथा जब कार को पार्क किया जाए तो किस दिशा में पार्क किया जाए। गैरज के लिए सर्वोत्तम स्थान वह है उत्तर–पश्चिम। घर में कार पार्क करने का स्थान उत्तर–पूर्व या दक्षिण–पश्चिम नहीं होना चाहिए।

यदि कार के पार्किंग का स्थान दक्षिण–पूर्व में हो तो देखा गया है कि ऐसी कार को छोटी–मोटी मुरम्मत की आवश्यकता पड़ती ही रहती है। यदि कार को दक्षिण–पश्चिम में पार्क किया जाए तो यह अक्सर खराब रहती है जिस कारण से वह अधिकतर गैरज ही में रहती है। पार्क की गई कार का मुख उत्तर या पूर्व की ओर होना चाहिए, लेकिन इसका मुख दक्षिण की ओर न हो।

यदि पार्किंग को बेसमेन्ट में बनाया जाए तो इसे उत्तर या पूर्व में ही बनाना चाहिए। कार गैरज को मुख्य भवन से एकदम सटा कर नहीं बनाना चाहिए। घर की उत्तर या पूर्व दिशा में बनाई गई पोर्च की छत घर के मुख्य भवन की छत से नीची होनी चाहिए तथा इसका झुकाव उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए।

गैरज के गेट की ऊँचाई मुख्य द्वार के गेट से अधिक नहीं होनी चाहिए। गैरज के खम्बों पर मेहराब (archos) या त्रिभुज नहीं होने चाहिए। गैरज की दीवारों के रंग भी हल्का ही होना चाहिए। गहरा रंग कार पार्क के समय व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक दबाव को बढ़ा देता है।

दिशाशूल–यात्रा –

शुक्रवार व रविवार को पश्चिम की और, वीरवार को दक्षिण की और, शनिवार व सोमवार को पूर्व की ओर तथा मंगलवार व बुधवार को उत्तर की ओर यात्रा पर यथा संभव नहीं निकलना चाहिए। पूर्णमासी और अमावस्या की रात्री को 11.00 रात्री से सुबह 4 बजे तक अपने शहर की सीमा से बाहर नहीं जाना चाहिए। यदि इस समय जाना अति आवश्यक हो तो रास्ते में रूक कर कुछ आराम करके फिर जाना चाहिए। इस समय चन्द्रमा की आकर्षण (attraction) और विकर्षण (refulsion) शक्ति से दुर्घटनाएं अधिक होती हैं।

✠✠✠✠

"अपने घर में वास्तु के सिद्धान्तों के अनुरूप कुछ परिवर्तन करने पर हमें जो मानसिक शांति एवं संतोष का अनुभव हुआ, उसने मुझे वास्तु का प्रशंसक बना दिया है।"

चेताली जिंदल

खण्ड — III

आपके घर की सज्जा

21

गृहणियों के लिए कुछ वास्तु—सुझाव

SOME VAASTU TIPS FOR HOUSE-WIVES

स्त्री को लक्ष्मी तथा दुर्गा का रूप तथा अन्नपूर्णा कहा जाता है कयोंकि वह घंर के सभी सदस्यों के लिए भोजन पकाती है। इस प्रकार घर के सदस्यों के स्वास्थ्य की कुंजी उन्हीं के हाथ में हैं। अतः वे अपने दैनिक जीवन में यदि वास्तु की कुछ मान्यताओं को धारण कर लें, तो उनका जीवन सुखी, सम्पन्न एवं स्वास्थ्य से भरपूर होगा।

(1) मधानी को कभी भी धरती पर न रखें। इसे किसी हुक या खम्बे से बाँध दें। मक्खन निकालते समय आपका मुख पूर्व की ओर हो। घर में चूल्हे की व्यवस्था इस प्रकार करें कि खाना पकाने वाले व्यक्ति का मुख पूर्व की ओर रहे।

(2) पीने के पानी का बर्तन कभी भी ठीक दक्षिण—पश्चिम कोण पर न रखें। इसे सदा जमीन पर भली—भांति टिका कर उत्तर या पूर्व दिशा में रखें। यदि पीने के पानी का बर्तन दक्षिण—पश्चिम में रखना हो तो वहाँ पर एक छोठा सा चबूतरा बनाकर उस पर ही बर्तन रखना चाहिए।

(3) झाड़ू, पोचा तथा सफाई के सामान को सदा दक्षिण—पश्चिम में ही रखें। कभी भी, भले ही थोड़े समय के लिए, यह सामान उत्तर—पूर्व में नहीं रखना चाहिए। घर में झाड़ू लगाते समय धूल, मिट्टी, कचरे इत्यादि को उत्तर—पूर्व कोने में कभी भी इक्ट्ठा न करें। इस स्थान पर इक्ट्ठी हो गई धूल—मिट्टी को तुरन्त साफ करें।

(4) घर में मिक्सी, ग्राईण्डर तथा इस प्रकार के अन्य भारी सहायक सामग्री को रसोई अथवा घर के दक्षिण अथवा पश्चिम भाग में स्थान देना चाहिए।

(5) फ्रिज, डाईनिंग टेबल, सोफा सेट, शू–रैक आदि को केवल दक्षिण या पश्चिम की ओर वाले कमरों में दक्षिणी या पश्चिमी दीवार के पास रखें।

(6) घर की छत पर एण्टिना उत्तर–पूर्व में न लगाया जाए।

(7) यदि घर में गाय, भैंस या कोई अन्य पशु है तो उनका चारा दक्षिण या पश्चिम की ओर वाले कमरे में ही रखा जाना चाहिए। पशुओं के चारे की जगह घर के द्वार के सामने नहीं होनी चाहिए। इसके लिए दक्षिण–पूर्व या उत्तर–पश्चिम का स्थान ही सर्वोत्तम है।

(8) घर में यदि फोल्डिंग बैड है, जो ज्यादा प्रयोग नहीं लाए जाते उन्हें दक्षिण या पश्चिम की ओर दीवार के साथ रखना चाहिए।

(9) सोते समय, विशेषतः भोजन करने के बाद आराम करते समय बाईं करवट लेटना चाहिए। इससे पाचन तन्त्र स्वस्थ रहता है।

(10) रसोईघर में बर्तन धोने के बाद बचा हुआ पानी दक्षिण या पश्चिम दिशा में नहीं बहना चाहिए। इसके लिए उत्तर या उत्तर–पूर्व दिशा ही उचित है।

(11) रसोईघर दक्षिण–पूर्व में होना चाहिए। यदि रसोई उत्तर–पूर्व में होगी तो इसमें कार्य करने वाली स्त्री सदा थकी–थकी चिन्तित एवं अज्ञात शारीरिक पीड़ा से दुःखी रहेगी। यदि भोजन पकाते समय मुख पूर्व की ओर हो तो ऐसे में स्त्री का स्वास्थ्य ठीक रहता है। पृथ्वी के घूमने

की दिशा पश्चिम से पूर्व है। यदि भोजन पकाते समय स्त्री का मुख पश्चिम या दक्षिण में होगा तो चूल्हे से उठने वाली गर्म वायु उसकी सांस के साथ शरीर में जाएगी, जो स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है।

(12) झाड़ू देते समय आपको उत्तर या पूर्व की ओर बढ़ना चाहिए यदि आप इससे विपरीत दिशा में बढ़ेंगी तो धरती से उठने वाली धूल आपकी सांस के साथ शरीर के भीतर जाएगी।

(13) शाम के समय यदि आप झाड़ू आदि लगाएँ तो कूड़े को उसी समय घर से बाहर न फैंके। यद्यपि इसे हम बुजुर्गों का अंधविश्वास मात्र ही मानते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि हो सकता है कोई कीमती सामान कूड़े के साथ बाहर फैंक दिया जाए जोकि धुधंलका होने के कारण नजर नहीं आता। इसका वैज्ञानिक आधार भी है – सुबह के समय उगते हुए सूर्य की किरणों में किटाणुओं को नष्ट करने की अद्‌भुत क्षमता होती हैं दिन की धूप में भी यह क्षमता रहती है, लेकिन दोपहर बाद यह कम होकर सायंकाल तक समाप्त हो जाती है। अतः ऐसे समय में झाड़ू लगाना स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है।

आशा है इन सुझावों को आप अपने जीवन में उतार कर सुखी जीवन की नींव रखना पसन्द करेंगी।

वास्तु का सम्बन्ध केवल घर की बनावट, प्लॉट की स्थिति या प्रयोग की जाने वाली सामग्री मात्र से ही नहीं हैं वास्तु एक शास्त्र है, जो मनुष्य के सुखी जीवन–यापन से पूरी तरह सम्बन्धित हैं नीचे हम कुछ नियमों का उल्लेख कर रहे हैं जिनका अनुसरण करने से आपका

घरेलू जीवन सुखमय हो सकता है क्योंकि इनका उल्लेख वास्तु के ग्रन्थों में भी हैं अतः आप चाहें तो इन्हें **VAASTU LAWS FOR BETTER LIVING** कह सकते हैं।

(1) सोते समय आपका सिर पूर्व अथवा दक्षिण में होना चाहिए।

(2) घर के दरवाजे तथा खिड़कियों, विशेषतः प्रवेश द्वार के खोलते अथवा बन्द करते समय किसी प्रकार की आवाज नहीं होनी चाहिए।

(3) घर में जूते तथा चप्पलें बिखरी न रहें, ये घर में कलह को जन्म देते हैं।

(4) उतारे गए मैले कपड़ों को कभी भी धुले हुए कपड़ों के साथ न रखें।

(5) घर में टेलीफोन के पास पानी से भरा जग या जार इत्यादि न रखें क्योंकि टेलीफोन से जो विद्युत तरंगें उत्पन्न होती हैं वे पानी पर दुष्प्रभाव डालती हैं।

(6) अपने महत्त्वपूर्ण कागजातों को उस अल्मारी में रखें जो पूर्व में हो।

(7) घर में उत्तर दिशा की ओर खुलता हुआ कोई लॉकर/सेफ अवश्य रखें जिसमें नगदी व आभूषण इत्यादि रखे जाएँ।

(8) भोजन पकाते समय आपका मुख पूर्व की ओर हो तथा खाद्य सामग्री वाली अल्मारी आपके दाएँ हाथ की ओर हो तो पकाया गया भोजन ओर भी स्वादिष्ट होता हैं।

(9) सब्जियों को काटकर बर्तन में ही डालें। यदि वे फर्श पर डाली दी जाएँ तो उनका स्वाद फर्श द्वारा सोख लिया जाएगा।

(10) बिस्तरों पर चद्दरें इत्यादि हमेशा दिन के समय ही बदलें।

(11) यदि आप शेव बनाते हैं तो हर रोज अथवा नियमित अन्तराल के बाद शेव अवश्य बनाएँ या फिर दाढ़ी ही रखें, बढ़ी हुई दाढ़ी आलस्य और निर्धनता को निमंत्रण देती हैं

(12) कंघी तथा सौन्दर्य प्रसाधन हमेशा साफ–सुथरे ढंग से सही स्थान पर रखे जाने चाहिएँ।

(13) घर के प्रत्येक सदस्य के लिए अलग–अलग तौलिया रखें। मेहमानों के लिए घर में अलग से तौलियों की व्यवस्था होनी चाहिए।

(14) रात को सोते समय पहने गए कपड़े सुबह आठ बजने से पहले अवश्य ही बदल लेने चाहिए।

(15) सुबह उठकर स्नान करने के बाद नंगे बदन उगते हुए सूर्य के दर्शन करना अति शुभकारी होता है।

(16) सुबह सूर्य उगने से पहले ही अपने घर का आँगन साफ कर लें।

(17) घर में दीवारों पर अनावश्यक फोटो, कलैण्डर आदि न लगाएँ।

(18) घर में मृतक सदस्यों की तस्वीर ड्राईंग रूम में अथवा दरवाजों के निकट न लगाएं।

(19) घर में प्रवेश द्वार अथवा उसके निकट दीवार पर लक्ष्मी तथा गणेश की तस्वीर अथवा स्वास्तिक चिन्ह लगाने से घर में सुख और वैभव की वृद्धि होती है।

(20) किसी महत्त्वपूर्ण कार्य पर जाते हुए कभी भी अण्डे अथवा माँस का सेवन न करें। लेकिन ऐसे समय में दही का

सेवन करना तथा मछली तथा भरे हुए जलपात्र के दर्शन करना काफी शुभकारी होता है।

(21) घर में ऐसा पंखा, जो चलते समय शोर करता हो, उसकी तुरन्त मरम्मत करवाएँ अन्यथा घर में अशान्ति एवं क्लेश का प्रवेश हो सकता है।

(22) सुगन्ध का व्यक्ति के जीवन में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमारी भावनाएँ और वृत्तियाँ सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध से बहुत ज्यादा प्रभावित होती है। अतः सुबह काम पर जाते समय अथवा रात को सोते समय सैन्ट आदि लगाना अच्छा होता है। घर में भी सुबह—शाम धूप या अगरबत्ती अवश्य जलाएँ।

✠✠✠✠

वास्तु – पूजन

VAASTU POOJAN

वास्तु–पूजन का आयोजन भवन निर्माण के दौरान निम्नलिखित तीन अवसरों पर किया जाता हैं

(क) **भूमि–पूजन** – घर बनाने के लिए चुने गए प्लॉट पर निर्माण का कार्य शुरू करते हुए।

(ख) **द्वार–पूजन** – निर्माणाधीन भवन (घर) के मुख्य द्वार की स्थापना करते हुए।

(ग) **गृह–प्रवेश** – भवन के निर्माण कार्य पूरा होने पर घर में प्रवेश के अवसर पर भी पूजन किया जाता है।

गृह–निर्माण का कार्य किसी शुभ दिन, शुभ मुहूर्त पर ही शुरू करना चाहिए। शुभ दिन व शुभ समय का चुनाव हमें अपने धर्म व विश्वास के अनुसार विधान पुरोहित से पूछकर ही तय करना चाहिए। वास्तु पूजन की विधियों की अनुपालना ठीक से करना चाहिए।

भवन–निर्माण कार्य करते समय कुछ धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं जिन्हें 'भूमि–पूजन' कहा जाता हैं 'भूमि–पूजन' प्लॉट के उत्तर–पूर्व भाग में करना चाहिए। भूमि–पूजन के पश्चात्‌भवन निर्माण का कार्य जैसे खुदाई तथा नींव पत्थर रखने का कार्य करना चाहिए। भूमि पूजन के अवसर पर सर्वप्रथम श्री गणेश–पूजन करना चाहिए और फिर वास्तुपुरूष और अपने इष्टदेव की पूजा करनी चाहिए। भूमि पूजन के इस शुभ कार्य में मुहूर्त की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।

पूजा के समय भूस्वामी को अपनी पत्नी के साथ पूजा पर बैठना चाहिए। शिलान्यास के समय अच्छी कवालिटी की पांच ईंटों की पूजा

की जाती है। शुद्ध एवं पवित्र धातु से निर्मित कछुआ, मछली या नाग–नागिन की पूजा करके प्रथम ईंट के नीचे रखा जाता है।

भूमि पूजन से पूर्व प्लॉट को साफ करके इसकी सीमा (चारो कोनों) को वास्तु–विशेषज्ञ की सलाह से वास्तु अनुसार चिन्हित कर लेना चाहिए। पूरोहित के निर्देशानुसार हवन–यज्ञ का आयोजन करना चाहिए।

गृह–प्रवेश का कार्य भी पूजा के साथ ही होना चाहिए। गृह–प्रवेश रस्म अधूरे बने मकान में नहीं करनी चाहिए। उत्तम तो यही है कि सभी प्रकार से पूर्ण बने मकान में ही गृह–प्रवेश की रस्म की जाए। यदि किसी कारणवश मकान के पूरी तरह बनाए जाने से पहले ही उस मकान में रहना पड़े तो यह ध्यान रखें कि उसके संभी दरवाजे व खिड़कियां अपने स्थान पर लगाए जा चुके हों। मकान की छत डाल दी गई हो तथा इसमें फर्श भी बन चुके हों। यदि घर में रहते हुए ही निर्माण कार्य को पूरा किया जा रहा हो, तो मकान के पूरा होने पर गृह–प्रवेश की रस्म पूरी की जा सकती है।

मकान के निर्माण का कार्य पूरा हो जाने पर गृह–प्रवेश की रस्म को ज्यादा देर तक टालना नहीं चाहिए। इस अवसर पर वास्तु–पूजन करना चाहिए तथा गृह–शांति व हवन का आयोजन करना चाहिए। इस अवसर पर अपने कुल पुरोहित या विश्वास के अनुसार सुपात्र को धन व वस्त्र आदि दान में देने चाहिएं। मित्रों, शुभचिन्तकों व सगे–सम्बधियों के साथ प्रीति–भोज करना चाहिए। गृह–प्रवेश की रस्म अदायगी के बाद उस घर को उसी दिन से निवास के लिए प्रयोग में लाना चाहिए। गृह प्रवेश की रस्म अदायगी के तुरन्त बाद उस घर में समान इत्यादि रखने का कार्य शुरू करना चाहिए। गृह–प्रवेश के बाद इसके द्वार पर ताला नहीं लगाना चाहिए बल्कि इसमें रहना चाहिए। इस प्रकार लगाया गया ताला शुभ लक्षण नहीं है।

गृह–प्रवेश की रस्म उस समय भी नहीं की जानी चाहिए जब गृह–स्वामिनी स्वयं या उसके परिवार की कोई स्त्री गर्भवती हो।

गृह—प्रवेश के अवसर पर वास्तु—पुरुष की अभ्यर्थना (पूजा) करते हुए उनसे यह प्रार्थना करनी चाहिए कि वे इस घर पर अपनी कृपा—दृष्टि बनाए रखें तथा उनकी दया—दृष्टि में रहते हुए घर के सभी सदस्य रोग, शोक व चिन्ता से दूर रहें। घर में सुख—समृद्धि एवं शांति का वास हो तथा घर के सदस्यों में परस्पर स्नेह—भाव बना रहे।

गृह—प्रवेश के अवसर पर हम कुल पुरोहित को दान—दक्षिणा देकर उनका आर्शीवाद तो प्राप्त करते ही हैं। इस अवसर पर उन लोगों को भी मान—सम्मान के रूप में उपहार या धन देकर उनकी शुभकामनाएँ (आशीष) लेनी चाहिएं, जिन्होंने इस घर को बनाने में अपना योगदान दिया। गृह—प्रवेश के अवसर पर घर को बनाने वाले राज—मिस्त्री, बढ़ई, पलम्बर, इलैक्ट्रीशियन, पेन्टर व इंजीनियर आदि को भी आमन्त्रित करना चाहिए। इन्हें प्रीति भोज में सम्मिलित होने का आग्रह करना चाहिए व यथा—शक्ति भावना के साथ धन या उपहार आदि भेंट करने चाहिएं। ये सभी सृष्टि के रचनाकार देवता विश्वकर्मा के प्रतिनिधि हैं। गृह प्रवेश के अवसर पर इनसे प्रसन्नतापूर्वक मिला आशीष घर में सुख—समृद्धि का कारक बनता है।

वास्तु सज्जा

VAASTU DECORATION

सज्जा का महत्त्व –

घर के निर्माण कार्य के पूरा होने पर इसकी भीतरी–बाहरी साज–सज्जा का प्रश्न सामने आता हैं घर की सज्जा, यद्यपि निजि रुचि और पसन्द–नापसन्द का विषय है, तो भी इसमें वास्तु के निर्देशों की अवहेलना करना उचित नहीं। हम पहले भी यह स्पष्ट कर चुके हैं कि वास्तु का सम्बन्ध घर के सदस्यों की मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुख, शांति एवं समृद्धि से हैं अतः इस दिशा में वास्तु–शास्त्री हमें कुछ निर्देश देते हैं, जिनकी संक्षिप्त विवेचना हम इस अध्याय में कर रहे हैं।

कक्ष की सज्जा –

घर के भीतर की सज्जा के लिए उपयोग में लाई जाने वाले चित्रों, मूर्तियां आदि का चुनाव सावधानी से करना चाहिए। इनके चुनाव में इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि ये मन को लुभाएं व आखों को सुकून दें। भद्दी, डरावनी या क्रोध की मुद्रा वाली मूर्तियाँ, चित्र, पोस्टर, फोटोग्राफ या पेन्टिंग को घर में रखना अच्छा नहीं हैं इनका कलात्मक महत्त्व भले ही कितना हो; भले ही ये आधुनिक कला के उत्कृष्ट नमूने माने गए हों, लेकिन यह सत्य है कि इनका प्रभाव शुभ नहीं होता।

वास्तु–अनुकूल प्रभाव वाली तस्वीरें –

घर को ऐसी तस्वीरों से सजाना चाहिए, जिनमें प्राकृतिक दृश्य हों या सुन्दर कलात्मक भवन दर्शाएं गए हों। इन चित्रों से शांति

तथा सुख मूर्तिमान होते दिखाई पड़ते हों। शांत प्राकृतिक झील के दृश्य का व्यक्ति के मनोभावों पर अनुकूल प्रभाव पड़ता हैं व्यक्ति तनाव व थकावट से उबर कर कल्पना की ओर बढ़ता हैं

मुख्य द्वार की सज्जा –

घर के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक या ओ३म आदि के शुभ चिह्न, लक्ष्मी, कुबेर, कुलदेवता के अतिरिक्त कमल के फूल, बैल, गाय तथा बछड़े की मूर्ति या किसी उद्यान, झील, पर्वतीय स्थान का चित्र अथवा झील में तैरते हुए पक्षी (हंस, बतख या सारस) के चित्रों का प्रभाव बड़ा शुभ होता है। मुख्य द्वार पर इनके अतिरिक्त नृतकी (अप्सरा) या मत्स्य कन्या (ऐसी स्त्री जिसका कमर से नीचे का भाग मछली का हो) की मूर्ति का प्रभाव बड़ा शुभ होता है। यदि घर के मुख्य द्वार पर पालतु पक्षियों (तोता, कोयल, मोर, मुर्गियां) आदि को रखा जाए तो वास्तु की दृष्टि से यह भी एक उत्तम लक्षण है।

शयन कक्ष की सज्जा –

सारस पक्षियों के जोड़े का चित्र शयन कक्ष (रति कक्ष) में लगाया जाना चाहिए। पति—पत्नी के मधुर सम्बन्धों को बनाए रखने व परस्पर प्रेम बढ़ाने में ऐसे चित्रों का प्रभाव बड़ा शुभ होता है।

ड्राईंग रूम की सज्जा –

घर के ड्राईंग रूम में श्रीकृष्ण के गीता उपदेश का चित्र लगाया जा सकता है अथवा श्रीराम के योद्धा वेश का चित्र भी बड़ा अच्छा प्रभाव डालता है। ड्राईंग रूम में देवी—देवताओं की प्रसन्नचित मुद्रा वाले चित्र सुविधानुसार लगाए जाने चाहिए। ऐसे चित्र या मूर्तियां घर में नहीं रखनी चाहिएं जिनमें दुख, दुर्घटना, आतंक—दंगा, युद्ध, भूकम्प आदि को दर्शाया गया हो। रोते हुए बच्चे का चित्र मानसिक परेशानी उत्पन्न करता है। ध्यान दें कि देवी—देवताओं के चित्र विकृत, कटे—फटे न हों। देवी—देवताओं की मूर्तियों का अंग—भंग नहीं होना चाहिए।

घर में स्वास्तिक (卐) या ओइम (ॐ) के चिह्न रखने का प्रभाव बड़ा शुभ होता हैं इसके अतिरिक्त अन्य शुभ चिह्न या रंगोली भी बुरी आत्माओं को घर से दूर रखती हैं घर में पूर्वजों के चित्र दक्षिण—पश्चिम भाग में रखने चाहिएं।

भगवान श्रीकृष्ण का चित्र, जिसमें राधा तथा गाय एवं बछड़ा भी उनके साथ हो, पूजा घर में रखा जाना चाहिए, लेकिन जिस चित्र में श्रीकृष्ण बांसुरी बजा रहे हों तथा राधा उनके साथ न हो, ऐसा चित्र पूजा घर में न रखकर ड्राईंग रूम में रखना चाहिए।

इस सम्बन्ध में इस श्लोक का मार्गदर्शन किया गया है —

गृहे न रामायण भारतहवं चित्रं कृपाणाहवमिन्द्रजालिकम्।।
शिलोच्चयारण्यमयं सदासुरं भीष्मं कृताक्रन्दनरं त्वनम्बरम्।।
वाराहशार्दशिवापृदाकवो गृद्धाभित्थोलूककपोतवायसाः।
सश्येनगाधदिवकादिपत्रिणो विचित्रिता नो शरणे शुभावहाः।।

जिसका अर्थ है —

रामायण या महाभारत के चित्र, तलवार—बाजी के चित्र, इन्द्रजाल (जादू) दैत्य अथवा भूत—प्रेतों की मूर्तियाँ, रोते या कराहते हुए लोगों के चित्रों को घर में लगाना या इनकी मूर्तियों को नहीं रखना चाहिए।

घर में उल्लू, कौआ, गिद्ध या बाज के चित्र लगाना अच्छा नहीं होता। सूअर, बाघ, साँप का चित्र अथवा हाथी की मूर्ति तो घर में कदापि न रखें। शेर, बाघ, भालू, भेड़िया, गीदड़ या जंगली गधे की मूर्ति घर में न रखें।

घर में देव–दैत्यों के युद्ध के चित्र रखना भी शुभ नहीं होता। जलते हुए घर या जंगल की आग का चित्र घर में रखना अच्छा नहीं है। सूखे हुए पत्ते व फलों के बिना पेड़, जानवरों के चित्र, मरे हुए जानवरों को खाते हुए गीदड़, उल्लु, कौआ आदि के चित्रों का प्रभाव अनिष्टकारी होता है। इन्हें घर में नहीं रखना चाहिए।

✠✠✠✠

घर में स्वास्तिक (卐) या ओइम (ॐ) के चिह्न रखने का प्रभाव बड़ा शुभ होता हैं इसके अतिरिक्त अन्य शुभ चिह्न या रंगोली भी बुरी आत्माओं को घर से दूर रखती हैं घर में पूर्वजों के चित्र दक्षिण—पश्चिम भाग में रखने चाहिएं।

भगवान श्रीकृष्ण का चित्र, जिसमें राधा तथा गाय एवं बछड़ा भी उनके साथ हो, पूजा घर में रखा जाना चाहिए, लेकिन जिस चित्र में श्रीकृष्ण बांसुरी बजा रहे हों तथा राधा उनके साथ न हो, ऐसा चित्र पूजा घर में न रखकर ड्राईंग रूम में रखना चाहिए।

इस सम्बन्ध में इस श्लोक का मार्गदर्शन किया गया है —

गृहे न रामायण भारतहवं चित्रं कृपाणाहवमिन्द्रजालिकम्।।
शिलोच्चयारण्यमयं सदासुरं भीष्मं कृताक्रन्दनरं त्वनम्बरम्।।
वाराहशार्दशिवापृदाकवो गृद्धाभित्थोलूककपोतवायसाः।
सश्येनगाधदिवकादिपत्रिणो विचित्रिता नो शरणे शुभावहाः।।

जिसका अर्थ है —

रामायण या महाभारत के चित्र, तलवार—बाजी के चित्र, इन्द्रजाल (जादू) दैत्य अथवा भूत—प्रेतों की मूर्तियाँ, रोते या कराहते हुए लोगों के चित्रों को घर में लगाना या इनकी मूर्तियों को नहीं रखना चाहिए।

घर में उल्लू, कौआ, गिद्ध या बाज के चित्र लगाना अच्छा नहीं होता। सूअर, बाघ, साँप का चित्र अथवा हाथी की मूर्ति तो घर में कदापि न रखें। शेर, बाघ, भालू, भेड़िया, गीदड़ या जंगली गधे की मूर्ति घर में न रखें।

घर में देव—दैत्यों के युद्ध के चित्र रखना भी शुभ नहीं होता। जलते हुए घर या जंगल की आग का चित्र घर में रखना अच्छा नहीं है। सूखे हुए पत्ते व फलों के बिना पेड़, जानवरों के चित्र, मरे हुए जानवरों को खाते हुए गीदड़, उल्लु, कौआ आदि के चित्रों का प्रभाव अनिष्टकारी होता है। इन्हें घर में नहीं रखना चाहिए।

✠✠✠✠

24 वास्तु रंग

VAASTU COLOURS

रंगों का महत्त्व –

हमारे चारों ओर की सभी वस्तुओं का कोई न कोई रंग है। कोई वस्तु एक रंग की भी हो सकती है और एक से अधिक रंगों की भी। रंग हर वस्तु की पहचान बनाते हैं। रंगों का मनुष्य के जीवन पर कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है। जितना हम देख सकते हैं या अनुभव कर सकते हैं, रंगों का प्रभाव उससे कही ज्यादा होता है, लेकिन रंग और मनुष्य जीवन के बीच का यह सम्बंध हमेशा स्पष्ट नहीं होता। रंग एक भावनात्मक वातावरण पैदा करते हैं। इनका मनुष्य के शरीर तथा मनोभावों पर अलग–अलग तरह से प्रभाव पड़ता है।

रंगों का प्रभाव अद्‌भुत होता है। रंग वास्तव ही में बड़े आकर्षक हैं। रंगीन तस्वीर या चित्र किसी को भी तुरन्त अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। रंगों की इस आकर्षण शक्ति का ही परिणाम है कि समाचार पत्रों में भी इनका प्रयोग बढ़ रहा है। आजकल तो स्कूल, हस्पताल तथा फैक्ट्री आदि में भी रंगों का प्रयोग होने लगा है।

रंगों का प्रभाव –

रंगों का हमारे विचारों, भावनाओं तथा क्रिया–कलापों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए अनेक प्रमाण दिए जा सकते हैं। गहरे रंग जैसे लाल, नारंगी, पीला हमें प्रसन्नचित्त बनाते हैं, भूख को बढ़ाते हैं, पाचन तन्त्र को ज्यादा क्रियाशील करते हैं व शक्ति व ऊर्जा का अनुभव करवाते हैं। ताजा भोजन को देखकर ही भूख जागती है। पकी हुई सब्जियों की खुशबू के साथ–साथ उनके रंग का प्रभाव भी भूख पर असर डालता है।

हम जो वस्त्र पहनते हैं हमारे बिस्तर की चद्दरें, खिड़कियों के पर्दे किस रंग के हैं, इसका प्रभाव भी हमारे तन और मन पर पड़ता है। यदि आप चाहें तो रंगों की अद्भुत शक्ति का चिकित्सा शक्ति में लाभ उठा सकते हैं। रंग हमारे शरीर ही नहीं मन और चेतना तक को प्रभावित करते हैं। 'रंग—चिकित्सा' के नाम से एक पूर्ण पद्धति है जो कई रोगों (विशेषतः मनोरोगों) के इलाज में विशेष प्रभावकारी सिद्ध हुई है।

किसी की रंगों की पसन्द बड़ी असाधारण हो सकती है, लेकिन समस्या यह है कि अच्छा चुनाव कर पाना बहुत ही मुश्किल है। सभी रंग सुन्दर होते हैं, बशर्ते उनका प्रयोग अच्छे ढंग व संतुलित ढंग से किया जाए। यदि रंगों का प्रयोग ठीक ताल—मेल से संतुलित तरीके से किया जाए तो इनके अनुकूल प्रभाव पड़ते हैं।

सफेद रंग –

सफेद रंग सूर्य का रंग है, जो पूर्व का प्रतिनिधित्व करता है। सफेद रंग प्रकाश को सोखता नहीं और यूं का यूं लौटा देता है, अतः छोटे कमरों की दीवारों पर यदि सफेद रंग किया जाए तो इससे छोटा कमरा भी कुछ खुला—खुला नजर आता है। सफेद रंग को किसी भी अन्य रंग के साथ प्रयोग किया जा सकता है। रजत—श्वेत (चांदी जैसे सफेद) रंग शुक्र ग्रह का रंग है; यह दक्षिण—पूर्व का प्रतिनिधित्व करता है। यदि आपको गहरे रंग पसन्द हैं तो आपको उनके साथ सफेद रंग का संतुलन बनाना चाहिए।

इससे उनकी चमक में और भी वृद्धि होगी, वे ज्यादा प्रभावकारी होंगे। गहरे और सफेद रंग के कई मेल बनते हैं। हरा—सफेद रंग सागर की फेन (झाग) का, नीला—सफेद मेघ (बादल) का तथा पीला—सफेद चाँद का तथा गुलाबी—सफेद शंख का रंग है। सफेद रंग अध्यापकों, बुद्धिजीवियों तथा विद्वानों के लिए उपयुक्त है।

नीला रंग –

नीला रंग शान्ति का रंग है जो पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व

करता है। नीला रंग न केवल मन को शन्ति देने वाला है, अपितु आँखों को भी अच्छा लगता है, शरीर पर भी इसका प्रभाव शांतिदायक होता है। नीला रंग लाल का प्रतिद्वंदी है। यह रक्तचाप को कम करता है; हृदय की धड़कनों को नियंत्रित करता है; शरीर के ज्वर को शांत करता है तथा पेशीय तनाव पर भी अनुकूल प्रभाव डालता है। चन्दन, नारंगी, नींबू व नीलम (एक प्रकार का रत्न) में भी नील वर्ण की किरणों के गुण पाए जाते हैं।

नीले रंग का द्वन्द्व (Contrast) भी सबसे ज्यादा है। यह अनेक रंगों से मेल व द्वन्द्व रखता है अतः इसे अन्य रंगों के साथ मिलाना जितना सुविधाजनक है, उतना ही मुश्किल भी है। इसे ठीक जगह ठीक तरीके से इस्तेमाल करना काफी बुद्धिमता का कार्य है। सेना (नेवी) में इसे शक्ति वीरता तथा पौरुष के प्रतीक के रूप में प्रयोग लाया जाता है तो पैट्रोल कम्पनियों में यह द्रव्यता (Liquidity) का प्रतीक है। लैवेंडर, कार्नफलावर या लिलि के फूल (Lilac) के रंग स्त्रोचित गुणों, कोमलता, मधुरता आदि के प्रतीक हैं। आसमानी बैंगनी, फिरोजी आदि रंग नीले रंग की अन्य किस्में हैं जो विशालता एवं व्यापकता के प्रतीक हैं।

नीला रंग गहरे रंगों के प्रभाव में वृद्धि करता है। इनके पूरक के लिए भी यह सर्वोत्तम रंग है। नीला रंग, गुलमोहरी लाल (Crimson), भूरा (Grey), गुलाबी, हरे, हल्के सफेद तथा गेहूँ, मक्की और पत्थर के रंग़ों के साथ भी मेल खाता है। लाल और सुनहरी पीले के साथ तो नीला रंग खूब खिलता है।

हरा रंग –

हरा रंग प्रायः खुशहाली व स्वास्थ्य का प्रतीक है। यदि किसी कृति में किसी रंग की अधिकता हो तो हरा रंग उसके प्रतिरोधक (antidote) के रूप में प्रयोग होता है।

हरा रंग बुध ग्रह का रंग है जो उत्तर दिशा का भी प्रतीक है। यह राहू का रंग भी है जो दक्षिण–पश्चिम का स्वामी ग्रह है। हरा रंग

सर्वाधिक संतुलित एवं शांत रंग है जो रोगियों को एक सुखद अहसास करवाता है।

पीला रंग –

सुनहरी पीला रंग बृहस्पति ग्रह का रंग है जो उत्तर–पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व भी करता है। सफेद तथा हल्का पीला रंग चंद्रमा का रंग है, जो उत्तर–पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। पीला रंग ऊष्मा व ऊर्जा का रंग है, जो सृष्टि को गतिमान रखता है।

शुद्ध गहरा पीला रंग अपनी आभा को प्रकाशित करता है, हल्का पीला रंग रात के अन्धेरे में नजर नहीं आता। गहरी चमक लिए पीला (lemon) रंग हरे रंग के साथ मिलकर तीव्र मनोवैज्ञानिक प्रभाव उत्पन्न करता है।

पीला रंग गहरे नीले रंग के साथ बड़ा सुन्दर लगता है। इसके अतिरिक्त लाल, भूरे, हल्के पीले व सुनहरी रंग के साथ भी इसका संयोजन अच्छा बन पड़ता है। पीला रंग व्यवसायियों (व्यापारियों) के लिए बड़ा शुभ है।

लाल रंग –

मूंगे जैसा लाल (Coral Red) रंग मंगल ग्रह का रंग है, जो दक्षिण दिशा का प्रतिनिधित्व करता है। यह अग्नि या क्रोध का परिचायक भी है। यह रंग ऊष्मा, शक्ति एवं संघर्ष का प्रतीक भी है। ऊष्मा एवं संघर्ष का प्रतिनिधित्व करने के कारण लाल रंग को दैनिक जीवन में प्रायः कम ही उपयोग में लाया जाता है। इसलिए घर के ड्राईंग रूम में लाल रंग प्रायः उपयोग में नहीं लाया जाता। लाल रंग श्वांसगति एवं दिल की धड़कनों को तेज कर देता है। ऊष्मा का संवहक होने के कारण लाल रंग सर्दी के कारण होने वाली खांसी को रोकने में भी सहायक होता है। खांसी की दवा के रूप में लाल रंग का भी अपना ही एक प्रभाव होता है। कुछ वनस्पति शास्त्री मानते हैं कि आम, खजूर तथा शहद, लहसुन, आजवाइन आदि में भी लाल रंग के गुण पाए जाते हैं। लाल रंग योद्धाओं अर्थात् सैनिकों या रक्षा कर्मियों के लिए अधिक उपयुक्त है।

काला रंग –

काला रंग उदासी व शोक का द्योतक है। यह एक भारी व उदास प्रभाव देने वाला रंग है जो प्रकाश को पूरी तरह अवशोषितं कर लेता है। प्रकाश की कोई किरण शेष न रहने के कारण काला रंग उदासी, शोक व निराशा को प्रकट करता है। घर के शांत वातावरण में काले रंग का सही वह संतुलित उपयोग कर पाना एक बड़ा ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। हल्का काला (कासनी या स्लेटी) रंग भी उदासी को दर्शाता है अतः घर में इस रंग का प्रयोग भी जहां तक सम्भव हो नहीं करना चाहिए। स्लेटी रंग का चुनाव करने वाला व्यक्ति वास्तव में कहीं न कहीं यह स्वीकार कर रहा होता है कि वह कुछ–कुछ चिन्ताग्रस्त रहने वाला निराशावादी प्रवृत्ति का है।

घर की दीवारों पर गहरे पीले, लाल या नारंगी रंग का घर के लोगों की मनोवृत्ति पर स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। घर में लाल, काले, स्लेटी रंगों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यदि ये रंग प्रयोग किए भी जाएं तो इनको सही संतुलन में प्रयोग करना चाहिए। घर की दीवारों पर हल्के रंगों का प्रयोग व्यक्ति के मन–मस्तिष्क पर बड़ा अनुकूल प्रभाव डालता है। इससे तनाव में कमी आती है। सफेद, हल्का नीला (आसमानी), क्रीम, हल्का–पीला, हल्का–हरा, हल्का–गुलाबी या ऐसे ही अन्य खुशगुवार रंगों का प्रयोग करने से व्यक्ति प्रसन्नचित्त रहता है। वह मानसिक थकान का अनुभव भी कम करता है। किसी ने ठीक कहा है – *There are no ugly colours, but there are only unfortunate combinations.* अर्थात्‌ कोई भी रंग भद्दा या बुरा नहीं होता, केवल रंगों का गलत संयोजन ही अशुभ प्रभाव उत्पन्न करता है।

रंगों का सही व संतुलित संयोजन घर को न केवल सजाता है बल्कि सम्पन्नता व समृद्धि भी लाता है। ऐसा जरूरी नहीं कि यदि कोई रंग आपको ज्यादा भाता है और वह आपके लिए शुभ भी है तो आप घर या कमरे को उस रंग से ढक ही दें। अपने मनोनूकूल व पंसदीदा रंग का थोड़ा सही प्रयोग भी आपको काफी ज्यादा खुशी दे सकता है।

✠✠✠✠

वास्तु मांगलिक चिन्ह

AUSPICIOUS VAASTU SYMBOLS

प्राचीन काल से ही भवन के मुख्य द्वार से ऊपरी भाग में किसी–न–किसी मांगलिक चिन्ह की प्रयोग करने की परम्परा रही है। हमारे प्रत्येक कार्य में धार्मिक भावनाओं की झलक मिलती है। हमारी धार्मिक भावनाएं विश्व–कल्याण की भावना से ओत–प्रोत हैं। चाहे व्यवसाय का क्षेत्र हो या आजीविका का, चाहे भवन–निर्माण का हो अथवा अन्य किसी शुभ कार्य का, हम धार्मिक कार्यों को श्रद्धा व सम्मानपूर्वक निभाते हैं। हमारे इन कार्यों के पीछे कुछ–न–कुछ वैज्ञानिकता व अलौकिकता का भेद छिपा हुआ है। हमारे पूर्वजों व ऋषि–महर्षियों ने कठोर तप व साधना के बल पर अनेक दिव्य शक्तियों को हासिल किया तथा जन–कल्याण की भावना से, धार्मिक आस्था के रूप में इन्हें अपनाने का सुझाव दिया।

इस अध्याय में कुछ एसे मांगलिक चिन्हों का उल्लेख किया जा रहा है, जो कि दैनिक जीवन में गृह निर्माण के समय विशेष रूप से उपयोगी होते हैं।

ओ३म (ॐ)

'ॐ' शब्द ब्रह्म का प्रतीक माना गया है। इनका प्रयोग भवनों में मंगल–चिन्ह के रूप में किया जाता है। यही ब्रह्म है। जिसने भी इसका भेद जान लिया है, उसी को मनोवांछित फल की प्राप्ति भी हुई है। यह शब्द सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, ब्रह्म, अपरिमित बल तथा प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने व उच्चारण करने मात्र से मन एकाग्रता की ओर तत्पर हो जाता है तथा शान्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। 'ॐ' को भवन के सामने उपयुक्त स्थान पर अवश्यमेव स्थापित करना चाहिए।

स्वास्तिक (卐)

यह वास्तु का मूल चिन्ह है। यह दिशाओं का ज्ञान करवाता है। इस चिन्ह को प्राचीन काल से ही मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। शुभ कार्यों का प्रतीक यह स्वास्तिक चिन्ह भवन के मुख्य द्वार के दोनों तरफ बनाया जाता है; ताकि अनिष्टकारी दृष्टि (बुरी नज़र) से रक्षा होती रहे। भवनों में सुख—समृद्धि बनी रहे। इसे गणेश जी का लिप्यात्मक स्वरूप भी माना जाता है।

'स्वास्तिक' शब्द का अर्थ है—जो स्वरित या क्षेम का कथन करता है।

यह दो रेखाओं द्वारा बनता है। दोनों रेखाओं को बीच में समकोण स्थिति में विभाजित करें, दोनों रेखाओं के सिरों पर बायीं से दायीं ओर समकोण बनाती हुई रेखाओं को इस तरह आगे बढ़ाते हैं कि आगे की रेखा को छूने से पूर्व ही रुक जाये। स्वास्तिक को किसी भी स्थिति में रखा जाये, उसकी रचना एक—सी रहेगी। स्वास्तिक के सिरों पर निर्मित समकोण पर मुड़ी रेखाएं अन्तहीन बताई गई हैं जिसका कोई स्पर्श या सन्धि बिन्दु नहीं है, क्योंकि ब्रह्माण्ड अनन्त है। यह सृष्टि चक्र के गूढ़ रहस्य का सूचक है। इसमें निहित दिव्य शक्ति के कारण ही यह धार्मिक आस्था का प्रतीक बन गया है।

स्वास्तिक चक्र की गतिशीलता बाएं से दाएं को अपनाई गई है। इसीलिए उसी सिद्धान्त पर घड़ी की दिशा निर्धारित की गयी है। पृथ्वी को गति प्रदान करने वाली ऊर्जा का प्रमुख स्रोत उत्तरायण से दक्षिणायण की ओर रहता है। वास्तुशास्त्र में उत्तर दिशा का बड़ा महत्त्व है। इस ओर भवन अपेक्षाकृत अधिक खुला रखा जाता है जिससे चुम्बकीय ऊर्जा तथा अन्य दिव्य शक्तियों को भवन में सम्मिलित कर सकें।

ईसाइयों का क्रॉस भी स्वास्तिक का ही एक अंग है। वास्तु में स्वास्तिक चिन्ह को भवनों के द्वारों पर तथा मंगल पर्वों पर भवनों की दीवारों पर अंकित किया जाता है। गगन से

पृथ्वी तक ब्रह्माण्ड के चतुर्भुजी आकार, धन (+) के चिन्ह की तरह की स्वास्तिक चारों दिशाओं का प्रतीक है। जब इस चिन्ह में चार भुजाएं दक्षिणावर्ती होकर जुड़ती हैं तो सूर्य का प्रतीक बन जाती हैं। क्योंकि सूर्योदय की गणना भी दक्षिणावर्ती गति से ज्ञात होती है। स्वास्तिक का प्रयोग दिशापति देवों (इन्द्र, अग्नि, सोम व वरुण) के पूजन—अर्चन में किया जाता है।

मंगल कलश

वैदिक काल से ही जलपूरित एवं आम्रपत्र, पुष्प तथा नारियल से ढका शुभ मंगल कलश शुभता सम्पन्नता तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है, क्योंकि सृष्टि का उद्भव जल से हुआ है, इसलिए ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का प्रतीक जल ही है। आम एक सदाबहार पेड़ है तथा उसके पल्लव (पत्र) सृजन के बाद जीवन में निरन्तरता का बोध करवाते हैं। अतः इनसे मंगल कलश की पूर्णता होती है। मरणोपरान्त जीवन के प्रतीक घट (खोपड़ी) को तोड़ दिया जाता है। घर को भी एक मंगल घट की संज्ञा दी गयी है।

किसी भी धार्मिक अनुष्ठान में मंगल कलश की अर्चना की जाती है। वास्तव में भवन बनाने के पश्चात् शुभ मंगल कलश की स्थापना एवं पूजा—अर्चना के रूप में ही की जाती है। गृह—प्रवेश तथा अन्य मांगलिक कार्यों में इसका होना अत्यावश्यक एवं शुभ माना जाता है।

पंचांगुलक हाथ

मांगलिक चिन्ह पंचागुलक हाथ गृह—प्रवेश, पुत्र—जन्म तथा विवाह के शुभ अवसर पर हल्दी व चावल की पीठी से पीठ पर हाथ का पंजा लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पांच की संख्या पांच तत्त्व की द्योतक है। पंच महाभूतों से हमारी सृष्टि का सृजन हुआ है। मुर्दे को जलाने के पश्चात्भी ये पांचों अंगुलियां नष्ट नहीं होती हैं। यह पांच मूल तत्त्वों की निरन्तरता, अनश्वरता का प्रतीक है।

हाथ को कर्म का प्रतीक माना गया है; यह देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक भी है। भवन में हाथ को मांगलिक चिन्ह के रूप में स्थापित करके, समृद्धि, पंच महाभूतों एवं कर्म की महत्ता को प्रकट किया जाता है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदशाओं को संकेत रूप में बताया जाता है।

मीन (मछली)

यह सच्चे प्रेम की प्रतीक मानी गई हैं। यात्रा शुरू करने से पूर्व मत्स्य दर्शन कार्य—सफलता का सूचक व शुभ शकुन माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा है।

भवन के मुख्य द्वारा पर जुडवां मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना जुड़ी है कि यदि मत्स्य के साक्षात्‌दर्शन नहीं होते, तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जायें। पौराणिक मान्यता के अनुसार भी विष्णु भगवान का प्रथमावतार मत्स्य ही माना गया है तथा प्रलय के वक्त मीन ने ही मनु व सृष्टि की रक्षा नाव के रूप में की। इसे कामदेव की ध्वजा का प्रतीक भी माना गया है। नारियों के कर्णाभूषणों में मत्स्य कुण्डलों के पहनने की परम्परा भी है। इसे मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है।

उपरोक्त मांगलिक चिन्हों के अलावा ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिन्ह क्रास (✝) तथा मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक 786 (٧٨٦) तथा अर्धचन्द्र (☪) व सिक्खों का 'एक ओंकार' (ੴ) है। इन मांगलिक चिन्हों के भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभता तथा समृद्धि के सूचक है।

भवन पर इनके लगे होने से गृहस्वामी की धार्मिक आस्था का भी पता चलता है कि वह किसी धर्म में श्रद्धा रखता है।

✠✠✠

26 वास्तु पौधे

VAASTU PLANTS

पौधे भी धरती पर पैदा होने वाले सजीव पदार्थ हैं जो प्राणियों से कुछ भिन्न हैं। पौधे जल व स्थल दोनों जगह जन्म लेते हैं। प्रायः पौधे का तना, पत्ते, जड़े व फूल आदि होते हैं। पौधे बीज उत्पन्न करते हैं और अपना भोजन सूर्य के प्रकाश की सहायता से स्वयं तैयार करते हैं। पेड़ भी पौधों का ही विकसित रूप है। पौधे प्रायः उस वनस्पति को कहा जाता है जो आकार में कुछ छोटे होते हैं। वैज्ञानिकों का मत है कि संसार में पौधों की लगभग 3,50,000 किस्में पाई जाती हैं। इस धरती पर सबसे पहला पौधा लगभग 43 करोड़ वर्ष पहले उगा था।

यद्यपि आधुनिक विज्ञान ने यह तथ्य हाल ही में स्वीकार किया है कि पौधे भी जीवित प्राणी हैं, लेकिन हिन्दुओं का यह सदियों पुराना विश्वास है कि वनस्पति जगत में भी प्राण हैं। पौधे भी प्राणियों की भांति सुख–दुख का अनुभव करते हैं, वे सुन सकते हैं तथा उनमें समझने की क्षमता भी है। हमारे प्राचीन ऋषियों ने पौधों के औषधीय गुणों की विस्तृत चर्चा अपने ग्रन्थों में की है। इस विषय में प्राचीन भारतीय वाङ्मय (साहित्य) का कोई मुकाबला नहीं।

वास्तु–शास्त्र में भी घर के भीतर तथा घर के बाहर की ओर लगाए जाने वाले पौधों बेलों, सब्जियों व फूलों आदि के बारे में चर्चा की जाती है। वास्तुशास्त्र मुख्यतः इन वनस्पतियों के शुभ–अशुभ प्रभावों की चर्चा करता है।

घर के दक्षिण और पश्चिम में ऊँचे व मजबूत तने वाले पेड़ों का प्रभाव बड़ा शुभ होता है। यह एक छत्र की भांति दक्षिण और पश्चिम

दिशा से आने वाले अशुभ वायु तरंगों व अन्य संवेगों से घर की रक्षा करता है। घर की ऊँचाई से भी ज्यादा ऊँचे पेड़ों को दक्षिण दिशा में लगाना चाहिए। दक्षिण के अतिरिक्त पश्चिम या दक्षिण—पश्चिम दिशा में इस पेड़ों का लगाया जाना श्रेयस्कर होता है। घर के उत्तर, पूर्व या उत्तर—पूर्व दिशा में पेड़ों की ऊँचाई घर के भवन की ऊँचाई से अधिक नहीं होनी चाहिए। घर की उत्तर—पूर्व दिशा को पेड़ या दीवार द्वारा अवरूद्ध कर दिए जाने से शुभ ऊर्जा की कमी होती है और घर के बालकों पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

दिन के प्रथम तथा अन्तिम प्रहर में घर के आँगन अथवा दीवारों पर किसी पेड़ की छाया का पड़ना, वास्तु की दृष्टि से एक शुभ लक्षण है। इससे घर के वासियों को कई प्रकार से लाभ मिलता है। किसी घर पर दिन के आरम्भ तथा समाप्ति के समय को छोड़कर, किसी पेड़ की छाया लगातार 8-12 घण्टे पड़ती रहे तो इससे घर के मालिक को कई प्रकार की मानसिक समस्याओं का शिकार होना पड़ सकता है। घर के सामने ऐसे पेड़ जिनकी छाया दोपहर से पूर्व लगातार चार घण्टों तक घर पर पड़ती है ऐसे पेड़ों को छाँट देना (Pruned) चाहिए ताकि उनकी छाया घर पर न पड़े और उगते हुए सूर्य की किरणें घर में प्रवेश कर सकें। दिन के दूसरे प्रहर में घर पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें घर के वासियों के लिए समस्या का कारण बन सकती है। आंगन में पेड़ इतनी दूरी पर लगाए जाने चाहिएं कि घर पर उनकी छाया प्रायः 9 से दोपहर बाद 3 बजे तक न पड़े।

घर में पौधे रोपते समय ध्यान रखें कि एक ही किस्म के दो पेड़ दो अलग—अलग दिशाओं में न लगाए जाएं। हर दिशा में भिन्न प्रकार के पेड़ लगाए जाने चाहिएं। घर में लगाए जाने वाले पेड़ों की संख्या सम (अर्थात्2, 4, 6, 8, 10 आदि) हो। घर में किसी बीमार व्यक्ति द्वारा दिया गया पौधा घर में न लगाएं। घर के प्रवेश द्वार के मध्य में पेड़ नहीं लगाया जाना चाहिए।

एक श्लोक में कहा गया है कि —

यत्र तत्रा वृक्षा, बिल्ववृक्ष, बिल्वशडिम्बकशराः ।
पनसो नारिकेलश्च शुभं कुर्वन्ति नित्यशः ।।
जम्बीरश्च रसालश्च रम्भा शेफालिकास्तथा ।
यवाशोक शिरीषश्च मल्लिकाद्या शुभप्रदाः ।।

जिसका भाव है —

बेल, अनार, नागकेसर, कटहल (Jack fruit) तथा नारियल के पेड़ सदा शुभ माने जाते हैं। जामुन, आम, केला, निर्गुदी, जौ (Barley) अशोक, शिरिश तथा चमेली के पेड़ किसी भी घर के लिए शुभदायक (लाभ देने वाले) होते हैं।

'विश्वकर्मा प्रकाश' के सातवें अध्याय के श्लोक संख्या 106 में हमें घर तथा बाग में फलों व अन्य पौधों के बाग में रोपण के विषय में मार्गदर्शन मिलता है।

पूर्वेण फलिता वृक्षः क्षीरवृक्षाश्च दक्षिणे ।
पश्चिमेन जलं श्रेष्ठं पद्मोत्पल भूषितम्।।

अर्थात्

बाग में अथवा खेत में फलों वाले वृक्ष पूर्व दिशा में लगाए जाने चाहिएं। क्षीरवृक्ष (जिन वृक्षों से दूध जैसा रस मिलता है) दक्षिण दिशा में लगाने चाहिएं। पश्चिम दिशा में जल में उत्पन्न होने वाले पद्म (कमल) जैसे पौधे ही शोभा पाते हैं।

विश्वकर्मा प्रकाश के नवम्अध्याय के सातवें श्लोक में कहा गया है —

सुरदारुचन्दन शमी शिंशिपाः खदिरस्तथा।
शालः शालविस्तृताश्च प्रशस्ताः सर्वजातिषु।।

अर्थात्

देवदास, चन्दन, शमी, शिशिषा, खदीर (कन्धीर, केल, खैर), शाल अथवा इनके समान विशेषताओं (गुणों) वाले वृक्ष सभी प्रकार के लोगों के लिए लाभदायक हैं।

किसी घर में कपास, इमली, गोंद आदि के पौधों का लगाया जाना शुभ नहीं माना जाता। इस विषय में कहा गया है —

तिन्तिडीको वटः प्लक्षः पिप्पलश्च सकोटरः।
क्षीटी च कण्टकी चैव निषिद्धास्ते महीरूहा।।

अर्थात्

इमली, बरगद, पाकरिया, पीपल जैसे पौधे, जो दूध (एक प्रकार का रस) पैदा करते हैं, घर के निवासियों के लिए पीड़ा का कारक बन सकते हैं अतः ये पौधे घर में नहीं लगाए जाने चाहिएं।

घर में लगाए जाने वाले पौधे कहां से लिए जाएं, यह भी ध्यान देने की बात है। आंधी से गिरे पौधे, मन्दिर से गिरे मिले पौधे, मन्दिर की जमीन या श्मशान भूमि से उखाड़े गए पौधे या सड़क के किनारे लगे पौधों को उखाड़कर घर में नहीं लगाना चाहिए। इसका प्रभाव घर के स्वामी के लिए बुरा हो सकता है।

विश्वकर्मा प्रकाश के 9 वें अध्याय के 10-13 श्लोक में कहा गया है —

श्मशाने नाग्निना चैव दूषितै अप्यथवा भुवा ।
वज्रेण मर्दित चैव वतभग्नं तथैव च ।।
मार्गवृक्षं पुराच्छन्नं चैत्यं कल्पं च दैवकम्।
अर्द्धमग्नार्द्धदग्धाश्च अर्द्धशुष्कास्तथैव च
व्यङ्गयकुब्जाश्च काणाश्च अन्य वृक्षेण भेदिता।।

इसका भाव है —

श्मशान भूमि की जली, अधजली अथवा बिना जली हुई लकड़ियाँ अथवा बिजली गिरने से जले हुए वृक्ष की लकड़ी, तूफान में गिरे हुए पेड़ की लकड़ी घर में नहीं लानी चाहिए। इसी प्रकार सड़क के किनारे उगे हुए पेड़ों के पौधे, अथवा ऐसे पेड़ों के अंश जिन पर बेले चढ़ी हुई हो, इसी प्रकार किसी परिवार के पुरखों द्वारा लगाया गया वृक्ष, देवस्थान (मन्दिर) के वृक्ष, आधे टूटे हुए वृक्ष, आधे जले हुए वृक्ष या कुबड़ निकले हुए (टेढ़े झुके हुए) या नष्ट हो गए, मुरझा चुके वृक्षों या तने के आरम्भ में तीन शाखाओं वाले वृक्ष को घर में नहीं लाना चाहिए न ही ऐसे किसी वृक्ष को घर के आंगन में रहने देना चाहिए। शास्त्रों में इन वृक्षों को अशुभ माना गया है।

ऐसे पौधे जिनकी किसी डाली को तोड़ने पर उसमें से सफेद रस—सा बहता हो, उन्हें घर में नहीं उगाना चाहिए। घर में लगे कांटेदार, नुकीले पत्तों वाले अथवा दूध बहाने वाले पौधे गुस्सा, तनाव तथा चिड़चिड़ेपन का कारण बनते हैं और इनका मनुष्य की मनःस्थिति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

घर के अन्दर ऐसे पौधे न लगाए जाएं, जिनके पत्तों से सफेद दूध—सा निकलता है। क्योंकि ऐसे पौधे में चन्द्रमा की किरणों व पानी जैसा प्रभाव होता है, जिसके कारण घर के सदस्यों को खांसी, जुकाम, फेफड़ों से सम्बन्धित बिमारियों का सामना करना पड़ सकता है। घर के बाहर यदि ऐसे पौधे लगे हों तो उनका प्रभाव इतना बुरा नहीं होता। यदि कैक्ट्स के पौधों के बीच अशोक या कटहल के पेड़ लगा दिए जाएं तो इससे कैक्ट्स जैसे पौधों के अशुभ प्रभाव में कमी आ जाती है।
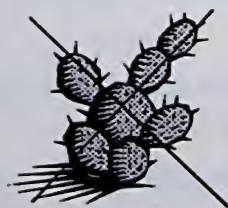
'विश्वकर्मा प्रकाश' के अध्याय 9 के 15 वें श्लोक में कहा गया है—

कण्टकी कलहं कुर्यात्काकाच्छन्ने धनक्षमभ्।
गृधवृक्षमहारोगं श्मशानस्थं मृतिप्रदम्।।

जिसका भाव है —

कांटेदार पौधे/पेड़ घर में लगाए जाने पर इनका अशुभ प्रभाव होता है। इससे घर में झगड़ा व मनमुटाव की स्थिति बन सकती है। वृक्ष जिन पर कौअे बैठते हैं, धन के नाश के कारण बनते हैं, जिन वृक्षों पर गिद्ध बैठते हैं, ऐसे वृक्ष भयंकर रोग का कारण बनते हैं तथा श्मशान भूमि से लाकर लगाए जाने वाले पौधे, मृत्यु को देने वाले अर्थात्मृत्यु का कारण बन सकते हैं।

एक अन्य श्लोक में कहा गया है —

खर्जूरी दाड़िमी रम्भा कर्कन्धू बीज पूरिका ।
उत्पद्यन्ते गृहे यत्र तस्मिन्कृतानि मूलतः ।।

अर्थात्

खजूर, दाडिभी, (Dwart Date pulses), रम्भा (Hill Date Palm) कर्कन्धू (Wild date Suger palm) दतोमी (जंगली अनार), केला, बदरी, बिजोड़ा, नीम्बू (जंगली नींबू) आदि पौधे यदि अपने आप किसी घर में उग आएं तो ये उस घर का सत्यानाश कर सकते हैं। उस घर में हमेशा कलह और क्लेश का वास रहेगा।

तलाब के किनारे उगे हुए निषुल, जामनी, बेंत, नीम, बार, आम, पिलकन, कदम्ब बबूल, ताड़, अशोक व महुआ के वृक्ष बड़े शुभकारी होते हैं।

औषधीय गुणों वाले पौधे —

घर के आंगन में लगे हुए तुलसी, हल्दी, चन्दन, चम्पा, चमेली, गेंदा, अशोक, आंवला, नीम व पत्तल के पौधों का प्रभाव बड़ा शुभ होता

है। इनसे घर में खुशी बनी रहती है। ये पौधे वायु को शुद्ध करके घर के लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करते हैं। इन पौधों में औषधीय गुण भी होते हैं।

चन्दन की लकड़ी शत्रुता को समाप्त करने में बड़ी सहायता करती है। यदि इसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाए तो यह सुख, समृद्धि तथा दीघार्यु को प्रदान करती है। अन्य सुगंधी वाले पौधे हैं — महुआ, चम्पा, केवड़ा, आमला, मोतिया आदि। इन पौधों की प्रकृति ठण्डी है। लेकिन इन पर कीट पतंगे बहुत आते हैं। केवड़े का वृक्ष तो श्वास सम्बन्धी रोग (दमा आदि) का कारण भी बन सकता है। अतः घर में इन वृक्षों को सोच–विचार कर ही उगाना चाहिए।

पीपल के पेड़ का महत्त्व –

पीपल एक पवित्र पेड़ है, जिसकी पूजा हिन्दुओं द्वारा की जाती है। इस वृक्ष की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यह रात के समय भी आक्सीजन उत्पन्न करते हैं। पीपल का महत्त्व इस तथ्य से भी प्रकट होता है कि गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है – "वृक्षों में मैं पीपल हूँ। वह व्यक्ति जो जानता है कि पीपल का क्या महत्व है वह एक प्रकार से वेदों का ज्ञाता है।"

पीपल का पेड़ अविनाशी है। (अर्थात कभी मुरझाता नही) इसका कारण है कि इसकी जड़े स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रतिनिधि हैं। इसका तना ब्रह्मा (विधाता) का प्रतिनिधि है। इसीलिए पीपल को ब्रह्म वृक्ष भी माना जाता है। वृक्षों के पत्तों को वेदों का रूप माना जाता है। इसीलिए कहा जाता है जो व्यक्ति पीपल को जान लेता है, वह वेदों को जान लेता है।

पीपल के अनेक अंग औषधीय गुणों से भरपूर हैं। इनका उचित उपयोग अनेक असाध्य रोगों का भी इलाज करने में सक्षम है। कैंसर जैसे असाध्य रोग, रक्त विकार जैसे दोष में पीपल कत्था, अपामार्ग और बेल राहत देते हैं। इनसे शरीर के अंगों में फैला विष, उपविष बाहर किया जा सकता है। इसी प्रकार आक, ढाक, शिवलिंगी नसों से, पेट से, खून

से, वीर्य आदि से विकार दोष दूर करके स्वास्थ्य बना देते हैं। ये अचूक औषधियां हैं। परन्तु गुलामी के दौर में इनका ज्ञान लुप्तप्राय हो गया था। भारत के परतन्त्र रहने की सजा हम अभी तक भुगत रहे हैं।

शनिवार के दिन पीपल एक प्रकार से साक्षात ब्रह्मा जी का रूप होता है। इस दिन यह असाध्य जहरीले तत्वों को हमारे शरीर से खींच लेता है जिसके कारण पोलियो जैसी बीमारी कम हो जाती है। यही कारण है कि बुजुर्ग हमें शनिवार को पीपल के पेड़ के नीचे कुछ देर बैठने तथा पीपल की जड़ों को छूने की सलाह देते हैं। इससे उपविष, विष, अपाचन जैसी बीमारियां कम हो जाती हैं तथा मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती है।

पीपल चौबीसों घंटे आक्सीजन छोड़ता है। इसकी जड़ें अपने आप में दक्षिणी ध्रुव का काम करती हैं। पीपल हमेशा कार्बन डाइआक्साइड व अन्य गैसों को ग्रहण करता रहता है। हवा में पैदा होने वाली जहरीली गैसों को पीपल की जड़ें खींचती रहती हैं। यही कारण है कि पीपल की जड़ पर कड़वे तेल का दिया जलाया जाता है। ताकि बची खुची गैसों में माइक्रोब जल जायें ओर फिरं से पैदा होने वाली कार्बन डाइआक्साइड के सहारे जड़ें पेड़ का तना, टहनी पत्ते तुरन्त गैस को समेट लें। पीपल को घर में नहीं लगाना चाहिए। इसे पूज स्थल पर या सार्वजनिक स्थान पर लगाया जाता है।

यदि दिया आदि न जलाया जाये तो ये गैसें इतनी भारी मात्रा में इकट्ठी हो जाती हैं कि पीपल का वायुप्रदुषण की इस लाबी को समेटने संजोने में पूरे 24 घंटे लग जायेंगे। इसलिये इतवार को पीपल के करीब से गुजरना भी पाप समझा जाता है। जहरीली गैसें एलर्जी, पोलियो, कुष्ठ, रक्त–विकार आदि बिमारियां दे देती हैं। इतवार के दिन पीपल के चबूतरे पर बैठ कर हुक्का गुड़गुड़ाने वाले या ताश खेलने वालों के स्वास्थ्य ठीक नहीं रहते। यह भी कारण है कि पीपल के नीचे इतवार को जाना, छूना, बैठना सब मना है।

पीपल रूपी देवता किसी का किया उपकार धरोहर नहीं रखता। शनिवार को दीपक जलाना या मीठा जल देना इतना शुभ है कि मनुष्य तुरन्त अपनी काम काज धन संबंधी समस्या का समाधान ढूंढ लेता है। उसे तुरन्त लाभ मिलता है। यह अनुभव गत सत्य है।

पीपल, जांडी, बिल्व जैसे पेड़ों ने तो ब्रह्मा, लक्ष्मी, शिव जैसी ईश्वरीय शक्तियों को राक्षसों से बचाने के लिए शरण दी थी।

राजा नल या हरिश्चन्द्र जैसी महान विपदा पड़ी हो, एक वक्त की रोटी कमाने का साधन लाख कोशिश करने पर भी न बनें, भूखों मरने की नौबत आ जाये, संगी साथी, रिश्तेदार किनार काट जायें। नुकसान, टोटा, कर्ज की वापसी का दबाव चैन न लेने दे तो ऐसे में पीपल एक ऐसा भरोसेमंद सक्षम दोस्त है जो इन समस्याओं का हल देता है।

शास्त्रों में पीपल की कृपा प्राप्ति का बड़ा सीधा साधन समझाया गया है। जिसके अनुसार शनिवार को किसी भी समय मीठा, मीठा पानी; या पीली सरसों मिली शक्कर या उड़द–तिल मिला मीठा या चने बेसन के लडडू या गुड़ चना पीपल की जड़ में दे आयें। ऊपर मीठा पानी जरूर डालें ताकि जड़ें तरल पदार्थ को अपने भीतर तुरन्त सोख लें। चिन्ता या टेन्शन कम हो जायेगी। कुछ न कुछ इंतजाम तो हो ही जायेगा। ईश्वर की ऐसी ही कृपा है कि पीपल की शरण में आने वाले का अवश्य कल्याण हो जाता है।

शनिवार के दिन पीपल महामृत्युंजय जप से भी ज्यादा कमाल कर दिखाता है। उदाहरण खूब देखने को मिलते हैं। जो व्यक्ति लगातार दोपहर बाद पीपल की जड़ को बायें हाथ से छू लेता है, तो उसके शरीर पर बिमारियों का प्रभाव कम होने लगता है। ऐसा पांच सात बार करने से आसानी से उन बीमारियों का इलाज हो जाता है। यह निश्चित सत्य है कि शनिवार को दोपहर बाद पीपल की जड़ें छूने से व्यक्ति की आयु बढ़ती है। कैसा भी संकट उसे इतनी आसानी से मार नहीं सकता। उसकी आकस्मिक मृत्यु की संभावना कम हो जाती है। वह दिनों दिन उभरता चला जाता है।

महाकवि तुलसीदासजी भी श्मशान घाट पर रहते हुए अपने पूजा के लोटे के बचे हुए पानी को पीपल में डालते थे। बचा भोजन भी चीटियां और कुत्तों के लिए पीपल के नीचे डालते थे जो उनके लिये श्री हनुमान चालीसा लिखने व बजरंग बली से मिलने का साधन बना। मामूली मूल नक्षत्र में जन्में होने के कारण त्याग दिये जाने के बावजूद तुलसीदास संसार के इने गिने रामभक्त महाकवि तुलसीदासजी बने जो ज्योतिष विद्या के भी बहुत बड़े विद्वान माने जाते हैं। उनका इतना नाम हुआ कि रहीम जैसे मंत्रियों को भी भेजी गई चिट्ठी गरीब कन्याओं की शादियों का प्रबन्ध करवाने लगी। बड़े–बड़े सेठ साहूकार विद्वान तथा हाकिम तुलसीदास के भक्त बन गये।

महाभारत का एक प्रसंग –

पांडवों के बनवास के सबसे कठोर दिनों में जब लाख प्रयत्न करने पर भी भोजन की प्राप्ति न के बराबर थी, भूखे मरने की नौबत आ गई थी। हिडिम्ब राक्षस से हुए भयानक युद्ध को भी जिता दिया। इससे पहले एक दिन की घटना ने उसके जीवन की सारी दिशा बदल दी थी। भीम ने शनिवार को कहीं से शहद तोड़ कर ला रहे मटके को भील से छीन लिया था जिससे उसे मल्ल युद्ध करना पड़ा था, उसमें भील मारा गया। भीम दोबारा शहद के मटके को उठा कर तेजी से दौड़ पड़ा – पीछे से भीलनी चीखती चिल्लाती आई। भिलनी के तीरों से घायल भीम को ठोकर लगी और मटका जमीन पर गिर कर टूट गया। सारा का सारा शहद पीपल की जड़ों पर आ गिरा। जब तक वह कुछ सम्भलता भीलनी से मल्लयुद्ध शुरू हो गया। उधर भारी बरसात ने जम कर बरसना शुरू कर दिया। सारा शहद पीपल की जड़ों में फैल चुका था।

जब भीम हार चुके तब भीलनी बोली, "जाओ भीम, तुम्हारे बल को देख कर तुम्हें माफ किया। अब से तुम्हारी दरिद्रता के दिन खत्म।" इतना कह कर भीलनी वहां से गायब हो गई। शायद कोई मुद्दत से भूखी

राक्षसी थी जो पीपल पर रहती थी। भीम बरसात में पीपल की जड़ों में से शहद इकट्ठा करने लगा। इससे भीम को महामृत्युंजय का आशीर्वाद मिल गया। शनिवार को पीपल की जड़ें हाथों से छूने, पौंछने के कारण भीम को कभी किसी से हार नहीं मिली। अगले दिन हिडिम्बा मनुष्य की बू सूंघते हुए उसी पहाड़ी के नीचे आ पहुंची जहां पाडंव सोये हुए थे। पहरे पर पत्थर पर बैठे अर्धनिद्रा में बैठे भीम को खाने की चेष्टा करने से पहले ही हिडिम्बा भीम पर मोहित हो गई। पांडव वरुण स्थल पर सोये हुए थे। दक्षिण–पश्चिम में नैरुत पहाड़ था जिस पर पीपल था। हिडिम्बा सुन्दरी बन कर भीम को जगा कर अपना जीवन साथी बनाने की प्रार्थना करने लगी। भीम ने महादरिद्री और घोर बनवास के दिन बता कर विवाह करने से मना कर दिया। हिडिम्बा ने भीम से कहा, "कैसी गरीबी ? कैसी पातकी ? लो, मैं हमेशा के लिये इसे विदा कर देती हूं।" और तब हिडिम्बा भीम को एक ढेर के पास ले गई और कहने लगी कि मैं सोना बनाने की एक विधि बतलाती हूं। हर रोज इतना सोना तुम्हारी झोली में आ जाया करेगा। उसके बाद तो पांडवों के पास धन दौलत, ऐश्वर्यों की कोई कमी नहीं रही। बस, महाभारत के लिये तैयारियां की जाने लगीं। युद्ध की तैयारियों में कितना अधिक परिश्रम किया गया होगा? कितना धन खर्च किया गया होगा? इस बारे में पांडवों के जीवन से अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इसका अंदाजा तो इस भीषण महाभारत में कौरवों द्वारा की गई तैयारियों को लेकर लगाया जा सकता है।

तुलसी का महत्त्व –

तुलसी का पौधा भारत भूमि के प्रत्येक हिन्दू घर में उगाया जाता है। इसे परिवार की देवी के रूप में मान्यता दी जाती है जो कि परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य की रक्षा करती है। तुलसी एक अति गुणकारी पौधा है जिसकी गन्ध बड़ी मोहक होती है और इसकी पत्तियों में औषधीय गुण विद्यमान है। तुलसी की पत्तियों को अनेक रोगों के उपचार के लिए

प्रयोग में लाया जाता है। हमारे ऋषि–मुनियों तथा आयुर्वेदाचार्यों ने तुलसी के गुणकारी प्रभावों को प्रशंसा तो की है। पश्चिम के विद्वानों ने भी इसके महत्त्व को स्वीकारा है। अतः अपने घर में तुलसी का पौधा अवश्य लगाएं और इसकी भली–भांति देखभाल करें। यदि तुलसी का पौधा घर के प्रवेश द्वार के निकट रखा जाए तो इसकी भीनी–भीनी सुगन्ध से मन को शान्ति तथा सुख मिलता है। इसलिए घर में तुलसी का पौधा हिन्दुओं की धार्मिक परम्परा बन गई है।

घर में तुलसी का बड़ा महत्त्व है। हिन्दू लोग अपने घरों में तुलसी का पौधा लगाते हैं। घर में तुलसी का पौधा पूर्व दिशा में लगाया जाना चाहिए। इसके लिए उत्तर–पूर्व तथा उत्तर दिशा भी उचित है। तुलसी का पौधा घर के ब्रह्मस्थान अर्थात् केन्द्र में भी लगाया जा सकता है। रामचरित मानस के उत्तर काण्ड में 'रामराज्य' का वर्णन करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं।

उत्तर दिस सरजु बहे, निर्मल जल गम्भीर।
तीर–तीर तुलसिका सुहई, वृंद–वृंद बहु मुनिन्ह लगाई।।

अर्थात्

अयोध्या नगरी के उत्तर में सरजु नदी बहती थी जिसके किनारों पर तुलसी के पौधे शोभा पाते थे। ये तुलसी के पौधे विभिन्न ऋषि–मुनियों के द्वारा लगाए गए थे।

धनदायक पौधा बांस –

यह भी सच है कि पीपल और बांस भी आकाशीय बिजली और भूकम्प से जमीन को बचाता है। पीपल की जड़ें जमीन को खोदती रहती हैं और नीचे उतर जाती हैं। पीपल के आस पास कभी बिजली नहीं गिरती।

अक्सर देखा गया है कि बांस को उत्तर या पूर्व में लगाने से तुरन्त लाभ मिलता है। बांस की जड़ें मिट्टी को खोदती रहती हैं। और उत्तर पूर्व में मिट्टी का खोदा जाना घर में खुशहाली देता है।

अथर्ववेद में भी बांस का महत्व बताया गया है। बांस लगाने वाले लोग मिट्टी से उठ कर करोड़ों के मालिक बन जाते हैं। यह अक्षरक्षः सत्य है।

उत्तर, या उत्तर पूर्व में लगाया गया बांस का पौधा एक मजदूर के बराबर है जो लगातार जमीन की खुदाई करता रहता है। दिनों दिन बांस की जड़ें नीचे और नीचे जाती रहती हैं। और बरसात के समय में उस घर से पानी उत्तर या उत्तर पूर्व में इतने गहरे कुएं तक, चाहे वो गिलास भर ही हो, सीधी गहरी जमीन के नीचे जाता है जो बहुत ही अधिक समय तक काम, कारोबार, सुख समृद्धि देने वाला है। पुराने समय से चली आ रही प्रथा के अनुसार मुगलों और अंग्रेजों द्वारा भी अपने महलों, कोठियों, रेस्ट हाऊस में बिना कांटे के बांस लगाने का रिवाज था, जो बहुत ही शुभ और लाभदायक माना जाता था।

पौधे भी ध्रुवीय आकर्षण से प्रभावित होते हैं। पौधे उत्तर, उत्तर–पूर्व और पूर्व में जीवनदायिनी तरंगें फेंकते रहते हैं और दक्षिण व पश्चिम दिशा में अपना वेस्ट, गन्द आदि फेंकते हैं। यही कारण है कि किसी भी बड़े पेड़ के दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर न तो रहना चाहिये ओर न ही सोना चाहिये। ऐसा करने से व्यक्ति का भाग्य सोता है। बिमारी, कलह, झगड़े आदि बढ़ते हैं। काम काज, कारोबार, नौकरी आदि प्रभावित होते हैं। मनुष्य का रक्तचाप व मानसिक तनाव बढ़ता है, उम्र कम होती है।

इसके विपरीत जो व्यक्ति पीपल, बड़, बेल आदि के उत्तर, उत्तरपूर्व, या पूर्व दिशाओं की ओर रहता है उसे हर प्रकार के सुख और ऐश्वर्य थोड़ी सी मेहनत से ही प्राप्त हो जाते हैं।

नियम वही है, पूर्व या उत्तर नाम, प्रसिद्धि, लोकप्रियता तथा यश देता है।

✣✣✣✣

वास्तु फूल

VAASTU FLOWERS

फूल प्रकृति का एक अनमोल उपहार हैं। फूल वायु को शुद्ध करके वातावरण को तरो–ताजा कर देते हैं, जिसके कारण हर व्यक्ति ताजगी व प्रसन्नता का अनुभव करता है। फूलों का मनुष्य के दिलो–दिमाग पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है।

प्रायः अपनी मनोभावनाओं को व्यक्त करने के लिए लोग फूलों का सहारा लेते हैं। ज्ञात इतिहास के अनुमान से लोग पिछले पचास हजार वर्षों से भी अधिक समय से फूलों का प्रयोग प्रेम, वफादारी, यादगार व आदर के प्रतीक के रूप में करते चले आ रहे हैं। वनस्पति–वैज्ञानिकों के अनुमान के अनुसार पृथ्वी की फूलों 2,50,000 के भी प्रजातियाँ (किस्में) पाई जाती हैं।

फूल प्रत्येक अवस्था में हमारे मन को प्रभावित करता है। घर के शुद्ध वातावरण के लिए फूलों को बडा महत्त्व है। फूलों की भीनी–भीनी खुशबू वातावरण में रंग व सुन्दरता बढ़ा देती है।

सफेद रंग के कारण चमेली का सम्बंध आत्मा की शुद्धि व पवित्रता के साथ जोड़ा जाता है। घर में चमेली का होना वास्तु की दृष्टि से बड़ा शुभ माना जाता है। अपने पीले रंग के कारण (जो बृहस्पति का प्रतीक है) बड़ा शुभ व समृद्धि का कारक माना जाता है। घर में गेदें के पौधों का होना स्वास्थ्य व समृद्धि को बढ़ाता है। वैसे भी फूल किसी भी प्रकार के हो, वे मनुष्य की कार्य–ऊर्जा में बढ़ौतरी करते हैं। गुलाब यद्यपि बड़ा लोकप्रिय फूल है। यह देखने में भी अच्छा लगता है। अपनी खुशबू से यह मोह लेता है, फिर भी इसके लाल रंग तथा कांटों के कारण वास्तु शास्त्र इसे घर के भीतर गुलाब उगाने की आज्ञा नहीं देता।

प्रातः काल उठते ही यदि फूलों को देखा जाएं तो इससे मन मस्तिष्क को एक नई ताज़गी का अनुभव होता है। मन के भीतर तक शांति का प्रकाश जैसे फैलता सा जाता है। फूलों के गमले चारदीवारी पर या भवन की दीवार पर उत्तर, पूर्व या ईशान (उत्तर–पूर्व) में न रखें। हम पहले भी स्पष्ट कर चुके हैं कि घर के ईशान कोण पर किसी प्रकार की बाधा नहीं होनी चाहिए, भले ही गमलों के रूप में ही क्यों न हो।

फूलों का उपयोग पूजा तथा सज्जा के लिए तो होता ही है, भेंट में देने के लिए फूल एक उत्तम उपहार भी हैं। पश्चिमी देशों में शुभ अवसरों पर पुष्प भेंट करने का प्रचलन अपेक्षाकृत अधिक है। पुष्प स्त्रियों द्वारा श्रृंगार–प्रसाधन के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। फूलों की वेणी मन को मोह लेती है –

पुष्पों के महत्त्व को प्रदर्शित करते हुए इस श्लोक में कहा गया है–

पुष्पमस्य धारणं कान्तिवर्धनं काम कारकम्।
ओजः श्रीवर्द्धक चैव पापग्रह, विनाशनम्।।

जिसका भाव है –

पुष्पों को धारण करने से सुन्दरता में वृद्धि होती है। ये कामेच्छा को जागृत करते हैं। पुष्पों से ओज तथा वैभव बढ़ता है तथा पाप कर्म नष्ट होते हैं।

****

"आज जिस प्रकार हमारा पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है तथा जल वायु और भूमि तत्त्व दूषित हो रहे हैं, उसे देखते हुए वास्तु का महत्त्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि वास्तु हमें प्रकृति से तालमेल करना सिखाता है।"

संजय मजीठिया

अधिवक्ता उच्चन्यायालय

चंड़ीगढ़

खण्ड – IV

जल स्त्रोत
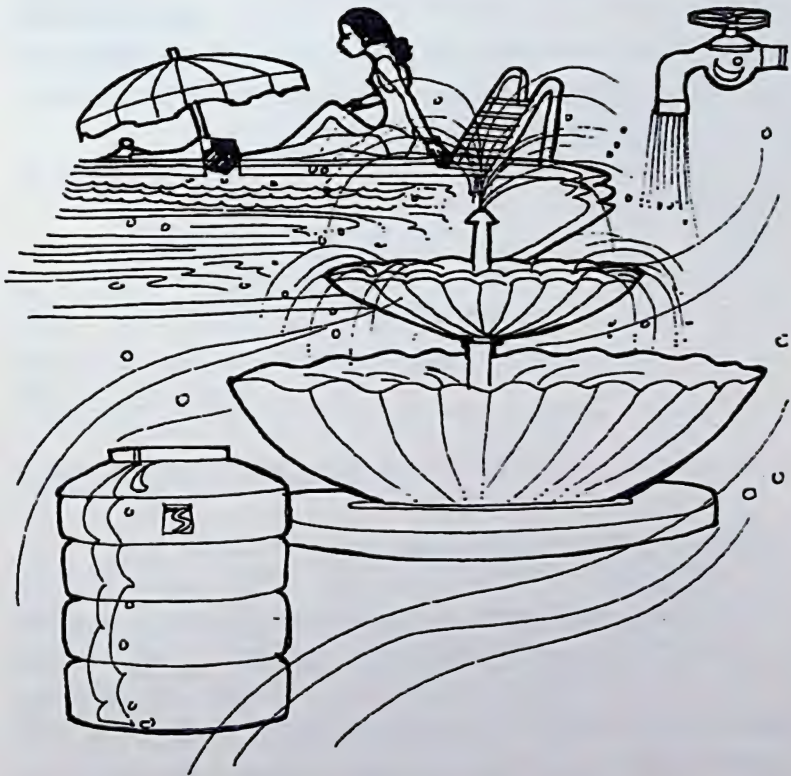
तरण ताल

SWIMMING POOL

तरणताल की दिशा –

'विश्वकर्मा प्रकाश' के आठवें अध्याय के 15-17वें श्लोक में तथा 'बृहत्तसंहिता' के 53 वें अध्याय के 117वें श्लोक में बताया गया है कि तरण ताल (SWIMMING POOL) उत्तर–पूर्व अथवा उत्तर की ओर बनाया जाना चाहिए। तरणताल ठीक उत्तर–पूर्व के कोने में न हो बल्कि पूर्व के मध्य बिन्दु एवं उत्तर–पूर्व के बीच हो।

तरण ताल की दीवार का कोना भवन के उत्तर–पूर्व को जोड़ने वाली रेखा तथा प्लाट के उत्तर–पूर्व को जोड़ने वाली रेखा के ऊपर नहीं होना चाहिए। यह इस रेखा से थोड़ा हटकर पूर्व की ओर होना चाहिए।
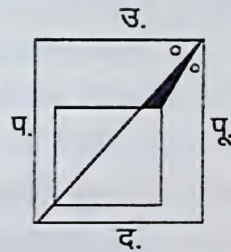
वास्तु–अनुरूप तरणताल के लाभ –

उत्तर दिशा में बना तरण–ताल समृद्धि, लाभ एवं सुख का कारक बनता है। उत्तर–पूर्व के तरण–ताल के होने से बहुत ही शुभ प्रभाव मिलते हैं। इससे चहुँमुखी समृद्धि एवं लाभ तथा विकास के अवसर उत्पन्न होते हैं। यह गृह स्वामी की संतान के लिए विशेषतः पुत्रों के लिए भी शुभ फलदायक होता है। तरण–ताल के पूर्व दिशा में होने से धन की वृद्धि तो होती है, लेकिन इसका प्रभाव सन्तान के लिए विशेष लाभकारी नहीं होता। पश्चिम दिशा में बना तरण–ताल धन–सम्पत्ति के विनाश तथा स्वामी तथा गृह–स्वामी के लिए समस्याएं पैदा करने वाला हो सकता है।

तरणताल की अशुभ स्थितियां –

उत्तर–पश्चिम में बना तरण–ताल शुभ प्रभावदायक नहीं होता। यह अज्ञात दुखों (मानसिक परेशानियां) शत्रुता, डर आदि का कारक बन सकता है। गृहस्वामी की पत्नी के लिए विशेषतः अशुभ फलदायक हो सकता है। दक्षिण में बना तरणताल शत्रु का भय तथा अन्य कई समस्याएं को उत्पन्न करता है। घर की स्त्रियों के लिए यह अशुभ प्रभावकारी होता है।

दक्षिण–पश्चिम में बना तरण–ताल रोग या कष्ट को उत्पन्न करता है। यह गृहस्वामी, संतान व स्त्रियों सभी के लिए अशुभ हो सकता है। दक्षिण पूर्व में बना तरणताल मान–सम्मान व प्रतिष्ठा के लिए अशुभ होता है। यह किसी अग्निकांड के कारण होने वाले नुकसान का कारक भी बन सकता है। इसका प्रभाव पुत्रों पर अनिष्टकारी होता है।

तरण–ताल ब्रह्मस्थान (मध्य में) पर नहीं होना चाहिए। यह अति अनिष्टकारी हो सकता है। यहां तक कि इससे दिवालिएपन की स्थिति भी आ सकती है।

कूएं का वास्तु–सिद्धान्त –

सूर्य की किरणों का प्रभाव कुएं, तालाब, नदी अथवा तरणताल के जल के लिए एक समान होता है, बशर्ते कि जल का स्तर धरती के तल से नीचा हो। वास्तु में जो नियम कुएं के जल के लिए है, उसे तरणताल पर भी लागू करना चाहिए।

'गूहर्तचिंतामणि' 12 वें अध्याय के 20 वें श्लोक में कहा गया है–

कूपे वास्तोर्मध्य देशेऽर्थनाश
स्त्वैशान्यादौ पुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ।
सूनोर्नाश स्त्रीविनाशो मृतिश्च
सम्पत्पीड़ा शत्रुतः स्याच्य सौख्यम ।।

भावार्थ यह है कि —

घर के पूर्व में बना कुआं धन लाता है, इसके दक्षिण पूर्व में बनाने से यह स्वास्थ्य का नाश व पुत्रों के लिए समस्याएं उत्पन्न करता है। दक्षिण में होने से पत्नी के लिए कष्ट तथा दक्षिण पश्चिम में होने से गृहस्वामी के लिए कष्ट का कारण बनता है। पश्चिम में होने से सम्पत्ति का नाश करता है, उत्तर—पश्चिम में होने से शत्रु प्रबल होते हैं, उत्तर में होने से सुख व उत्तर—पूर्व में होने से सुख समृद्धि आती है, लेकिन मध्य में होने से धन का नाश होता है।

'बृहत्त संहिता' के 54वें अध्याय के 97वें व 98वें श्लोक में बताया गया है कि कूएं का निर्माण दक्षिण—पूर्व, उत्तर—पश्चिम तथा दक्षिण—पश्चिम को छोड़कर अन्य किसी भी दिशा में किया जा सकता है। जिसका भाव ऐसा ही है कि कूएं के लिए उत्तर तथा उत्तर—पूर्व दिशा ही श्रेष्ठ है।

आग्नेय यदि कोणे ग्रामस्य पुरस्च वा भवेत कूपः ।
नित्यं स करोति भयं दाहं च समानुशं प्रायः ।।
नैवत्यकोणे बालक्षणं च बनिताभयं च वायव्ये ।
दिक्त्रयमृतयक्त्वा शेशासु शुभावहाः कूपाः ।।

जिसका अर्थ है —

यदि कूएं का निर्माण दक्षिण—पूर्व में किया जाए तो इससे ग्राम अथवा पुर (कालोनी) के लिए किसी न किसी दुर्घटना का भय बना रहता है। अग्नि से किसी प्रकार का विनाश हो सकता है। दक्षिण—पश्चिम में बना कूआं अनिष्टकारी होता है। यह ग्राम (अथवा कालोनी) के बच्चों के लिए हानिकारक हो सकता है। उत्तर—पश्चिम में बना कूआं स्त्रियों के लिए अशुभकारी होता है। वह कूआं शुभ प्रभावकारी होता है, जो इन तीन दिशाओं (दक्षिण—पश्चिम, उत्तर—पश्चिम, दक्षिण—पूर्व) में न बना हो।

तरणताल के किनारे जामुन, बेंत, नीम, बड़, आम, कदम्ब, बकुल, कुरवक, ताड़, अशोक, महुआ के पेड़ों को लगाना भी बड़ा शुभकारी होता है।

एक उदाहरण –

महाभारत का युद्ध : वास्तु दोष

वास्तु दोष का उदाहरण महाभारत में देखने को मिलता है। श्री कृष्ण के निर्देश पर उस समय के वास्तु विशेषज्ञ मय दैत्य ने पाण्डवों के लिए इन्द्रप्रस्थ नगर बनाया था तथा उसमें मायानगरी का निर्माण किया था। इस मायानगरी के ब्रह्मस्थान पर अर्थात बीचों–बीच एक जलाशय का निर्माण किया गया था। जो देखने में फर्श के समान लगता था। दुर्योधन ने इस जलाशय को फर्श समझने की भूल की थी और इसमें गिर पड़ा था। द्रोपदी का हंसना ही महाभारत के युद्ध का कारण बना।

इस वास्तुदोष के परिणामस्वरूप ही पाण्डवों को अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा। वे अपना सम्पूर्ण धन–वैभव जूए में हार गए। द्रोपदी की लज्जा पर भी आंच आई। दूसरी ओर कौरवों के लिए भी यह अशुभ ही रहा। क्योंकि उन्होंने छल के द्वारा पाण्डवों को इस मायानगरी से निष्कासित करके इस पर अधिकार कर लिया था इसलिए महाभारत के युद्ध में उनका समूल नाश हो गया।

✠✠✠✠

फव्वारे

(FOUNTAINS)

फव्वारे का वास्तु—महत्त्व –
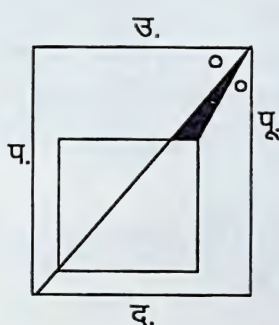
जैसा कि पीछे वर्णन किया जा चुका है, घर में उत्तर—पूर्व दिशा में जल कुण्ड का होना अति शुभ लक्षण है। यदि यह जल का भण्डार भूमि की सतह से नीचे हो तो इसके शुभ—प्रभाव में वृद्धि हो जाती है। इसके शुभ प्रभाव से भवन—निर्माण में यदि कोई वास्तु—दोष रह गया हो तो उसका अशुभ प्रभाव भी कम हो जाता है। प्राचीन काल में लोग इसीलिए घरों में फव्वारे लगाते थे।

यूनान के लोग देवी—देवताओं की मूर्तियां बनाकर उनमें फव्वारों का जल छोड़ा करते थे, जो देखने में किसी जादू जैसा लगता था।

फव्वारों से स्वास्थ्य लाभ –

फव्वारों का मनुष्य के स्वास्थ्य पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। फव्वारे से उड़ने वाले जलकण आस—पास के वातावरण को शुद्ध एवं ठण्डा बना देते हैं। इसमें जलाशय का पानी भी साफ रहता है तथा अतिरिक्त जल के बहाव को कम करते हैं। फव्वारे में पानी की एक धारा होती है जो जल दाब के कारण प्राकृतिक रूप में अपने आप धरती से ऊपर उठती है या इसके लिए कुछ कृत्रिम साधन बनाए जाते हैं। जो जल—भण्डार पर दबाव डालते हैं, जिसमें परिणाम स्वरूप पानी एक पतली धारा के रूप में धरती के तल से वेग के साथ ऊपर को उठता है और एक फुहार के रूप में छूटता है। फव्वारों के निर्माण की कला हजारों वर्ष पुरानी है।

फव्वारे कई प्रकार के होते . हैं। घर में फव्वारों का होना बड़ा शुभ प्रभाव डालता है। इससे घर की शोभा में वृद्धि होती है। फव्वारे देखने में तो सुन्दर लगते ही हैं, इनके जलकणों का भी शरीर पर बड़ा स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव पड़ता है।

फव्वारे की स्थापना के लिए उत्तर—पूर्व दिशा उत्तम है, लेकिन फव्वारा ठीक उत्तर—पूर्वी कोने में नहीं होना चाहिए। फव्वारे के चारों ओर भूमि तल से नीचा एक कुण्ड बनाना चाहिए। वास्तु के नियमों के अनुसार भूतल से नीचे पानी को एकत्र किया जाना शुभ प्रभाव डालता है। इस कुण्ड को जल से भरा रहना चाहिए। फव्वारे के चलने से जल—कुण्ड में से पानी का प्रवाह घर में धन के प्रवाह का कारण बनता है।

फव्वारे के चलने व इस पर रंगीन रोशनी के जलने—बुझने को कम्पयूटर द्वारा नियन्त्रित किया जा सकता है।

✠✠✠✠

30 अन्य जल स्त्रोत

(OTHER WATER FEATURES)

जल –

आजकल प्रायः सभी घरों में जल आपूर्ति के लिए नलों (Water Taps) का प्रयोग किया जाता है। इन नलों में जल आपूर्ति नगर निगम या नगर परिषद् द्वारा की जाती है। घर में जल की फिटिंग के विषय में भी वास्तु के कुछ नियमों का पालन करने से शुभ परिणाम दृष्टिगोचर होते हैं। घर में पानी की नलियाँ (Water Lines) उत्तर–पूर्व अथवा उत्तर दिशा से प्रवेश करनी चाहिएं। पानी की नलियाँ जमीन के नीचे से जानी चाहिएं।

भूमिगत जल कुण्ड (Under Ground Water Tank)

कई बार घर में जमीन के तल से नीचे एक हौज़ या जलकुण्ड (नाबदान) बना लिया जाता है, जिसमें पानी इकट्ठा किया जाता है, ताकि जरूरत के वक्त इसका प्रयोग किया जा सके। जल कुण्ड के लिए वास्तु के नियम का ध्यान रखें कि जल का भण्डारण उत्तर या उत्तर–पूर्व दिशा में होना चाहिए। जल कुण्ड का निर्माण करने से पूर्व भी जल को एकत्रित करने के लिए हौज़ (कुण्ड) बनाया जाता है, वह उत्तर–पूर्व दिशा में ही बनाया जाना चाहिए। पानी की सप्लाई वाली मुख्य लाईन इस कुण्ड में आनी चाहिए और फिर इस कुण्ड से पम्प द्वारा पानी छत पर टैंक में पहुँचाया जाना चाहिए। यह स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ठीक है क्योंकि सीधे–सीधे मुख्य सप्लाई लाईन से पम्प या बूस्टर जोड़ देने से दुष्परिणाम सामने आते हैं। सप्लाई लाईन से जुड़ा बूस्टर पाईप में उल्टा प्रैशर बनाता है, जिसके कारण पुराने पाईप में छेद हो जाते हैं। जहां से कई प्रकार की अशुद्धियाँ पानी में मिल सकती हैं जो

परिवार के सदस्यों के लिए हानिकारक हो सकती हैं। कुण्ड की गहराई कितनी हो इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता, अपनी जरूरत एवं सुविधा के अनुसार आप कुण्ड की गहराई कम या ज्यादा कर सकते हैं।

कुण्ड में जल का बहाव घर में धन के प्रवाह के अनुकूल बनाता है। उत्तर—पूर्व दिशा में जल का भण्डारण एवं उसके फव्वारे के समान प्रवाह का प्रभाव बड़ा शुभ होता है। अतः घर में आने वाली पानी की पाईप जल कुण्ड के नीचे से आए और इसके मुख पर एक फव्वारा या पतली नोज़ल लगा दी जाए ताकि यहाँ से जल फव्वारे की भांति छूटे। इस प्रकार घर में फव्वारे की तरह आता जल धन के प्रवाह को घर के भीतर की ओर प्रवाहित करेगा। जल कुण्ड हमेशा भरा रहे और ध्यान दें कि इसकी उपरी सतह की किनारी जमीन से ऊपर न हो।

यदि घर में आने वाली पानी की पाइपें किसी अन्य दिशा से आ रही हों तो ऐसे में जलकुण्ड का निर्माण उत्तर—पूर्व दिशा में करना चाहिए और यहीं से पूरे घर में जल पहुँचाया जाना चाहिए।

जल भण्डार (Overhead Tank)

घर में जल की आपूर्ति के लिए घर पर जो टैक बनाया जाता है, वह दक्षिण—पश्चिम भाग में होना चाहिए यदि दक्षिण—पश्चिम में नहीं तो उत्तर—पश्चिम में होना चाहिए। छत पर बनाया जाने वाला टैंक उत्तर—पूर्व दिशा में नहीं होना चाहिए। यह भी ध्यान रखें कि छत पर बनाया जाने वाला टैंक मुख्य भवन की छत को न छूएं। छत पर कुछ स्तम्भ या आधार खड़ा करके उस पर ही टैंक का निर्माण करना चाहिए।

मल निकासी टैंक (Septic Tank)

घरों में जहां सीवरेज़ की लाईन उपलब्ध न हो, वहां सैप्टिक टैंक की व्यवस्था की जाती है। सैप्टिक टैंक एक ऐसा टैंक होता है, जहां मल के व्ययन (disposal) की क्रिया को बैक्टीरिया की क्रिया द्वारा

सम्पन्न किया जाता है। यदि घर में सैप्टिक टैंक बनाया जाए तो इसे कभी भी उत्तर–पूर्वी भाग में विशेषतः उत्तर–पूर्वी कोने में तो कभी भी न बनाया जाए। सैप्टिक टैंक के लिए उत्तर–पश्चिमी कोना या उत्तर दिशा में अथवा पूर्व के मध्य भाग में बनाया जाना चाहिए। सैप्टिक टैंक बाहरी दीवार (Compound Wall) के साथ मिलाकर नहीं बनाना चाहिए। सैप्टिक टैंक कभी भी घर के ब्रह्मस्थान अर्थात मध्य में नहीं बनाना चाहिए।

ट्यूबवैल/बोर वेल या लिफ्ट बैल –

यदि घर में पानी की व्यवस्था के लिए ट्यूब वैल या जैट पम्प आदि लगाना हो तो इसके लिए उन्हीं नियमों का पालन किया जाए जिनका वर्णन ऊपर (Under Ground Water Tank) के विषय में किया गया है।

परनाला अथवा शौचालय –

पानी की निकासी व शौचालय के लिए सम्बन्धित अध्याय देखें।

✠✠✠✠

"वास्तु हमारी प्राचीन ऋषि जीवन पद्धति की श्रेष्ठता का जीवंत प्रमाण है। वास्तु प्रकृति के सार–तत्त्व को समझकर, उससे पूर्ण सामंजस्य स्थापित कर, जीवन के वास्तविक आनन्द को पाने की विधि है, जो हमें जीवन की पूर्णता की ओर ले जाती है।"

कुलवंत शर्मा
गांधी वादी चित्रकार

खण्ड — V

भवन

कुछ प्रतिबन्ध

SOME OBSTRUCTIONS

वास्तु का उद्‌देश्य जीवन को शांत, सुखी एवं समृद्ध बनाना है। इसी दृष्टिकोण से हम यहां कुछ बातों पर आपका ध्यान खीचना चाहेगें। यद्यपि ये बड़ी छोटी–छोटी बातें हैं, तो भी इनका प्रभाव बड़ा गहरा होता है। आप चाहें तो इनकी परीक्षा कर सकते हैं।

- ऐसी दीवार घड़ी, जो खराब हो या चल न रही हो, उसे हटा देना चाहिए। इस नियम का पालन कलाई घड़ी (Wrist watch) के सम्बंध में भी अवश्य करें क्योंकि घडी समय अर्थात्‌जीवन की गति का प्रतीक है।
- घर के मध्य भाग (ब्रह्मस्थान) को जहाँ तक हो सके खुला छोड़े, इस पर किसी प्रकार की दीवार आदि बनाकर रोका न जाए।
- आपके घर में पड़ोसी के घर का पानी (छत का परनाला आदि) नहीं गिरना चाहिए।
- घर के प्रवेश द्वार के पास कूड़ा या बचा–खुचा सामान नहीं रखना चाहिए। ऐसा सामान घर के किसी ऐसे कोने में ही रखना चाहिए, जहां प्रायः आना–जाना न होता हो। घर के फालतु सामान का नजरों के सामने रहना उचित नहीं।
- घर के प्रवेश द्वार के सामने की जमीन भी ऊँची नहीं होनी चाहिए।
- घर के सामने से बहने वाली नाली, या गन्दे पानी का बहाव बड़ा अशुभ लक्षण है। इसके कारण धन का नाश हो सकता है। इससे घर के सदस्यों के स्वभाव में चिड़चिड़ापन भी आ सकता है।

- भवन की लम्बाई, चौड़ाई तथा ऊँचाई में एक उचित अनुपात होना चाहिए। यदि घर के सामने की सड़क लम्बवत् हो, यानि सड़क का मुहाना घर के सामने पड़ता है तो इसका घर के स्वामी पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

  (घर के आसपास सड़क की विभिन्न स्थितियों एवं इनके शुभ/अशुभ प्रभाव के बारे से सम्बन्धित अध्याय को देखें)

- घर के फर्श में से पानी का फूटना शुभ लक्षण नहीं है। यदि ऐसा कोई सोता (स्रोत) हो तो उसके प्रवाह को रोकना चाहिए।
- घर में टूटा हुआ या तिड़का हुआ (दरार पड़ा) दर्पण (मुंह देखने का शीशा) कभी भी न रखें। दर्पण के टूटने या उसमें दरार पड़ जाने पर तुरन्त फेंक दें।
- घर की बनावट ऐसी होनी चाहिए कि उसमें सूर्य एवं चांद का प्रकाश बिना क़िसी बाधा के पहुँचे। घर में कम से कम तीन घंटे के लिए सूर्य का प्रकाश सीधा पड़ना चाहिए।
- घर में गिद्ध, उल्लु, खरगोश या चमगादड़ आदि को शरण नहीं लेने देनी चाहिए। घर में इन पक्षियों का घोंसला या खरगोश का बिल नाश को आमन्त्रित करता है।
- घर में कैक्टस या नागफनी जैसे कांटेदार या दूध वाले (सफेद रस) पौधे नहीं रखने चाहिएं।
- यदि आस–पास की किसी ऊंची बिल्डिंग की छाया आपके घर पर पड़ती है तो यह वास्तुदोष है।
- घर के प्रवेश द्वार (मुख्य द्वार) के एकदम सामने किसी पहाड़ी या टीले का होना शुभ लक्षण नहीं।
- घर के एकदम निकट मन्दिर या धार्मिक स्थान का होना उचित नहीं क्योंकि घर में व्यक्ति को हर प्रकार की भौतिक आवश्यकताएं

पूरी करनी होती हैं। वहाँ भौतिक सुखों को भी भोगना होता है। जबकि मन्दिर (या पूजा घर आदि) का सम्बंध आध्यात्म से होता है। अतः घर की आवश्यकताओं, व्यवसायिक एवं अन्य गतिविधियों व आध्यात्मिक क्रियाओं के बीच एक द्वन्द्व (टकराव) की स्थिति बन सकती है। अतः ध्यान दें कि घर पर किसी मन्दिर, मस्जिद या किसी अन्य धार्मिकस्थल की छाया नहीं पड़नी चाहिए। यदि कोई धार्मिक स्थल/पूजा घर की दूरी घर की ऊँचाई से दुगुनी से अधिक है तो इसका कोई अशुभ प्रभाव नहीं होता। अतः घर मन्दिर आदि से बिल्कुल सटा हुआ न हो। घर के बिल्कुल निकट कसाई खाना, श्मशान भूमि, कब्रिस्तान या अस्पताल का होना भी वास्तु की दृष्टि से अच्छा नहीं है।

घर के निकट दक्षिण पश्चिम में पानी के किसी खड्डे, तालाब, नदी, नहर या झील आदि का होना भी अच्छा नहीं है।

कुएं का घर की चारदीवारी के भीतरी या मुख्य द्वार के सामने होना अच्छा नहीं होता। घर में जरूरत का पानी जिस कुएं से लिया जाए, वह ऐसे स्थान पर होना चाहिए, जहां कम से कम छः घण्टे तक सूर्य का प्रकाश पड़ता हो। यदि घर की छाया (परछाई) कुएं पर पड़ती है तो यह शुभ लक्षण नहीं है। जल स्त्रोत पर सूर्य का प्रकाश पड़ने से ही हानिकारक किटाणु नष्ट होते हैं।

घर के मुख्य द्वार (गेट) के बिल्कुल सामने किसी प्रकार की बाधा का होना घर के निवासियों के मनो—मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालता है। घर के सामने किसी प्रकार की कोई रुकावट, जैसे खम्भा, पेड़, स्तम्भ, चट्टान मूर्ति या कोई भी ऐसी चीज़, जिससे रुकावट बनती हो, नहीं होनी चाहिए। यदि ऐसी कोई चीज़ घर के निकट है, किन्तु उसकी दूरी घर की ऊँचाई के दो गुणा से अधिक है तो इनका कुप्रभाव कम या समाप्त हो जाता है।

बृहत संहिता के 53 वें अध्याय के 76 वे श्लोक में कहा गया हैं–

कूपेनापस्मारो भवति विनाशश्च देवताविद्धे ।
स्तम्भेन स्त्रीदोषाः कुलनांशो ब्रह्मणोभिमुखे ।।

जिसका भावार्थ है कि घर के प्रवेश द्वार पर यदि कुएं की बाधा है तो इससे अस्थिरता का दोष आता है। यदि घर के सामने किसी देवता की मूर्ति से बाधा बन रही है तो इससे नाश का निमन्त्रण मिलता है। किसी खम्भे या स्तम्भ के कारण होने वाली बाधा का घर की स्त्रियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। घर के सामने ब्रह्मा की मूर्ति द्वारा उत्पन्न बाधा का प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है।

वास्तुदोष के कुछ उदाहरण

(क) वास्तु दोष के कारण सरकार की अस्थिरता

प्रतिरोधकों के बारे में चर्चा करते हुए हमने बताया कि मुख्य प्रवेश द्वार के सामने किसी प्रकार की बाधा नहीं होनी चाहिए। बाधा के रूप में किसी देवी—देवता की मूर्ति का होना भी अच्छा नहीं होता। इसका उदाहरण हमें नई दिल्ली में संसद भवन में देखने को मिलता है।

श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी भारत के उन महापुरुषों में से है, जिन्होंने भारतीयों को अपनी पराधीनता की बेड़ियां तोड़ डालने की प्रेरणा दी। लगभग तीस वर्ष तक स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने भारतीय जनता का नेतृत्व किया। अहिंसा में अटूट विश्वास व त्याग भावना के कारण वे 'महात्मा' कहलाए। उन्होंने विश्व—बधुत्व की भावना का प्रचार किया। उन्होंने सिखाया — 'घृणा पाप से करो, पापी से नहीं।' ऐसी उदारता के कारण वे राष्ट्रपिता (बापू) कहलाए। अनेक लोग श्रद्धापूर्वक उन्हें अवतार अथवा देवपुरुष का दर्जा भी देते हैं और उनके प्रति ऐसी ही श्रद्धा भावना रखते हैं, जैसी किसी देवता के प्रति होती है।

भारतीय संसद भवन के प्रवेश द्वार के बिल्कुल सामने महात्मा गांधी की एक काफी बड़ी प्रतिमा लगाई गई है। जब इस प्रतिमा को स्थापित किया गया, उस समय श्री पी॰वी॰ नरसिम्हाराव भारत के प्रधानमन्त्री थे। इस प्रतिमा की स्थापना से संसद भवन के परिसर में एक वास्तुदोष आ गया है। इसके लगाए जाने का स्थान उचित नहीं है, क्योंकि यह संसद के प्रवेश द्वार के बिल्कुल सामने पड़ती है। अच्छा होता, यदि इसे संसद के प्रवेश द्वार के बिल्कुल सामने की अपेक्षा थोड़ा हटकर किसी उपयुक्त स्थान पर लगाया जाता। प्रवेश द्वार के ठीक सामने किसी प्रतिमा का होना वास्तु की दृष्टि से अशुभ माना गया है। वैसे भी जहाँ महात्मा गांधी की प्रतिमा लगाई गई है। वह स्थान विभिन्न अवसरों पर विरोध प्रदर्शन या धरना देने के लिए प्रयोग किया जाता है। विगत दिनों 15. 07.1998 को देहली के प्रमुख समाचार पत्र The Times of India ने अपने मुखपृष्ठ पर एक चित्र छापा था, जिसमें अनेक महिला

संगठनों के धरने का चित्र छपा था। राज्यसभा की सदस्य फिल्म अभिनेत्री जयप्रदा भी इस धरने में सम्मिलित थी। ये संगठन आरक्षण विधेयक को लेकर संसद भवन के सामने धरना दे रहे थे। इस चित्र में ऐसे दिखाई पड़ता था जैसे स्वयं महात्मा गांधी भी प्रदर्शनकारियों के साथ शामिल है। यह स्थिति काफी हास्याप्रद थी, जिससे अनेक लोगों की भावनाएं आहत हुई।

अवरोधक के इस सिद्धान्त को चीनी वास्तु शास्त्र 'फेंग शूई' भी मान्यता देता है। इसके अनुसार किसी प्रस्तर प्रतिभा (पत्थर की मूर्ति) का प्रवेश द्वार के बिल्कुल सामने होना शुभ नहीं है। ऐसा अवरोध (Obstruction) अस्थिरता जैसी समस्याओं को पैदा करता है।

संसद भवन के मुख्य द्वार के सामने इस प्रतिमा की स्थापना के बाद से देश में अस्थिरता का वातावरण बना हुआ है। अनेक सांसदों (सत्तारूढ़ एवं विपक्ष दोनों पक्षों के) विरूद्ध हवाला जैसे मुकद्दमों ने देश को हिला कर रख दिया। मई 1996 में हुई 11वीं लोकसभा के चुनावों में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। लोकसभा में सबसे बड़े दल भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने का निमन्त्रण तो मिला लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में बनी भाजपा की सरकार को विश्मासमत हासिल न हो सका, परिणामस्वरूप 13 दिन बाद ही इस सरकार को पद से हटना पड़ा। तब संयुक्त मोर्चा अस्तित्व में आया और श्री देवगौड़ा भारत के प्रधानमन्त्री बने, लेकिन कांग्रेस की नाराजगी के चलते श्री इन्द्र कुमार गुजराल को उनका स्थान देना पड़ा। श्री गुजराल भी कांग्रेस को खुश न रख सके और देश को मार्च 1998 में फिर एक चुनाव झेलना पड़ा। श्री वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा तथा सहयोगी दलों के गठबंधन से बनी सरकार भी अस्थिरता का शिकार रही और परिणामतः सुश्री जयललिता की हठधर्मिता के चलते 12वीं लोकसभा भी अपना कार्यकाल पूरा न कर सकी और अप्रैल 1999 को देश पुनः चुनावों की तैयारी में जुट गया। तेरहवीं लोकसभा में भी जिस प्रकार से दो दर्जन राजनैतिक दलों के गठजोड़ से सरकार बनी है, उससे यह नहीं लगता कि देश को स्थायी सरकार मिल सकेगी।

एक अन्य उदाहरण

(ख) उच्चतम–न्यायालय परिसर

उच्चतम–न्यायलय में मुख्य प्रवेश की सीढ़ियों के सामने भी 1996 में ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की एक प्रतिमा स्थापित की गई थी। यह प्रतिमा कोर्ट रूम नं॰ 1 के सामने पड़ती है। सीढ़ियों से प्रतिमा की दूरी लगभग 25 फीट है। इस प्रतिमा का स्थान वास्तु के अनुकूल नहीं है क्योंकि यह प्रवेश मार्ग में अवरोधक का काम करती है और कोर्ट रूम नं॰ 1 के प्रवेश–मार्ग (सीढ़ियों) के एकदम सामने है इसलिए इसका कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। सीढ़ियों के मध्य से पौधों की एक कतार है। पौधों की एक दूसरी कतार कोर्ट रूम नं॰ 1 के मध्य द्वार के बिल्कुल सामने है यह कोर्ट नं॰ 1 में सीधे प्रवेश में अवरोधक बनती है। आने–जाने वालों को इन पौधों के दाएं या बाएं होकर ही आना–जाना पड़ता है। कोर्ट रूम नं॰ 1 टी प्वाईंट पर पड़ता है और कोर्ट रूम का प्रवेश दक्षिण की ओर है, अतः पौधों की कतार कोर्ट के लिए परदे का काम करती है, जो दोपहर की सीधी धूप से बचाती है। इस प्रकार दक्षिण में स्थित पेड़ों की कतारों का शुभ प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

कोर्ट नं॰ 1 के सामने बगीचे के बीचों–बीच एक और मूर्ति है। इस मूर्ति का मुख दक्षिण की ओर है तथा कोर्ट नं॰ 1 इसकी पीठ की ओर है। मुख्य द्वार के सामने की ओर होते हुए भी यह मूर्ति किसी भी प्रकार से अवरोधक का काम नहीं करती। अतः इसका कोई अशुभ प्रभाव परिलक्षित नहीं होता क्योंकि मूर्ति उपवन के बीचों–बीच कोर्ट नं॰ 1 से पर्याप्त दूरी पर है।

✠✠✠✠

भूगर्भ गृह एवं तलघर
BASEMENT AND CELLAR

भूमि के तल से नीचे की ओर बने कमरों आदि को भूगर्भ गृह अथवा तलघर (तहखाना) कहा जाता है। अंग्रेजी प्रभाव के कारण भूगर्भ गृह के लिए बेसमैंट शब्द प्रचलित हो गया है। पाठकों की सुविधा के लिए हम इस अध्याय में तलघर अथवा बेसमैंट शब्द का ही प्रयोग करेंगे।

तलघर (बेसमैंट) किसी भवन के उस भाग को कहा जाता है, जो पूरी तरह से अथवा आंशिक रूप से धरती तल से नीचे बने होते हैं। तलघर का प्रयोग प्रायः व्यापारिक कार्यों अथवा आफिस आदि के रूप में किया जाता है। इसी प्रकार Cellar का प्रयोग भण्डारण के लिए किया जाता है, जिसे बोलचाल की भाषा में गोदाम कहा जाता है।

धार्मिक स्थानों जैसे मन्दिर तथा मठ एवं महलों में बने भूगर्भ गृह को पवित्र माना जाता है।

किसी भवन में यदि तलघर (Basemaent) बनाया जाए तो यह विशेष रूप से ध्यान में रखा जाए कि तलघर की छत भूमि तल से कुछ ऊँचाई पर हो ताकि रोशनदान आदि के रास्ते में तलघर में ताज़ी हवा तथा रोशनी पहुँचती रहे और इसकी उपयोगिता बनी रहे।

तलघर की उचित दिशा –

वास्तुशास्त्र की दृष्टि से तलघर पर विचार किया जाए तो तलघर का द्वार उत्तर या पूर्व में खुलना चाहिए। यदि पूरे भवन के नीचे तलघर बनाया जाए और इसके द्वार उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में हो तो यह शुभ लक्षण है।
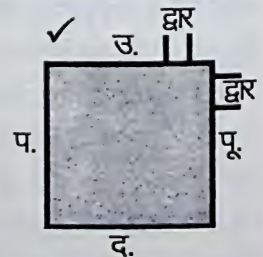
बेसमैंट यदि पूरे भवन के नीचे न बनाकर इसके साथ इसके आधे या कम भाग में बनाना हो तो इसके लिए उत्तर, पूर्व या उत्तर—पूर्व के भाग का चुनाव करना चाहिए।
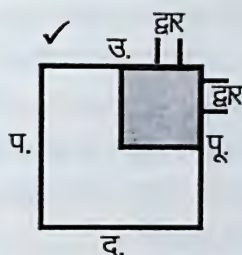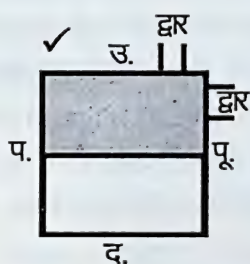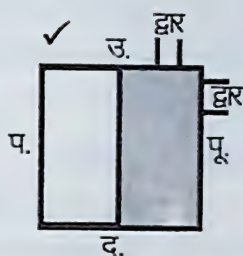
तलघर में रिहाइश –

यदि भवन के उत्तर—पश्चिम या दक्षिण—पूर्व भाग में बेसमैंट का निर्माण किया जाए तो इसका प्रयोग पार्किंग के तौर पर या नौकरों आदि की रिहाइश के लिए किया जाना चाहिए।

यदि भवन के केवल दक्षिणी भाग में बेसमैंट का निर्माण किया जाए तो इसका प्रयोग भारी सामान (मशीनरी आदि) रखने के लिए किया जाना श्रेष्ठ है। बेसमैंट का दक्षिणी—पूर्व या पश्चिम का भाग किसी भी अवस्था में रिहाइश के लिए प्रयोग में न किया जाए।
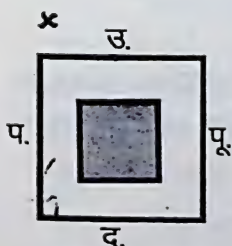
भवन के मध्य में, जिसे ब्रह्मस्थान कहा गया है, तलघर का निर्माण न किया जाए। वास्तु की दृष्टि से यह बहुत बड़ा दोष है। इसी प्रकार भवन के दक्षिण पश्चिम में तलघर का निर्माण करना वास्तु की दृष्टि से निषेध है।

यदि सूर्य की जीवनदायी किरणें तलघर में न जाती हों, तो ऐसे तलघर को आवास के लिए प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। हाँ इसे केवल गोदाम आदि के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

तलघर में आफिस –

जिस तलघर की छत भूमि तल से ऊपर हो और इसमें कुछ समय के लिए सूर्य का प्रकाश आ सकता है, तो इसका प्रयोग व्यवसाय के लिए किया जा सकता है। तलघर में सूर्य के प्रकाश की व्यवस्था करने के लिए दर्पणों का प्रयोग किया जा सकता है। ये दर्पण इस प्रकार लगाए जाने चाहिएं कि इनसे परावर्तित होकर सूर्य का प्रकाश तलघर में प्रवेश कर सके इससे एक और बिजली के खर्च में कमी होगी, दूसरे प्राकृतिक प्रकाश तलघर में प्रवेश कर सकेगा। इससे तलघर की उपयोगिता बढ़ जाएगी।

ध्यान दें कि तलघर में बैठकर कार्य करते समय आपका मुख उत्तर दिशा में हो। तलघर में भारी–भरकम सामान को नैऋत्य (दक्षिण–पश्चिम कोने) में रखना चाहिए।

तलघर की ऊँचाई –

तलघर की छत की ऊंचाई उतनी ही रखनी चाहिए जितनी कि भूतल (Ground Floor) की है। यदि तलघर में बार या होटल बनाना हो तो इसके लिए दक्षिण–पूर्वी भाग में बनाने से उत्तम परिणाम सामने आते हैं।

तलघर में जल भण्डार –

तलघर के उत्तरी पूर्वी कोने में जल भण्डारण (Water Storage) करना अथवा वहां पर नल आदि की स्थापना करना बड़ा शुभ लक्षण है।

****

33 भवन के ऊपरी तल

UPPER FLOORS

भवन के ऊपर वाले तल भूतल की अपेक्षा ज्यादा हवादार होते हैं। इनमें सूर्य का प्रकाश भी अधिक मात्रा में उपलब्ध रहता है, क्योंकि भूतल चारों और से चारदीवारी, बाढ़ या पेड़—पौधे आदि से घिरा रहता है। आस—पास की ऊँची बिल्डिगें भी हवा व रोशनी में व्यवधान डालती हैं।

भवन निर्माण में यह बात विशेष ध्यान देने की है कि बिल्डिंग का दक्षिण व पश्चिम भाग अन्य भागों की तुलना में कुछ ऊँचा होना चाहिए। बिल्डिंग का भारी हिस्सा प्लॉट के नैऋत्य (दक्षिण—पश्चिम) में बनाना चाहिए। इसके लिए व्यवहारिक सुझाव यह है कि बिल्डिंग के दक्षिण—पश्चिम भाग का फर्श भी भवन के अन्य हिस्सों से थोड़ा ऊँचा उठा हुआ हो। इससे यह समस्या ठीक से हल हो सकती है।

प्लॉट के ईशान कोने में निर्माण का कार्य न किया जाए, यदि अति आवश्यक हो तो इस भाग.में हल्का—फुल्का निर्माण कार्य करना चाहिए। ईशान कोने को यत्नपूर्वक पवित्र रखना चाहिए। भवन का प्रथम तल (First Floor) दक्षिण या पश्चिम में बनाना चाहिए ताकि उत्तर—पूर्व भाग खुला रहे।

उत्तर—पूर्व भाग में छज्जा (Terrace) बनाना अच्छा रहता है। भवन के पूर्व, उत्तर—पूर्व तथा उत्तर में अपेक्षाकृत अधिक द्वार एवं खिड़कियों होनी चाहिए। भवन के प्रथम तल की ऊँचाई भूतल वाले कमरों के समान या उनसे थोड़ी सी कम होनी चाहिएं। छत्तों की ऊँचाई कम से कम 9 फीट होनी चाहिए।

छत की ढलान पूर्व, उत्तर—पूर्व दिशा में होनी चाहिए। कमरों में फर्श की ढलान भी इन्हीं दिशाओं में होनी चाहिए।

भवन में बाल्कोनी पूर्व या उत्तर दिशा में ही होनी चाहिएं। बाल्कोनी के कोने वृताकार (गोल) या कटे हुए नहीं होने चाहिए। विशेषतः यह ध्यान दें कि बाल्कोनी का उत्तर—पूर्वी कोना कटे नहीं। दक्षिण या दक्षिण—पश्चिम में बाल्कोनी नहीं बनानी चाहिए।

भारत भूमि का वास्तु अध्ययन –

वास्तु के पूर्व वर्णित सिद्धान्तों के आधार पर यदि हम अध्ययन करें तो पाते हैं कि हमारा देश भारत भी एक प्रकार से वास्तु दोष का शिकार हो रहा है। वास्तु शास्त्र की मान्यता है कि भूमि (प्लॉट, क्षेत्र) का दक्षिण—पश्चिम भाग अपेक्षाकृत ऊँचा होना चाहिए और दक्षिण में जल नहीं होना चाहिए। भारत के दक्षिण—पश्चिम क्षेत्र अपेक्षाकृत नीचा है और इसके दक्षिण में जल के अथाह भण्डार के रूप में हिन्द महासागर विद्यमान है।

दक्षिण—पश्चिम अग्नि देवता का स्थान है, लेकिन भारत के दक्षिण पश्चिम में भी अरब सागर के रूप में जल—भण्डार विद्यमान है।

उत्तर—पूर्व (ईशान) दिशा खुली एवं विस्तृत होनी चाहिए, यह भूमि अपेक्षाकृत नीची हो तथा इस ओर अधिक भार नहीं होना चाहिए। उत्तर—पूर्व में भूमि का भारी होना घर में धन के प्रवाह को रोकता है। हम जानते हैं कि भारत के उत्तर एवं उत्तर—पूर्व में हिमालय पर्वत तथा तिब्बत का पठार है। इस प्रकार भारत भूमि की शुभ दिशाएं अर्थात् उत्तर तथा उत्तर—पूर्व भारी भरकम हिमालय से अवरुद्ध हो रही हैं, शायद यही कारण है कि प्राकृतिक संसाधनों का अतुल भण्डार होते हुए भी भारत एक गरीब देश है।

अतुल धन सम्पदा होते हुए भी इस देश में धन का प्रवाह नहीं है। धन तिजोरियों में बन्द पड़ा है और राष्ट्र—निर्माण के कार्यों में नहीं लग रहा। भारत की पूर्व दिशा में किसी हद तक जल (बंगाल की खाडी) की विद्यमानता होने से इसका एक शुभ प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है कि भारत अपनी संस्कृति एवं आध्यात्मिक ज्ञान के लिए विश्वभर में जाना

जाता है। हम भारतीय अपनी श्रम–शक्ति तथा बौद्धिक क्षमताओं के लिए सुविख्यात हैं। हम यह भी मानते हैं कि भारत का उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र अपेक्षाकृत समृद्ध है। भारत के उत्तर पश्चिम में स्थित पंजाब भारत का सर्वाधिक समृद्ध प्रदेश है। इसके अतिरिक्त भारत के पश्चिमी तट के साथ लगते गुजरात, महाराष्ट्र तथा केरल के प्रदेश भी अपेक्षाकृत अच्छे है। जबकि पूर्वी तट पर स्थित उड़ीसा अपनी गरीबी के कारण ही जाना जाता है।

चीन देश का वास्तु अध्ययन –

भारत की भाँति ही यदि वास्तु की दृष्टि से चीन का अध्ययन किया जाए तो हम पाते हैं कि चीन के दक्षिण में ऊँची भूमि है अर्थात् चीन के दक्षिण में तिब्बत का पठार तथा हिमालय पर्वत शृंखला विद्यमान है। इसके पूर्व में पीत सागर (Yellow sea) तथा पूर्वी चीन सागर विद्यमान है। भूमि का ढलान पूर्व की ओर है। वास्तु शास्त्र की दृष्टि से ये लक्षण बड़े शुभ है। यद्यपि चीन को स्वतन्त्र हुए भी अधिक समय नहीं बीता है, फिर भी यह देश विश्व की पाँच महाशक्तियों में से एक है। विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होते हुए भी यहां पर जनसंख्या के कारण वे समस्याएं दृष्टिगोचन नहीं होती, जो भारत में नज़र आती हैं। अपार जनसंख्या होते हुए भी इसने बड़ी तेजी से प्रगति की है। लेकिन चीन के उत्तर में भी मंगोलियन पठार (Mongolian Plateau) विद्यमान है, जो भूमि तल से काफी ऊँचा भी है और इस शुभ–दिशा में व्यवधान भी डाल रहा है। चीन देश कुछ आंतरिक समस्याओं से ग्रस्त है, जो सम्भवतः इसी का दुष्परिणाम हैं।

✠✠✠✠

34 द्वार (दरवाजे)

DOORS

यहाँ द्वार या दरवाजे से हमारा अभिप्राय उन गेट से भिन्न है, जो चारदीवारी में बनाए जाते हैं। दिशा का विचार करते हुए, हम कह सकते हैं कि यूं तो चारों मुख्य दिशाओं में बाहरी द्वार का होना शुभ ही है, फिर भी घर के प्रवेश द्वार का पूर्व या उत्तर में होना अधिक शुभ माना जाता है। सुविधा के अनुसार प्रवेश द्वार दक्षिण में नहीं होना चाहिए। पूर्व तथा उत्तर दिशा में बनाए गए प्रवेश द्वार भवन के मध्य में नहीं होने चाहिएं बल्कि इन्हें उत्तर–पूर्व की ओर होना चाहिए।

प्रवेश द्वार : ऊर्जा द्वार –

घर का मुख्य द्वार से घर में कार्य ऊर्जा एवं जीवन शक्ति का प्रवेश होता है। मुख्य प्रवेश द्वार को घर के लोग व मेहमान आदि प्रयोग करते हैं। यदि कोई द्वार, जो भले ही बाहरी दीवार में बना हो, लेकिन अगर वह प्रायः बंद रहता है या उसके आगे कोई भारी–भरकम फर्नीचर रखा होने से, वह आने जाने में रुकावट डालता हो तो इसे हम प्रवेश द्वार नहीं मान सकते।

समरांगण सूत्रधार के 53 वें अध्याय के 60-62 श्लोकों में विभिन्न दिशाओं में स्थित द्वारों के प्रभाव को इस प्रकार वर्णित किया गया है–

पूर्वद्वारं तु माहेन्द्रं प्रशस्तं सर्वकामदम्।
गृहक्षतं तु विहितं दक्षिणेन शुभावहम्।।
गन्धर्वमथवा तत्र कर्तव्यं श्रेयसे सदा ।
पश्चियेन प्रश्स्तं स्यात पुष्पदंतं जयावहम्।।
भल्लाटमुत्तरे द्वारं प्रशस्त स्याद्गृहेशितुः ।।

भावार्थ —

पूर्व दिशा में स्थित द्वार सर्व शुभदायक एवं सब कामनाओं की पूर्ति करने वाला होता है क्योंकि पूर्व दिशा के स्वामी स्वयं महेन्द्र (विष्णु) हैं, पूर्व द्वार से उनकी शक्ति घर में प्रवेश करके आशीष वर्षा करती है। दक्षिण दिशा में स्थित प्रवेश द्वार धन के नाश का कारक बन सकता है। इसलिए दक्षिणभिमुखी (दक्षिण की ओर मुख वाला) प्रवेश द्वार अशुभ माना जाता है। यदि किसी कारण से प्रवेश द्वार को दक्षिण दिशा में ही रखना अनिवार्य हो तो कुछ वास्तु उपायों के द्वारा इसके अशुभ प्रभाव को कुछ कम किया जा सकता है। पश्चिम दिशा में प्रवेशद्वार स्थित होने से पुष्पदंत (पश्चिम दिशा के स्वामी) की कृपा प्राप्त होती है, जिससे सफलता प्राप्त होती है। उत्तर दिशा का सम्बन्ध भल्लट से है, जिनकी कृपा प्राप्त होने से घर के निवासियों को चहुमुखी प्रगति सुख, समृद्धि एवं यश प्राप्त होता है।

इस श्लोक के प्रकाश में हम कह सकते हैं कि —

(i) उत्तर दिशा में उत्तर—पूर्व कोण पर स्थित मुख्य द्वार धन—लाभ देने वाला होता है। उत्तर—पूर्व में पूर्वी कोण पर स्थित द्वार ज्ञान एवं चेतना प्रदान करता है।

(ii) पश्चिम दिशा के उत्तर—पश्चिमी भाग में स्थित मुख्य द्वार सफलता प्रदान करता है, जबकि उत्तर—पश्चिम के उत्तरी भाग में स्थित द्वार अस्थिरता का कारक बनता है।

(iii) दक्षिण, दक्षिण—पश्चिम तथा दक्षिण पूर्व में मुख्य द्वार का होना शुभ नहीं माना जाता अतः जहां तक हो सके, घर का मुख्य द्वार इन दिशाओं में नहीं रखना चाहिए।

(iv) दक्षिण—पूर्व दिशा के दक्षिणी भाग में स्थित मुख्य द्वार के प्रभाव बड़े दुष्कर होते हैं। जबकि दक्षिण—पूर्व दिशा के पूर्वी भाग में मुख्य प्रवेश द्वार के स्थित होने से कुछ प्रगति की सम्भावना हो सकती है, बशर्ते एक अन्य द्वार पूर्व या उत्तर दिशा में स्थित हो।

(v) दक्षिण–पश्चिम दिशा के दक्षिणी भाग में स्थित मुख्य द्वार धन की तंगी तथा घर की महिलाओं के स्वास्थ्य के नाश का कारक बन सकता है।

(vi) दक्षिण–पश्चिम दिशा के पश्चिमी भाग में स्थित मुख्य द्वार भी धन तथा यश के नाश का कारक बन सकता है। घर के स्वामी तथा अन्य पुरुषों की प्रतिष्ठा पर आँच आने की सम्भावनाएँ हो सकती है।

दो प्रवेश द्वारों वाले भवन –

घर के दो द्वार भी हो सकते हैं, लेकिन इनकी दिशा दक्षिण या पश्चिम नहीं होनी चाहिए। यदि किसी घर के तीन दिशाओं में द्वार हो (दक्षिण को छोड़कर उत्तर, पूर्व व पश्चिम में) तो यह बड़ा शुभ लक्षण है। लेकिन अगर घर के तीन प्रवेश द्वार तो हो, लेकिन पूर्व या उत्तर में प्रवेश द्वार न हो तो यह शुभ नहीं होता। तीन प्रवेश द्वारों वाले भवन में पूर्व या उत्तर दिशा में द्वार का न होना शुभ लक्षण नहीं है।

प्रवेशद्वार व चारदीवारी –

घर के मुख्य प्रवेश द्वार तथा बाहरी चारदीवारी के गेट की दिशा एक ही होनी चाहिए। और यह ध्यान रखना चाहिए कि मुख्य प्रवेश द्वार एकदम कोने पर नहीं होना चाहिए।

प्रवेशद्वार की स्थापना –

घर बनाते समय मुख्य प्रवेश द्वार की स्थापना किसी शुभ मुहर्त में ही करनी चाहिए। घर के दरवाजों की कुल संख्या सम (2, 4, 6, 8 आदि) होनी चाहिए। लेकिन इनके योग की संख्या के अंत में शून्य नहीं होना चाहिए अर्थात्इनकी कुल संख्या 10, 20, 30 आदि नहीं होनी चाहिए।

यदि घर के सामने कोई सड़क है तो ध्यान दें कि आपके घर का मुख्य प्रवेश सड़क के मध्यवर्ती भाग (Inter section) के सामने न हो।

प्रवेशद्वार पर बाधा –

घर के प्रवेश द्वार के सामने किसी व्यवधान का होना माना जाता। ध्यान दें कि आपके घर के मुख्य द्वार के बिल्कुल कोई पेड़, खम्बा, कुँआ, जीना (सीढ़िया) पानी उठाने के लिए पम्प Pump) कोई शिला या मूर्ति आदि नहीं होनी चाहिए। यद्यपि मन्दिर पूजा स्थल शुभ स्थान माने जाते हैं, लेकिन घर के मुख्य द्वार के बिल्कुल सामने मन्दिर या पूजा स्थल का होना वास्तु की दृष्टि से शुभ नहीं माना जा सकता। घर के मुख्य द्वार के बिल्कुल सामने किसी जीर्ण–शीर्ण (टूटी–फूटी) दीवार का होना भी वास्तु की दृष्टि से एक दोष ही माना जाता है।

प्रवेशद्वार की लकड़ी –

घर के मुख्य द्वार की बनावट अच्छी होनी चाहिए इसमें अच्छी सामग्री (लकड़ी, लोहा इत्यादि) का प्रयोग होना चाहिए तथा इसकी ऊँचाई अन्य दरवाजों से कुछ अधिक होनी चाहिए। तथा इसका तल अन्य (भीतरी) दरवाजों से कुछ कम होना चाहिए। अर्थात् घर के फर्श की ढलान मुख्य द्वार की ओर होनी चाहिए। घर की सफाई (फर्शों की धुलाई) के समय इसकी काफी सुविधा रहती है।

घर के द्वार की स्थिति के साथ–साथ अन्य दरवाजों में प्रयोग की जाने वाली सामग्री पर भी ध्यान देना चाहिए। द्वार को तैयार करने के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार की लकड़ी का प्रयोग नहीं करना चाहिए। दरवाजे को तैयार करने के लिए एक जैसी लकड़ी ही प्रयोग करनी चाहिए। दरवाजे पर लगाई जाने वाली कुण्डी (Shutter) बाएं हाथ की तरफ होनी चाहिए। मुख्य द्वार पर तो कुण्डी बाएं हाथ ही रखनी चाहिए और मुख्य द्वार घर के अन्दर की ओर ही खुलना चाहिए। दरवाजों के फ्रेम (चौखाट) के चारों बाजू ही तैयार करवाने चाहिए इससे दरवाजें की मजबूती बनी रहती है। बरसात आदि के समय दरवाजों
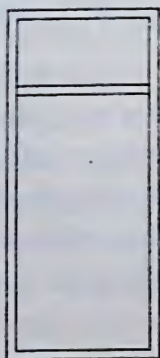
के खुलने बन्द होने की समस्या भी इससे काफी हद तक दूर हो जाती है। आजकल खर्च में कमी लाने के ख्याल से प्रायः दरवाजे की चौखट के नीचे का भाग (दहलीज) नहीं बनाया जाता। लेकिन दहलीज का अपना ही एक वास्तु महत्त्व है, यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए। दहलीज का स्थान ऐसा ही है, जैसे हमारे मुख से अधर (नीचे का होंठ)। घर में बाहरी द्वार (मुख्य प्रवेश द्वार) तथा पूजा घर के दरवाजे की दहलीज अवश्य होनी चाहिए। इससे धूल, कीड़े—मकोडों, सांप—बिच्छू आदि के घर में घुस आने की सम्भावना नही रहती। इसके अतिरिक्त दरवाजे पर दहलीज होने से कमरों को वातानुकूलित करने में भी काफी मदद मिलती है।

प्रवेशद्वार की शुद्धि –

घर की दहलीज पर समय—समय पर हल्दी, कुमकुम या चन्दन की लकडी का चूरा छिड़कना चाहिए। इससे घर में प्रवेश करने वाली वायु शुद्ध तथा सुगन्धित हो जाती है तो दूसरी और हानिकारक रोगाणु भी नष्ट हो जाते हैं। हमारे पूर्वज इसे एक शुभ शगुन मानते आए हैं। घर के मुख्य द्वार को अशोक या आम के पत्तों से सजाना चाहिए। अशोक या आम पत्र का चन्दनवार बांधने से घर की हवा शुद्ध होती है, जो स्वास्थ्य एवं समृद्धि में सहायक होती है।

घर की चौखाट –

घर की चौखट के पांच से अधिक भाग (भुजाएं) नहीं होने चाहिएं। चार भाग (भुजाएं) दरवाजे के लिए तथा एक रोशनदान के लिए रखनी चाहिएं। यद्यपि 'विश्वकर्मा प्रकाश' एवं 'बृहत संहिता' के अनुसार घर के मुख्य द्वार की ऊँचाई इसकी चौड़ाई से तीन गुणा होनी चाहिए, फिर भी इस विषय में सर्व—स्वीकृत सिद्धान्त यह है कि द्वार की ऊँचाई इसकी चौड़ाई से दो गुणा होनी चाहिए।

अन्य द्वारों की दिशा –

हमारा यह प्रयत्न होना चाहिए कि घर के अधिकतर द्वार व खिड़कियां पूर्व एवं उत्तर की ओर खुलें। यह भी प्रयत्न करना चाहिए कि अधिकतर कमरों के द्वार उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व में हों। दरवाजों की चौखटों की ऊँचाई समरूप होनी चाहिए। दरवाजों की चौखटें लगाते समय यह सावधानी बरतें कि ये बिल्कुल सीधी हों तथा किसी भी ओर झुके नहीं इससे दरवाजों की उमर कम हो जाती है।

कुछ सावधानियां –

घर के दरवाजों के प्रति लापरवाही मत बरतें। दरवाजे अच्छे बने हों, इतना ही जरूरी नहीं है, यह भी जरूरी है कि वे ठीक प्रकार से कार्य भी करें। यदि घर का द्वार अपने आप (बिना प्रयत्न के) खुल जाता है तो इसे तुरन्त ठीक करवाएं। बृहत्त संहिता के 53 वे अध्याय के श्लोक संख्या 77 के अनुसार अपने आप खुलने वाला दरवाजा घर के वासियों के मतिभ्रम (Insawe) का कारण बन सकता है। इसी प्रकार अपने–आप (बिना प्रयत्न किए या धकेलने) बन्द होने वाला द्वार भी ठीक नहीं होता। दरवाजे के खोलने व बन्द करते समय होने वाली आवाज (क्रीं, कीं) को भी तुरन्त दूर करना चाहिए। द्वार के आगे कोई भारी फर्नीचर, जैसे बैड, सोफा इत्यादि इस ढंग से न रखा जाए कि वह दरवाजे के खोलने या बन्द करने में किसी प्रकार की रुकावट बने। द्वार को कभी भी रुखा या कोरा नहीं रखना चाहिए। प्रवेश द्वार पर कोई चित्रकारी या स्वागत वाक्य के रूप में कोई कलात्मक चीज़ अवश्य लगानी चाहिए। द्वार के बिल्कुल सामने भी नंगी दीवार न हो। इस पर कोई आला हो तथा किसी देवी देवता की मूर्ति या कोई शुभ चिन्ह बनाना चाहिए। प्राचीन समय में प्रवेश द्वार के दोनों ओर आले रखे जाते थे, जिनमें रात के समय दीपक जलाया जाता था। प्रवेश द्वार पर जलता हुआ दीपक घर के बसे होने अर्थात सुख–समृद्धि का द्योतक माना जाता है। आज के समय में हम लोग प्रवेश द्वार पर बिजली या गेट के दोनों ओर प्रकाश की व्यवस्था करते हैं, वास्तु की दृष्टि से यह एक शुभ लक्षण है। इसके

अतिरिक्त घर के मुख्य द्वार पर मन को प्रसन्न करने वाली सुन्दर तस्वीर या कलाकृति लटकानी चाहिएं। (इस सम्बंध में देखे अध्याय वास्तु सज्जा)

वर्गाकार प्रवेशद्वार –

प्रवेश द्वार का आकार वर्गाकार नहीं होना चाहिए न ही कलात्मकता की दृष्टि से या फैंशन के ख्याल से प्रवेश द्वार की आकृति में कोई अजीबो–गरीब परिवर्तन लाना चाहिए। यदि प्रवेश द्वार के ऊपर की ओर आप मेहराब (arch) रखना चाहते हैं तो इसके लिए दो अलग–2 फ्रेम प्रयोग में लाएं। द्वार का आयताकार फ्रेम अलग से बनाया जाए तथा ऊपर का मेहराब अलग से बनाना चाहिए।
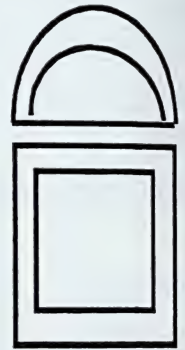
प्रवेशद्वार की शुभ स्थिति –

घर का मुख्य प्रवेश द्वार कहां हो, इसका निर्धारण करने के लिए किसी वास्तुकार की सलाह लेनी चाहिए। एक मत के अनुसार अपने प्लॉट के मानचित्र पर एक स्वास्तिक का शुभंकर (चिन्ह) इस प्रकार रखें कि वह प्लॉट को ढ़क लें। स्वास्तिक चिन्ह में जहां कहीं खुला स्थान है, प्रवेश द्वार उसी भाग में बनाना चाहिए। घर का प्रवेश द्वार सीधे–सीधे मुख्य गेट के सामने नहीं होना चाहिए। वरना जो कुछ भी घर में आएगा, वह टिकेगा नहीं उसी तरह लौट भी जाएगा। (अर्थात घर में लक्ष्मी टिकेगी नहीं) घर का मुख्य गेट न तो अधिक वडा होना चाहिए, न ही ज्यादा छोटा होना चाहिए। यह भवन के अनुपात में ही होना चाहिए।

✠✠✠✠

35 खिड़कियाँ एवं रोशनदान

WINDOWS AND VENTILATORS

दक्षिण में छोटी खिड़कियाँ –

दक्षिण दिशा में मृत्यु के देवता यम का निवास माना जाता है। इसलिए यम की दृष्टि से दूर रहने का एक उपाय यह है कि भवन की दक्षिणी दिवारों में ज्यादा बड़े द्वार, खिड़कियाँ या रोशनदान न हों या कम हों। दक्षिण या पश्चिम दिशा में खिड़कियाँ या रोशनदान जितने छोटे हो सकें उतने छोटे रखने चाहिएं। पश्चिम से आने वाली सूर्य की किरणें शरीर पर अच्छा प्रभाव नहीं डालती हैं। ताजी वायु के लिए उत्तर–पश्चिम दिशा में बड़ी खिड़कियाँ रखी जा सकती हैं। दक्षिण–पश्चिम दिशा में दीवार में खिड़कियाँ भवन की लम्बाई के आठवें भाग में नहीं होनी चाहिएं। दक्षिण की ओर रखी जाने वाली खिड़कियों के शीशे पारदर्शी नहीं होने चाहिएं।

घर के मुख्य द्वार के दोनों ओर एक–एक खिड़की का होना बड़ा शुभकारी होता है।

उत्तर व पूर्व में बड़ी खिड़कियाँ –

भवन की उत्तर व पूर्व दिशा में बड़ी व अधिक खिड़कियां होनी चाहिएं। ये खिड़कियाँ अधिक समय तक खुली रहनी चाहिएं। खिड़कियों व रोशनदान की संख्या सम अर्थात् 2, 4, 6, 8 आदि होनी चाहिए और ध्यान रखें कि इनकी संख्या शून्य पर समाप्त न हो, अर्थात् 10, 20, 30 न हो।

रोशनदान का महत्त्व –

रोशनदान एक ऐसी सुविधा है, जिसका उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। रोशनदान एक वैज्ञानिक सिद्धान्त पर कार्य करते हैं।

कमरे में हवा गर्म होकर ऊपर उठती है तो रोशनदान से बाहर निकल जाती है। इसका स्थान लेने के लिए खिड़कियों के रास्ते से ताज़ी हवा अन्दर आती है। परिणामस्वरूप हवा का आवागमन होता रहता है। यदि एअर–कंडीशन की सुविधा उपलब्ध हो तो रोशनदान बंद रखे जा सकते हैं और यदि बिजली न हो अथवा वोल्टेज की कमी हो तो रोशनदान खोले जा सकते हैं। आजकल घरों में रोशनदान नहीं रखे जाते, यह एक भूल है। भारत में प्रायः घर एअर–कंडीशंड नहीं होते और यदि बिजली न हो अथवा वोल्टेज कम हो, तो ऐसे में रोशनदान बहुत बड़ी नियामत साबित हो सकते हैं। रोशनदान हमें प्राकृतिक वातावरण देते हैं, प्रकृति के कुछ और करीब आने में मदद करते हैं। रोशनदानों के अभाव में कमरों में विद्यमान गर्म हवा कमरों से बाहर नहीं निकल पाती। हमें चाहिए कि हम प्रकृति के सम्पर्क में रहें और प्राकृतिक शक्तियों का अधिक से अधिक लाभ उठाते हुए अपने जीवन में स्वास्थ्य एवं समृद्धि प्राप्त करें।

यदि घरों में रोशनदान व खिड़कियां उपयुक्त मात्र में व उपयुक्त स्थान पर बनाई जाएं तो इससे घर के भीतर का वातावरण सुखकारक बना रहता है। यदि किसी कारणवश बिजली चली भी जाए तो पंखे, कूलर, एअर–कंडीशनर आदि के काम न करने पर भी हम उतनी बेचैनी का अनुभव नहीं करते। हम देखते हैं कि पुरानी हवेलियां, जिनकी दीवारें काफी मोटी होती हैं, छतें ऊँची होती हैं तथा उनमें खिड़कियाँ व रोशनदान भी पर्याप्त मात्र में होते हैं, उनमें बिजली के चले जाने पर घुटन या गर्मी अनुभव नहीं होती। ये भवन इस प्रकार डिज़ाइन किए गए होते हैं कि वे प्राकृतिक रूप से ही वातानुकूलित

(Air Conditioned) होते हैं। जो हमारे पूर्वजों के वास्तु ज्ञान का जीवंत प्रमाण हैं।

भवन निर्माण की योजना –

घर के निर्माण से पूर्व इसकी सारी वास्तु योजना बना लेनी चाहिएं। घर के एक–एक दरवाजे व खिड़की का अपना महत्व है कि वह कितना ऊँचा हो, किस ओर खुले अतः जहां हम आर्किटैक्ट से घर का नक्शा तैयार करवाएं वहीं वास्तु–विशेषज्ञ की सलाह भी अवश्य लें। इसे बेकार का खर्च मानकर टालें नहीं। घर जैसी चीज बार–बार नहीं बनती है। घर में किसी प्रकार का वास्तु दोष रह जाने से आपका लगाया हुआ धन निरर्थक हो सकता है। आप अपने घर को वास्तु द्वारा सौभाग्यशाली घर बनाने का प्रयास कर सकते हैं।

चारदीवारी
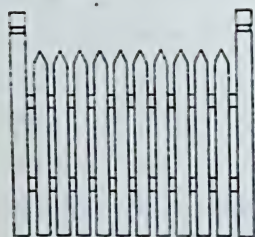
COMPOUND WALL

चारदीवारी का महत्त्व –

घर के चारों ओर बाढ या चारदीवारी (Compound wall) केवल सजावट के उद्देश्य से नहीं बनाई जाती, अपितु इसका अपना ही महत्त्व है। यह हमें पड़ोसियों की ताक–झांक से दूर रखती है। राह चलते मनचलों की शरारतों से भी सुरक्षित रख कर घर के रहने वालो को एकान्त (Privacy) एवं मानसिक शान्ति प्रदान करती है। चारदीवारी घर के चारों ओर हो तो यह बड़ी शुभ होती है। घर के चारों ओर चारदीवारी का होना घर की सम्पन्नता का द्योतक भी है।

चारदीवारी की स्थितियाँ –

घर की चारदीवारी के सम्बंध में वास्तुशास्त्र हमें कुछ निर्देश देता है, जिनके अनुसार –

(i) उत्तर तथा पूर्व दिशा में चारदीवारी की ऊँचाई मुख्य प्रवेश द्वार से कम होनी चाहिए लेकिन यह इसकी दो–तिहाई ऊँचाई से कम भी न हो।

(ii) उत्तर तथा पूर्व की ओर दीवार की ऊँचाई पश्चिम तथा दक्षिण की ओर की दीवार की ऊँचाई से कम होनी चाहिए। यदि भवन का मेनगेट उत्तर या पूर्व दिशा में न भी हो तो भी, उत्तर तथा पूर्व की ओर की चारदीवारी में कुछ हिस्सा खाली छोड़कर वहां ग्रिल या बाड़ (Grill of Fencinng) लगानी चाहिए ताकि इस दिशा से सूर्य की शुभ ऊर्जा (Positive energy) घर के भीतर प्रवेश

पा सके। इसके लिए ऐसा करना ठीक रहेगा कि नीचे से ईटों की दीवार (चौथी) डेढ—दो फुट तथा उठा कर इस पर लोहे की जाली (ग्रिल) लगा देनी चाहिए। इस प्रकार से शुभ दिशाएं अवरुद्ध नहीं हो पाएंगी एवं इस दिशा से प्रकाश व शुभ ऊर्जा घर में प्रवाहित होती रहेगी। पश्चिम तथा दक्षिण दिशा की दीवार पूर्व एवं उत्तर की अपेक्षा मोटी होनी चाहिए। यदि चारदीवारी की ऊँचाई चारों दिशाओं में एक समान है तो पश्चिम व दक्षिण दिशाओं में चारदीवारी में कुछ परिवर्तन करके इसकी ऊँचाई को बढ़ा लेना चाहिए।

(iii) चारदीवारी के दक्षिण—पूर्व कोने को सीधा न रखकर इसे ज़रा सा घुमाव देना चाहिए पर कोना नहीं कटना चाहिए। दक्षिण पूर्व तथा दक्षिण पश्चिम दिशा में चारदीवारी का भीतरी कोण 90 अंश से कम न हो। चारदीवारी के दक्षिणी भाग में गेट पर कलात्मक मेहराब (Arch) बनाना अच्छा रहता है, जबकि उत्तर पूर्व में चारदीवारी में बनाए गए गेट पर मेहराब नहीं बनाना चाहिए और न ही इस पर कोई गावनुमा (एक ओर से अपेक्षाकृत चौड़ी) रचना बनानी चाहिए। ईशान में चारदीवारी में बना गेट सरल सपाट ही अच्छा रहता है।

(iv) दक्षिण व पश्चिम में चारदीवारी मुख्य भवन का ही भाग हो सकता है अर्थात यदि दक्षिण व पश्चिम में बाहरी दीवार न ही भी रखी जाए तो इससे कोई अन्तर नहीं आता। हाँ, पूर्व व उत्तर में खुला स्थान अवश्य रहना चाहिए ताकि सूर्य की शुभ शक्तियाँ (Postive Powers) घर पर अपना शुभ प्रभाव डाल सकें। पूर्व व उत्तर दिशा के अवरुद्ध हो जाने से घर के निवासी सूर्य के शुभ प्रभाव से वंचित रहते हैं। यदि उत्तर दिशा में खुला स्थान (Open Compound) रख पाना सम्भव न हो तो, इन दिशाओं में खुली बड़ी खिड़कियां बनानी चाहिएं ताकि सूर्य का प्रकाश और ताजी हवा घर के भीतर आ सकें।

चारदीवारी का निर्माण –

प्लॉट की चारदीवारी पर कार्य शुरू करने से पहले प्लाट की सीमा को ठीक से वास्तु अनुसार चिन्हित कर लेना चाहिए। यदि प्लाट का कोई भाग दक्षिण–पूर्व या दक्षिण पश्चिम में बाहर की ओर निकला हुआ या इन दिशाओं में बढ़ा हुआ हो तो उसको वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुरूप समायोजित कर लेना चाहिए। इस सम्बंध में आप सम्बंधित अध्याय की सहायता ले सकते हैं। चारदीवारी के लिए नींव के खोदने का कार्य उत्तर–पूर्व दिशा से आरम्भ करना चाहिए तथा दक्षिण–पश्चिम की ओर बढ़ना चाहिए तथा इसके निर्माण के समय दक्षिण–पश्चिम से आरम्भ करके उत्तर–पूर्व की ओर बढ़ना चाहिए।

गैरज या आऊट–हाउस बनाने के लिए चारदीवारी के उत्तर–पूर्वी दक्षिण–पूर्वी या उत्तर–पश्चिमी भाग को नहीं घेरना चाहिए। यदि आवश्यकता हो तो इसके लिए (विशेषतः स्टोर के लिए) दक्षिण–पश्चिमी भाग को प्रयोग में लाया जा सकता है। घर के सेवक या चौकीदार के लिए रहने का स्थान (Servant quarter) दक्षिण–पूर्व भाग में बनाना चाहिए, लेकिन इसके लिए बाहरी चारदीवारी का सहारा नहीं लेना चाहिए बल्कि चारदीवारी से थोड़ा हटकर ही बनाना चाहिए। गोदाम, गैरज, पशुओं के लिए छप्पर को उत्तर–पश्चिम में बनाना चाहिए। यदि सैप्टिक टैंक बनाया जाए तो इसे चारदीवारी से हटकर ही बनाना चाहिए। सैप्टिक टैंक चारदीवारी के साथ सटा हुआ नहीं होना चाहिए।

चारदीवारी पर सजावट के ख्याल से डिज़ायन भी बनाए जाते हैं। इस विषय में वास्तु का मत है कि चारदीवारी पर काटती हुई रेखाएं यानि क्रास (X) नहीं बनानी चाहिएं। बाहरी दीवार पर झुका हुआ स्वास्तिक चिह्न भी नहीं बनाना चाहिए।

बाहरी (कम्पाउंड) गेट –

चारदीवारी की भांति ही कम्पाउंड गेट भी भवन की एक आवश्यकता है। कम्पाउंड गेट की स्थिति प्लाट की दिशा के अनुसार ही रखी जाती है। वास्तु के अनुसार उत्तर में स्थित गेट प्रसिद्धि का दायक होता है तथा पूर्व की ओर स्थित द्वार समृद्धि का दायक होता है। पश्चिम दिशा में स्थित गेट का प्रभाव मिला–जुला रहता है, जबकि दक्षिण, दक्षिण–पश्चिम, दक्षिण–पूर्व में स्थित गेट अनिष्ट प्रभाव देता हुआ मुश्किलों को निमन्त्रित करता है। अच्छा यही रहता है कि चारदीवारी में दो गेट हों।

जिस प्लाट का मुख (सामने का भाग) उत्तर दिशा में हो, उसमें गेट उत्तर की ओर ही उत्तर–पूर्व भाग में लगाना चाहिए, जिसका बड़ा शुभ प्रभाव यह होता है कि घर में सुख–शान्ति, समृद्धि एवं प्रतिष्ठा का आगमन होता है। पश्चिम की ओर मुख वाले प्लाट का गेट पश्चिम में उत्तर–पश्चिमी भाग में लगाना चाहिए। यदि प्लॉट का मुख दक्षिण में हो तथा इसका गेट दक्षिण–पूर्व में ही लगाना उचित रहता है। मेन गेट दीवार के स्तम्भों के भीतर की ओर लगाना ही ठीक रहता है। मेन गेट दीवार के बिल्कुल सामने की ओर ट्यूबवैल, कुआँ, टैंक या बोरिंग पम्प नहीं होना चाहिए।

✠✠✠✠

37 छत

ROOF

'वास्तु' का उद्देश्य मानव के जीवन को सुखी तथा उसके घर को सुख–समृद्धि का दायक बनाना है। वास्तु में आवास के सभी अंगों पर विस्तृत विवेचन मिलता है। पिछले अध्यायों में हम घर (मकान) के विभिन्न अंगों पर चर्चा करते आए हैं। छत भी घर का एक अंग है और वास्तव में तो घर नाम ही 'सिर पर छत' का है। इस अध्याय में वास्तु की दृष्टि से छत की स्थिति पर विचार करेंगे।

छत की सही ऊँचाई –

सबसे पहले हम छत की ऊँचाई की बातें करें। मनुष्य को जीवित रहने के लिए सबसे आवश्यक तत्त्व है – प्राणवायु; अतः यह जरूरी है कि हमारे घर में अधिक से अधिक ताज़ी हवा उपलब्ध रहे इसके लिए हमें घर की छत ऊँची रखनी चाहिए ताकि उसमें रहने वाले प्राणियों को उठते बैठते, जागते–सोते व अपने कार्यो को अन्जाम देते समय पर्याप्त वायु मिल सके। अतः किसी भी दशा में घर की छत नौ फुट से कम नहीं होनी चाहिए।

ऊपरी मंजिलों की छत की ऊँचाई –

यदि घर एक मंजिला ही है और उसकी छत 10 फुट की ऊँचाई पर है तो यह एक शुभ लक्षण है। और यदि घर बहुमंजिली है तो ध्यान दें कि ऊपरी मंजिलों की छतें सबसे नीचे वाली मंजिल (Ground Floor) की ऊँचाई से अधिक ऊँची न रखी जाए बल्कि ऊपर

की मंजिलों की छत नीचे की अपेक्षा कुछ कम ऊँचाई पर ही रखे। यदि भूतल की ऊँचाई 10 फुट है तो बेहतर है ऊपर के तल 9½ या 9 फुट ही ऊँचे हों। यदि घर में तहखाना बनाया जाए तो इसकी ऊँचाई भूतल वाले कमरे के बराबर ही रखनी चाहिए।

छत की वास्तु ढलान –

छत की ढलान उत्तर या पूर्व की ओर होनी चाहिए इसके लिए यह ठीक रहता है कि उत्तर, उत्तर–पूर्व व पूर्व की ओर छत की ऊँचाई कुछ कम रखी जाए भाव यह है कि छत का दक्षिणी व पश्चिमी भाग अपेक्षाकृत ऊँचा होना चाहिए। छत के झुकाव को दक्षिण या पश्चिम की ओर नहीं रखना चाहिए इसका कुप्रभाव घर के निवासियों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। घर की छत की ढलान पूर्व या उत्तर में ही होनी रखना चाहिए।

✠✠✠✠

38 भवन
BUILDING

आइए अब घर बनाते समय भवन के निर्माण व इसकी दिशा सामग्री के सम्बंध में जानकारी प्राप्त करें।

हमारी पृथ्वी सूर्य का सबसे जीवंत ग्रह है। इसका अपना एक चुम्बकीय क्षेत्र है। इसलिए भवन का निर्माण करते समय ध्यान रखें कि जहां तक सम्भव हो भवन का निर्माण चुम्बकीय क्षेत्र के समानान्तर ही होना चाहिए। भवन की उत्तरी दीवार ठीक उत्तर दिशा में ही होनी चाहिए। यदि आपका प्लॉट ऐसी कॉलोनी में स्थित है, जहां गलियों की स्थिति चुम्बकीय क्षेत्र के समानान्तर नहीं है तो ऐसे में किसी गली को आधार बनाकर भवन को समकोण पर रखना चाहिए। भवन के प्लॉट की दिशा व चुम्बकीय दिशा के बीच का अन्तर अधिक से अधिक 12° तक हो सकता है, इससे अधिक होना अच्छा नहीं होता।

भवन का मुख्य द्वार पूर्व या उत्तर दिशा में होना अपेक्षाकृत शुभ है। ध्यान दें कि भवन का दक्षिण—पश्चिमी कोना सही 90° का कोण बनाए और दक्षिण—पूर्व कोना 90° से थोड़ा सा अधिक होना चाहिए। इसी प्रकार उत्तरी—पश्चिमी कोनों को भी 90° के कुछ अधिक का ही कोण बनाना चाहिए।

भवन की छत की ऊँचाई कम से कम 9 फीट होनी चाहिए। कमरों का आकार आयताकार हो और यदि कमरों की लम्बाई इसकी चौड़ाई से दो गुणा से अधिक नहीं होना चाहिए।

नींव की गहराई –

भवन के लिए नींव खोदते समय यदि धरती में से ईंटें, पीतल की कोई चीज़, पीतल, तांबे के सिक्के, सोना, जस्ता, चांदी से बनी कोई चीज अथवा अन्न, गाय की सींग आदि मिले तो यह बड़ा शुभ लक्षण है। इसके अतिरिक्त यदि मेंढक, केकड़ा या मकड़ी जैसे प्राणियों के दर्शन हो तो यह भी घर की शांति व समृद्धि की दिशा में एक शुभ लक्षण है।

तीन महत्त्वपूर्ण मुहूर्त –

भवन के निर्माण में तीन स्थितियां बड़ी महत्त्वपूर्ण हैं। ये है – भवन की आधारशिला रखना, मुख्य द्वार की स्थापना तथा गृह–प्रवेश अतः ये सभी कार्य शुभ मुहूर्त में ही सम्पन्न करने चाहिएं। घर में गृह–प्रवेश के अवसर पर रंगोली बनाना, शुंभकर (स्वास्तिक, ओ३म इत्यादि) की स्थापना जैसे कार्य स्वयं गृहस्वामी को ही करने चाहिए। गृह–प्रवेश के अवसर पर घर की सफाई भी घर के सदस्यों द्वारा ही की जानी चाहिए।

निर्माण कार्य की गति –

भवन के निर्माण का कार्य जल्दबाजी में नहीं करना चाहिए। रात के समय भवन के निर्माण का कार्य नहीं करना चाहिए। जब मकान बन रहा हो तो शाम को काम बन्द करते समय ध्यान दें कि दक्षिणी भाग में काम कुछ अधिक हुआ हो। दक्षिण–पश्चिमी कोने में भवन की ऊँचाई अपेक्षाकृत कुछ अधिक ही हो। मकान के फर्शों के लिए भराई करते समय दक्षिणी भाग में मलवा कुछ अधिक ही डालना चाहिए ताकि दक्षिणी भाग की ऊँचाई और वजन अधिक रहे। वास्तु के अनुसार भवन के दक्षिण व पश्चिम में खुला स्थान नहीं छोड़ना चाहिए। यदि ऐसा करना सम्भव न हो, तो पूर्व तथा उत्तर में पश्चिम व दक्षिण की अपेक्षा अधिक खुला स्थान छोडना चाहिए। खुले स्थान के बीच 1 व 1.25 से 1.5 का अनुपात ठीक रहता है। प्लाट के दक्षिण–पश्चिम भाग में बनी ईमारत अधिक मजबूत रहती है।

ऊपरी मंजिल का सही स्थान –

यदि पहले से बनाए गए मकान में कुछ और निर्माण करना हो या एक मंजिल वाले मकान पर ऊपर एक मंजिल या मात्र एक–आध कमरा बनाना हो तो इसे दक्षिणी–पश्चिम भाग में ही बनाना चाहिए। क्योंकि वास्तु का नियम है कि भवन का दक्षिणी–पश्चिम भाग ही भारी होना चाहिए, इस दृष्टि से चौबारे या बरसाती का निर्माण दक्षिणी–पश्चिम भाग में करना चाहिए। यदि किसी भवन का पूर्वी भाग अधिक ऊँचा हो तो भवन के स्वामी को पुत्र की ओर से कष्ट हो सकता है।

कुछ अन्य बातें –

भवन की छत की ढाल उत्तर–पूर्व में ही होनी चाहिए ताकि वास्तु के सिद्धान्त के अनुसार वर्षा का जल उत्तर–पूर्व की ओर बहता हुआ घर से बाहर जाए।

घर के किसी भी ओर लगातार तीन द्वार एक सीधी रेखा में नहीं होने चाहिए। न ही किन्हीं तीन द्वारों में एक समान दूरी होनी चाहिए।

भवन के निर्माण में कीकर या किसी अन्य कांटेदार वृक्ष की लकड़ी प्रयोग में नहीं लानी चाहिए, क्योंकि इनका प्रभाव ठीक नहीं होता। नया घर बनाते समय कभी भी पुराने मकान की लकड़ी, खिड़की के फ्रेम, दरवाजे या अन्य सामग्री प्रयोग में न लाएं। यदि पुराने घर का पुर्ननिर्माण (Renovation) जा रहा हो तो ऐसे में पहले वाले मकान की सामग्री को प्रयोग में लाने में कोई हानि नहीं है। किसी गिराए गए भवन की सामग्री या कहीं से चुराई गई वस्तु (सीमेंट, सरिया) का प्रयोग भी अपने घर में न करें।

✤✤✤✤

एक अध्ययन –
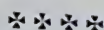
देहली का लोटस टैम्पल (बहाई मन्दिर)

दक्षिणी देहली में नेहरु प्लेस के निकट बहाई मन्दिर बनाया गया है, जो लोटस टैम्पल (Lotus Temple) के नाम से जाना जाता है। यह मन्दिर वास्तु के सिद्धान्तों के अनुसार हुआ है। 26 एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में फैले इस मन्दिर का परिसर/कमल के फूल की आकृति में बना है। मन्दिर का मुख्य भवन, जिसमें 27 पंखुडियाँ ऊपर की ओर उठी हुई हैं तथा नीचे आधार–पत्र के रूप में 9 छोटे–छोटे जलकुण्ड हैं। 9 व 27 की संख्या वास्तु की दृष्टि से अति शुभ है।

भारतीय परम्परा में कमल शुभता एवं शुद्धता का प्रतीक है। इसे देवी–देवता की पूजा में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। रामायण में रावण पर विजय के उद्देश्य से शक्ति की पूजा में श्रीराम के द्वारा कमल पुष्प के समर्पण का वर्णन मिलता है। पुराणों में गजराज द्वारा भी भगवान विष्णु को कमल समर्पण किए जाने का वर्णन है। विद्या की देवी सरस्वती तो कमल पर ही आसन लगाती हैं, जो निर्मलता अर्थात बुद्धि के निर्लेष होने का प्रतीक है।

लोटस टैम्पल का भवन इसके परिसर (प्लाट) के दक्षिण–पश्चिम में बनाया गया है। परिसर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में है। दक्षिण–पश्चिम की अपेक्षा उत्तर–पूर्व भाग में अधिक खुला स्थान छोड़ा गया है। इस मन्दिर के मुख्य भवन के द्वारों आदि की स्थिति में भी वास्तु के सिद्धान्तों का पूरा ध्यान रखा गया है। सम्भवतः यही कारण है कि यह मन्दिर अधिकाधिक दर्शकों को आकर्षित करता है। दिल्ली आने वाले पर्यटक लोटस टैम्पल अवश्य देखते हैं।

✣✣✣✣

39 ब्रह्मस्थान
BRAHAMSTHAN

ब्रह्मस्थान की स्थिति –

भवन का केन्द्रीय भाग (Cental portion) ब्रह्मस्थान कहलाता है।

ब्रह्मस्थान के अधिष्ठाता स्वयं सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी है। वास्तु में ब्रह्मस्थान का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। ब्रह्मस्थान का वही महत्त्व है जो शरीर में फेफड़ों का है। घर के केन्द्रीय स्थल को घर के फेफड़े ही कहा जाना चाहिए, अतः यह जरूरी हो जाता है कि स्थान खुला रहना चाहिए और इसमें ऊपर खुला आकाश हो। यदि भवन के केन्द्र में खुला स्थान छोड़ दिया जाए तो इसका प्रभाव अच्छा रहता है। इसके लिए यह उचित है कि ब्रह्मस्थान के ऊपर लोहे का जाल डाल दिया जाए और जहां तक हो इस जाल को खुला रखना चाहिएं केवल वर्षा के समय ही यदि जरूरी हो तो इसे ढकना चाहिए, ताकि ब्रह्मस्थान से घर में ताज़ी हवा और प्रकाश आता रहे।

ब्रह्मस्थान की स्वच्छता –

ब्रह्मस्थान खुला, हवादार तथा स्वच्छ होना चाहिए। घर के सदस्यों के लिए ब्रह्मस्थान एक प्रकार से संगम स्थल ही होता है, जिस प्रकार गांव में लोग चौपाल में मिल बैठते हैं, उसी प्रकार बड़े घरों में जहां संयुक्त परिवार होते हैं, ब्रह्मस्थान भीतरी आंगन की तरह प्रयोग में लाया जाता है, जहां घर के सभी सदस्य (विशेषतः स्त्रियाँ) मिल बैठते हैं।

वृहत संहिता के 52वें अध्याय के 64वें श्लोक में कहा गया है–

सुखमिच्छन ब्रह्मणं यत्नाद्रक्षेद्‌गृही गृहान्तःस्थम्।
उच्छिष्टाद्युपघाताद्‌गृहपतिरूपतप्यते तस्मिन्।।

भावार्थ

जो गृहस्वामी अपने घर में प्रसन्नता का वास चाहता है, उसे अपने घर में ब्रह्मस्थान की रक्षा बड़े प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिए। ब्रह्मस्थान पर गन्दी और मैली–कुचौली वस्तु का ढेर लगने से घर के सदस्यों को हानि ही पहुँचाती है।

वृहत संहिता के एक अन्य श्लोक (अध्याय 56 श्लोक संख्या 52) में कहा गया है –

तान्यशुचिभाण्डकीलस्तम्भाधै पीड़ितानि शल्यैश्चा ।
गृहभर्तुस्तत्तुल्ये पीडामड्गे प्रयच्छन्ति ।।

भावार्थ

यदि किसी भवन में पवित्र ब्रह्मस्थान पर किसी प्रकार की दूषित सामग्री रखी जाती है अथवा यहां पर शौचालय, सैप्टिक टैंक, गटर, स्तम्भ या सीढ़ियों आदि का निर्माण किया जाता है; व किसी प्रकार की भारी वस्तु या पत्थर की मूर्ति आदि रखी जाती है तो घर के लोगों को अपने शरीर के मध्य अंगों (पेट नाभि, लीवर आदि) में किसी प्रकार का विकार, पीड़ा या कष्ट का अनुभव रहेगा या वह किसी प्रकार की चोट का शिकार हो सकता है।

ब्रह्मस्थान तथा घर के ऊर्जा मार्ग की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए अर्थात इन्हें साफ–सुथरा पवित्र और खुला रखना चाहिए। ये मनुष्य के शरीर की नाभि के समान हैं, जो ऊर्जा प्राप्ति का केन्द्र है। इसलिए घर के ब्रह्मस्थान पर किसी प्रकार का बोझ रखकर इसे दबाना उचित नहीं है।

ब्रह्मस्थान पर किसी प्रकार का भार तो रखना ही नहीं चाहिए इसे प्रयत्नपूर्वक साफ भी रखना चाहिए। यहाँ पर रखा गया घर का कूडा–कर्कट फैकने वाला नाबदान (Dustbin) घर के सदस्यों के लिए मानसिक तनाव, का कारक हो सकता है। ब्रह्मस्थान पर किसी प्रकार गड्ढा आदि भी नहीं होना चाहिए यह घर की समृद्धि को गर्त में ले जाने का कारण बन सकता है। ब्रह्मस्थान पर कुएं का होना तो बड़ा अनिष्टकारी हो सकता है।

ब्रह्मस्थान का उचित प्रयोग –

घर के किसी भी कोने से ब्रह्मस्थान तक पहुँचना बड़ा सुगम होना चाहिए। ब्रह्मस्थान के चारों ओर ही घर के सदस्यों के लिए विभिन्न कमरे फैले होने चाहिएं। यदि ब्रह्मस्थान पर घर का ड्राईंग रूम बनाया जाए तो यह काफी अच्छा रहता है। घर के ब्रह्मस्थान के निकट खाने की मेज भी लगाई जा सकती है, जहां बैठकर घर के सदस्य परस्पर बातचीत, विचार–विमर्श व मन–बहलाव कर सकते हैं। ब्रह्मस्थान पर सोना उचित नहीं, जहां तक हो सके, ब्रह्मस्थान पर नहीं सोना चाहिए, यह स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं रहता। ध्यान दें कि प्लॉट का केन्द्र (ब्रह्मस्थान) व घर का ब्रह्मस्थान बिल्कुल एक ही स्थान पर न हों, दोनों को थोड़ा भिन्न रखना चाहिए। 'मनसरा' के अनुसार घर के ब्रह्मस्थान पर घर के ईष्टदेव का पूजास्थल बनाने से घर में सुख व समृद्धि का वास होता है। खुले आगन में ब्रह्मस्थान पर तुलसी का पौधा लगाना भी घर के सदस्यों के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

ध्यान रखें –

घर के केन्द्रीय भाग अर्थात ब्रह्मस्थान पर किसी प्रकार की भारी भरकम रचना न की जाए। ब्रह्मस्थान से सीढ़ियां न उठाई जाएं न ही ब्रह्मस्थान पर या इसके निकट शौचालय का निर्माण किया जाए।

✠✠✠✠

खण्ड — VI

आपके घर की दिशा

40 दिशाएं
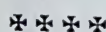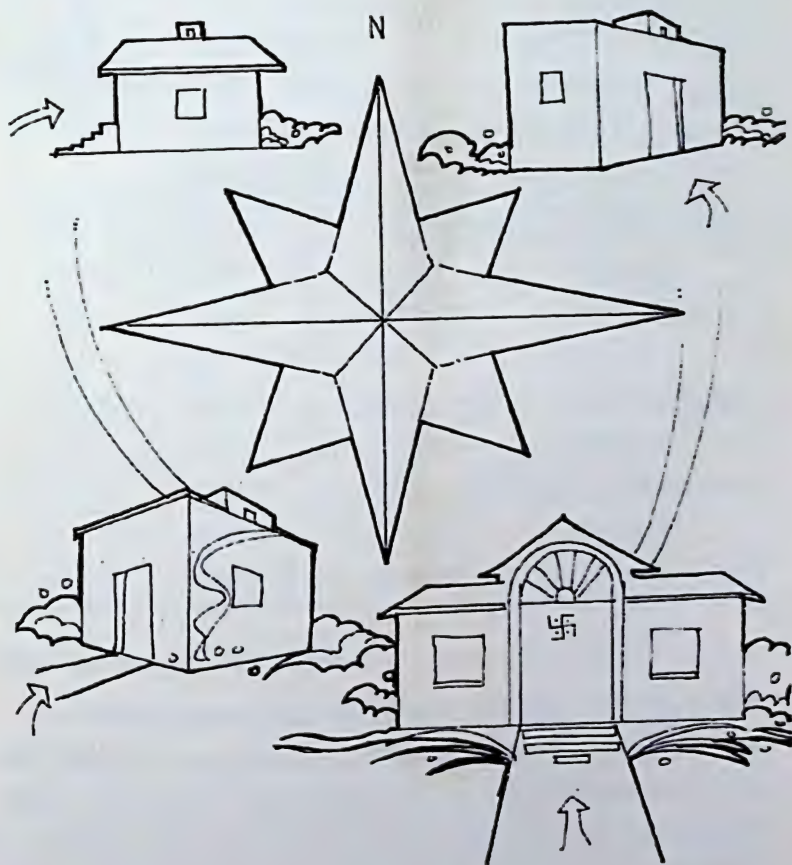
DIRECTIONS

दिशाएं व उपदिशाएं –

चार मुख्य दिशाएं हैं – पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण तथा चार ही उप–दिशाएं हैं :– दक्षिण–पूर्व, दक्षिण–पश्चिम, उत्तर–पूर्व व उत्तर–पश्चिम। 'मायामत' में दिशाओं को पीठ कहा गया है और एक भूभाग को दिशाओं के आधार पर नौ भागों में बांटा गया है।

भाग 1	वायव्य	– उत्तर पश्चिम	(North-west)
भाग 2	उत्तर	– उत्तर	(North)
भाग 3	ईशान	– उत्तर पूर्व	(North-east)
भाग 4	पूर्व	– पूर्व	(East)
भाग 5	आग्नेय	– दक्षिण–पूर्व	(South-east)
भाग 6	दक्षिण	– दक्षिण	(South)
भाग 7	नेत्रृत्य	– दक्षिण–पश्चिम	(South-west)
भाग 8	पश्चिम	– पश्चिम	(West)
भाग 9	ब्रह्मस्थान	– मध्य भाग	(Central part)

प्लॉट की दिशाओं का निर्धारण –

किसी भूभाग (प्लॉट) की दिशाओं के विषय में जानने के लिए कोई विशेष आयोजन करने की आवश्यकता नहीं है। इसके लिए एक साधारण से यन्त्र की आवश्यकता होती है, जिसे कम्पास कहा जाता है। कम्पास ऐसा यन्त्र होता है, जिस के ऊपरी सिरे पर एक चुम्बकीय सूई टिकी होती है, यह सूई स्वतन्त्रतापूर्वक चारों ओर घूम सकती है,

लेकिन घूमाने अथवा हिलाने–डुलाने के बाद ठहरने पर इसका लाल रंग वाला सिरा हमेशा उत्तर की ओर ही रहता है। कम्पास की सहायता से प्लॉट की दिशाएं ज्ञात करने की दो विधियाँ हैं –

(क) एक सफेद कागज लें, जिस पर एक दूसरे को 90° के कोण पर काटती हुई दो रेखाएं इस प्रकार खींचे कि वे कागज को चार बराबर भागों में बांट दें। और इस पर ऊपर नीचे को खींची रेखा पर उत्तर व दक्षिण अंकित करें। अब कागज को प्लॉट के बीचों–बीच रखें व इस पर कम्पास रखें। कम्पास की सूई उत्तर की ओर संकेत करेगी। जिस कागज पर कम्पास रखा है, उसके उत्तर अंकित सिरे को कम्पास की सूई को सीध में लाएं। यह आपके प्लॉट की उत्तर दिशा को इंगित करती है। इस रेखा की सीध में आगे निशान लगाएं इस प्रकार आपके प्लॉट का उत्तर कोना निश्चित जाएगा। दूसरी और बढने पर दक्षिणी व ठीक 90° के अंश पर दाईं ओर पूर्व व बाईं और पश्चिम इंगित होगा।

(ख) कम्पास की सहायता से दिशाएं ज्ञात करने की दूसरी विधि भी अति सरल है। कागज पर रेखाएं खींचने की अपेक्षा कम्पास को प्लॉट के बीचों–बीच रखें। कम्पास की सूई की दिशा (उत्तर) की इसकी सीध में एक डोरी तानें इस डोरी को प्लॉट की सीमा तक ले जाएं, जहां डोरी प्लॉट की सीमा को छूएं, वही निशान लगाएं, यह आपके प्लॉट का उत्तर है। इसी प्रकार दूसरी दिशा में बढ़ें वहां आपके प्लॉट का दक्षिण होगा। पूर्व व पश्चिम को निश्चित करने के लिए, प्लॉट के बीचों–बीच 90° के कोण से सीधी डोरी खीचें दाई और पूर्व व बाई ओर पश्चिम होगा।

प्लॉट पर निर्माण कार्य शुरु करने से पहले दिशाओं का ठीक निर्धारण कर लेना काफी लाभदायक रहता है। दिशाओं को निश्चित कर लेने पर जहां तक हो सके वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार ही निर्माण कार्य करवाएं।

दिशाओं का प्रभाव –

दिशाओं के विषय में एक बात और जान लेनी चाहिएं कि सभी व्यक्तियों के लिए दिशाओं का प्रभाव एक समान नहीं होता। किसी व्यक्ति के लिए कोई दिशा शुभ फलदायक हो सकती है तो किसी अन्य के लिए वही कम प्रभावकारी भी हो सकती है। ग्रह संख्या में नौ हैं, किसी को कोई ग्रह शुभ प्रभाव देता है तो किसी को नहीं देता। यहां हमें ज्योतिष का सहारा ले सकते हैं। आपकी कुण्डली में जो ग्रह शुभ फलदायक है, उसकी दिशा को जानें तथा उसका ध्यान रखते हुए प्लॉट पर निर्माण का कार्य करवाएं। यदि वास्तु एवं ज्योतिष के मिश्रित ज्ञान का प्रयोग किया जाए तो इससे शुभ फल सामने आते है।

आगे के अध्यायों में हम विभिन्न दिशाओं के विषय में विस्तार से चर्चा करेंगे।

✣✣✣✣

41 पूर्व मुखी भवन
EAST FACING HOUSE

पूर्व दिशा पूर्वजों की दिशा मानी जाती है, इसलिए इसे पितृस्थान भी कहा जाता है।

पूर्व दिशा के स्वामी इन्द्र हैं, जो धन एवं समृद्धि के दाता है। पूर्व दिशा में इन देवताओं में वास है — *ईश, प्रज्ञ, जयन्त, इन्द्र, सूर्य, सत्य, वृहस, आकाश एवं अग्नि।*

पूर्व का विशेष महत्त्व —

दिशाओं में पूर्व का विशेष महत्त्व है, क्योंकि जीवन के स्रोत सूर्य का स्थान भी पूर्व ही में है। पूर्व का महत्त्व इसलिए भी हैं क्योंकि इसका सम्बंध संतान अर्थात वशंजों से है। यह माना जाता है कि जिस घर का मुख पूर्व की ओर हो, उसमें जन्म लेने वाला पुत्र अपने माता–पिता का अच्छा सहायक होता है, अर्थात उनकी सेवा करता है। दूसरे शब्दों में पूर्व दिशा पुत्र–सुख को देने वाली भी है।

पूर्व दिशा नए–नए विचारों की दात्री भी मानी जाती है, इसलिए छात्रों व बुद्धिजीवियों को पूर्व की ओर मुख करके विधाध्ययन की सलाह दी जाती है।

पूर्वाभिमुखी मकान का सुख —

पूर्व दिशा की ओर मुख वाला मकान, मकानों का राजा माना जाता है क्योंकि इसमें निवास का सुख ही कुछ और है। ऐसे घर में धन व संतान दोनों का सुख प्राप्त होता है।

पूर्व में खुला स्थान छोड़ें –

घर के पूर्व व उत्तर में हमेशा खुला स्थान छोड़ें। यदि घर के दक्षिण व पश्चिम में भी खुला स्थान छोड़ा गया हो तो पूर्व व उत्तर का खुला स्थान इनसे कुछ अधिक (कम से कम 1¼ गुणा) होना चाहिए। उत्तर व पूर्व की ओर घर की चारदीवारी व घर के बीच थोड़ा स्थान अवश्य छोडा जाना चाहिए। इन दिशाओं में चार दीवारी को दीवार में समाहित नहीं करना चाहिए।

घर के पूर्व में खुले स्थान पर कूडा–कबाड़ा (Junk) कभी न डालें। घर के पूर्व व उत्तर दिशाओं में ज्यादा ऊँचाई वाले छायादार वृक्ष न लगाएं। कम से कम ऐसे पेड़ न लगाएं जिनकी छाया से घर की दीवारें ढक जाती हों। इन दिशाओं में लगाए पेड़ों की ऊँचाई से कम ही होनी चाहिए।

पूर्व में बना मुख्य द्वार –

पूर्व दिशा में यदि मुख्य द्वार हो तो इसे घर के बीचों–बीच न बनवाएं। इसे उत्तर पूर्व की ओर बढ़ा दें। प्रवेश द्वार को दक्षिण–पूर्व में भी नहीं बनवाना चाहिए। पूर्व की ओर मुख वाले घर के सामने की ओर तीन द्वार नहीं होने चाहिएं। पूर्व की ओर बने दरवाजे व खिड़कियों के ऊपर मेहराब (Arch) नहीं बनवाने चाहिएं। घर की अधिकतर खिड़कियाँ व दरवाजे पूर्व या उत्तर की ओर ही खुलने चाहिएं।

पूर्व व उत्तर दिशा में चारदीवारी पर गमले नहीं रखने चाहिएं ताकि इस दिशा से आने वाली सूर्य–रश्मियों के मार्ग में बाधा न पड़े और वे अपने पवित्र रूप मे बिना किसी बाह्य सम्पर्क के घर में प्रवेश कर सकें।

पूर्व व उत्तर दिशा में चारदीवारी की ऊँचाई पश्चिम व दक्षिण की अपेक्षा कुछ कम होनी चाहिए। पूर्व दिशा में चारदीवारी की ऊँचाई मेन गेट से ज्यादा कदापि न हो।

पूर्व की ओर घर की ढाल –

घर की पूर्व व उत्तर में ढाल होने से यह लाभ होता है कि उगते

हुए सूर्य की जीवनदायिनी किरणें और शुभ ऊर्जा अधिक से अधिक मात्रा में घर में प्रवेश कर सकती हैं। यदि किसी प्लॉट की ढाल पूर्व दिशा में है तो यह बड़ा शुभ होता है। ऐसे घर में रहने वालों का अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होता है। अच्छे स्वास्थ्य के साथ–साथ धन–लाभ व समृद्धि भी प्राप्त होती है। घर बनवाते समय प्लॉट को पूर्व व उत्तर दिशा में कुछ नीचा ही रखना चाहिए। उत्तर–पूर्व का कोना विशेषत: नीचा होना चाहिए व पश्चिम और दक्षिण में कुछ ऊँचा रखना चाहिए। घर का सबसे ऊँचा कोना दक्षिण–पश्चिम का होना चाहिए। यदि भवन पूर्व की ओर कुछ ऊँचा हो तो इससे गृह–स्वामी के पुत्र को कष्ट हो सकता है। यदि प्लॉट ऊँचा–नीचा या टेढा–मेढा है और पूर्व का कोना ज्यादा ऊँचा है तो इससे घर के बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर बुरा असर प्रभाव पड़ सकता है। बच्चे भुलक्कड़ प्रवृति के बन सकते हैं, उनका कद छोटा रह सकता है या ऐसा ही कोई अन्य दोष उत्पन्न हो सकता है। इसलिए फर्श के तल पर ध्यान देना जरूरी है।

घर का जल जिस छिद्र से होकर घर के बाहर जाए, यदि वह उत्तर पूर्व दिशा में हो तो इसका बड़ा शुभ प्रभाव रहता है। यदि प्लॉट के उत्तर, पूर्व अथवा उत्तर–पूर्व में कोई नदी, नहर, ड्रेन, झील, जलाशय, टयूबवैल कूआँ या भूमिगत कुआँ (Sump) हो तो इससे गृह स्वामी को सौभाग्य, समृद्धि व सम्मान की प्राप्ति होती है। घर में यदि सैप्टिक टैंक बनवाया जाए तो, यह उत्तर–पश्चिम या प्लॉट के उत्तर या पूर्वी भाग के मध्य में बनवाना चाहिए। किसी भी हालत में सैप्टिक उत्तर–पूर्व (ईशान) में नहीं होना चाहिए।

पूर्व में निर्माण –

घर का मुख्य द्वार पूर्व में होना चाहिए। छत या पूर्वी भाग खुला छोड़ना चाहिए और इस पर किसी प्रकार का निर्माण करके कोई बाधा नहीं बनानी चाहिए। पूर्वी भाग में यदि बरामदा बनवाया जाए तो इसकी ऊँचाई मुख्य छत से कुछ नीची होनी चाहिए। इसके लिए Lintle या Sunshade level बहुत उचित रहता है।

पूर्व दिशा में स्नानघर का होना तो अच्छा रहता है, मगर इस दिशा में शौचालय का निर्माण नहीं करना चाहिए। घर में वाश बेसिन भी पूर्व या उत्तर दिशा में लगाना चाहिए और यदि इसका जल उत्तर—पूर्व की ओर से बहकर बाहर जाए तो यह और भी अच्छा रहता है।

घर के साथ लगती हुई यदि कोई कोठरी, गैरज या नौकर के रहने का स्थान बनाना हो तो इसे उत्तर या पूर्व दिशा में न बनाएं। पशुओं को रखने के लिए यदि जगह बनानी हो तो इसके लिए पूर्व दिशा उचित है पशुओं को बाँधने रखने का स्थान पूर्व में घर की दीवार से हटकर लेकिन चारदीवारी के भीतर पूर्व दिशा में ही बनाना चाहिए। गाड़ी की पार्किंग के लिए भी पूर्व व उत्तर दिशाएं ही उचित हैं।

जिन जातकों की राशी कर्क (Cancer) वृश्चिक (Scorpio) तथा मीन (Pisces) है, उनके लिए पूर्व दिशा बड़ी शुभ है।

पूर्व मुखी भवन निवास के लिए सर्वोत्तम है।

✠✠✠✠

42 उत्तर मुखी भवन

NORTH FACING HOUSE

उत्तर दिशा चुम्बकीय शक्ति का महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है, अतः वास्तुशास्त्र में उत्तर दिशा का कई दृष्टियों से महत्त्व है।

उत्तर का महत्त्व –

उत्तर दिशा के अधिष्ठाता देव कुबेर हैं, जिन्हें धन के स्वामी अथवा देवताओं का कोषपाल भी कहा जाता है। उत्तर दिशा में जिन देवी–देवताओं का वास है, वे हैं – *दिति, अदिति, मृग, सोम, भल्लट, मुख्य तथा नाग।* उत्तर दिशा को मातृस्थान अर्थात माता का स्थान कहा जाता है। जिस प्रकार पूर्व दिशा पितृ–पक्ष है, उसी प्रकार उत्तर मातृ–पक्ष है। उत्तर दिशा का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि इसका सम्बंध स्त्री पक्ष से है। जिस घर का मुख उत्तर की ओर होगा, उस घर में बेटियां व बहुएं बहुत सुख पाती हैं। उनकी सुखानुभूति के परिणामस्वरूप घर में शांति तथा समृद्धि का वास होता है। घर को प्रतिष्ठा प्राप्त होती हैं।

उत्तराभिमुखी मकान का सुख –

उत्तर की ओर मुख वाला घर बड़ा सौभाग्यशाली होता है। ऐसा घर शिक्षाविदों कलाकारों तथा बौद्धिक कार्य करने वालों के लिए बड़ा शुभ होता है। ऐसे घर में रहने वाले व्यक्ति उदारचित्त होते हैं, वे अपनी प्रसिद्धि की इच्छा न रखते हुए दूसरों की मदद करने व शुभ कार्यों में भागी होने के इच्छुक होते हैं। ऐसे लोग समाज में प्रतिष्ठा पाते हैं व उन्हें अच्छे कार्यों के लिए प्रसिद्धी भी मिलती है। यदि घर का द्वार बिल्कुल उत्तर दिशा में हो तो गृह–स्वामी को ऐसे पुत्र की प्राप्ति होती है, जो आगे चलकर उसके नाम को रोशन करता है। यदि घर के उत्तर में सड़क हो तो यह भी वास्तु की दृष्टि से एक अच्छा लक्षण है।

उत्तर की ओर मुख्य द्वार –

घर का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में रखना चाहिए, लेकिन इसे मकान के बीचों–बीच न बनवाकर थोड़ा उत्तर–पूर्व की ओर करना चाहिए।

यदि आपका प्लॉट उत्तर–मुखी है तो ध्यान दें कि सामने की ओर यानि उत्तर दिशा में चारदीवारी इतनी ऊँची न बनाएं कि वह घर के प्रवेश द्वार को नजर से ओझल कर दे। इस दिशा में स्थित गेट के ऊपर मेहराब (Arches) आदि नहीं बनाने चाहिएं। पूर्व तथा उत्तर दिशा में अपेक्षाकृत कुछ ज्यादा खुला स्थान छोड़ना चाहिए। उत्तर दिशा में यदि बरामदा बनवाया जाए तो यह छत की ऊँचाई से कुछ नीचे बनवाना चाहिए।

उत्तर में धन का प्रवाह –

उत्तर दिशा कुबेर की दिशा है, इसलिए घर में धन को उत्तर दिशा में रखना चाहिए। घर की जिस अल्मारी/सेफ में नकदी, आभूषण, कीमती वस्तुएं रखी जाएं उसे उत्तर दिशा में खुलना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि उत्तर दिशा में रखने से धन की वृद्धि होती है।

घर में बाहर की तरफ कोई कोठरी (outhouse) या नौकरों के रहने के लिए जगह (Servent Quarter) आदि बनाए जाएं, वह उत्तर या पूर्व में न बनाकर घर किसी अन्य दिशा में बनवाने चाहिएं। घर के उत्तर में छोड़ी गई खाली जगह पर ज्यादा ऊंचे वृक्ष नहीं बनवाने चाहिएं।

उत्तर में जल का प्रवाह –

जैसा हम पहले ही बना चुके हैं उत्तर व उत्तर दिशा में जल का प्रवाह होना एक शुभ लक्षण है, इस सृष्टि से घर में प्रयोग होने वाले ये वर्षा के जल की निकासी उत्तर या उत्तर–पूर्व में होनी चाहिए। इसलिए घर के फर्श व छत की ढलान उत्तर या उत्तर–पूर्व की ओर से रखनी चाहिए।

उत्तर दिशा वाश–बेसिन लगाने के लिए उचित है। घर के भीतर सोफा सैट इत्यादि को इस प्रकार रखें कि इनका मुख उत्तर की ओर हो।

जिन जातकों की राशी मेष (Aries) सिंह (Leo) अथवा धनु (Sagittarius) है, उनके लिए उत्तर दिशा विशेष फलदायी है।

उत्तर मुखी भवन निवास के लिए उत्तम होते हैं।

✠✠✠✠

43

पश्चिम मुखी भवन

WEST FACING HOUSE

पश्चिम का महत्त्व –

पश्चिम दिशा के अधिष्ठाता देव वरुण हैं, जिन्हें हम जल का स्वामी मानते हैं। पश्चिम दिशा में जिन नौ देवताओं का वास है वे हैं – वायु, रोग, शेष, असुर, वरुण, पुष्पदंत, सुग्रीव, द्वारिका व पितृ। सूर्य पश्चिम में अस्त होता है। पश्चिम का महत्त्व इस रूप में है कि यह प्रतिष्ठा, प्रगति व प्रसिद्धि का दायक है।

पश्चिमाभिमुखी मकान –

जिस घर का मुख पश्चिम की ओर हो, ऐसा घर पारिवारिक सुख की दृष्टि से अच्छा होता है, लेकिन इस घर के सदस्य एक तनाव–सा अनुभव करते रहते हैं और प्रायः इस तनाव के कारण उनकी समझ में नहीं आते हैं। वे प्रायः अपने अधिकार, सम्पत्ति जमीन–जायदाद के विषय में चिन्तित रहते हैं और प्रायः छोटी–मोटी बीमारी या कष्ट से पीड़ित भी रहते हैं।

पश्चिम में भवन–निर्माण –

पश्चिम–मुखी प्लॉट पर यदि घर बनाया जाए तो सामने की ओर अर्थात पश्चिम में खाली स्थान न छोड़ा जाए। यदि यह खाली जगह छोड़नी आवश्यक हो तो जितना कम–से–कम हो सके उतना ही कम स्थान छोड़ना चाहिए। उत्तर व पूर्व में अधिक खुली जगह छोड़नी चाहिए। यदि ऐसे प्लॉट के उत्तर व दक्षिण में भी गलियाँ है तो भी प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर ही रखना चाहिए।

घर के पश्चिम में स्थित सड़क व्यापारी वर्ग के लिए विशेष शुभ फलदायक होती है।

पश्चिम में प्रवेश द्वार व निर्माण कार्य –

पश्चिम मुखी घर में प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर प्लॉट के मध्य में होना चाहिए। घर का मुख्य द्वार को दक्षिण या उत्तर की ओर मुडा हुआ नहीं रखना चाहिए।

घर के पश्चिम में खुले स्थान पर ऊँचे वृक्ष लगाना बड़ा शुभ रहता है। पश्चिम की ओर बाहरी दीवार (Compound Wall) मेन गेट भी अपेक्षा कुछ ऊँची होनी चाहिए। ऐसे गेट के ऊपर मेहराब (Arches) बनाना भी अच्छा रहता है। घर के पश्चिम में बरामदा नहीं बनवाना चाहिए। यदि ऐसा जरूरी हो तो इसकी ऊँचाई छत की ऊँचाई के बराबर ही रखनी चाहिए।

घर के फर्श की ऊँचाई पश्चिम में अधिक होनी चाहिए। पश्चिम में छोड़ी गई खुली जगह पर पक्का फर्श ही बनवाना चाहिए। घर में प्रयोग होने वाला पानी तथा छत से गिरने वाला वर्षा का जल घर के पश्चिम में नहीं बहना चाहिए। इसके लिए जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, उत्तर–पूर्व दिशा ही उचित है।

जिन जातकों की राशी मिथुन (Gemini) तुला (Libra) या कुम्भ (Aquarius) है, उनके लिए पश्चिम दिशा शुभ फलदायक है।

पश्चिम मुखी भवन निवास के लिए अच्छे होते हैं।

✤✤✤✤

दक्षिण मुखी भवन

SOUTH FACING HOUSE

दक्षिण दिशा के अधिष्ठाता देव मृत्यु के देवता यम है, जिनके एक हाथ में गदा तथा दूसरे हाथ में फांस है, उनकी आँखें लाल अंगारे बरसाती हुई–सी जान पड़ती हैं। दक्षिण दिशा में, जिन सात देवताओं का वास है, वे हैं– पषाण, वित्त, राक्षस, यम, गांधर्व, भृंगराज एवं मर्ष।

दक्षिण का महत्त्व –

दक्षिण धन, धान्य, स्थिरचित, स्वास्थ्य एवं प्रसन्नता का स्रोत हैं। दक्षिणाभिमुखी मकान प्रायः अच्छा नहीं समझा जाता, लेकिन यदि इसका निर्माण वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार ही किया जाए तो यह सुखदायक बन सकता है, लेकिन यदि वास्तु के नियमों का उल्लंघन हो, तो दक्षिणाभिमुखी घर में निवास करने पर घर की स्त्रियों पर खासकर बुरा प्रभाव पड़ सकता है।

दक्षिण में निर्माण कार्य –

दक्षिणाभिमुखी घर की दक्षिणी दीवार एकदम सीधी होनी चाहिए। जहां तक हो सके, दक्षिण की ओर खुला न छोड़ा जाए और यह छोड़ना ही हो तो, यह स्थान उत्तर की ओर छोड़े गए स्थान से कम होना चाहिए।

ऐसा प्लॉट, जिसका कोना दक्षिण–पूर्व की ओर निकला हुआ हो, इसे उपचारित करना जरूरी है। इसे ठीक करने का तरीका यह है कि भवन निर्माण के लिए प्रयोग किए जाने वाले जमीन को 90° पर सीधा करना चाहिए भले ही इसके लिए कुछ जमीन को छोड़ना पड़ें।

दक्षिण दिशा में बाल्कॉनी या बरामदा नहीं होना चाहिए। दीवार–घड़ी भी दक्षिणी दीवार में नहीं लगानी चाहिए।

दक्षिण की ओर बरामदा नहीं बनाना चाहिए और दक्षिण की ओर का हिस्सा अपेक्षाकृत कुछ ऊँचा होना चाहिए ताकि छत से पानी दक्षिण की ओर न वहे।

दक्षिण में प्रवेश द्वार –

दक्षिण की ओर बनाया जाने वाला प्रवेश द्वार ठीक दक्षिण दिशा में होना चाहिए। दक्षिणाभिमुखी घर में कहीं भी तीन दरवाजे एक सीधी रेखा में नहीं होने चाहिएं। दक्षिण की ओर वाले गेट के ऊपर मेहराब (arch) आदि बनाकर इसकी सजावट करनी चाहिए। घर में मुख्य द्वार ही सबसे बड़ा होना चाहिए, घर के बीचों–बीच होना चाहिए। यदि हो सके तो उत्तर या उत्तर–पूर्व दिशा में भी एक दरवाजा अवश्य रखना चाहिए। जैसा कि हम कह चुके हैं कि ईशान (उत्तर–पूर्व) का कोना पवित्र रखा जाना चाहिए। अतः हमें वास्तु के इस सिद्धान्त का पालन करते हुए घर का नक्शा इस प्रकार बनवाना चाहिए कि उत्तर–पूर्व का कोना खाली रहे। दक्षिणाभिमुखी घर में जहां तक हो सके खिड़कियां पूर्व दिशा में रखी जाएं ताकि उदय होते सूर्य की किरणें घर में प्रवेश कर सकें।

शौचालय या सैप्टिक टैंक –

घर में सैप्टिक टैंक उत्तर अथवा उत्तर–पश्चिम या फिर पूर्व की ओर बीचों–बीच होना चाहिए। सैप्टिक टैंक अथवा शौचालय कभी भी उत्तर–पूर्व में नहीं होना चाहिए। घर की दक्षिण तथा पश्चिम में ऊँचे–लम्बे पेड़ (जैसे अशोक) लगाने चाहिएं। घर में भारी सामान दक्षिणी भाग में रखना चाहिए। यदि कोई ऊँची शैल्फ हो तो इसे दक्षिणी या पश्चिमी दीवार के साथ रखना चाहिए।

दक्षिण में शयनकक्ष –

दक्षिण दिशा शयन–कक्ष के लिए उचित दिशा है। घर के गृह–स्वामी का शयनकक्ष ('रति कक्ष' अध्याय में हमने इस पर चर्चा की है) दक्षिण–पश्चिम में होना चाहिए। यहां हम यह बात दोहराना चाहेंगे कि सोते समय सिर दक्षिण की ओर रहना चाहिए।

दक्षिण का शुभ प्रभाव –

घर के दक्षिण की ओर सड़क एक व्यवसायी के लिए कुछ अन्य चीजों के प्रभाव से शुभ हो सकती है। दक्षिण दिशा में प्रवेश वाली दुकान में स्त्रियों के उपयोग की वस्तुएं जैसे – गहने, आभूषण, सिले–सलाए वस्त्र तथा सजावटी एवं सौदर्य–प्रसाधनों का व्यवसाय करना लाभदायक रहता है।

जिन जातकों की राशी वृषभ (Taurus) कन्या (Virgo) अथवा मकर (Capricorn) हो, उनके लिए दक्षिण दिशा फलदायक हो सकती है।

दक्षिण मुखी भवन निवास के लिए उपयुक्त नहीं समझे जाते।

✠✠✠✠

उत्तर–पूर्व (ईशान) मुखी भवन

NORTH–EAST FACING HOUSE
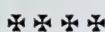
उत्तर–पूर्व (ईशान) का महत्त्व –

घर के जिस कोने पर पूर्व तथा उत्तर दिशाओं का संगम होता है, उस दिशा को उत्तर–पूर्व कहा जाता है। शास्त्रों में इसका नाम 'ईशान' है। इस दिशा का एक विशेष महत्त्व है। हमारी पृथ्वी अपनी दूरी पर सीधी नहीं खड़ी है। बल्कि यह कुछ झुकी हुई है। इसका यह झुकाव उत्तरी ध्रुव को प्रभावित करता है। उत्तर–पूर्व दिशा को पवित्र माना जाता है। क्योंकि वास्तुशास्त्र के अनुसार सभी भौतिक पदार्थों के स्वामी वास्तुपुरुष का शीर्ष (सिर) इसी दिशा में है। इस दिशा के अधिष्ठाता देव ईशान्य हैं, जिन्होंने अपने सिर पर गंगा को धारण किया है। यह कोना जल तत्त्व के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। जोकि स्वयं एक पवित्र करने वाला तत्त्व है। इस दिशा को दो भागों में बाँटा जा सकता है –

(i) उत्तर–पूर्व का पूर्वी भाग
(ii) उत्तर–पूर्व का उत्तरी भाग

उत्तर–पूर्व दिशा स्वास्थ्य, धन, समृद्धि और सुख का स्रोत है। पूर्व दिशा को पितृपक्ष तथा उत्तर दिशा को मातृपक्ष माना गया है, उत्तर और पूर्व के संगम स्थल उत्तर–पूर्व को वंशपक्ष कहा जा सकता है। क्योंकि यह ग्रह–स्वामी के पुत्र के लिए अतिशुभ है और वंश को बढ़ाने तथा संतान को सुख देने वाला है। जिस घर का मुख उत्तर–पूर्व की ओर हो वह अतिशुभ माना जाता है।

उत्तर–पूर्व से एक विशेष सूक्ष्म ऊर्जा का प्रवाह होता है। एक बंद कमरे में भी उत्तर–पूर्व कोने को यह ऊर्जा अपना प्रभाव दिखाती है।

उत्तर तथा पूर्व दिशा को जहां तक हो सकें, खुला छोड़ना चाहिए क्योंकि यहां से जीवनदायिनी शक्ति घर में प्रवेश करती है। सूर्य पूर्व में उदय होता है। ओर उत्तर की ओर से इसकी किरणें मन्द होकर घर में प्रवेश करती हैं।

उत्तर—पूर्व में प्रवेश द्वार —

यदि घर का मुख्य द्वार उत्तर—पूर्व में हो तो इसका बड़ा शुभ प्रभाव होता है।

घर के उत्तर—पूर्व में पूजा के लिए स्थान बनाना बहुत ही शुभ फलदायक होता है। और यह घर में खुशी, शान्ति तथा समृद्धि लाता है। ब्रह्ममुहूर्त में (प्रातः सूर्य उगने से पहले) यदि घर के उत्तर—पूर्व में बैठकर पूजा—पाठ अथवा ध्यान (Meditation) किया जाए तो इससे व्यक्ति का काया—कल्प हो जाता है और व्यक्ति को जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

उत्तर—पूर्व में रसोई या शौचालय —

घर के उत्तर—पूर्व में रसोई कभी भी नहीं बनानी चाहिए इससे परिवार के सदस्यों को प्रायः उदर (पेट) से सम्बन्धित अथवा बात सम्बन्धी (Gas) रोग सता सकते है यह परिवार के सदस्यों की प्रगति में बाधा भी डाल सकते है। कभी भी घर के उत्तर—पूर्व में भी शौचालय अथवा सैप्टिक टैंक नहीं बनाना चाहिए। क्योंकि इससे घर की प्रगति रुक जाती है और घर के सदस्य प्रायः तनाव तथा बीमारी से ग्रस्त रहते है। यह वंश की वृद्धि को भी प्रभावित करता है। ऐसे घर में संतान मंदबुद्धि हो सकती है।

उत्तर—पूर्व में चारदीवारी —

घर की चारदीवारी को उत्तर—पूर्व दिशा में अधिक ऊंचा नहीं बनाना चाहिए। यदि घर में बरामदा बनाना हो तो इसे उत्तर अथवा पूर्व में बनाना चाहिए और यह ध्यान रखना चाहिए कि बरामदा की ऊँचाई घर की छत से कम हो।

उत्तर—पूर्व में शयनकक्ष –

उत्तर—पूर्व दिशा में घर के स्वामी को अपना शयनकक्ष नहीं बनाना चाहिए। क्योंकि यह दिशा पवित्र कार्यों के लिए है। अतः इस दिशा में इन्द्रिय—भोग करने से देवता रुष्ट हो जाते है। लेकिन घर के बच्चों के सोने का कमरा इस दिशा में बनाया जा सकता है। यदि इसी कमरे में घर के बच्चे बैठकर पढ़ते हो तो यह और भी अच्छी बात है क्योंकि इस दिशा में वास्तु पुरुष का मस्तिष्क है अतः इस दिशा में बैठकर पढ़ने पड़ी हुई सामग्री शीघ्र ही ह्रदयंगम (याद) हो जाती है।

उत्तर—पूर्व में ऑफिस –

उत्तर—पूर्व दिशा में ऑफिस बनाना शुभ फलदायक होता है। ऑफिस में बैठकर महत्त्वपूर्ण विषयों में फैसले लिए जाते हैं जिनका सम्बध मस्तिष्क से है। इस दिशा में स्ट्रॉग—रूम बनाना या तिजोरी की स्थापना करना भी शुभ फलदायक होता है क्योंकि उत्तर दिशा में धन के स्वामी कुबेर का निवास है। दूसरे उत्तर तथा पूर्व दोनों दिशाएं पित्तरों से सम्बन्धित हैं, जो मनुष्यों को भौतिक सुख—सम्पदा प्रदान करते हैं। इस दृष्टिकोण से उत्तर—पूर्व में धन को रखने से धन में वृद्धि होती है।

उत्तर—पूर्व में प्रवेश द्वार –

यदि किसी घर के पूर्व तथा उत्तर की ओर सड़कें हों तो इसका प्रभाव अच्छा ही होता है। किसी कॉलोनी में कोने वाला ऐसा प्लॉट सबसे अच्छा होता है, जिसके उत्तर तथा पूर्व में सड़क हो। घर के पूर्व की ओर दरवाजा कभी—भी घर के बीचों—बीच नहीं बनाना चाहिए, अच्छा यही रहता है कि दरवाजे को उत्तर—पूर्व की ओर बनाया जाए। घर का मुख्य द्वार उत्तर या पूर्व में ही खुलना चाहिए।

उत्तर—पूर्व को बाधित न होने दें –

उत्तर—पूर्व दिशा को कभी भी किसी प्रकार से बाधित नहीं करना चाहिए क्योंकि इस दिशा से घर में खगोलीय ऊर्जा का प्रवाह होता है यदि घर का उत्तर—पूर्वी कोना खुला नहीं होगा तो इससे घर के स्वामी

को संतान (विशेषतः पुत्रों) की ओर से किसी—ना—किसी प्रकार की समस्या सताती ही रहेगी। यदि घर के उत्तर—पूर्व में निर्माण का कार्य अधिक किया जाए और दक्षिण—पश्चिम से कम तो इससे पुत्रों की ओर से कष्ट हो सकता है। यदि किसी भू—भाग (Plot) के साथ लगती हुई भूमि के उत्तर या पूर्व कोने में ऊँचा टीला या पहाड़ी हो तो निवास की दृष्टि से इस प्लॉट को कभी नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि इस भूमि का ईशान भारी होता है। जो कष्ट का कारण बन सकता है। घर के उत्तर—पूर्व कोने में कभी भी घर का बचा—खुचा सामान अथवा मलबा इकट्ठा नहीं करना चाहिए। इस कोने को हमेशा यत्न पूर्वक स्वच्छ एवं पवित्र रखना चाहिए।

उत्तर—पूर्व तथा दक्षिण—पश्चिम को मिलाने वाला विकर्ण दक्षिण—पूर्व तथा उत्तर—पश्चिम को मिलाने वाले विकर्ण से थोड़ा—सा अधिक लम्बा होना चाहिए। कभी—भी प्लॉट के उत्तर—पूर्वी कोने को काटकर छोटा नहीं करना चाहिए। जिस प्लॉट के ईशान में किसी प्रकार का दोष हो अर्थात उत्तर—पूर्व कोना कटा हुआ हो वह प्लॉट किसी भी हालत में नहीं खरीदना चाहिए उत्तर—पूर्व में चारदीवारी का कोण 90° का अथवा इससे थोड़ा—सा कम होना चाहिए।

उत्तर—पूर्व में जल का शुभ प्रभाव —

जैसा—कि हम पहले भी बता आए हैं कि उत्तर—पूर्व जैसे पवित्र दिशा में पवित्र करने वाले तत्त्व जल का उपस्थित होना शुभ फलदायक होता है। इस दृष्टि से घर के उत्तर—पूर्व में कुएं, नल या धरती के नीचे जलभण्डार का बनाया जाना बहुत शुभ रहता है घर में प्रयोग होने वाली पानी तथा वर्षा के जल का बहाव भी उत्तर—पूर्व में ही होना चाहिए घर में आने वाली जल आपूर्ति वाली पाइपें इसी दिशा से घर में प्रवेश करनी चाहिएं।

कुआं या भूमिगत जलाशय (Sump) को यद्यपि उत्तर—पूर्व में ही बनवाना चाहिए लेकिन यह ध्यान रहे कि यह बिल्कुल उस रेखा के ऊपर न हो, जो उत्तर—पूर्व को दक्षिण—पश्चिम से मिलाती है। यह

बिल्कुल उत्तर–पूर्व के कोने में भी न हो, हाँ इसके लिए उत्तर–पूर्वी भाग में ऐसा स्थान रखना चाहिए जो उत्तर–पूर्वी कोने से थोड़ा भीतर की ओर हो। भूमिगत जलाशय में पानी का बहाव बनाये रखना चाहिए अर्थात यह पानी सदा ठहरी अवस्था में न रहे क्योंकि इस जल के ठहरने से घर में धन का बहाव भी ठहर जाता है। अतः यही अच्छा है कि उत्तर–पूर्वी कोने में जल ठहरे नहीं बल्कि गतिशील रहें।

उत्तर–पूर्व में निर्माण –

घर बनाते समय यह ध्यान रखें कि घर का उत्तर–पूर्व भाग इस ओर के फर्श घर के शेष कोनों से कुछ नीचे होना चाहिए। छत की ढलान भी उत्तर अथवा पूर्व या उत्तर–पूर्व में ही होनी चाहिए ताकि वर्षा का जल उत्तर, पूर्व या उत्तर–पूर्व की बहकर घर से बाहर जाएं। यदि सम्भव हो तो उत्तर तथा पूर्व में दीवारें घर की शेष दीवारों से कुछ पतली हो।

बाल्कॉनी घर के उत्तर–पूर्व में बनानी चाहिए छत पर उत्तर–पूर्व या उत्तर अथवा पूर्व में छज्जा बनाना वास्तु की दृष्टि से बहुत अच्छा रहता है यदि घर के नीचे तहखाना (Basement) बनाना हो तो इसके लिए उत्तर–पूर्वी भाग को उपयोग में लाना ज्यादा अच्छा रहता है।

घर में दर्पण लगाते समय ध्यान रखना चाहिए कि दर्पण उत्तर–पूर्व, उत्तर अथवा पूर्व की ओर वाली दीवार पर लगाना चाहिए। घर में दवाइयों तथा मरहम–पट्टी का सामान उत्तर–पूर्वी भाग में ही रखना चाहिए। इससे दवाइयाँ कुछ अधिक असर दिखाती है। यदि घर का कोई सदस्य बीमार हो तो उसे सलाह दें कि दवाई लेते समय वह उत्तर–पूर्व की ओर मुख करके दवाई लें तथा जल पौधे, इससे उसके स्वास्थ्य में जल्दी ही सुधार आयेगा।

ध्यान रखें कि घर के उत्तर–पूर्व में कभी–भी किसी प्रकार का भारी सामान नहीं रखना चाहिए।

उत्तर–पूर्व मुखी भवन निवास के लिए अति उत्तम होते हैं।

✣✣✣✣

46 उत्तर–पश्चिम (वायव्य) मुखी भवन

NORTH-WEST FACING HOUSE

उत्तर–पश्चिम का महत्त्व –

जिस कोने में उत्तर तथा पश्चिम दिशाएं मिलती हैं वह उत्तर–पश्चिमी कोना कहलाता है। वास्तुशास्त्र में इसे 'वायव्य' कहा गया है। इस उपदिशा के अधिष्ठाता देव वायुव्य हैं, जिन्हें हम प्राण तत्त्व वायु के स्वामी के रूप में जानते हैं। इसे भी दो भागों में बांटा जा सकता है –

(i) उत्तर–पश्चिम का पश्चिमी भाग
(ii) उत्तर–पश्चिम का उत्तरी भाग

उत्तर–पश्चिम दिशा व्यापार, सम्बंध तथा शत्रुता के पक्ष में बदलाव का स्रोत है।

उत्तर–पश्चिम को खुला रखना आवश्यक –

घर का उत्तर–पश्चिमी कोना खुला ही रहना चाहिए क्योंकि इस ओर धन रेखा का बहाव है। घर का भारी सामान उत्तर–पश्चिम कोने में नहीं रखना चाहिए क्योंकि इससे हड्डियों में विकार अथवा इनसे सम्बंधित बीमारी हो सकती है। तथा यह गैस सम्बन्धी रोग तथा मानसिक समस्याओं का कारक भी बन सकता है। उत्तर–पूर्व की भांति ही घर का उत्तर–पश्चिमी कोना भी कटा हुआ नहीं होना चाहिए।

उत्तर–पश्चिम इस दिशा में बिल्डिंग को ऊँचा नहीं बनाना चाहिए और ना ही इस दिशा में अधिक ऊंचे पेड़ लगाने चाहिए। ध्यान रखें कि ऊँचे पेड़ उत्तर तथा पूर्व में भी नहीं लगाने चाहिएं।

घर का उत्तर–पश्चिमी कोना उत्तर–पूर्व के कोने में अवश्य ही कुछ ऊँचा होना चाहिए लेकिन यह दक्षिण–पूर्व तथा दक्षिण–पश्चिम

से कुछ नीचा होना चाहिए उत्तर–पश्चिम का कोना 90° या इससे थोड़ा–सा अधिक होना चाहिए यदि किसी घर का उत्तर–पश्चिम का कोना अधिक लम्बा हो तो उस घर के सदस्य अधिकतर यात्रा में रहते हैं।

हम पहले भी बता चुके है कि घर के उत्तर तथा पूर्व में अधिक खुला स्थान छोड़ना चाहिए। उत्तर–पश्चिम का कोना उत्तर–पूर्व से थोड़ा ऊँचा होना चाहिए यदि इस कोने में कोई गड्ढा या ढलान हो तो इससे घर के सदस्यों को कई प्रकार से कष्ट सता सकते है।

उत्तर–पश्चिम में निर्माण कार्य –

घर के उत्तर–पश्चिम में स्टोर बनाना अच्छा रहता है। यदि पश्चिम में स्थान न हो तो रसोई इस दिशा में भी बनायी जा सकती है। यदि घर में अन्न के लिए भण्डार बनाना हो तो इसे घर से बाहर लेकिन चारदीवारी के भीतर पश्चिम की ओर बनाना चाहिए।

उत्तर–पश्चिम दिशा में मेहमानों के ठहरने का स्थान बनाना विशेष शुभ फलदायक होता है। इस दिशा में शीघ्र नष्ट हो जाने वाली खाद्य सामग्री को रखना भी लाभदायक होता है। घर में यदि कोई व्यक्ति बीमार है तो उसे उत्तर–पश्चिम में स्थित कमरे में स्थान देने से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता है।

घर के ऊपर बनाये जाने वाला जलभण्डार (Overhead-tank) भी उत्तर–पश्चिम दिशा में ही बनाना चाहिए।

उत्तर–पश्चिम मुखी भवन निवास के लिए ठीक–ठाक ही समझे जाते हैं।

✠✠✠✠

47 दक्षिण–पूर्व (आग्नेय) मुखी भवन

SOUTH–EAST FACING HOUSE

दक्षिण–पूर्व का महत्त्व –

जिस कोने में दक्षिण तथा उत्तर दिशाएं मिलती हैं, वह कोना दक्षिण–पूर्व कहलाता है। वास्तुशास्त्र में इसे 'आग्नेय' कहा गया है। इस उपदिशा के अधिष्ठाता देव अग्नि हैं। शास्त्रों में अग्नि देवता के जिस स्वरूप का वर्णन किया गया है, उसके अनुसार वे किसी वृद्ध व्यक्ति के समान दिखाई पड़ते हैं, जो एक अर्धचन्द्राकार आसन पर विराजमान हैं और उनका शरीर स्वर्ण की भांति चमकता है। इस उपदिशा को भी दो भागों में बांटा जा सकता है –

(i) दक्षिण–पूर्व का दक्षिणी भाग

(ii) दक्षिण–पूर्व का पूर्वी भाग

यह उपदिशा स्वास्थ्य, धन–धान्य तथा प्रतिष्ठा का स्रोत है।

दक्षिण–पूर्व में निर्माण –

घर का दक्षिण–पूर्वी भाग उत्तर–पूर्वी भाग से अवश्य ही थोड़ा ऊँचा होना चाहिए लेकिन उत्तर–पश्चिम तथा दक्षिण–पश्चिम से थोड़ा नीचा होना चाहिए। दक्षिण–पूर्वी कोना 90° या इससे थोड़ा–सा कम होना चाहिए। जिस घर के दक्षिण–पूर्वी भाग में, विशेषतः दक्षिण–पूर्व के कोने में किसी प्रकार का वास्तु–दोष हो उस घर में रहने वाले लोगों को कई प्रकार के कष्ट सताते रहते हैं और प्रायः वे यह नहीं जान पाते कि उनके कष्ट कारण क्या हैं।

घर में रसोई के लिए दक्षिण–पूर्व का भाग अच्छा रहता है। क्योंकि इस दिशा में अग्नि के स्वामी का निवास है। जिस प्लॉट का मुख दक्षिण–पूर्व में हो, उस घर का गेट पूर्व की ओर होना चाहिए न कि दक्षिण की ओर पूर्व दिशा में बना मेन गेट घर में धन की वृद्धि करता है, घर में सदस्यों को सुख, शांति, प्रसन्नता तथा समृद्धि देता है और बच्चे सद्बुद्धि वाले बनते हैं। दक्षिण में स्थित मेन गेट धन के नाश तथा चिन्ताओं का कारण बन सकता है। घर में चारदीवारी को दक्षिण–पूर्व में बिल्कुल सीधा न रखकर हल्की–सी गोलाई दे देनी चाहिए। परन्तु कोना कटना नहीं चाहिए।

दक्षिण–पूर्व में बढ़ा कोना –

जिस प्लॉट पर घर बनाया जाना है, उसके दक्षिण–पूर्व दिशा को ध्यान से जाँचना चाहिए यदि यह कोना बाहर की ओर अधिक निकला हुआ है तो घर की सुरक्षा को ही खतरा हो सकता है क्योंकि तब अग्नि का प्रकोप उस घर पर होने की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त गृह–स्वामी को झगड़ों, विवादों, आदि में फँस कर धन की हानि उठानी पड़ सकती है। घर के दक्षिण–पूर्व कोने को थोड़ा–सा काट देने से अर्थात छोटे कर देने से घर में सुख–शांति की सम्भावनाएँ बढ़ जाती है लेकिन ऐसा करने से कुछ अन्य समस्याएँ भी आ सकती है अतः जिन लोगों के घर या प्लॉट का दक्षिण–पूर्वी कोना बाहर की ओर निकला हुआ है और वे किसी प्रकार की समस्याओं से पीड़ित है, उन्हें चाहिए कि वे किसी वास्तु–विशेषज्ञ की सलाह लें।

दक्षिण–पूर्व में जल भण्डार –

दक्षिण–पूर्व दिशा में जल भण्डार या जल स्रोत को स्थापित नहीं करना चाहिए, इससे पेट, फेफड़े तथा आँतों से सम्बन्धित बिमारियों के बढ़ने की सम्भावना बनी रहती है। यदि घर के दक्षिण–पूर्वी भाग में कुआँ या नलकूप (Bore Well) घर की चारदीवारी के भीतर की ओर हो तो इससे गृहस्वामी के पुत्र को रोग या शारीरिक कष्ट हो सकता है। घर की स्त्रियों को भी स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ हो

सकती हैं। घर के दक्षिण तथा पश्चिम में नीम या नारियल जैसे ऊँचे तथा छायादार पेड़ लगाए जा सकते हैं।

यदि दक्षिण–पूर्व दिशा में कैश–काउण्टर बनाया जाए तो इसका शुभ फल नहीं मिलता, देखने में आया है कि कमाया गया धन जैसे स्वाहा हो जाता है।

दक्षिण–पूर्व का उत्तम प्रयोग –

क्योंकि यह दिशा अग्नि के आधिपत्य में है, इसलिए गर्मी देने वाले उपकरण जैसे – गीजर, भट्ठी, स्टोव या चूल्हे को इस दिशा में बनाना चाहिएं वाशिंग मशीन का प्रयोग करते समय भी दक्षिण–पूर्वी कोने का प्रयोग करना अच्छा रहता है।

शोध, उत्पादन तथा कलात्मकता से सम्बन्धित कार्यों को दक्षिण–पूर्व की दिशा में करना विशेष शुभ फलदायक होता है। दक्षिण–पूर्व दिशा में भी गृहस्वामी के रति कक्ष (शयनकक्ष) का होना बुरा प्रभाव डालता है। इससे पति–पत्नी में तनाव बना रहता है और जीवन में अस्थिरता आती है।

दक्षिण–पूर्व दिशा में होम/यज्ञ करना अच्छा रहता है।

दक्षिण–पूर्व मुखी भवन निवास के उद्धेश्य से मध्यम प्रभाव देने वाले होते हैं।

✠✠✠✠

48 दक्षिण–पश्चिम (नैऋत्य) मुखी भवन

SOUTH–WEST FACING HOUSE

दक्षिण–पश्चिम का महत्त्व –

जिस कोने में दक्षिण तथा पश्चिम दिशाएं मिलती हैं वह कोना दक्षिण–पश्चिम कहलाता है। वास्तुशास्त्र में इसे नैऋत्य कहा गया है। इस उपदिशा के अधिष्ठाता देव नैऋुति (दैत्य) हैं। दैत्य क्योंकि पाशविक वृत्तियों के स्रोत है अतः इन्हें नियन्त्रण में रखना अति आवश्यक है अन्यथा व्यक्ति का जीवन विकारों का गुलाम होकर रह जाएगा। इसीलिए वास्तुशास्त्र हमें यह सलाह देता है कि घर का भारी भरकम समान दक्षिण–पश्चिमी भाग में रखना चाहिए ताकि नैऋुति अर्थात्दैत्य सिर न उठा सकें और व्यक्ति के नियन्त्रण में रहे। दक्षिण–पश्चिम दिशा को दो भागों में बांटा गया है–

(i) दक्षिण–पश्चिम का दक्षिणी भाग

(ii) दक्षिण–पश्चिम का पश्चिम भाग

यह उपदिशा चरित्र, प्रवृत्तियाँ, व्यवहार, दीर्घायु, अल्पायु तथा मृत्यु जैसे तत्त्वों को प्रभावित करती है।

दक्षिण–पश्चिम को खुला न रखें –

घर के दक्षिण–पश्चिमी भाग में जितना अधिक से अधिक भार रखा जा सके उतना ही शुभ होता है। यदि इस भाग को खुला रखा जाए तो व्यक्ति तनाव, निराशा तथा क्रोध जैसी वृत्तियों का शिकार हो सकता है, जिसके कारण घर में कलह–क्लेश बढ़ सकता है, भाइयों में बंटवारे तथा पत्नी से तलाक जैसे स्थितियाँ भी आ सकती हैं। इस दिशा में किसी भी प्रकार का कोई गड्डा जैसे कुआँ, सैप्टिक टैंक, भूमिगत जलाशय आदि नहीं बनानी चाहिए और न ही इस दिशा में घर की ढलान होनी चाहिए। यह भाग घर के शेष हिस्से से थोड़ा ऊँचा ही होना चाहिए।

घर का दक्षिण—पश्चिमी भाग ढका ही रखना चाहिए। इस दिशा को खुला छोड़ना उपयुक्त नहीं है क्योंकि यहाँ अशुभ शक्तियाँ व अशुभ ऊर्जा घर में प्रवेश कर सकती हैं। यदि घर के दक्षिण—पश्चिमी कोने को बढ़ा दिया जाए तो यह कई समस्याओं को कारक बन सकता है। अतः घर का नक्शा बनाते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि भवन दक्षिण—पश्चिम की ओर अधिक बढ़ा हुआ न हो।

यदि किसी कोने वाले प्लॉट तथा पश्चिम दिशाओं में सड़क हो तो प्रवेश द्वार दक्षिण की अपेक्षा पूर्व की ओर रखना चाहिए।

दक्षिण—पश्चिम में निर्माण कार्य —

घर का दक्षिण—पश्चिमी भाग सबसे ऊँचा होना चाहिए। दक्षिण—पश्चिम कोने को न तो छोटा करना चाहिए और न ही इसे बढ़ाना चाहिए और यह कोना पूरा 90° के कोण पर ही होना चाहिए। दक्षिण—पश्चिम में चारदीवारी तथा घर की दीवार अन्य भागों से कुछ अधिक मोटी तथा भारी होनी चाहिए।

प्रायः घर बनाने से पूर्व निर्माण सामग्री तथा जरूरत की कुछ वस्तुओं को रखने के लिए प्लॉट पर एक छोटा—सा कमरा बनाया जाता है, जिसे बाद में तोड़ दिया जाता है। यदि ऐसा कमरा बनाया जाना है तो इसके लिए दक्षिण—पश्चिम दिशा ही सबसे उपयुक्त है। यदि आपका घर एक मंजिला है और जरूरत बढ़ जाने पर आप दूसरी मंजिल पूरी नहीं अपितु कुछ ही भाग का उपयोग करना चाहते हैं तो ऐसे में वह निर्माण कार्य दक्षिण—पश्चिम में ही करना चाहिए।

घर में नौकर आदि के रहने के लिए स्थान दक्षिण—पश्चिम में कभी भी नहीं बनाना चाहिए। इस दिशा में बरामदा नहीं बनाना चाहिए इस दिशा में ऊँचे तथा भारी—भरकम पेड़ लगाने से भी वास्तु—दोष को कम किया जा सकता है।

रति कक्ष के लिए सर्वोत्तम –

दक्षिण–पश्चिम उपदिशा गृहस्वामी के रति कक्ष के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है, क्योंकि इसके अधिष्ठाता देव नैऋत्य हैं जो स्वयं दैत्य है अतः इन्द्रिय सुख के लिए यह दिशा सर्वोत्तम है। इस दिशा में स्टोर, लाइब्रेरी, अटारी इत्यादि बनाना भी उचित है। यदि घर के दक्षिण–पश्चिम में बाल्कोनी हो तो इसे खुला न छोड़कर बन्द ही रखना चाहिए।

घर की सीढ़ियों का भी दक्षिण–पश्चिमी भाग में होना उपयुक्त रहता है। इस दिशा में मूर्तियाँ लगाना, बगीचा बनाना या रॉक गार्डन बनाना भी उपयुक्त है। भारी मशीनें तथा बचा–खुचा सामान इस दिशा में रखना चाहिए।

दक्षिण–पश्चिम कोने को काटे नहीं –

घर के दक्षिण–पश्चिमी कोने को काटना वास्तु की दृष्टि से एक दोष ही माना जाता है। क्योंकि यह स्थान हमारे पूर्वजों के आधिपत्य में है। इस कोने को काट देने से जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ आ सकती है। घर बनाते समय नींव की खुदाई का काम कभी भी दक्षिण–पश्चिम सो आरम्भ नहीं करना चाहिए। शास्त्रों का मत है कि ऐसा करने से घर मृत्यु के देवता यम के पाश में आ जाता है।

घर के दक्षिणी–पश्चिमी में अगर कोई ऊँची सड़क, कोई टीला या पहाड़ी आदि है तो इसका प्रभाव अच्छा ही होता है।

घर के बीमार सदस्यों को दक्षिण–पश्चिम वाले कमरे में रखना स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से अच्छा रहता है।

दक्षिण–पश्चिम मुखी भवन पर निवास स्थान नहीं बनाना चाहिए।

✠✠✠✠
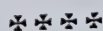
"व्यक्ति के जीवन को उसका भाग्य–तत्त्व तो निमंत्रित करता ही है, आवास की वास्तु का प्रभाव की उसकी सुख, समृद्धि, सफलता और सौभाग्य को प्रभावित करता है। वास्तु हमारे ऋषियों के सतत् शोध का परिणाम है, जिससे हमें लाभ उठाना चाहिए।"

रामनिवास चावरिया
ज्योतिषाचार्य

खण्ड — VII

अच्छे प्लॉट का चुनाव

49 प्लॉट खरीदने से पहले

BEFORE BUYING A PLOT

भाव तरंगे –

घर हमारी मूल आवश्यकताओं में से एक है। घर का सम्बन्ध केवल भौतिक स्थितियों से ही नहीं व्यक्ति की भावनाओं से भी है। इस दृष्टि से कोई प्लॉट खरीदने वाले के लिए शुभ या अशुभ प्रभाव का दायक होगा इसका निर्णय भी व्यक्ति अपनी सूक्ष्म भावनाओं के अवलोकन से लगा सकता है। आप जिस प्लॉट को खरीदना चाहते हैं उसके शुभ या अशुभ प्रभाव के विषय में अगर कोई मार्गदर्शन कहीं से आपको मिल सकता है तो वह आपका अत्तःकरण है। जिस प्लॉट को आप खरीदना चाहते हैं, आप उसमें खड़े होकर कुछ समय के लिए अपने मन में उठने वाली भिन्न–भिन्न प्रकार की भाव–तरंगों पर ध्यान दें। इसके लिए अधिक समय लगाने की आवश्यकता नहीं है, केवल पाँच–सात मिनट में ही आप स्वयं निर्णय कर सकेगें। अपनी आँखें बन्द करके अपनी भाव–तरंगों का सूक्ष्म अवलोकन करते हुए यह देखें कि आपको क्या अनुभव होता है। यदि आपकी भाव–तरंगें अच्छी हैं अर्थात् किसी प्रकार की चिन्ता, द्वेष, तनाव, अहंकार आदि का अनुभव न करके आप शान्ति और प्रसन्नता अनुभव कर रहे है तो निश्चय ही वह स्थान निवास करने योग्य है। आप उस प्लॉट को खरीद सकते हैं। यदि आपकी भाव–तरंगें चिन्ता, भय या हीन भावना, द्वेष या क्रोध से ग्रसित हो रही हैं तो ऐसे प्लॉट को खरीदने से पूर्व पुनः विचार करें। किसी वास्तुशास्त्र की सलाह लें और जल्दी न करें।

प्लॉट खरीदते समय जिन बातों पर ध्यान देना चाहिए वास्तुशास्त्र हमें इसका ज्ञान करवाता है। यहाँ हम इन सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवेचन करेगें, जो एक अच्छा प्लॉट खरीदने में सहायक होंगे।

भूमि की उर्वरा (उपजाऊ) शक्ति –

जिस भूमि को आप खरीदना चाहते हैं वह बिल्कुल बंजर न हो, अर्थात् उसकी पैदा करने की शक्ति समाप्त न हो गई हो। जो भूमि अपने गर्भ में छिपे बीज का पोषण नहीं कर सकती वह उस पर निवास करने वाले प्राणियों का पेट कैसे भरेगी ?

प्लॉट की धारिता (धारण करने की शक्ति) –

जिस प्लॉट को आप खरीदना चाहते हैं उसकी धारिता (वहन करने की शक्ति) को भी जाँच लेना चाहिएं। इसके लिए एक छोटा सा परिश्रण आप कर सकते हैं। प्लॉट के लगभग बीचों–बीच अपने घुटनों तक गहरा एक खड्डा खोदें। खड्डे से निकली मिट्टी को पुनः उस खड्डे में ड़ाल दें। यदि वापिस डा़ली गई मिट्टी से वह खड्डा पूरी तरह से भर जाता है तो उस प्लॉट को खरीदने में कोई हानि नहीं है। लेकिन यदि वह खड्डा उस मिट्टी से नहीं भरता तो उसे खरीदने का विचार छोड़ दें।

जिस भूमि पर कभी ईंट बनाने का भट्टा रहा हो वह भी निवास करने योग्य नहीं होता। ऐसा प्लॉट जिसके चारों मुख्य दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) में सीधे ना पड़ कर चारों कोनों में पड़ती हो तो इसे डायगनल (Diagonal) विदिशी प्लॉट कहते हैं। आमतौर पर ऐसे प्लॉट को न खरीदना ही अच्छा है।

विदिशी प्लॉट वह होता है जिसका चुम्बकीय केन्द्र इसके मध्य में न होकर मध्य–बिन्दु से 45° का कोण बनाता है।

प्लॉट का स्वामित्व –

घर बनाने के लिए जो प्लॉट आप खरीदना चाहते हैं, अगर उसका स्वामी कोई कोढ़ी, पागल, सन्यासी, तान्त्रिक अथवा जादूगर या समाज– विरोधी कार्यों में लिप्त बदनाम व्यक्ति है तो ऐसे प्लॉट को न खरीदना ही हितकर है।

मन्दिर अथवा किसी धर्म—स्थान को दान में दी गई जमीन को घर बनाने के लिए कभी न खरीदें।

जिस व्यक्ति से आप जमीन खरीदने जा रहे हैं उसका परिचय प्राप्त कर लेना व्यवहारिक दृष्टिकोण से भी अच्छा है। यदि वह व्यक्ति केवल व्यवसायिक कारणों से जमीन बेच रहा है तो अच्छा है, लेकिन अगर वह किसी दुर्भाग्य का शिकार होकर जमीन बेच रहा है तो ऐसे में जमीन खरीदने में जल्दी न करके किसी वास्तु—विशेषज्ञ की सलाह लेकर ही जमीन खरीदें। भाग्यवान व्यक्तियों से खरीदी हुई जमीन शुभ फल देने वाली होती है।

प्लॉट खरीदने के बाद –

प्लॉट खरीदने के तुरन्त बाद ही उस पर निर्माण कार्य आरम्भ न करना हो तो गाय के गोबर से बनी खाद में कई प्रकार के बीज मिलाकर उस जमीन पर फैला देने चाहिएं, यदि सम्भव हो सके तो कुछ दिनों के लिए खाली पड़े प्लॉट में किसी बछड़े वाली गाय को बांधना चाहिए, इससे भूमि का शुद्धिकरण होता है।

प्लॉट को खरीदने के बाद भू—स्वामी का यह कर्त्तव्य बनता है कि गृहनिर्माण का कार्य आरम्भ करने से पूर्व वह देवों, पित्तरों (आत्माओं) तथा दैत्यों से प्रार्थना करें कि कृपया वे इस स्थान से सिधारें (चले जाएं) और उसे वहाँ शान्तिपूवर्क निवास करने की आज्ञा दें।

यदि प्लॉट में कहीं कोई खड्डा या मरा हुआ कुआँ इत्यादि हो तो उसे मिट्टी से भर देना चाहिए। प्लॉट की पैमाइश स्टील के फीते से करनी चाहिए ताकि किसी प्रकार की गलती न लगे।

प्लॉट को खरीदने के बाद उसमें पड़े हुए कंकर, पत्थर, टूटा हुआ काँच, टूटे हुए बर्तन, हड्डियाँ, लकड़ी का कोयला, नुकीली चीजें तथा झाड़ियाँ आदि हटा देनी चाहिएं। प्लॉट में या प्लॉट के सामने अगर किसी प्रकार का कूड़े का ढेर या गन्दगी आदि हो तो उसे तुरन्त हटा देना चाहिए।

✠✠✠✠

50 प्लॉट के आस–पास का वातावरण

SURROUNDINGS OF PLOT

यदि किसी प्लॉट के पूर्व या उत्तर–पूर्व में कोई जल स्रोत जैसे– नदी, नहर, ड्रेन, कुआँ अथवा ट्यूबवैल या जल–भण्डार जैसे तालाब, झील या भूमिगत कुआँ हो तो इसका प्रभाव शुभ होता है। लेकिन यदि ये जल–संसाधन दक्षिण की और हों तो इसका प्रभाव शुभ नहीं होता।

प्लॉट के उत्तर या पूर्व दिशा में ऊँचे पेड़, पहाड़ या किसी ऊँचे भवन का होना अच्छा नहीं होता, क्योंकि इससे सूर्य की किरणें बाधित होती हैं। पूर्व की ओर से उगते हुए सूर्य की किरणों में जीवन–दायनी शक्ति होती है और दोपहर के समय उत्तर दिशा से सूर्य का प्रकाश परावर्तित होकर घर में प्रवेश करता है, जो रोशनी तो देता है, लेकिन इसमें गर्मी नहीं होती। अतः इस दिशा में किसी ऊँचे भवन या पेड़ आदि से सूर्य के प्रकाश का बाधित होना वास्तु की दृष्टि से अच्छा नहीं है। दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में ऊँचे पेड़, बहुमंजिले भवन या पहाड़ आदि का होना अच्छा होता है, क्योंकि ये दोपहर के समय दक्षिण में तपते हुए सूर्य के तेज से रक्षा करते हैं और शाम को पश्चिम में अस्त होते हुए सूर्य किरणों के हानिकारक प्रभाव से भी बचाते हैं। लेकिन यदि प्लॉट के पश्चिम या दक्षिण में कोई गहरी घाटी या नीचा स्थान हो तो इसका प्रभाव विपरीत होता है।

जिस प्लॉट को आप आवास की दृष्टि से खरीद रहे हैं उसके आस–पास का वातावरण शान्त होना चाहिए। अतः यह ध्यान देना जरूरी है कि प्लॉट के आस–पास कोई ऐसी वर्कशाप न हो जिसमें से पहियों के घूमने, चाकू या कैंची आदि के तेज करने की आवाजें आती रहती हों। ये आवाजें व्यक्ति के मन–मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती हैं।

ऐसा प्लॉट जो किसी सड़क या गली के अन्तिम सिरे पर हो उसे शुभ नहीं माना जाता। इसी प्रकार जो प्लॉट टी (T) या वाई (Y) के आकार में बनने वाले दोराहे या तीराहे पर हो उसे भी नहीं खरीदना चाहिए। इसी प्रकार मन्दिर, स्कूल, कॉलेज, महल, हस्पताल, कचहरी, श्मशान भूमि, चमड़ा रंगने के स्थान, कब्रगाह या बारात घर के आस–पास का स्थान आवास की दृष्टि से उचित नहीं होता। श्मशान भूमि, कब्रिस्तान या हस्पताल के दृश्य से व्यक्ति के मन–मस्तिष्क में एक प्रकार का भय उत्पन्न होता है। छोटे बच्चों पर इसका विशेषकर बुरा प्रभाव पड़ता है। चमड़ा रंगने के स्थान से दुर्गन्ध आदि आती रहती है, जो स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। स्कूल, कॉलेज और कचहरी के आस–पास लोगों का आना–जाना बहुत ज्यादा होता है, इन स्थानों पर अपेक्षाकृत अधिक शोर भी होता है और पार्किंग की समस्या भी अधिक होती है। अतः ऐसे स्थानों को आवास की दृष्टि से उचित नहीं माना जाता।

आपके प्लॉट या मकान के दक्षिण–पश्चिम में अगर कोई जायदाद बिकाऊ हो तो इसे अपने प्लॉट या मकान के साथ मिलाकर बढ़ाने की इच्छा न रखें क्योंकि इसका प्रभाव शुभ नहीं होता। यदि ऐसी ही कोई जमीन जायदाद उत्तर–पूर्व की ओर मिल सकती हो तो अपनी वर्तमान सम्पदा को बढ़ाने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करना चाहिए।

प्लॉट का दक्षिण–पूर्वी कोना बाहर की ओर निकला नहीं होना चाहिए, इसे अपेक्षाकृत कुछ छोटा ही रखना चाहिए। इस दृष्टि से यदि थोड़ी–सी भूमि छोड़नी पड़े तो संकोच नहीं करना चाहिए।

दो बड़े प्लॉटों के बीच अगर एक छोटा सा प्लॉट हो तो ऐसे प्लॉट को नहीं खरीदना चाहिए क्योंकि इससे निर्धनता की मार झेलनी पड़ सकती है।

प्लॉट
छोटा प्लॉट
प्लॉट

✠✠✠✠

प्लॉट का भूमितल

GROUND LEVEL OF PLOT

किसी प्लॉट की भूमि के तल (ढलान) का इस पर बने मकान में निवास करने वाले व्यक्तियों पर काफी गहरा और सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार भूमि की ढलान व्यक्ति के जीवन, चरित्र तथा वृत्तियों को प्रभावित करती है, जिसके अनुरुप वह खुशी, आनन्द और समृद्धि को प्राप्त करता है।

जिस प्लॉट पर आप मकान बनाना चाहते हैं वह सड़क से न तो बहुत नीचा हो और न ही बहुत ऊँचा हो। प्लॉट की कुर्सी (जहाँ पर फर्श बनाया जाता है – डी॰ पी॰ सी॰ लेवल) उत्तर तथा पूर्व (जिसे सूर्य स्थान कहा जाता है) की ओर कुछ नीची तथा दक्षिण और पश्चिम (जिसे चन्द्र स्थान कहा जाता है) में कुछ ऊँची होनी चाहिए।

ऐसी भूमि जो बीच में से कछुए की पीठ की भांति उठी हुई हो, निवास की दृष्टि से ठीक नहीं होती, अतः इसे समतल करने के बाद ही इस पर निवास करना चाहिए।

ढलान का प्रभाव –

जिस प्लॉट की ढलान पूर्व की ओर हो वह आवास की दृष्टि से शुभ होता है तथा इसमें रहने वाले लोगों को अच्छा स्वास्थ्य, धन तथा समृद्धि को प्राप्ति होती है। यदि किसी प्लॉट की ढलान उत्तर की ओर हो तो इसमें आवास करने वालों को ऐश्वर्य, सुख–सुविधा, मान, प्रतिष्ठा तथा धन–दौलत की प्राप्ति होती है।

यदि किसी प्लॉट की ढलान दक्षिण की ओर हो तो यह धन के नाश का कारक बन सकती है। दक्षिण की ओर ढलान वाले प्लॉट के निवासियों को अनेक समस्याओं का मुख देखना पड़ सकता है।

जिस भूमि का ढलान दक्षिण—पश्चिम की ओर हो, उसमें निवास करने पर व्यक्ति के धन और स्वास्थ्य दोनों का नाश हो सकता है। यदि प्लॉट की ढलान उत्तर—पश्चिम में हो तो ऐसे व्यक्ति को वह स्थान छोड़कर कहीं ओर जाना पड़ सकता है।

यदि प्लॉट की ढलान उत्तर—पूर्व की ओर हो तो यह आवास की दृष्टि से बड़ा शुभ माना जाता है, इसमें निवास करने वाले व्यक्ति को बौद्धिक सम्पदा अर्थात्ज्ञान की प्राप्ति होती है।

यदि किसी प्लॉट की ढलान ब्रह्मस्थान अर्थात्इसके मध्य भाग की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में संघर्ष करता रहता है, उसे कोई लम्बी बीमारी भी झेलनी पड़ सकती है। जीवन में उसे अपनी मेहनत का पूरा मूल्य कभी नहीं मिल पाता, वह निराशा का शिकार हो सकता है।

ऐसा प्लॉट जो पूरी तरह से समतल हो और जिसमें कोई और ढलान न हो वह निवास की दृष्टि से एक साधारण प्लॉट कहा जा सकता है। इसे खरीदने में तथा इस पर निवास करने से कोई हानि नहीं होती।

ढलान का शुद्धिकरण –
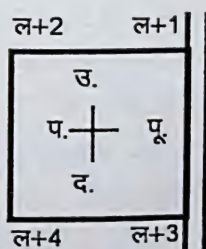
भूमि की ढलान का उपचार वास्तुशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार करना चाहिए। जिस प्लॉट पर आप मकान बनाना चाहते हैं, उसमें भरत आदि करवाकर उसकी ढलान सुविधानुसार उत्तर, पूर्व अथवा उत्तर—पूर्व की ओर कर लेनी चाहिए। इसके लिए पश्चिम, दक्षिण तथा दक्षिण—पश्चिम के तल को ऊँचा करना चाहिए।

प्लॉट के दक्षिण—पश्चिमी कोने को सर्वाधिक ऊँचा रखना चाहिए तथा उत्तर—पूर्वी कोने को सबसे नीचा रखना चाहिए। इसी प्रकार दक्षिण—पूर्व के कोने को उत्तर—पश्चिम तथा उत्तर—पूर्व की अपेक्षा कुछ ऊँचा रखना चाहिए। यदि आपका प्लॉट किसी गली के कोने पर है तो इसके उत्तर—पूर्वी कोने को सड़क के तल से ऊँचा रखें।

✠✠✠✠

प्लॉट की आकृति

SHAPE OF PLOT
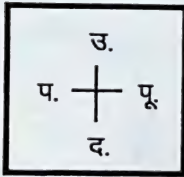
वर्गाकार प्लॉट –

वर्गाकार आकृति वाला प्लॉट, जिसकी चारों भुजाएँ एक समान और समकोण पर हों अर्थात्‌जिसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर हों और चारों कोने आपस में 90° का कोण बनाते हों, आवास के लिए बहुत शुभ प्लॉट माना जाता है। इसे हम सर्वोत्तम प्लॉट कह सकते हैं।

आयताकार प्लॉट –

ऐसा प्लॉट जिसकी आमने–सामने की भुजाएँ समान हों लेकिन लम्बाई और चौड़ाई में कुछ अन्तर हो तथा चारों कोने 90° का कोण बनाते हों, आवास के लिए बहुत अच्छा प्लॉट माना जाता है। यदि लम्बाई और चौड़ाई में 1:2 का अनुपात हो तो ऐसा आयताकार प्लॉट बहुत ही अच्छा माना जाता है।
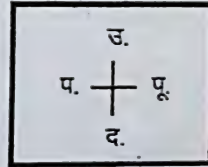
आयताकार प्लॉट में दिशा के आधार पर दो प्रकार के प्लॉट माने जाते हैं – चन्द्रभेदी और सूर्यभेदी। चन्द्रभेदी प्लॉट उसे कहा जाता है जिसकी लम्बाई उत्तर से दक्षिण की ओर हो तथा सूर्यभेदी प्लॉट उसे कहा जाता है जिसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर हो।

त्रिभुजाकार प्लॉट –

ऐसा प्लॉट जिसकी केवल तीन भुजाएँ तथा तीन कोने हों उसे त्रिभुजाकार प्लॉट कहा जाता है। आवास की दृष्टि से ऐसे प्लॉट को शुद्ध नहीं माना जाता।
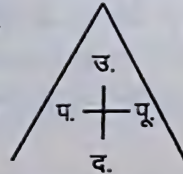
वृत्ताकार प्लॉट –

वृत्ताकार प्लॉट की आकृति गोल होती है। ऐसे प्लॉट को बड़ा शुभ माना जाता है बशर्ते कि इसमें जो भवन बनाया जाता है वह भी वृत्ताकार ही हो। एक वृत्ताकार प्लॉट के अन्दर वर्गाकार या आयताकार भवन का निर्माण नहीं करना चाहिए।

अष्टकोणीय प्लॉट –

ऐसा प्लॉट जिसके आठ कोण तथा आठ भुजाएँ हों, आवास अथवा व्यापार किसी भी दृष्टि से शुभ नहीं माना जाता। अतः ऐसे प्लॉट को न खरीदना ही अच्छा है।

बहुभुज प्लॉट –

ऐसा प्लॉट, जो न तो पूरी तरह से गोलाकार हो और न ही वर्गाकार अथवा आयताकार हो, और न ही इसे हम अष्टकोणिक कह सकते हों अर्थात् जिसकी चार से ज्यादा भुजाएँ हो लेकिन सभी छोटी–बड़ी हों, ऐसे प्लॉट को बहुभुजी प्लॉट कहा जाता है। ऐसा प्लॉट, विशेषकर आठ असमान भुजाओं वाला प्लॉट वास्तु की दृष्टि से त्याज्य है, यह व्यक्ति के धन का नाश कर सकता है। अतः ऐसे प्लॉट को न खरीदने में ही भलाई है।

असम आकृति वाला प्लॉट –

ऐसा प्लॉट जो बड़ी बेड़ौल आकृति के हों, (जिनकी कुछ आकृतियाँ यहाँ दी जा रही है) प्रायः देखने में नहीं आते हैं। ऐसे प्लॉट को आवास के लिए खरीदना नहीं चाहिए। यदि कोई मजबूरी हो तो ऐसे में किसी वास्तु विशेषज्ञ की सेवाएँ प्राप्त करके भूमि का यथायोग्य उपचार करना चाहिए ताकि वास्तु दोष का प्रभाव कम हो सके।

ड्रम आकार का प्लॉट
एल आकार का प्लॉट
टी आकार का प्लॉट
एच आकार का प्लॉट
अर्ध चन्द्राकार प्लॉट
हीरे की आकृति का प्लॉट
बाल्टीनुमा प्लॉट
बर्तनाकार प्लॉट
अण्डाकार प्लॉट
मन्दिरनुमा प्लॉट
अर्धवृताकार प्लॉट
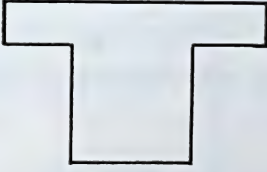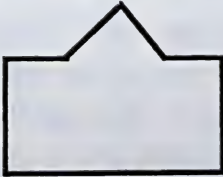
दीर्घ (बढ़े हुए) कोनों वाले प्लॉट

PLOT WITH AN EXTENDED CORNER

प्रायः ऐसे प्लॉट देखने में आते हैं जिनका कोई एक कोना बाहर की ओर निकला होता है, ऐसे प्लॉट को दीर्घ कोने वाला प्लॉट कहा जा सकता है। अलग—अलग दिशा में प्लॉट के बाहर निकले हुए कोने का प्रभाव अलग होता है। यहाँ हम ऐसी ही कुछ स्थितियों पर विचार करेगें।
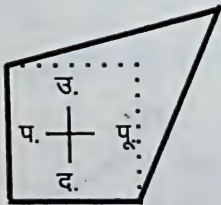
ऐसा प्लॉट जिसका कोना ईशान (उत्तर—पूर्व) की ओर निकला हो, निवास की दृष्टि से शुभ होता है। इसी प्रकार उत्तर तथा पूर्व में बढ़े हुए कोने वाला प्लॉट को भी शुभ माना जाता है। (देखें बृहत्त संहिता अध्याय 53 श्लोक संख्या 114)
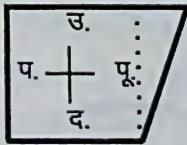
प्लॉट के कोने का उत्तर—पूर्व में पूर्व की ओर अधिक बढ़ा होना भी शुभ माना जाता है।
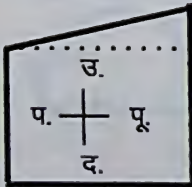
यदि उत्तर—पूर्व में प्लॉट का कोना उत्तर की ओर निकला हो तो यह भी वास्तु की दृष्टि से शुभ ही है। ऐसा प्लॉट, जिसके दक्षिण—पश्चिम तथा दक्षिण—पूर्व के कोने ठीक 90° का कोण बनाते हों, लेकिन उत्तर—पूर्व का कोण 90° से कम हो तथा उत्तर पश्चिम का कोण 90° से अधिक हो, ऐसा प्लॉट शुभ माना जाता है।
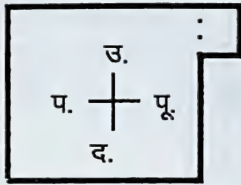
कभी–कभी प्लॉट में किसी कोने की अपेक्षा एक छोटा सा आयताकार अथवा वर्गाकार भाग बाहर की ओर निकला होता है, ऐसे प्लॉट भी भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रभाव देते हैं। प्लॉट का ऐसा बढ़ाव यदि उत्तर–पूर्व कोने में पूर्व अथवा उत्तर की ओर हो तो वह प्लॉट अच्छा ही होता है।
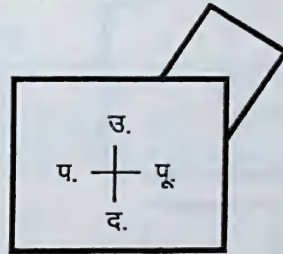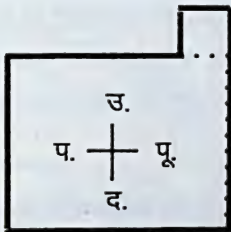
ऐसा प्लॉट जिसका बढ़ा हुआ भाग दक्षिण–पश्चिम अथवा उत्तर–पश्चिम में हो या दक्षिण–पूर्व में हो प्रायः शुभ प्रभावदायक नहीं होते।
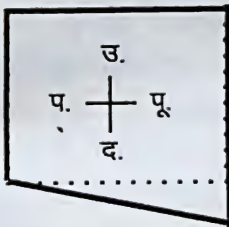
ऐसा प्लॉट जिसका कोना दक्षिण में पूर्व की ओर निकला हुआ हो, निवास की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता। इसमें आवास करने वाले व्यक्ति प्रायः चिन्ता एवं भय से ग्रस्त रहते हैं। हमारी सलाह यह है कि इस बढ़ी हुई भूमि को त्यागकर अपने प्लॉट में सीधा ही रखना चाहिए।
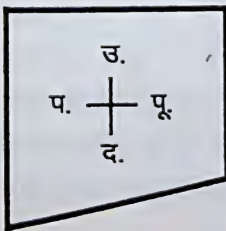
ऐसा प्लॉट जिसका बढ़ा हुआ कोना दक्षिण–पश्चिम में हो, एक अच्छा प्लॉट नहीं माना जाता। इसमें रहने वाले परिवार कलह और चिन्ता से ग्रस्त रहते हैं।
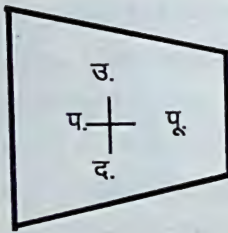
ऐसा प्लॉट जिसका दक्षिण—पूर्व तथा उत्तर—पूर्व के कोण 90° से अधिक हों तथा दक्षिण—पश्चिम और उत्तर—पश्चिम के कोण 90° से कम हों आवास की दृष्टि से शुभ माना जाता है।
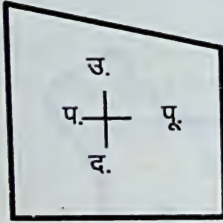
ऐसा प्लॉट जिसका कोना उत्तर—पश्चिम में निकला हुआ हो, आवास की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता, यह शत्रुता तथा पाप वृत्ति को बढ़ावा देता है। ये दोनों चीजें व्यक्ति का नाश कर डालती है।
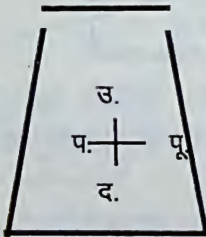
ऐसा प्लॉट जिसका कोई भी कोण 90° का न हो अपेन स्वामी के धन का नाश कर सकता है और उसे अनेक प्रकार के कानूनी झंझटों में फंसाने का कारक बन सकता हैं।
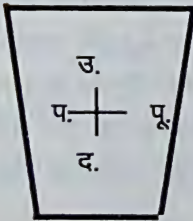
जिस प्लॉट के उत्तर—पूर्व तथा उत्तर—पश्चिम के कोने 90° से कम हों, ऐसे घर में धन का बहाव निरन्तर बना रहता है अर्थात् ऐसे घर में रहने वाले लोग खूब धन कमाते हैं, लेकिन उनका धन जल्दी ही खर्च भी हो जाता है। ऐसे घर में लक्ष्मी का ठहंराव नहीं होता।
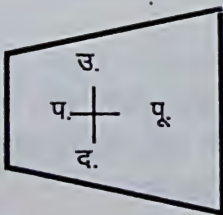
यदि किसी प्लॉट के उत्तर—पूर्व तथा दक्षिण—पूर्व के कोने 90° से कम हो तथा दक्षिण—पश्चिम और उत्तर—पश्चिम के कोने 90° से अधिक हों, ऐसे घर में रहने वाले लोगों की आय और खर्च दोनों ही बहुत ज्यादा होते हैं।

गौमुखी तथा शेरमुखी प्लॉट –

गौमुखी प्लॉट

शेरमुखी प्लॉट

ऐसा प्लॉट जिसका सामने का (गली या सड़क की ओर का) भाग कम चौड़ा किन्तु पीछे वाला भाग ज्यादा खुला हो, गौमुखी प्लॉट कहलाता है।
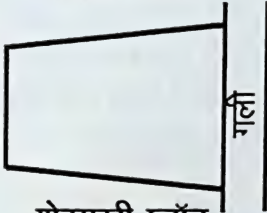
जिस प्लॉट का सामने का भाग ज्यादा चौड़ा, किन्तु पीछे वाला भाग कम चौड़ा हो उसे शेरमुखी प्लॉट कहा जाता है।

प्रायः गौमुखी प्लॉटों को शुभ और शेरमुखी प्लॉटों को अशुभ माना जाता है, लेकिन सभी गौमुखी प्लॉट शुभ नहीं होते और न ही सभी शेरमुखी प्लॉट अशुभ होते हैं।

जिन गौमुखी या शेरमुखी प्लॉटों का ईशान कोन बढ़ा हुआ हो, वे शुभ होते हैं।
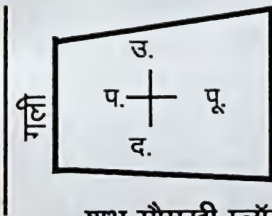
शुभ गौमुखी प्लॉट
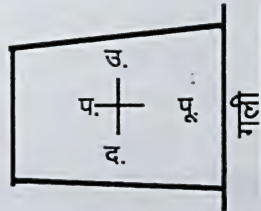
शुभ शेरमुखी प्लॉट

गौमुखी प्लॉट निवास की दृष्टि से अच्छा होता है जबकि शेरमुखी प्लॉट व्यापार में शुभ फलदायी होता है।

❈❈❈❈

वास्तु के सिद्धान्तों की अनुपालना हमें प्रकृति के निकट रहकर उसके साथ तालमेल बिठाना सिखाती है। वास्तुशास्त्र एक प्राकृतिक पद्धति है – बेहतर जीवन के लिए।

अनुपमा गुप्ता
गृहिणि

कटे हुए कोनों वाले प्लॉट

CUT OFF CORNORS OF PLOT

जिस प्रकार किसी एक दिशा में बढ़े हुए कोनों वाले प्लॉट अपने स्वामी के भाग्य को प्रभावित करते है उसी प्रकार जिस प्लॉट के कोने कटे हुए होते है उस पर बनाए जाने वाले भवन में निवास करने वाले लोगों का भाग्य भी प्लॉट की इस विशेषता से प्रभावित होता है। इस विषय में बृहत्त संहिता के अध्याय 53 के श्लोक संख्या 65-66 में वर्गाकार तथा आयताकार प्लॉट को ही निवास के लिए श्रेष्ठ बताते हुए कहा गया है—

दक्षिणभुजेन हीने वास्तुनरेऽर्थक्षयोअङ्गनादोषाः ।
वामेअर्थधान्य हानिं शिरसि गुणैर्हीयते सर्वैः ।।
स्त्रीदोषाः सुत मरणं प्रेष्यत्वं चापि चरणवैकल्ये ।
अविकलपुरुषे वसतां मानार्थयुतानि सौख्यानि ।।

इसका अर्थ है —

जिस भूमि पर हम आवास करते हैं यदि उसके अधिष्ठाता 'वास्तु नर' का दायां बाजू नहीं है (अर्थात प्लॉट का दायां कोना कटा हुआ है) तो इसके स्वामी को धन को अभाव रहेगा और उसे पत्नी की ओर से शोक से ग्रस्त होना पड़ेगा। यदि 'वास्तु नर' की बायीं बाजू कटी हुई है (अर्थात प्लॉट का बायां कोना कटा हुआ है) तो इसके स्वामी को धन तथा धान्य (भोजन सामग्री) से वंचित होना पड़ सकता है। यदि 'वास्तु नर' का सिर कटा हुआ है (अर्थात प्लॉट का उत्तर—पूर्वी कोना कटा हुआ है) तो इसके स्वामी को मान—मर्यादा का विनाश हो जाएगा। वह व्यसनों का शिकार होकर गुणों से वंचित हो जाएगा। यदि 'वास्तु नर' के पैर कटे हुए हो (अर्थात प्लॉट का दक्षिण—पश्चिमी कोना कटा हुआ हैं) तो इसके स्वामी को पुत्र—शोक से पीड़ित होना पड़ सकता है। वह स्वयं किसी भयंकर रोग का शिकार हो सकता है। तथा पत्नी

की ओर से उसे अनेक समस्याओं को झेलना पड़ सकता है। दूसरी ओर यदि 'वास्तु नर' के सभी अंग अपनी श्रेष्ठ अवस्था में है (अर्थात प्लॉट आयताकार अथवा वर्गाकार है) तो इसके स्वामी को सुख–सम्पदा खुशी और मान–प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

जिस प्लॉट का ईशान (उत्तर–पूर्व) बाधित या कटा हुआ हो ऐसे प्लॉट को कभी न खरीदें। यदि ऐसे प्लॉट पर मकान बनाया जाया तो इसमें निवास करने वाले लोगों की प्रगति रुक जाती है तथा वे बीमारी धन नाश तथा पारिवारिक कलह से भी दुखी रहते हैं।
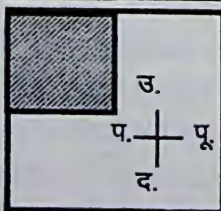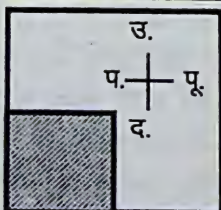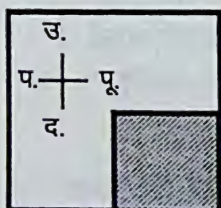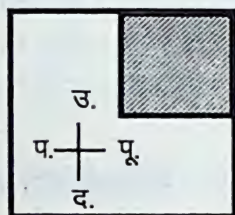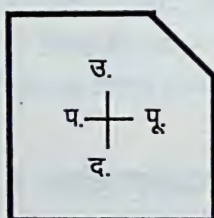
जिस प्लॉट का आग्नेय कोण (दक्षिण–पूर्व) कटा हुआ हो उसे भी निवास की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता क्योंकि इसमें निवास करने पर व्यक्ति निर्धनता तथा रोग से पीड़ित रहता है। ऐसे घर में प्रायः पति–पत्नी के बीच मन–मुटाव बना रहता है।

नैऋत्य कोण (दक्षिण–पश्चिम) के कटे होने पर प्लॉट के स्वामी को पत्नी के स्वास्थ्य को लेकर दुखी होना पड़ता है। ऐसे घर में निवास करने पर व्यक्ति स्वयं भी शारीरिक अथवा मानसिक रोगों से पीड़ित हो सकता है।

उ.
प. पू.
द.

जिस प्लॉट का ईशान उत्तर–पश्चिम कटा हो ऐसे प्लॉट पर घर बनाना बीमारी, शत्रुता, चोरी तथा मृत्यु जैसे आघातों को निमंत्रण देने के समान है।

एक वास्तु अध्ययन (A VAASTU STUDY) –

वास्तुदोष व श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या

भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण जानी जाती थी। उनका निवास स्थान 1, सफदरगंज रोड, नई दिल्ली; जिसे आजकल उनकी स्मृति में स्मारक का रूप दे दिया गया है, इसकी वास्तु–स्थिति को जानना पाठकों के लिए रुचिकर होगा।

1, सफदरगंज रोड वास्तु–शास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों अनुरुप ही बना हुआ है और शायद यही कारण है कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने इसे अपने निवास के लिए चुना। और वे जितना समय इसमें रहीं, निरन्तर सफलताएँ प्राप्त करती रही। और उनकी गिनती विश्व के जाने–माने राजनीतिज्ञों में होती रही। इस भवन के दक्षिण में S.P.G. के अधिकारियों के बहुमंजिले आवास हैं। इसके पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर में सड़कें हैं, लेकिन दक्षिण की ओर सड़क नहीं है। इस प्रकार नैर्ऋत्य (दक्षिण) के भारी होने के कारण श्रीमती गाँधी ने अपने जीवन में बहुत तरक्की की।

इस प्लॉट पर भवन का निर्माण दक्षिण–पश्चिम में हुआ है तथा इसका ईशान (उत्तर–पूर्व) पूरी तरह से खुला है। प्लॉट के उत्तर–पूर्व में एक छोटा सा जलाशय है जिसमें कमल के फूल खिले रहते हैं।

भवन का वायुव्य (उत्तर–पश्चिम) भी पर्याप्त खुला है। मुख्य भवन चारदीवारी से भीतर् की ओर होने के कारण मुख्य भवन के चारों ओर खुला स्थान है, लेकिन उत्तर–पूर्व में दक्षिण–पश्चिम की अपेक्षा अधिक खुला स्थान है, जो पूर्णतयः वास्तु–शास्त्र. के अनुरूप है। शयनकक्ष तथा अध्ययनकक्ष (लाईब्रेरी) दक्षिण–पश्चिमी कोने में स्थित है, जो कि वास्तु–शास्त्र के अनुरूप ही है।

इतने सब सद्गुण होने पर भी इस भवन में एक वास्तुदोष है जिस ओर आसानी से ध्यान नहीं दिया जा पाता। उत्तर तथा पश्चिम से आने वाली सड़कें इस प्लॉट के कोने पर मिलती हैं। ट्रैफिक की सुविधा के लिए यहाँ पर एक गोल चक्कर (round about) बनाया गया है जिसके कारण इस प्लॉट का वायुव्य कोण (उत्तर–पश्चिम) कट गया है। अर्थात यह कोना भीतर की ओर कटा हुआ है, जो वास्तु की दृष्टि से बहुत ही अशुभ माना जाता है। जिस प्लॉट का वायुव्य कटा हुआ वास्तु–शास्त्र के अनुसार उसमें निवास करने वालों को अवांछित एवं अकारण शत्रुता का शिकार होना पड़ सकता है। यहाँ तक कि प्लॉट का स्वामी इस शत्रुता के कारण किसी दुर्घटना अथवा शत्रुता के कारण मृत्यु का शिकार भी हो सकता है। इस तथ्य से हम सभी परिचित हैं कि श्रीमती गाँधी की हत्या स्वयं उनके सुरक्षाकर्मियों के द्वारा ही हुई थी जो सम्भवतः इसी वास्तुदोष का परिणाम थी।

✠✠✠✠

55 प्लॉट के आकार का शुद्धिकरण

CORNOR OF DIMENSIONS OF PLOT

चार भुजाओं वाले प्लॉट –

हम पहले भी इस बात पर चर्चा कर चुके हैं कि प्लॉट के सही आकार का होना बहुत आवश्यक है। इस पर व्यक्ति की सुख–समृद्धि, स्वास्थ्य और अन्य कई चीजें निर्भर करती हैं।

यहाँ कई प्लॉटों की आकृतियाँ दी गई हैं। अच्छे वास्तु प्रभाव के लिए इनके छायांकित भागों को बाड़ आदि लगाकर मुख्य भवन से अलग कर देना चाहिए। अगर यह भूमि बेची जा सके तो और भी अच्छा है नहीं तो शुभ वास्तु–प्रभाव के लिए इसको त्याग देने में ही भलाई है।
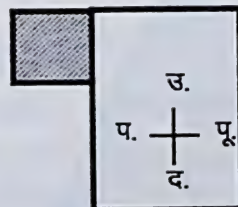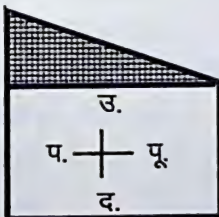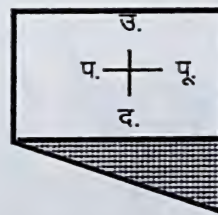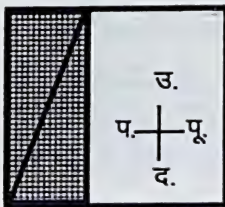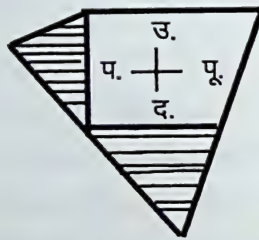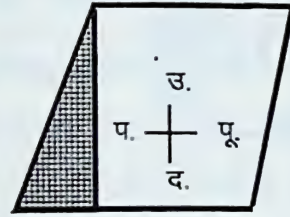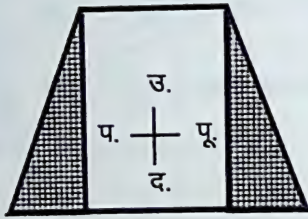
तीन भुजाओं वाले प्लॉट –

(i) त्रिभुजीय प्लॉट जिसके ईशान (उत्तर–पूर्व) में सड़क हो, उसे चित्र में दिखाये गए ढंग से बड़ी आसानी से वर्गाकार या आयताकार आकार में बदला जा सकता है और इसमें ईशान कोण के बढ़े होने के कारण शुभ वास्तु–प्रभाव को प्राप्त किया जा सकता है। बची हुई भूमि को बेचने या त्याग देने में ही लाभ है।
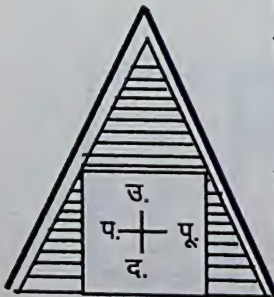
(ii) ऐसा त्रिभुजीय प्लॉट जिसके ईशान कोण को बढ़ाना सम्भव न हो, उसे दिखाये गए ढंग से आयताकार या वर्गाकार में बदला जा सकता है।

बहु—भुजीय प्लॉट —
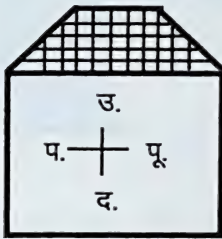
जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, बढ़ी हुई भूमि को भवन से अलग करके बेच दें या उसको बाड़ आदि लगाकर अलग कर दें।

पंखे के आकार का प्लॉट —
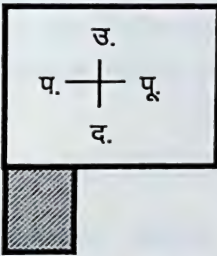
चित्र में दिखाये गए प्लॉट को पंखे के आकार का प्लॉट कहते हैं, इसके छायांकित भाग को बाढ़ या चारदीवारी द्वारा अलग करके बेच देना चाहिए या उसका त्याग कर देना चाहिए।

कटे हुए कोने वाले प्लॉट —
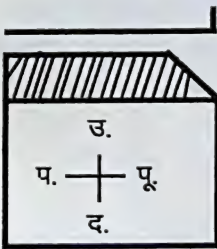
जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, इस प्लॉट का ईशान कटा हुआ है। ईशान के कटे होने के अशुभ प्रभावों का वर्णन हम सम्बन्धित अध्याय में कर चुके हैं अतः इसके छायांकित भाग को मुख्य प्लॉट से अलग कर देने में ही भलाई है।

दक्षिण—पश्चिम या दक्षिण—पूर्व में बढ़े हुए प्लॉट —

जैसा कि चित्र में दिखाया गया है, ऐसे प्लॉट के छायांकित भाग को मुख्य भूमि से अलग करके बेच देना चाहिए अथवा इस पर बगीचा या किचन गार्डन इत्यादि बना लेना चाहिए।

56 प्लॉट से लगते हुए रास्ते

ROADS AROUND THE PLOT

चार रास्ते –
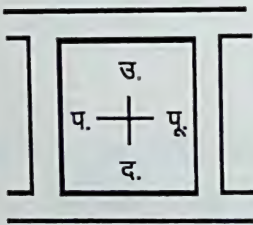
(i) जिस प्लॉट के चारों ओर सड़क या गली लगती हो, उसे 'सुमंगल' कहा जाता है और वास्तु की दृष्टि से ऐसा प्लॉट अति उत्तम होता है, इसमें निवास करने वालों को सुख, स्वास्थ्य, धन–सम्पदा तथा मानसिक शान्ति की प्राप्ति होती है।
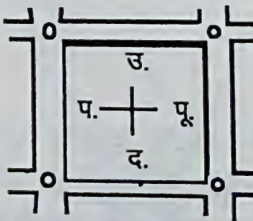
(ii) ऐसा प्लॉट जिसके चारों ओर सड़क या गलियाँ तो हों ही और चारों कोनों पर चौराहे (Crossing) हों ऐसा प्लॉट विलक्षण होता है, बहुमंजिली ईमारत बनाने के ख्याल से यह भूमि अति उत्तम है।

तीन रास्ते –
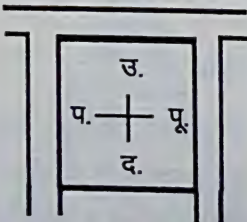
(i) जिस प्लॉट के तीन ओर सड़क या गली लगती हो, और दक्षिण की ओर कोई गली न लगती हो, वास्तु की दृष्टि से ऐसा प्लॉट अति उत्तम होता है। यदि इस पर भवन निर्माण किया जाए तो उसका मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर दिशा में रखना चाहिए।
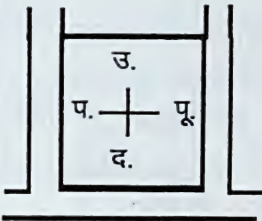
(ii) जिस प्लॉट के तीन ओर सड़क गली लगती हो, और उत्तर की ओर कोई रास्ता न हो ऐसा प्लॉट व्यावसायिक गतिविधियों के लिए शुभ फलदायक होता है।
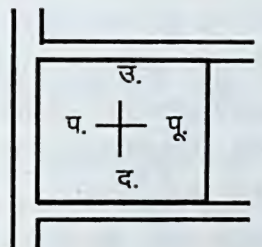
(iii) जिस प्लॉट के तीन ओर सड़क या गली लगती हो, लेकिन पूर्व की ओर रास्ता न हो ऐसा प्लॉट भी वास्तु की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। यह अपने स्वामी को धन तथा शारीरिक सुख प्रदान करता है।
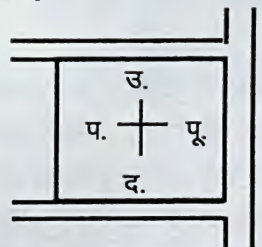
(iv) जिस प्लॉट के तीन ओर सड़क या गली लगती हो, लेकिन पश्चिम की ओर रास्ता न हो वह प्लॉट भी वास्तु की दृष्टि से अच्छा माना जाता है। लेकिन इसका मुख्य द्वार उत्तर की ओर होना चाहिए। अपने स्वामी को सुख प्रदान करता है।
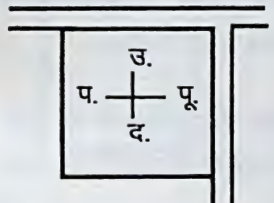
दो रास्ते –

(i) जिस प्लॉट के उत्तर तथा पूर्व में सड़क या गली हो, वह वास्तु की दृष्टि से उत्तम माना जाता है और अपने स्वामी को धन का सुख देता है।
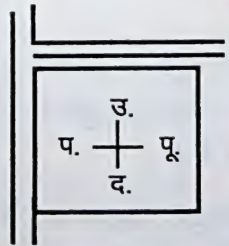
(ii) जिस प्लॉट के उत्तर तथा पश्चिम में गली या सड़क हो, ऐसे प्लॉट पर भवन बनाकर रहने से गृहस्वामी को संतान की ओर से सुख तथा शांति मिलती है। इस घर में बच्चे भी बहुत प्रसन्न रहते हैं।
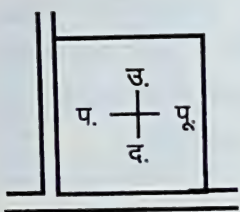
(iii) जिस प्लॉट के दक्षिण तथा पश्चिम में गली या सड़क हो ऐसा प्लॉट साधारण फलदायक होता है। यदि प्रवेश द्वार पश्चिम की ओर बनाया जाये तो ऐसे प्लॉट से कुछ बेहतर फल की प्राप्ति हो सकती है।
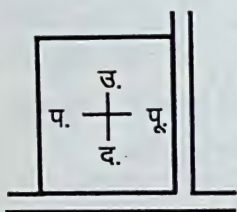
(iv) जिस प्लॉट के पूर्व तथा दक्षिण में गली या सड़क हो ऐसा प्लॉट साधारण फलदायक होता है। यदि प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में बनाया जाये तो ऐसे प्लॉट से बेहतर फल की प्राप्ति हो सकती है। भवन का प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर रखना वास्तु की दृष्टि से अच्छा नहीं है।
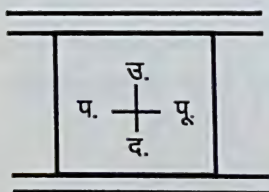
(v) जिस प्लॉट के दक्षिण तथा उत्तर में गली या सड़क हो ऐसा प्लॉट शुभ फलदायक होता है। ऐसे प्लॉट में प्रवेश द्वार उत्तर की ओर बनाया जाना चाहिए। दक्षिण दिशा के सम्बंध में वास्तुशास्त्र के कुछ निर्देश हैं जिन्हें हम यहाँ दोहराना चाहेंगे।

(क) दो गलियों वाले घर से लगती हुई सड़क जो दक्षिण में हो उसे प्रयोग में नहीं लाना चाहिए यदि कोई मजबूरी भी हो तो भी उसे कम–से–कम प्रयोग करना चाहिए।

(ख) दक्षिण दिशा वाली गली/सड़क और प्रयोग में लाना व्यापार से जुड़े लोगों के लिए शुभ फलदायक होता है लेकिन यह शुभ फल प्रभाव अन्य कई तथ्यों द्वारा प्रभावित होता है।

(ग) यदि किसी मजबूरी के कारण दक्षिण की ओर द्वार रखना जरूरी हो तो ऐसे में यह द्वार प्लॉट के बीचों–बीच बनाया जाये।
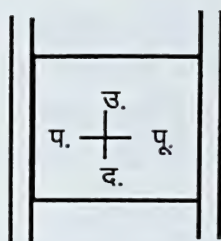
(vi) ऐसा प्लॉट जिसके पूर्व तथा पश्चिम में गली या सड़क हो ऐसा प्लॉट शुभ फलदायक होता है। ऐसे प्लॉट में प्रवेश द्वार पूर्व की ओर ही बनाया जाना चाहिए।

एक रास्ते वाले प्लॉट –
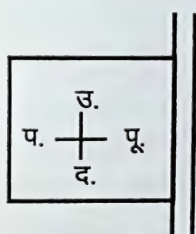
(i) जिस प्लॉट के पूर्व में रास्ता हो वह प्लॉट शुभ फलदायक होता है और अपने स्वामी को धन तथा स्वास्थ्य का सुख देता है।
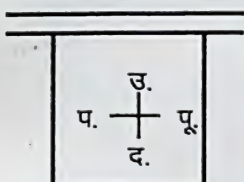
(ii) जिस प्लॉट के उत्तर में गली या सड़क हो ऐसे प्लॉट पर भवन बनाकर रहने से गृहस्वामी को अच्छा स्वास्थ्य, समृद्धि, संतान की ओर से सुख तथा शांति मिलती है। इस घर में रहने से प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है।
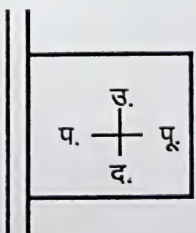
(iii) जिस प्लॉट के पश्चिम में ही रास्ता हो, ऐसे प्लॉट में प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि तथा पारिवारिक सुख की प्राप्ति होती है।
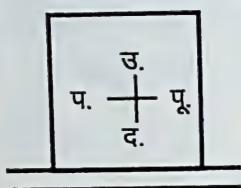
(iv) जिस प्लॉट के दक्षिण में ही एक मार्ग हो, ऐसे प्लॉट पर रहना उन लोगों के लिए शुभ फलदायक होता है जो किसी व्यापार या व्यवसाय से जुड़े हों। विशेषतः उनका व्यवसाय स्त्रियों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली व्यवसाय (जेवरात, सौंदर्य—सामग्री तथा वस्त्र आदि) से जुड़ा हुआ हो। ऐसे प्लॉट पर स्त्रियों द्वारा संचालित संगठन एवं व्यवसाय भी अधिक प्रगति करते हैं।

✠✠✠✠

एक वास्तु अध्ययन (A VAASTU STUDY) –

एस्कोटर्स ह्रदय चिकित्सा संस्थान

एस्कोटर्स ह्रदय चिकित्सा संस्थान, नई दिल्ली भारत के जाने माने चिकित्सा संस्थानों में से है। कुछ समय में इसने बहुत प्रगति की है। यद्यपि इसमें उपचार का खर्च काफी अधिक है, फिर भी रोगी यहाँ से बहुत सन्तुष्ट होकर लौटते हैं। इस संस्थान के इतना अधिक प्रगति कर लेने तथा रोगियों को अमूल्य सेवाएँ प्रदान करके उन्हें सन्तुष्ट कर पाने के पीछे एक रहस्य यह भी है कि इस संस्थान के निर्माण में वास्तु–शास्त्र के सभी महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों का पालन हुआ है। इस संस्थान का प्रवेश द्वार उत्तर–पूर्व में है, जो अपने–आप में ही बहुत शुभ है और फिर प्रवेश द्वार के कुछ भीतर फव्वारे लगाये हैं। इस प्रकार ईशान कोण पर प्रवेश द्वार होने, वहाँ खुला स्थान होने व जल तत्त्व के निरन्तर बहाव के कारण तथा मुख्य भवन प्लॉट के दक्षिण–पश्चिम में स्थित होने के कारण यह संस्थान वास्तु की दृष्टि से शुभ प्रभावदायक है।

संस्थान के उत्तर तथा पश्चिम में मुख्य सड़कें है जो वास्तु की दृष्टि से एक अन्य शुभ लक्षण है।

पहुँच–मार्ग के दोष

APPROACH AND FAULTS

कुछ प्लॉट ऐसे होते हैं, जो किसी मुख्य सड़क या गली में न होकर कुछ भीतर की ओर अथवा हटकर होते हैं, ऐसे प्लॉट तक पहुँचने के लिए एक छोटा–सा रास्ता छोड़ा जाता है, जिसे हम पहुँच–मार्ग (Approach roads) कहते हैं। यह रास्ता सीधा प्लॉट को छूता है। पहुँच मार्ग की विभिन्न स्थितियों पर भी वास्तु–शास्त्र में विचार किया जाता है। इस अध्याय में हम पहुँच मार्ग के दोष पर विचार करेंगे।

दोषमुक्त पहुँच–मार्ग
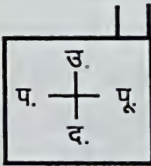
(i) जिस प्लॉट को पहुँच–मार्ग उत्तर–पूर्व में उत्तर की ओर कोने पर छूता हो, ऐसा प्लॉट वास्तु दोष से मुक्त होता है।

(ii) इसी प्रकार उत्तर–पूर्व में पूर्वी कोने पर छूने वाला पहुँच–मार्ग भी दोष से मुक्त होता है।
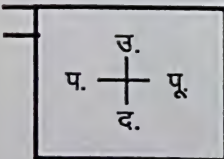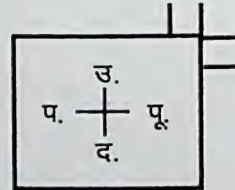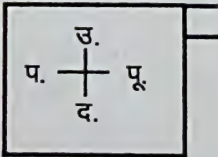
(iii) जिस प्लॉट को पहुँच–मार्ग उत्तर–पश्चिम में पश्चिम की ओर से छूता हो, ऐसा प्लॉट भी बुरा नहीं माना जा सकता।
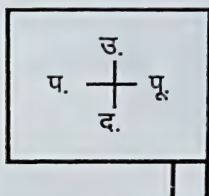
(iv) जो पहुँच—मार्ग दक्षिण की ओर से दक्षिण—पूर्वी कोने पर प्लॉट को छूता हो, उसे भी वास्तु के दोष से मुक्त माना जाता है।

दोषयुक्त पहुँच—मार्ग
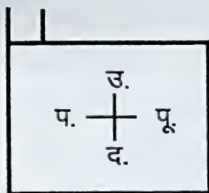
(i) ऐसा पहुँच—मार्ग जो प्लॉट के उत्तर की ओर समाप्त होता है, वास्तु की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जाता।
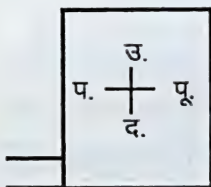
(ii) प्लॉट के पश्चिम में आने वाला पहुँच—मार्ग भी वास्तु की दृष्टि से शुभ फलदायक नहीं होता है।
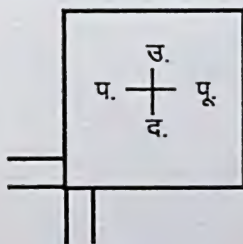
(iii) जिस प्लॉट को दो पहुँच—मार्ग दक्षिण तथा पश्चिम की ओर से छूते हैं, वह प्लॉट भी वास्तु दोष का शिकार होता है। जिस प्लॉट का मुख दक्षिण में हो और दक्षिण—पश्चिम से आकर कोई सड़क वहाँ समाप्त होती हो वह उस स्थिति में विशेषतः अशुभ फलदायक होता है। यदि प्लॉट के उस कोने में अध्ययन कक्ष, लाईब्रेरी या बैडरूम हो और प्रायः वहाँ का एकान्त (privacy) भंग होता रहता हो। ऐसा प्लॉट शुभ नहीं होता।
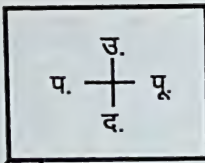
(iv) दक्षिण की ओर से आकर छूने वाला पहुँच मार्ग भी शुभ फलदायक नहीं होता।
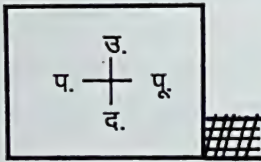
(v) प्लॉट के दक्षिण—पूर्व में पूर्वी कोने पर आकर समाप्त होने वाला पहुँच मार्ग वास्तु की दृष्टि से अशुभ फलदायक होता है। विशेषतः यदि इस कोने पर रसोईघर बनाया जायें। यदि यहाँ पर वाहन (कार इत्यादि) की पार्किंग के लिए शेड बनाया जाये तो इसके अशुभ प्रभाव समाप्त हो सकता है।
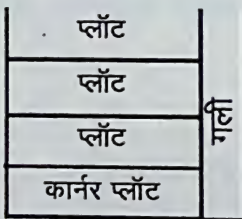
(vi) ऐसा प्लॉट जो वैसे तो गली या सड़क पर स्थित हो लेकिन चित्र में दर्शाये गए ढंग से वहाँ गली समाप्त होती हो अर्थात वह सड़क गली के आखिरी कोने (dead end) पर हो, वह प्लॉट भी वास्तु दोष का शिकार होता है अतः ऐसे प्लॉट में न रहना ही हित कर है।

✠✠✠✠

खण्ड — VIII

विविध

58 फ्लैट्स
FLATS
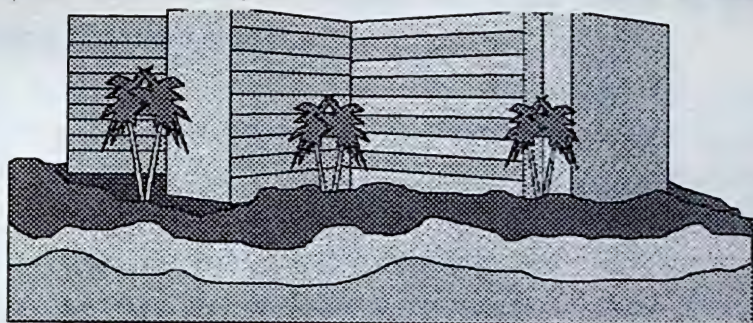
फ्लैट्स : आज की जरूरत –

तेजी से बदलते हुए समय और समाज की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आजकल फ्लैट्स का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। बड़ी–बड़ी बिल्डिंगस् को छोटे–छोटे भागों में इस प्रकार बांटा जाता है कि प्रत्येक भाग एक स्वतन्त्र इकाई होता है, जिसे फ्लैट् या अपार्टमैंट कहा जाता है। बहुमंजिली इमारतों में प्रत्येक तल पर कई छोटी–छोटी आवासीय इकाइयाँ होती हैं, जिनकी दीवारें परस्पर सांझी होती हैं। इस प्रकार एक ही बड़े प्लॉट पर बने होने के कारण वास्तु के शुभ या अशुभ प्रभाव उन फ्लैट्स में कुछ हद तक बंट जाते हैं। एक ही तल (Floor) पर बने होने के कारण प्रकृति की विभिन्न शक्तियाँ भी फ्लैट्स में रहने वाले लोगों पर मिला–जुला असर डालती हैं।

भूतल का फ्लैट्सर्वोतम –

जहाँ बहुमंजिलें फ्लैट्स हों उनमें भूतल का फ्लैट्अन्य ऊपर वाले तलों की अपेक्षा बेहतर होता है, क्योंकि भूतल का फ्लैट्एक सम्पूर्ण एवं स्वतंत्र इकाई की भांति होता है। इसमें प्रवेश और निकासी

की सुविधा तो रहती ही है, सामने की ओर खुला आंगन, पीछे का बरामदा, छोटा लॉन तथा कीचन—गार्डन की सुविधा भी उपलब्ध हो जाती है। ये सभी सुविधाएं ऊपर कें तलों पर रहने वाले लोगों को नहीं मिल पाती हैं।

वास्तु के अनुरूप फ्लैट्स का निर्माण –

इस अध्याय में हम फ्लैट्स में रहने वाले लोगों पर पड़ने वाले वास्तु—प्रभाव का अध्ययन करेगें। वास्तुशास्त्र के मूल सिद्धान्तों के अनुसार फ्लैट्स का निर्माण करना कोई कठिन कार्य नहीं है। इन बहुमंजिली इमारतों में बिल्कुल ऊपर—नीचे के फ्लैट्स में रहने वाले लोगों पर वास्तु का प्रभाव प्रायः एक—सा ही होता है; इसलिए फ्लैट्स में रहने वाले लोग एकदम नीचे या एकदम ऊपर वाले लोगों से इस विषय में अपने अनुभवों को अगर बांटते रहें तो बहुत सी सांझी समस्याओं का पता लगाया जा सकता है।

किसी फ्लैट् के निर्माण तथा ढाँचे में बदलाव करना प्रायः सम्भव ही नहीं होता, क्योंकि इससे अनेक प्रकार की अन्य समस्याएँ उठ खड़ी होती हैं। इसलिए फ्लैट्स में दरवाजों, खिड़कियों की स्थिति में कुछ परिवर्तन करने, शयन कक्ष, अध्ययन कक्ष, गैस्ट रूम तथा बालकॉनी इत्यादि की स्थिति में यथा—सम्भव बदलाव लाकर वास्तु के शुभ प्रभाव को प्राप्त किया जा सकता है। फ्लैट् के भीतर बैड्स फर्नीचर व अन्य घरेलू साजो—सामान की व्यवस्था को वास्तु के मूलभूत सिद्धान्तों के अनुसार बदलने पर शुभ प्रभावों को पाया जा सकता है।

फ्लैट्स के लिए उत्तम प्लॉट –

फ्लैट्स का निर्माण हमेशा वर्गाकार अथवा आयताकार प्लॉट पर ही करना चाहिए। इसके प्रवेश द्वार की स्थापना करते समय दिशा और स्थिति पर पूर्णतः ध्यान देना चाहिए। फ्लैट्स की सीढ़ियाँ, पानी के नल, ओवरहैड—टैंकस्, बिजली की मोटर, पार्किंग एरिया आदि की स्थिति का निर्धारण वास्तु के सिद्धान्तों के अनुरूप ही करना चाहिए।

दक्षिण तथा पश्चिम दिशा में चारदीवारी (Compound Wall) अपेक्षाकृत कुछ ऊँचा तथा भारी बनाना चाहिए और यथा–सम्भव इन दिशाओं में प्रवेश तथा निकासी का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। फ्लैट्स के निर्माण में भी वास्तु के उन्हीं सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए जो एक प्लॉट पर मकान बनाते समय ध्यान में रखे जाते हैं।

फ्लैट्स में बालकॉनी –

फ्लैट्स में बालकॉनी को दक्षिण या पश्चिम की ओर नहीं रखना चाहिए, यदि कोई मजबूरी हो तो इन दिशाओं में बनी हुई बालकॉनी को शीशे आदि से ढक देना चाहिए और जहाँ तक हो सके इनका कम प्रयोग करना चाहिए। उत्तर तथा पूर्व दिशा में बनी हुई बालकॉनी वास्तु की दृष्टि से उत्तम होती है। अतः इसे अधिक से अधिक प्रयोग में लाना चाहिए। फ्लैट्स के दरवाजे तथा खिड़कियाँ भी उत्तर तथा पूर्व की ओर रखनी चाहिए और इन्हें अधिक से अधिक समय तक खुला रखना चाहिए ताकि प्रकृति की शुभकारी शक्तियाँ व ऊर्जा फ्लैट् के भीतर आ सकें।

फ्लैट् के भीतर वास्तु–व्यवस्था –

फ्लैट् के भीतर भारी घरेलू सामान को दक्षिण–पश्चिम की ओर रखना चाहिए। फ्लैट् के बाहर दक्षिण और पश्चिम में ऊँचे पेड़ लगाना भी शुभ प्रभावकारी होता है।

सोते समय ध्यान रखें कि आपका सिर दक्षिण तथा पैर उत्तर की ओर हों अथवा सिर पूर्व की ओर तथा पैर पश्चिम की ओर हो।

घर के स्वामी अथवा विवाहित सदस्यों का शयनकक्ष उत्तर–पूर्व में नहीं होना चाहिए (विस्तृत विवरण के लिए सम्बन्धित अध्याय देखें)

यदि फ्लैट्स में रहने पर किसी प्रकार की मानसिक या शारीरिक कष्ट जिसका कारण समझ में न आए अथवा आर्थिक तंगी या असफलताओं को झेलना पड़ रहा हो तो इसके लिए वास्तु–दोष के निवारण का उपाय करना चाहिए, जिसके लिए किसी वास्तु–विशेषज्ञ की सलाह ली जा सकती हैं।

✠✠✠✠

अशुभ भवन अथवा भूत बंगला

UNLUCKY OR HAUNTED HOUSES
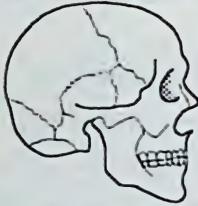
मकान का शुभ व अशुभ प्रभाव –

एक घर इसमें रहने वाले प्राणियों के लिए शुभ या अशुभ हो सकता है।

शुभ घर वह होता है जिसमें आवास करने वाले, भले वे भी घर के मालिक हों अथवा किरायेदार, पारिवारिक सुख, प्रगति सफलताएँ सम्पदा और चहुमुंखी विकास की प्राप्ति करते हैं। एक शुभ आवास ही सुखी घर होता है। दूसरी ओर एक अशुभ आवास इसमें रहने वाले लोगों के लिए बड़ा अमंगलकारी साबित होता है। जो कोई इसमें रहता है वह अनेक प्रकार की समस्याओं से घिर जाता है; चिंताएँ उसे सताने लगती हैं और जीवन नरक के समान प्रतीत होने लगता है। व्यक्ति हर तरफ से दुःखी और परेशान रहता है जबकि परेशानी अथवा दुख का कोई प्रत्यक्ष कारण भी नज़र नहीं आता। ऐसे घर में रहने वाले लोग कभी—कभी दुर्घटनाओं का शिकार भी हो जाते हैं। हर शहर और कस्बे में दो—चार घर ऐसे मिल ही जाते हैं जो अपनी ऐसी छवि के कारण कुख्यात होते हैं और खाली रहने के कारण लोग—बाग इन्हें भूत—बंगला भी कहने लगते हैं।

जिस मकान के साथ ऐसी बदनामी जुड़ी हुई हो उसे कभी भी नहीं खरीदना चाहिए न ही उसे किराये पर लेना चाहिए। मकान को खरीदने से या किराए पर लेने से पहले उसके विषय में थोड़ी बहुत ऐसी जानकारी प्राप्त कर लेना अच्छा रहता है कि इसमें जो लोग पहले रह कर गए हैं अथवा यह मकान जिनके पास रहा है, उन्हें यह क्यों बेचना या छोड़ना पड़ा। इस मकान में रहते हुए उनका पारिवारिक जीवन,

सामाजिक प्रतिष्ठा एवं स्वास्थ्य आदि कैसे रहे। जिस मकान को आप खरीदना चाहते हैं, उसमें प्रवेश करने पर अपनी भावनाओं में उत्तार—चढ़ाव को कुछ मिनटों के लिए आंखे बंद करके भली—भांति जाचें। यदि आपकी भावनाएँ एवं विचार तरगें शुभ प्रभाव दे रही हैं तो उसे खरीदने के बारे में सोचा जा सकता है। इसके लिए आप अपने जीवन साथी, सगे—सम्बन्धी अथवा बच्चों को भी अपने सूक्ष्म अनुभवों को परखने और इनके बारे में परस्पर बातचीत करने के लिए कह सकते हैं। यदि आपकी सूक्ष्म विचार तरंगों में किसी प्रकार का अशुभ प्रभाव (भय, क्रोध, चिंता आदि) दृष्टिगोचर हों तो उस मकान के वास्तु—दोष का पता लगाएँ और किसी वास्तु विशेषज्ञ से सलाह लें। यदि इस वास्तु—दोष का निवारण आसानी से हो सकता हो तो उस मकान को खरीदना चाहिए अन्यथा उसे छोड़ देने में ही भलाई है।

मकान खरीदने से पहले –

मकान को खरीदते समय इसके इतिहास की जानकारी अवश्य प्राप्त करें। जिस मकान में किसी प्रकार की तांत्रिक क्रियाएँ की जाती रही हों अथवा जहाँ पर असामाजिक तत्त्व शरण लेते रहे हों, जहाँ पर असामाजिक गतिविधियाँ चलती रही हो, या जो मकान बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के गिर गया हो या जिस को लेकर कोर्ट में मुकदमा या लम्बा लड़ाई—झगड़ा चल रहा हो ऐसे मकान को न खरीदें। यदि मकान के बारे में ऐसा सुनने में आए कि उसमें भूत या दुष्ट आत्माएँ रहती हैं उसे न खरीदने में ही भलाई है। भले ही आप भूत—प्रेत आदि में विश्वास न करते हो लेकिन यह ध्यान रखें कि मकान जैसी चीज जीवन में बार—बार नहीं बनाई जाती। अति—उत्साह या किसी उत्तेजना के कारण आप यदि ऐसा मकान खरीद लें और बाद में उसे बेचना चाहें तो यह स्वभाविक है कि आपको बेचने में बहुत—सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जो व्यक्ति दुर्भाग्य का शिकार हो कर मकान बेच रहा हो और यदि वह उस मकान में रहने के कारण ही निर्धन हो गया हो तो ऐसे अशुभ मकान को खरीदने से बचना चाहिए। लेकिन हमारा अभिप्राय यह भी नहीं कि आप किसी अंधविश्वास का शिकार हो जाएं। जिस मकान को भूत—बंगला

कहा जा रहा है, हो सकता है वह किन्हीं शरारती लोगों द्वारा फैलाई गई अफवाह हो। जो व्यक्ति यह कह कर मकान बेच रहा हो कि इसमें रहने के कारण वह गरीब हो गया उसका व्यापार चौपट हो गया, वह खुद ही किन्हीं बुरी आदतों का शिकार हो अथवा उसने अपने व्यापार में व्यावहारिक बुद्धि से काम न लिया हो अतः ऐसे मकान में वास्तु–दोष नजर न आते हुए केवल अंधविश्वास के कारण एक अच्छे सौदे को छोड़ने में भी कोई समझदारी नहीं है।

ऐसे मकान में न रहें –

ऐसे मकान में रहना आरम्भ न करें जिसकी छत न पड़ी हो अथवा जिसके दरवाजे–खिडकियाँ न लगी हों।

यदि कोई मकान प्लॉट के उत्तर–पूर्व में बना हुआ है तो इसे खरीदने में कोई समझदारी नही है। मकान के इतिहास की जानकारी लेते हुए यदि ऐसा तथ्य आपकी नज़र में आएं कि इसमें रहने वाले दो–तीन लोग बहुत ही कम अन्तराल में (तीन–चार माह या एक वर्ष के दौरान ही) अस्वाभाविक मृत्यु (दुर्घटना या आत्महत्या) का शिकार हो गए हैं, तो निश्चित जानियें कि यह मकान अमंगलकारी है।

यदि किसी मकान में बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के दुर्गध आती है तो ऐसा मकान बच्चों के स्वास्थ्य एवं शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए अच्छा नहीं होता।

अंधविश्वास में न फंसें –

किसी छोटे–मोटे वास्तु–दोष के कारण किसी मकान को अशुभ मान लेना भी कोई बुद्धिमता नहीं है। यदि निरिक्षण करने पर आप मकान में किसी प्रकार का वास्तु–दोष पाते हैं तो इस कारण से किसी अंधविश्वास का शिकार न हों और किसी वास्तु–विशेषज्ञ की सेवाएँ प्राप्त करके उसके निवारण का उपाय करें। यदि आप चाहें तो स्वयं भी अपनी व्यवहारिक बुद्धि का प्रयोग करके हुए कुछ वास्तु–दोषों का निवारण कर सकते हैं।

✠✠✠✠

वास्तु एवं स्वप्न

VAASTU AND THE DREAMS

जिस प्रकार वास्तु का सम्बन्ध उन सूक्ष्म शक्तियों से है जो हमारे शरीर तथा मन को प्रभावित करके शुभ या अशुभ प्रभाव देती हैं उसी प्रकार स्वप्न का सम्बन्ध भी कुछ अज्ञात सूक्ष्म शक्तियों से है। यूँ तो स्वप्न एक बड़ा विशद्‌विषय है जिस पर अनके पुस्तकें लिखी गई हैं लेकिन इस अध्याय में हम मात्र यही चर्चा करेगें कि यदि स्वप्न में वास्तु से सम्बन्धित वस्तु दिखाई दे तो इसका क्या अर्थ होता है –

1. भवन –

यदि स्वप्न में आप कोई बहुमंजिली इमारत देखते हैं जिसके सामने हरा–भरा लॉन है तो यह एक शुभ स्वप्न है जो आपके जीवन में आने वाले वैभव और सम्पन्नता की ओर संकेत कर रहा है। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि शीघ्र ही आप विदेश यात्रा करेगें और या फिर अपने ही देश में किसी दूरस्थ प्रदेश में यात्रा पर जाएंगें। जिसमें आपको लाभ होगा व आप किसी नई चीज की खोज करेगें।

यदि आप किसी छोटे परन्तु नवनिर्मित भवन को देखते हैं तो इसका संकेत यह है कि आपके जीवन में कोई नई खुशी प्रवेश करने वाली है।

स्वप्न में टूटे–फूटे, उजाड़, विरान भवन के दिखाई पड़ना अशुभ संकेत है, जिसका भाव यह है कि आपको स्वास्थ्य की ओर से चिन्ता, व्यवसाय में हानि अथवा प्यार में धोखा मिलने वाला है।

2. द्वार –

यदि आप स्वप्न में कोई प्रवेश द्वार देखते हैं तो इसका अर्थ यह है.कि जिस व्यक्ति से आप अनजाने ही भय मान रहे हैं उसकी ओर से डरने का कोई कारण नहीं है। वह आपको हानि नहीं पहुँचाएगा।

यदि आप स्वप्न में ऐसा द्वार देखते हैं जो उसी घर का है जिसमें आपका बचपन बीता है तो इसका भाव यह है कि आंने वाले दिनों में आपके जीवन में अनेक खुशियाँ प्रवेश करेंगी और आपको गृहस्थ सुख भी प्राप्त होगा।

यदि आप कोई ऐसा द्वार देखते हैं जिसमें अनेक लोग प्रवेश कर रहे हैं तो इसका संकेत यह है कि आपके प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध होंगे और आपके हाथ असफलता ही लगेगी। किसानों तथा राजनीतिज्ञों के लिए इस स्वप्न का अर्थ हो सकता है कि उन्हें अपना स्थान छोड़कर कहीं और जाना पड़ सकता है। किसी लेखक के लिए इसका अर्थ यह हो सकता है कि लोग उसकी लिखी हुई पुस्तकों में वर्णित तथ्यों के प्रति शंकाएं करेंगे जिसके कारण उसकी लोकप्रियता में कमी आ सकती है।

यदि आप स्वप्न में यह देखते हैं कि दरवाजा बन्द करते समय इसकी कुण्डी टूटकर गिरती है और आपको किसी प्रकार की चोट पहुँचती है तो यह इस बात का संकेत है कि आप अपने मित्र की सलाह मानकर कोई कार्य करेंगे जिसमें आपको हानि उठानी पड़ेगी। लेकिन इसमें मित्र का कोई दोष न होगा क्योंकि उसने जानबूझकर ऐसा नहीं किया होगा।

यदि दरवाजे में ताला लगाते समय कुण्डी टूटकर गिरती है तो इसका अर्थ है कि आपको यह पता लगेगा कि आपका मित्र दुर्भाग्य का शिकार हो गया है लेकिन आप चाहकर भी उसकी मदद नहीं कर सकेगें।

यदि आप स्वप्न में दरवाजे की घण्टी की आवाज सुनते हैं तो इसका अर्थ है कि आपके व्यवसाय में शीघ्र ही कोई बहुत बड़ा लाभ होने वाला है अथवा आप अपने कार्यक्षेत्र में प्रगति करने जा रहे हैं।

✠✠✠✠

61 पिरामिड

PYRAMIDES

सात आश्चर्य –

प्रायः हम यह दावा करते हैं कि आज विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है। भ्रमवश हम यह कहने से नहीं हिचकिचाते कि आज का मनुष्य पहले से ज्यादा बुद्धिमान है। इस प्रकार हम कहीं न कहीं यह कह रहे होते हैं कि हमारे पूर्वजों का ज्ञान इतना विस्तृत नहीं था जितना कि हमारा है। लेकिन यह मात्र भ्रम है। विज्ञान के जो चमत्कार हम आज देखते हैं उनसे हमारे पूर्वज भलीभांति परिचित थे। यह बात अलग है कि हम जिसे 'विज्ञान' कह कर अपनी श्रेष्ठता का ढोल पीटते हैं, हमारे पूर्वजों के लिए वह जीवन की सहज स्थिति थी। हमारे पूर्वज प्रकृति के उन रहस्यों से भलीभांति परिचित थे, जिनसे हम आज भी अन्जान हैं। यही कारण है कि हम आज कोई अजूबा नहीं बना पा रहे हैं जबकि प्राचीन समय में संसार अपने सात आश्चर्यों के लिए चर्चित रहा है।

प्राचीन समय में जब क्रेन तथा बड़ी–बड़ी मोटरें नहीं थी तो सैकड़ों टन भारी पत्थरों को किस प्रकार उठाया जाता था! हम देखते हैं कि प्राचीन मन्दिरों, स्मारकों तथा बड़े–बड़े भवनों के शिखर पर कई–कई टन भारी पत्थर की शिलाएँ जड़ी गई हैं। ये आश्चर्य केवल जमीन पर ही नहीं पहाड़ों की चोटियों पर भी देखने को मिलता है। हम आज भी यह नहीं जान पाए हैं कि उड़ीसा में जगन्नाथपूरी के प्रसिद्ध मन्दिर की चोटी पर वह विशाल शीला जिस प्रकार पहुँचाई गई, जिसका वजन 80 से 100 टन के लगभग है। ऐसा ही आश्चर्य हमें तब होता है जब हम माऊण्ट आबू अथवा खजुराहो के मन्दिरों को देखते हैं। श्रावण–बेलगोला की पहाड़ी पर स्थित विशाल गौमतेश्वर प्रतिमा, जो हजारों टन भारी है, जिसे देखकर आज की तकनीक और वास्तु ज्ञान

मुँह बाये खड़े रह जाते हैं। दिल्ली में कुतुबमीनार परिसर में स्थित लोह—स्तम्भ को देखकर भी ऐसा ही अनुभव होता है। पिछले 500 सालों से इस लोह—स्तम्भ पर जंग नहीं लगा है इस स्तम्भ में किस धातु का प्रयोग किया गया है यह अभी तक एक रहस्य ही है। अजन्ता की गुफाओं की चित्रकारी भी प्राचीन ज्ञान—विज्ञान का मुँह बोलता प्रमाण है। आधुनिक विज्ञान अभी तक यह नहीं जान पाया कि ये रंग किस प्रकार बनाए जाते थे।

मिश्र के पिरामिड –

हमारे पूर्वजों द्वारा बनाए गए पिरामिड भी प्राचीन वास्तु का एक आश्चर्यचकित कर देने वाला कारनामा है। मिश्र में नील नदी के किनारे आज से 4000 वर्ष पूर्व इनका निर्माण हुआ। पिरामिड दुनिया के सात आश्चर्य में से एक माने जाते हैं। पिरामिड वास्तु ज्ञान का जीवन्त प्रमाण है। पिरामिड को देखकर हम अन्दाजा लगा सकते हैं कि किस प्रकार चार दीवारों के भीतर प्रकृति की अनुपम शक्ति को केन्द्रित किया जा सकता है। यदि हजारों वर्षों से इन पिरामिडों में रखे शासकों के शव खराब नहीं हुए हैं तो इसके पीछे अवश्य ही कोई प्राकृतिक (अभौतिक) शक्ति कार्यरत है अन्यथा जहाँ तक आज का विज्ञान जानता है इन शवों को सुरक्षित रखना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं है।
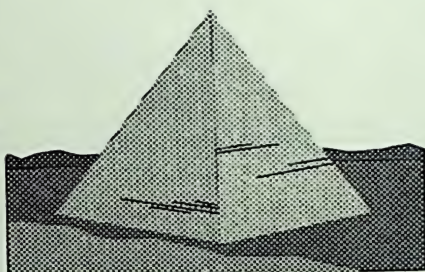
पिरामिडोलॉजी –

पिरामिड आज भी मनुष्य की जिज्ञासा का केन्द्र है। आजकल ज्ञान की एक शाखा जिसमें पिरामिड का अध्ययन किया जाता है, पिरामिडोलॉजी (Pryamidology) कहलाती है। यद्यपि इसमें मिश्र में स्थित पिरामिडों के निर्माण—काल, इतिहास इत्यादि पर ही ज्यादा जोर दिया जाता है। फिर भी इसका अपना ही एक महत्त्व है। पिरामिड से जुड़ा वास्तु का पक्ष कम उजागर हो पाता है। पिरामिड़ों को लेकर अनेक

प्रयोग किए गए हैं, लेकिन वे अधिकतर सब्जियों या मांस के परिरक्षण अथवा ब्लेड़ों की धार को बनाए रखने जैसे छोटी–छोटी बातों से सम्बन्धित हैं।

हम यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि क्या पिरामिड में मनुष्य को निरोगता प्रदान करने की शक्ति भी है! अथवा पिरामिडों के प्रयोग से वास्तु दोष का निवारण भी किया जा सकता है।

जहाँ तक पहले प्रश्न का सम्बन्ध है, इसका एक ही उत्तर है — हाँ। इसे अनेक प्रकार से, प्रयोगों के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।

Pyramid शब्द की उत्पत्ति Pyro + mid से हुई है — Pyro का अर्थ है — अग्नि और mid का अर्थ है — मध्य यानि अग्नि के मध्य। अग्नि अर्थात सूर्य। सूर्य जीवन के पांच आधारों में से एक है, जो जीवन शक्ति का दायक है। इसकी अभौतिक शक्ति को इस प्रकार ग्रहण किया जाता है कि वह एक स्थान पर केन्द्रित हो जाती है। इसी तकनीक को पिरामिडोलॉजी कहा जा सकता है।

यदि आप पिरामिड के अद्‌भुत प्रभाव का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करना चाहें तो इसके लिए आप अपने निवास स्थान अथवा उद्यान आदि में किसी खुले स्थान पर पिरामिड का निर्माण करवाकर कर सकते हैं। पिरामिड के निर्माण के लिए प्रायः 9' x 9' का स्थान पर्याप्त होता है। पिरामिड का आधार (तैयार होने के बाद) 9' से थोड़ा सा कम होना चाहिए और माध्य में इसकी ऊँचाई 6' हो।

पिरामिड कलीनिक —

पिरामिड की निरोगता—शक्ति (Healing Power) को जानकर इसका व्यवहारिक प्रयोग दक्षिण भारत में किया जा रहा है। कोयम्बटूर में अनेक प्राकृतिक चिकित्सालय है, जो पिरामिड क्लीनिक कहलाते हैं। यहाँ पर रोगियों को पिरामिड़ों में सुलाया जाता है।

पिरामिड के अध्ययन में वैज्ञानिकों ने यह पाया कि इनके निर्माण के पीछे जो ज्ञान है वह आज के विज्ञान की सीमा से अभी तक बाहर

है। ऐसे अनेक प्रयोग किए गए है जिनमें यह पाया गया है कि पिरामिड के भीतर रखा भोजन बहुत दिनों तक ताजा रहता है। यहाँ तक कि अंगूर जैसा नाजुक फल भी अपेक्षाकृत लम्बे समय तक ताजा रहता है। ऐसे ही प्रयोग दूध, पानी, काफी, फूलों के रस, शराब जैसी चीजों पर भी किए गए और परिणाम एक सा ही रहा। अतः वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हो गए कि पिरामिडों के भीतर कोई अभौतिक (प्राकृतिक) शाक्ति कार्यरत रहती है जो पदार्थों को शीघ्र नष्ट होने से बचाती है।

इस अनुभव का लाभ स्वास्थ्य सेवाओं में प्राप्त किया जा सकता है। हमारा विनम्र सुझाव है कि चिकित्सालयों में कुछ कक्ष पिरामिड के रूप में बनाये जाए और इनका निर्माण वास्तु के सिद्धांतों के अनुरूप किया जाये ताकि प्राकृतिक शाक्तियों का लाभ इस क्षेत्र में भी प्राप्त किया जा सके।

हमें विश्वास है कि यदि उपचाराधीन किसी रोगी को प्रतिदिन एक या आधे घंटे के लिए पिरामिड में लिटाया जाए तो इससे लकवा, कैंसर तथा मस्तिष्क से सम्बन्धित अनेक रोगों के उपचार में सहायता मिल सकती है। यह साधन बहुत सस्ता तथा उपयोगी सिद्ध होगा।

इस साधन को अन्य कई रोगों के उपचार के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है और हमें विश्वास है कि यह सस्ता शीघ्र लाभ देने वाला और लम्बे समय तक प्रभावकारी होगा। विशेषतः मनोरोगों के इलाज में तो यह विधि चमत्कारी परिणाम दे सकती है।

पिरामिड के विषय में जो थोड़ी—सी जानकारी हमें उपलब्ध है उसके आधार पर हम पाठकों को यह बताना चाहेंगे कि पिरामिड की पूर्व दिशा प्रकाश, दक्षिण शीतलता, पश्चिम अंधकार तथा उत्तर उष्मा को दर्शाती है।

पिरामिड वास्तु

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तु के सभी सिद्धांतो को व्यवहारिक रूप देना सम्भव है? आज की स्थितियों को देखते हुए इसका उत्तर है — नहीं। जिस प्रकार महानगरों में आबादी बढ़ रही है और

जैसे—तैसे सिर छुपाने का स्थान मिलना भी मुश्किल हो रहा है, उसे देखते हुए लगता नहीं कि वास्तु के सिद्धांतो की पूर्णतः अनुपालना करना सम्भव है। तो क्या हम प्रकृति की अद्‌भुत शक्तियों की अनुकंपा से वंचित ही रहेंगे?

ऐसे बहुत से लोग हो सकते हैं जो वास्तु के बारे में जानने के बाद इससे व्यवहार मे लाना चाहेंगे। लेकिन वे पहले ही मकान या प्लॉट खरीद चुके हैं और वास्तु के अनुसार उनके द्वारा खरीदे गए मकान या प्लॉट में किसी प्रकार का वास्तु दोष है। ऐसी स्थिति में वे लोग क्या करें? यद्यपि वास्तु दोषों के निवारण के विषय में हम पिछले अध्यायों में चर्चा कर आये हैं तो भी यहाँ हम यह चर्चा करना चाहेंगे कि वास्तु दोष के निवारण में पिरामिड की क्या भूमिका हो सकती है। वास्तु दोष के निवारण में पिरामिड यन्त्र का प्रयोग काफी प्रभावकारी सिद्ध हुआ है और आइये पिरामिड यन्त्र के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करें।

पिरामिड यन्त्र –

पिरामिड यन्त्र एक प्रकार की किट होती है, जिसमें 9 x 9 की संख्या में पिरामिड बनाये जाते हैं तथा इनकी एक—दूसरे के ऊपर तहें लगाई जाती हैं और एक किट में ऐसी 9 तहें होती हैं। इस प्रकार पिरामिड यन्त्र में 9 x 9 x 9 = 819 पिरामिड होते हैं। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है।
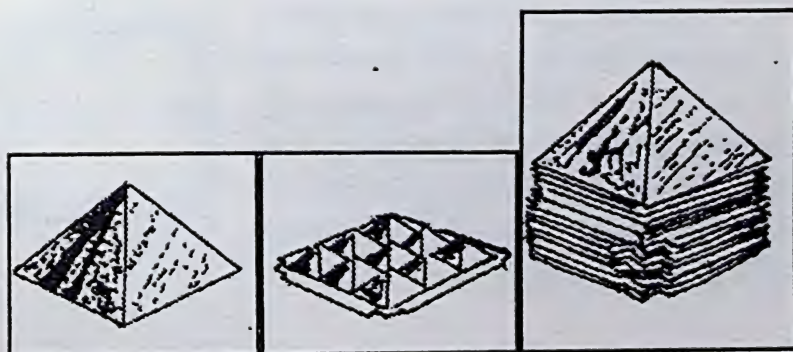
पिरामिड द्वारा वास्तु–दोष निवारण

(1) ढलान का वास्तु–दोष निवारण

यदि आपके मकान या प्लॉट की ढलान वास्तु के अनुरूप नहीं है तो आप चार पिरामिड यन्त्रों को ईशान (उत्तर–पूर्व) तथा पाँच पिरामिड यन्त्रों को नैऋत्य (दक्षिण–पश्चिम) में स्थापित करें। लेकिन यदि आपका प्लॉट 1000 वर्ग फुट से अधिक बड़ा है तो ईशान में 16 तथा नैऋत्य में 20 पिरामिडों की स्थापना करें। पिरामिडों की स्थापना का ढंग चित्र में दर्शाया गया है।
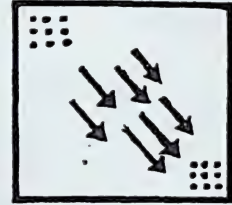
(2) प्लॉट की आकृति का वास्तु–दोष निवारण
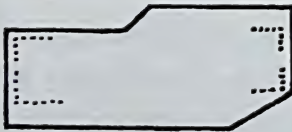
यदि आपके प्लॉट की आकृति विषम आकार की है तो प्लॉट की चारों दिशाओं में नौ–नौ पिरामिडों की स्थापना इस प्रकार से करें कि चारों दिशाओं में स्थापित पिरामिडो के बीच का स्थान आयताकार या वर्गाकार हो, जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

इसके लिए अधिक प्रभावशाली विधि यह है कि चित्र में दिखाये गए तरीके से आप आठों दिशाओं में नौं–नौं पिरामिडो की स्थापना करें। यह संख्या 1000 वर्ग फुट के आकार के प्लॉट के लिए उचित है। यदि प्लॉट का आकार बड़ा है तो पिरामिडों की संख्या को दो गुणा या तीन गुणा (अनुपात में) बढ़ा दें।
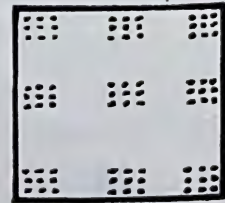
(3) ब्रह्मस्थान का वास्तु–दोष निवारण

ऐसा प्लॉट जिसका आकार 2,500 वर्ग फुट तक हो और इसमें ब्रह्मस्थान के अतिरिक्त अन्य कई वास्तु दोष न हो, उसके मध्य में 3 x 3 = 9 पिरामिडों की स्थापना करनी चाहिए। यदि प्लॉट का आकार 2,500 से 5,000 वर्ग फुट हो तो 5 x 5 = 25 पिरामिडों तथा यदि उसका आकार 5,000 से 10,000 फुट हो तो 7 x 7 = 49 पिरामिडों की स्थापना करनी चाहिए। अधिक बड़े प्लॉट के लिए इसी अनुपात में पिरामिडों की संख्या बढ़ा देनी चाहिए।

कभी–कभी ब्रह्मस्थान को लेकर भ्रम की स्थिति बन जाती है। विशेषकर जो प्लॉट विषम आकार के होते हैं उनमें ब्रह्मस्थान को ठीक–ठीक निश्चित करना मुश्किल होता है। दूसरे ऐसे प्लॉट में मजबूरी वश ब्रह्मस्थान को खाली भी नहीं छोडा जा सकता, जैसा कि वास्तु का निर्देश है अतः ऐसे प्लॉट में पिरामिड यन्त्र की सहायता से अनिष्ट प्रभाव को दूर किया जा सकता है। इसके लिए प्लॉट को दो या अधिक भागों में बांट लेना चाहिए प्रत्येक भाग के बीच प्रतीक रूप में पिरामिड यन्त्रों की दीवार–सी बना देनी चाहिए (जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है) और प्रत्येक भाग के मध्य स्थल पर तथा चारों कोनों में पिरामिड यन्त्र लगाने चाहिए।

(4) प्रवेशद्वार के वास्तु–दोष निवारण

यदि भवन के प्रवेशद्वार (Gate) की स्थापना में किसी प्रकार का वास्तु दोष हो तो गेट से लगभग दो या ढाई फुट की दूरी पर भीतर की ओर गेट के दोनों ओर पिरामिड यन्त्र की स्थापना करनी चाहिए। यदि प्लॉट का आकार बड़ा है तो यन्त्र की संख्या बढ़ा देनी चाहिए।

यदि भवन के मुख्यद्वार (Main door entrance) में किसी प्रकार का वास्तुदोष हो तो चित्र में दिखाये गए ढंग से इसकी चौखट के ऊपर तथा दोनों और पिरामिड यन्त्र को स्थापित करें।
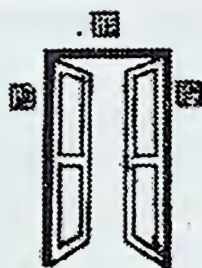
(5) कक्ष की स्थापना का वास्तु—दोष निवारण

यदि आपका कमरा किसी वास्तु—दोष का शिकार है तो चित्र में दिखाये गए ढंग से तीन पिरामिड यन्त्रों की सहायता से दोष का निवारण किया जा सकता है।
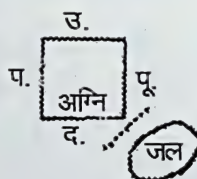
यदि आपके कमरे की दिशा गलत है। उदाहरण के लिए यदि आग्नेय कोण (South-East) में जल—भण्डार बना है अर्थात् अग्नि के स्थान पर जल की स्थापना है तो इस दोष के निवारण के लिए चित्र में दर्शाये गए तरीके से 9 पिरामिड—यन्त्रों की स्थापना करें। ऐसा करते हुए आप एक प्रकार से प्रतीक रूप में एक दीवार खड़ी करते हैं, जो वास्तु—दोष के कुप्रभाव को रोक लेती है।

पिरामिड यन्त्र की स्थापना का ढंग

पिरामिड यन्त्र की स्थापना करते हुए यह ध्यान रखें कि पिरामिड का मुख ठीक—ठीक किसी मुख्य दिशा (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) में ही होना चाहिए।

यदि आप पिरामिड यन्त्र को दीवार पर लगा रहे हैं तो इसके लिए double adhesive foam tape का प्रयोग करें। यदि आप पिरामिड यन्त्र को जमीन पर लगा रहे हैं तो निश्चित स्थान पर लगभग डेढ फुट गहरा खड्डा खोदें और उसमें ठीक प्रकार से दिशाओं का पूरा ध्यान रखते हुए पिरामिड यन्त्र को रखने के बाद मिट्टी से ढक दें।

कक्ष विशेष में पिरामिड शक्ति के प्रभाव की प्राप्ति

पिरामिड शक्ति के स्त्रोत हैं। इनसे ऐसी अभौतिक शक्ति का प्रवाह होता है जो मनुष्य को स्वस्थ, ऊर्जावान तथा जीवन शक्ति से परिपूर्ण करती है। यदि आप चाहें कि आपके घर के किसी विशेष कमरे में पिरामिड की शक्ति के प्रवाह को प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए उस कमरे को पिरामिड जैसा बनाना जरूरी नहीं है। पिरामिड यन्त्र की उचित स्थापना द्वारा भी इस प्रवाह को कक्ष विशेष तक पहुँचाया जा सकता है। उदाहरण के लिए आप अपने शयन कक्ष में, जो घर के एक कोने में स्थित है, और पिरामिड के शक्ति—प्रवाह को पहुँचाना चाहते हैं तो इसके लिए चित्र में दिखाये गए ढंग से पिरामिड यन्त्रों की स्थापना करते चलें। यह विधि किसी भी प्लॉट में किसी भी कमरे के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है।
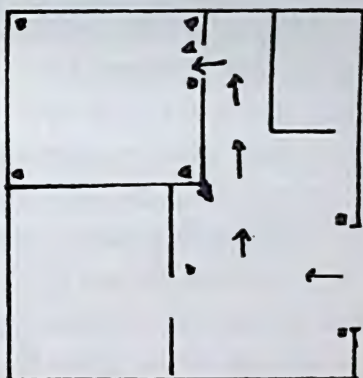
आपका निजी शक्ति चिन्ह

पिरामिड एक प्रकार का त्रिभुज होता है। त्रिभुज एक अद्‌भुत शक्ति चिन्ह है, जो ऊर्जा, गति तथा क्रियाशीलता का प्रतीक है। विद्युत का आधारभूत सिद्धांत भी त्रिभुज पर आधारित है जिसमें स्टार तथा डेल्टा के संयोग से ऊर्जा की उत्पत्ति होती है। स्टार तथा डेल्टा संयोग

को त्रिभुज के द्वारा ही दर्शाया जाता है। अध्यात्म के क्षेत्र में त्रिभुज आत्मिक शक्ति को प्रदर्शित करता है।

हमारे हाथों में अद्भुत निरोगता शक्ति (Healing power) होती है। यदि हम चाहें तो अपने दैनिक जीवन में इस शक्ति को प्रयोग कर सकते हैं। किसी भी कार्य में सफलता का श्रेय जहाँ कठोर मेहनत को दिया जाता है वहीं दृढ़ निश्चय को भी इसमें सम्मिलित किया जाता है। निश्चय मन की शक्ति से बनता है। मन की शक्ति के लिए आप एक शक्ति चिन्ह का प्रयोग कर सकते हैं। यह शक्ति चिन्ह (अथवा स्त्रोत) आप अपने हाथों को चित्र में दर्शाये गए ढंग से जोड़ कर बना सकते हैं। दोनो हाथों के बीच निर्मित त्रिभुज हाथ के लिए शक्ति का प्रवाह स्थल बन सकता है इसका प्रयोग आप इन अवसरों पर कर सकते हैं —

(i) जब मजबूरी वश आपको ऐसा भोजन करना पड़े, जिसे आप पसन्द न करते हों अथवा जिससे आपको एलर्जी हो।

(ii) आप जहाँ काम करते हैं, उस स्थान, साथियों अथवा अधिकारी के साथ आपका तालमेल न बन पा रहा हो।

(iii) किसी ऐसे विषय में काम करते समय, जिसे आप कठिन समझते हैं या जिसमें आपकी रुचि न हो।

इन स्थितियों में जब आप किसी प्रकार का तनाव, घुटन, असुरक्षा का अनुभव करें अथवा आपका मन उचाट हो, आप अपने निजी शक्ति स्त्रोत को प्रयोग में लायें। इसके लिए दोनों हाथों को मिलाकर त्रिभुज बनाए, इस त्रिभुज को उस भोजन पर रखें जिसे आपने खाना है।

यदि किसी व्यक्ति विशेष से आप कोई कृपा या विशेष अनुग्रह प्राप्त करना चाहते हैं अथवा उसके साथ मधुर सम्बंध बनाना चाहते हैं

तो इसके लिए आप ऐसा करें कि कुछ देर के लिए अपने मन को स्थिर करें, मन में शुद्ध भावों को स्थान दें और फिर अपने हाथों से बनी त्रिभुज में से उस व्यक्ति की ओर देखें। यदि वह व्यक्ति उपलब्ध न हो अथवा उसकी उपस्थिति में ऐसा करना सम्भव न हो अपने शक्ति त्रिभुज को उसकी फोटो पर रखें। यदि उसकी फोटो भी उपलब्ध न हो तो किसी साफ कागज पर ही अपने हस्त त्रिभुज को स्थापित करके उस व्यक्ति के बारे में शुद्ध मन से चिन्तन करें। आप देखेंगे कि शीघ्र ही आपके मनमुटाव दूर हो जाएंगे और आप सद्भावपूर्ण सम्बन्धों का आनन्द लेने लगेंगे।

हमारा पारिवारिक जीवन कलहपूर्ण था। अक्सर मेरा अपने पति के साथ मनमुटाव रहता था, जब कि इसका कोई प्रत्यक्ष कारण नजर नहीं आता था। यूँ तो घर में सभी प्रकार के सुख साधन उपलब्ध थे लेकिन हम तनाव से ग्रस्त रहते थे। अकारण ही कोई—न—कोई परेशानी हमें घेरे रहती थी। जब हमने वास्तु—शास्त्र का सहारा लिया और अपने घर में एक छोटे—से वास्तु—दोष का निवारण किया तो हमने पाया कि हमारे जीवन से तनाव हट गया और घर में खुशियाँ जैसे लौट आई।

श्रीमती सुषमा
गृहिणी

संदर्भ ग्रन्थों की सूची

ऋग्वेद

श्रीरामचरितमानस — गोस्वामी तुलसीदास

श्रीमद्भागवतगीता

महाभारत

पुराण

जन्म साखी श्री गुरू नानकदेव जी — भाई बावे वाली

समरांगण सूत्रधार — वास्तुशास्त्रं — डॉ. द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, 1965.

विश्वकर्मा प्रकाश — डॉ. उमेश पुरी ज्ञानेश्वर, प्रथम संस्करण 1997.

बृहत्त संहिता

वास्तु—रत्नाकर — विंध्येश्वरी प्रसाद — छटा संस्करण

'Feng Shui Made Easy' - by William Spear - 1995.

'Astrology in House Building by C.H., Gopinatha Rao, Second Edition - 1992.

'Mayamata - An Indian Treatise on Housing Architecture and Iconography' - translated by Bruno Dagens. - First edition 1985.

लेखक की ओर से एक निवेदन

प्रिय पाठक,

आशा की जाती है कि इस पुस्तक में वास्तुशास्त्र के अमूल्य ज्ञान को अति सरल भाषा में पाकर आपने आनन्द का अनुभव किया होगा तथा आप इससे लाभान्वित होगें। यदि आपके मन में वास्तु के विषय में किसी प्रकार की जिज्ञासा हो या आप किसी समस्या का समाधान चाहते हों तो कृपया संलग्न प्रपत्र को काट कर हमें भेज दें।

धन्यवाद!

डा॰अश्विनी कुमार बंसल
Hony. Director

वास्तुशास्त्र इंस्टीच्यूट

- B-47, लाजपत नगर–I, नई दिल्ली - 110024

फोन : 29818653, 98102–70795
E-MAIL : bansalji@vsnl.com
Web site : vastushastri.com

- 187, एडवोकेटस सोसाइटी, सेक्टर 49ए, चंडीगढ़

फोन:0172–3099006, 3260028

प्रपत्र

नाम..

....

पता..

....

....

फोन नं०..

व्यवसाय..

प्रश्न..

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

(यदि आवश्यक समझें तो प्रश्न विवरण के लिए अलग शीट भी लगा सकते है)

VASTUSHASTRA INSTITUTE

(Established on 1.9.1995)

- **B-47, Lajpat Nagar - I, New Delhi - 110024, India**

Phone : 29818653, 98102-70795

www.vastushastri.com

E-mail : bansalji@vsnl.com

- **187, Advocates Society Sector-49A, Chandigarh**

Phone : 0172-3099006, 3260028

We provide the following services to our customers.

1. **SITE SURVEY-** The Vastu expert shall visit the spot for examination of the property and the surrounding environment. He will inspect the various features like the location and direction of the property and check for Vastu faults if any. He shall recommend ways and means to rectify these. The Vastu expert offers several types of Vastu services.

   For Corporate Houses- He will first assess the nature of the property, especially if the corporate house has intentions of purchasing it. He will review several recommended properties, advise whether they are suitable to the particular corporate house or not. He will review the architectural plans and models and visit construction sites to plan and supervise the Vastu requirements. Once the Vastu recommendations have been accepted and put into practice he will provide an annual advisory service to make the necessary changes, according to the change in energies that are within and outside the area of the property.

   For businesses- As is the requirement-whether it is choosing a new place for business or adjusting an existing one, the Vastu expert will visit the site and assess the flow of energies. He will then advise on the corrective measures which should be taken by the owner for maximum benefit to his business.

For homes- The Vastu expert will be pleased to visit the home and make suggestions for alternations. He will advise on the change of energies as required by the home. For a family having problems, he will make indepth study as to its causes. For chronic problems faced by the family he will look for Vastu reasons and give sound Vastu counseling and advice and recommend Vastu methods to eliminate the problems.

Problems faced by people after moving into a new home will also be dealt with. The Vastu expert will do an indepth study of the history of the house and find the reason for the particular problem. For health problems faced by individuals, immediately after moving into a new house, the entire atmosphere of the home will be taken into consideration.

The Vastu expert will assess the situation in its entirety, taking into consideration the location, shape and size of the home. The shape of the room, the direction it faces and the features within the home, like colour of walls, ceiling, door, direction of doors etc. to remove the feature causing the illness and recommend methods to neutralize it.

For people wishing to buy a new property, he will visit the site personally and advise on its suitability by feeling the flow of energies in the property. He will be able to observe the Poison arrows, that might be coming into the property from the adjoining areas. He will then give expert advice on how to overcome these problems and suggests ways and means to protect you and your home or office, from harmful effects.

2. **CONSULTANCY-** The Consultancy services include examination of the map of the area where the property is located. This will give the Vastu expert an understanding of the layout of property. This is very essential to check Vastu faults and to find answers to potential problems which may be faced regarding the property.

He may draw a sketch of the property if needed, which includes your home or office. This will make the layout of the various rooms very clear to him. In case there is any Vastu fault in this, it can cause a major problem in your life. The Vastu expert will be able to pin point these, and give his recommendations on how to deal with the particular problems.

In the next step the Vastu expert shall holds discussions with clients regarding the history of the property. **It is very essential that he knows the property from all angles before he gives you his expert advice.** Various questions like 'whom was the property with before you bought it?' will be asked. He would also like to know about your feelings about the property–whether you feel good while you are there, if you get any special feelings while on the site. These feelings can be feelings of happiness, feelings of sadness, feelings of elation, feelings of pride or even getting an insecure feeling.

The Vastu expert will then make an overall assessment and provide tailor made plans for rectification of defects in the existing construction, generally, without structural changes. We also provides services for planning of new construction, interiors, designs, decoration and landscaping.

3. **ANALYSIS AND INTERPRETATION OF DREAMS**-These are very special services provided by us. If you get a dream that disturbs you or leaves you wondering what it could mean, then the we are there to help you. Our advice will give you an insight into what these dreams actually signify. Dreams do have a meaning and the same dream coming to you night after night is best diagnosed and dealt with. The Vastu expert will be able to analyse and interpret these dreams and will also recommend the actions that should be taken for maximum benefit, while protecting you from harm.

डा॰ अश्विनी कुमार बंसल जो कि वास्तुशास्त्र और फेंगशूई में पारंगत हैं। अपने क्षेत्र में 'बैस्ट सैलिंग आथर' के नाम से प्रसिद्व हैं। इस ख्याति प्राप्त लेखक ने वास्तुशास्त्र और फेंगशूई आसान रूप में प्रस्तुत करके जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इस पुस्तक में अपने घर में सुख-शान्ति, सम्पत्ति, समृध्दि और लक्ष्मी पाने के लिए अद्‌भुत प्राचीन ज्ञान सम्बन्धी वास्तु के सिद्वान्तों का बहुत ही सहज ढगं से प्रयोग समझाया गया है। घर में खुशहाली के लिए वास्तुशास्त्र के सुझाव भी दिए गए हैं। इन सुझावों से आपके घर में समृध्दि की वृद्वि होगी और आप आसानी से सफलता की सीढ़ी चढ़ सकेगें।

1. घर में प्रवेश द्वार अथवा उसके निकट दीवार पर लक्ष्मी तथा गणेश की तस्वीर अथवा स्वास्तिक चिन्ह लगाने से घर में सुख और वैभव की वृध्दि होती है।
2. घर में उत्तर दिशा की ओर खुलता हुआ लॉकर / सेफ अवश्य रखें जिसमें नगदी आभूषण इत्यादि रखें जाएं।
3. अपने घर की दीवारों पर अनावश्यक फोटो, कलैण्डर आदि न लगाएं।
4. फर्नीचर को फिर से लगाकर सम्बन्धों को सुधारिए।
5. हमेशा नये विचारों से और प्रोत्साहन से अपने जीवन और घर को सवारें।

अधिक जानकारी के लिए और वास्तु-फेंगशुई सम्बन्धी फ्री टीप्स के लिए हमारे वेबसाईट पर आइए

www.vastushastri.com

ISBN 81-901039-1-1
9 788190 103916

Rs. 195